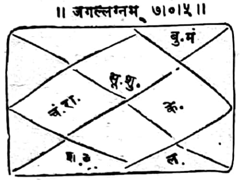
यं शैवाः समुपासते शिव इति ब्रह्मेति वेदान्तिनो वौद्धा बुद्ध इति प्रमाणपटवः कर्त्तेतिनैयायिकाः ॥ तिथिवारञ्च नक्षत्रं योगः करणमेव च ॥ श्री सीतारामाभ्यान्नमः ॥ लक्ष्मीः स्यादचला तिथिश्रवणता वारात्तथायुश्चिर नक्षत्र कृत[illegible] मन [illegible] [illegible] ।। गणा[illegible]कश्च शशी धरासुतो बुधो गुरुभ[illegible]नन्दन ॥
अर्हन्नित्यथ जैनाः शासनरताः कर्मेति मीमांसकाः सोऽयं वो विदधातु वाञ्छितफलं त्रैलोक्यनाथोहरिः ॥ पञ्चाङ्गस्य फलं श्रुत्वा गङ्गास्नानफलं लभेत् ॥ मकरन्दानुसारि ॥ सर्वाभीष्टकरन्तथैव करणं पञ्चाङ्गमेवं स्फुटं श्रोतव्यं गणकाननात्प्र तदिनं श्रेयस्करं सिद्धिदम् । राहुश्चकेतुश्च पर नवग्रहाः कुर्वन्तु वः पूर्णमनोरथान सदा ॥

❋ विश्वविद्यालय-पञ्चांगम् ❋

★ संवत् २०३८ ★ **● १९८१-८२ ई० ●**

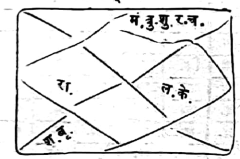
॥ जगल्लग्नम् ७।०।५ ॥



● राजा–बृहस्पतिः ● मन्त्री–सूर्यः ●

● वर्षा–१३ ● धान्यम्–९ ●

॥ वर्षलग्नम् ९।७।७ ॥



卐 विक्रमसंवत् २०३८ ॥ शालिवाहन शकाब्दः १९०३ ॥ कलिसम्वत्सरः ५०८२ ॥ अं० १९८१–८२ ई० ॥ लक्ष्मणसंवत् ८७२–७३ ॥ वंगाब्दः१३८७–८८ ॥ भारतीयस्वतन्त्रताब्दः ३४–३५ ॥ सन् १३८८–८९ साल 卐

● शकः १९०३ ●

तिथ्यम्बुवृद्धं करणारविन्दं पर्वप्रवालं सुकरावतारम् ।
योगोपबन्धं मनुजैरजस्रं सरोऽवगाह्यं तिथिपत्रमेतत् ।
विदेहजाजन्मभुवोऽन्तराले कामेश्वरीये सदनेऽतिरम्ये ।
गिरो निकेते निरतैर्निवद्धं बुधैर्विवृद्धिं लभतां सदेदम् ।
अपेक्षितं सर्वमिहोपदिष्टं विसृष्टमन्यन्न नृणां यदिष्टम् ।
ततोऽधिदेशं विततं मुदेऽस्तो त्रिपश्चितामर्चनमातनोतु ।

卐 कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय-प्रकाशितम् 卐

स्वतन्त्रताब्दः ३४-३५

प्रवर्त्तकः—डा० जयमन्त मिश्रः, कुलपतिः
संरक्षकः—डा० सच्चिदानन्द चौधरी, कुलसचिवः ।
निदेशकः—श्री पं० व्रजकिशोर झा, स्नातकोत्तर-ज्योतिष-विभागाध्यक्षः ।
सम्पादकौ—श्री पं० रामचन्द्र झा, ज्यो०धर्म०आ०, विद्या-वारिधिः ।
श्री पं० यशस्पति झा, ज्योतिषाचार्यश्च ।

मुद्रकः—अनुपमा पेपर क्राफ्ट इंक्लेव, बेला, दरभङ्गा । प्राप्तिस्थानम्—पञ्चाङ्ग विभाग, कामेश्वर सिंह दरभङ्गा संस्कृत विश्वविद्यालय, कामेश्वरनगर, दरभङ्गा । सूचना—२०३९ सम्वत्सरस्य विश्वविद्यालय-पञ्चाङ्गं २०३८ सम्वत्सरस्य कार्तिकमासे प्रकाशमेष्यति । मूल्यम्—4.00 रुप्यकम् (भारतीय)

॥ आनन्दादि योगचक्रम् ॥

योगनाम	सू.	च.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	फलम
आनन्दः	अश्वि:	मृग.	आश्ले.	हस्त.	अनु.	उषा.	शत.	सिद्धिः
कालदण्ड,	भ.	आ.	म.	चि.	ज्ये.	अभि.	पूभा.	मृत्युः
धूम्रः	कृ.	पु.	पूफ.	स्वा.	मू.	श्र.	उभा.	दुख
धाताः	रो.	पु.	उफ.	वि.	पूषा.	ध.	रे.	शुभः
सौम्यः	मृ.	आ.	ह.	अनु.	उषा.	श.	अ.	सुख
ध्वांक्षः	आ.	म.	चि.	ज्ये.	अभि.	पूभा.	भ.	हानिः
केतुः	पु.	पूफ.	स्वा.	मू.	श्र.	उभा.	कृ.	दुखम्
श्रीवत्सः	पु.	उफ.	वि.	पूषा.	ध.	रे.	रो.	संपतिः
वज्रः	आ.	ह.	अनु.	उषा.	श.	अ.	मृ.	हानिः
मुद्गरः	म.	चि.	ज्ये.	अभि.	पूभा.	भ.	आ.	नाशः
छत्रः	पूफ.	स्वा.	मू.	श्र	उभा.	कृ.	पु.	सम्मान
मित्र	उफ.	वि.	पूषा.	ध.	रे.	रो.	पु.	पुष्टि
मानसः	ह.	अनु.	उषा.	श.	अ.	मृ.	आ.	सुख
पद्मः	चि.	ज्ये.	अभि.	पूभा.	भ.	आ.	म.	लाभः
लुम्बः	स्वा.	मू.	श्र.	पूभा.	कृ.	पु.	पूफ.	हानिः
उत्पातः	वि.	पूषा.	ध.	रे.	रो.	पु.	उफ.	नाशः
मृत्युः	अनु.	उषा.	श.	अ.	मृ.	आ.	ह.	मृत्युः
काण	ज्ये.	अभि.	पूभा.	भ.	आ.	म.	चि.	क्लशः
सिद्धिः	मू.	श्र.	उभा.	कृ.	पु.	पूफ.	स्वा.	सिद्धिः
शुभः	पूषा.	ध.	रे.	रो.	पु.	उफ.	वि.	शुभः
अमृतम्	उषा.	श.	अ.	मृ.	आ.	ह.	अनु.	सम्मान
मुसलम्	अभि.	पूभा.	भ.	आ.	म.	चि.	ज्ये.	लाभः
गदः	श्र.	उभा.	कृ.	पुन.	पूफ.	स्वा.	मू.	लाभः
मातङ्गः	ध.	रे.	रो.	पु.	उफ.	वि.	पूषा	वृद्धः
राक्षसः	श.	अ.	मृ.	आ	ह.	अ.	उषा	कष्टम
चरः	पूभा.	भ.	आ.	म.	चि.	ज्ये.	अभि.	सिद्धिः
सुस्थिरः	उभा	कृ.	पु.	पूफ.	स्वा.	मू.	श्र.	सुभम्
प्रवर्द्धमानः	रे.	रो.	पु.	उफ.	वि.	पूषा.	ध.	सुखम

॥ पञ्चाङ्ग देखने की विधि ॥

इस पञ्चाङ्ग में सर्वप्रथम सूर्यादि दिन उसके बाद तिथि का नाम एवं दण्डपलात्मक मान एवं तिथि का घंटा, मिनट उसकेबाद नक्षत्र का नाम, दण्डपल एवं घंटा मिनटात्मकमान उसके बाद क्रमशः योग एवं उसके दण्डपल, करण का नाम एवं दण्डपलात्मकमान, राशियों में चन्द्रमा का दण्डपलात्मक एवं घंटा मिनटात्मक समय उसके बाद क्रमशः सूर्य का निश्रमानकालिक स्पष्ट राश्यादि, दण्ड. पलात्मक दिनमान, घंटा मिनटात्मक सूर्योदय, सूर्यास्त, राष्ट्रिय, सौर एवं अंग्रेजी तिथियाँ दी गई है और उसके आगे उस दिन के मुहूर्त्त एवं पर्वादि दिये गये हैं। यथा-चैत्र शुक्ल प्रतिपदा रविवार को प्रतिपदा का दण्डपलात्मक मा२ ४४।३९ (रात्रि घंटा ११ मि. ४० तक) रेवती नक्षत्र का दण्डपल २६।४० (दिन घं००४ मि०२८ तक) आदि सारी बातें इसी तरह जाननी चाहिये। पञ्चाङ्ग के निचले भाग में निर्शीथ (मिश्रमान) कालिक दैनिक स्पष्टग्रह एवं दण्डपलात्मक मिश्रमान दिया गया है। यथा चैत्रशुक्ल प्रतिपदा रविवार को मिश्रमान कालिक स्पष्ट शुक्र ११।२३।१३।३५ तथा स्पष्ट शनि ५।१३।०।१३ आदि। दो दिनों के स्पष्ट ग्रहों का अन्तर ग्रह की दैनिक गति होती है। यथा चैत्रशुक्ल प्रतिपदा रविवार एवं द्वितीया सोमवार के स्पष्ट शुक्र का अन्तर (११।२३।१३।३५) (११।२४।२८।१२) = ७४।३७ कलात्मकदैनिक गति शुक्र की हुई। इसी तरह अन्य ग्रहों की भी गति समझनी चाहिए। इसके बाद इसी चक्र के अन्तिम भाग में दैनिकलग्नसारिणी दी गई है। सुविधा की दृष्टि से प्रतिदिन मेष से आरम्भ कर मीन तक के लग्नों का मान रेलवे घड़ी के अनुसार लिखे गये हैं। अर्थात् १३, १४ आदि घंटे से दिन के १, २ आदि घंटे तथा शून्य घंटे से २४ यानि १२ बजे रात्रि समझना चाहिये। यथा—चैत्रशुक्ल प्रतिपदा रविवार को पूर्वाह्न ६।१५ बजे से ७।५३ तक मेष, ७।५३ बजे से ९।४९ बजे तक वृष ९।४९ से १२।२ तक मिथुन, १२।२ से १४।२० तक कर्क, १४।२० से १६।३४ तक सिंह, १६।३४ से १८।४७ तक कन्या, १८।४७ बजे सन्ध्या से २१।३ रात्रि तक तुला, २१।३ रात्रि से २३।२० रात्रि तक वृश्चिक, २३।२० रात्रि से १।२६ रात्रि तक धनु, १।२६ से ३।१२ तक मकर, ३।१२ से ४।४४ तक कुम्भ एवं ४।४४ से ६।१५ बजे प्रातः तक मीन लग्न रहेगा। इसी तरह प्रतिदिन समझना चाहिए। पाक्षिक विविध विषयों के साथ-साथ अन्य उपयोगी विषय "अब विविध विषया" के आगे दिये गये हैं। उसके बाद पाक्षिक वातावरण एवं ग्रहस्थिति (ग्रहों के उदय, अस्त वक्र या मार्ग) लिखी गई है। शुद्धादि विजयों की सुविधा पूर्वक जानकारी के लिये प्रत्येक पक्ष में पचाङ्ग के ऊपरी भाग में दाईं ओर गुरु और शुक्र के उदयास्त एवं शुद्धादि विवरण दिये गये हैं ताकि सामान्य जानकारी रखते वालों को भी सुविधा हो। इतिशम् ॥

मिश्रमान (निशीथ) कालिक ग्रह से इष्टकालिक ग्रह स्पष्टीकरण—यथा चैत्रशुक्ल पंचमी गुरुवार को २०१६ दंडादि पर स्पष्ट गुरू बनाना है तो मिश्रमानवारादि ५।४५।३७ एवं इष्टकाल वारादि ५।२०।१६ का अन्तर २५।३१ = मिश्रेष्टान्तर ऋणदण्डादि तथा (५।११।५०।४९–(५।११।४३।१९) = ७।३० गुरू की गतिकलादि। अंतः (२५।३१) × (७।३०) = ३।११ कलादिफल। अतः (५।११।४३।१९) + (३।११) = ५।११।४६।३० = इष्टकालिक गुरू। (वक्री गुरू के कारण चालनफल धन हुआ है) इसी तरह सभी ग्रह बनाना चाहिए।

समर्थका विद्वांसः

विद्यावाचस्पति पं० उपेन्द्र झा, विद्यावाचस्पति पं० नमोनारायण झा

,, कुलानन्द मिश्र,
,, रामचन्द्र मिश्र,
पं० षड़ानन झा,
,, कमलाकान्त झा,
,, आद्याचरण झा,
,, आनन्द झा,
,, अनन्तलाल ठाकुर,
,, रङ्गेश्वर नाथ मिश्र
,, जीवानन्द ठाकुर,
,, दुर्गाधर झा,
,, रामकरण शर्मा,
,, सुरेश द्विवेदी,
,, भवानीदत्त शर्मा,
पं० शोभाकान्त जयदेव झा,
,, रामसेवक झा,
,, काशीनाथ मिश्र,
,, विधाता मिश्र,
,, सुभद्र झा,

पं० देवचन्द्र झा,
,, कलाधर त्रिपाठी,
,, फूलकुमार झा,
,, श्यामानन्दन मिश्रः,
,, देवकान्त मिश्रः,
,, महाप्रभुलाल गोस्वामी,
,, जगदानन्द पाण्डेयः,
,, धर्मनाथ झा.
,, गणेश शर्मा,
,, उपेन्द्र झा, "विमल"
,, परमानन्द झा,
,, विदेश्वर झा,
,, शोभाकान्त झा,
,, देवीकान्त मिश्रः,
,, अर्जुन झा,
,, शिवकान्त झा,
,, रत्नेश्वर झा,
,, हरिनन्दन झा,
,, विश्वनाथ झा,
,, जगदानन्द झा,
,, बाबू मिश्रः,
,, शिवकुमार शर्मा,
,, रामचन्द्र झा,
,, गोपानन्द झा,
,, महानन्द ठाकुरः,
,, सत्यनारायण पाठकः
,, रामदेव झा,
,, गंगाधर शर्मा,
,, रत्नेश्वर ठाकुर,
,, महावीर झा,
,, देवेन्द्रनाथ झा,
,, गुणानन्द झा

पं० भगवानदत्त मिश्रः,
,, उग्रानन्द प्रतिहस्तः,
,, भारतेन्दुनाथ ठाकुरः,
,, मुरलीधर झा,
,, सृष्टिनारायण झा,
,, जगदीश पाठकः,
,, श्यामसुन्दर झा,
,, महेश झा,
,, भूधर झा,
,, माधव झा,
,, अजबलाल झा,
,, रतीश झा,
,, गङ्गाधर झा,
,, जयनारायण झा,
,, नित्यानन्द झा,
,, पुरुषोत्तम झा,
,, त्रिलोकनाथ झा,
,, लक्ष्मीनारायण झा,
,, ताराकान्त झा,
,, वीरचन्द्र रायः
,, मणिनाथ झा,
,, तेजनाथ झा,
,, उमाकान्त झा,
,, वैद्यनाथ झा,
,, जगदीश झा,
,, कीर्त्यानन्द झा,
,, राधाकान्त मिश्र,
,, अनूपदेव झा,
,, रुद्रधर झा,
,, गणेश झा,
,, अभिनन्दन झा,

,, ब्रह्मदेव झा,
,, महेश शर्मा,
,, मदनमोहन झा,
,, तारकेश्वर त्रिपाठी,
,, शिवशंकर झा,
,, लालन झा,
,, दुर्गानाथ झा,
,, मोहिनाथ झा,
,, गोलोकनाथ झा,
;; श्रीनारायण झा;
;; प्रभुनारायण शर्मा
;; शशिनाथ झा;
;; योगनाथ झा;
;; चन्द्रकिशोर झा;
;; युक्तिनाथ झा;
;; शिवजी झा;
;; लक्ष्मीनाथ झा;
;; रामविलास झा;
;; भोलानाथ मिश्रः
;; हरिश्चन्द्र झा;
;; राधाकान्त झा;
;; लक्ष्मीकान्त मिश्रः;
;; मधुकान्त झा;
;; शिवानन्द झा;
;; त्रिगुणानन्द शुक्लः,
;; भक्तिनाथ सिंह ठाकुर;
;; शंकर त्रिपाठी;
;; रमानन्द चौधरी;
;; रामकृपालु झा,
;; सदानन्द झा,
;; कृपाकान्त ठाकुर,
;; लषनलाल झा,
;; मुनीन्द्र झा,
,, कालीकान्त झा
,, सत्यदेव झा
,, रतिनाथ झा
.. रामकृष्ण झा
.. फणिनाथ झा

,, काशीनाथ झा,
,, दीनानाथ तिवारी,
,, वुद्धिनाथ झा,
,, नारायण झा
,, हरिहर झा,
,, कामेश्वर झा,
,, विलट झा,
,, राजेन्द्र झा,
;; रतीशचन्द्र मिश्र;
;; सुन्दर झा;
;; विष्णुदेव झा;
; नित्यानन्द मिश्रः;
;; दिनेश झा;
;; हर्षनाथ झा;
;; उदयकान्त झा;
;; कृष्णानन्द झा;
;; नन्दकिशोर पाण्डेय;
;; यागेश्वर झा;
;; दामोदर झा;
;; वैद्यनाथ झा;
;; शिवाकान्त झा;
;; मीना कुमारी;
.. अम्बिकादत्त मिश्र;
;; रमानन्द झा;
;; बच्चा झा;
;; अम्बिका प्र० गिरिः;
;; भुवनेश्वर झा;
;; फुलचन्द्र मिश्रः;
;; रामावतार झा,
;; कालीकान्त मिश्र,
;; श्रीकान्त प्रतिहस्त,
;; कमलाकान्त ठाकुर,
,, भागवत ठाकुर,
,, कमलाकान्त मिश्र
,, कलाधर झा
,, यशोदानन्द मिश्र
.. दिवाकर शास्त्री
.. वेदानन्द झा

॥ श्रीमन्मङ्गलमूर्त्तये नमः ॥ श्री सरस्वत्यै नमः ॥

शकः १९०३ संवत् २०३८ सन् १३८८-८९ साल सन् १९८१-८२ ई० तत्र प्रभवादयो गताब्दादयः ७।७।१२।८।३८ भोग्याब्दादयश्च ५२।४।१७।५१।२२, अत्र लिख्यमाने रामाभ्राङ्केन्दुमिते शकाब्दे बार्हस्पत्ये ब्रह्मविंशतिकायां जीवाधिदैवतयुगे भावनामाष्टम मध्यमगुरु संवत्सरफलम्—बहुक्षीरास्तथा गावः सर्वशस्योद्भवो भवेत्। सर्वं च जायते धान्यं भवे वर्षे वरानने।

॥ अथ वर्षेश (राजा) गुरुफलम् ॥

विप्रा यज्ञरता भवन्त्यतिवलाः शस्यैः क्षितिर्व्यापिता राजा राष्ट्ररतो गजाश्वमहिषैं देशः समृद्धालयः ॥
रोगं घ्नन्ति सुवृष्टयो बहुविधाः क्रूरा विनश्यन्ति वै चौरव्याघ्रभुजङ्गमाश्च वहुधा नश्यन्ति जीवेऽब्दपे ॥

॥ अथ संवाहक (मन्त्री) सूर्यफलम् ॥

आदित्ये बहुवित्तनाशनपरा लोका ज्वरव्यापिता मेघानां जलहानिरेव महती शस्यस्यनाशोद्भुतम् ॥
भूपाला बहुधाभिपालनपरिव्यग्राः सदा निर्जिताः सर्वश्वापदवेष्टिता च जनता लोका विनाशाकुलाः। ॥

॥ पालक चन्द्रफलम् ॥

सोमे सम्पन्न शस्या भवति वसुमती तोयदा तोययुक्ता गर्जन्तोऽनेक तोयं ददति च धरणीं भूभुजो मोदयुक्ताः ॥
सम्पन्ना भूरिवित्ता प्रभवति धनदैस्तुल्यकक्षा महीपाः पृथ्वीजानां विवृद्धि र्भवति धनवतां पालके सौख्ययुक्ताः ॥

मेघाधिपबुधफलम्—अनेकतोयसम्पन्ना जलदा शशिनन्दने ॥
तोयाधिप गुरुफलम्—तोयशस्य समाकीर्णा मही तोयाधिपे गुरौ ॥
शस्येशकुजफलम्—पवनस्य महावेगा निपतन्ति महीरुहाः। शस्यवृद्धिर्भवेत्स्वल्पा शस्येशे भूमिनन्दने ॥
लोकेशसूर्यफलम्—वायवो दुःसहा वान्ति लोकसन्तापकारिणः। विनाशविकला लोका मनुष्येशे दिनाधिपे ॥
संवर्त्तक मेघफलम्—संवर्त्तो बहुतोयदः ॥
तटगतरोहिणीफलम्—तटगता यदि सा शुभवृष्टिदा ॥
चैत्रशुक्ल प्रतिपत्सूर्यवासरफलम्—चैत्रस्यशुक्ल प्रतिपत्तिथौ चेद्वारो रवेश्चिन्त्रित वृष्टिरब्दे ॥
पौषामावास्याफलम्—रविकुजार्कजवासरकेषु चेत्सहसिदर्शतिथिर्गिरिजेऽखिला। बहुधनैर्धरणी परिपूरिता सकल-* शस्ययुता मुदित प्रजाः ॥
आर्द्राप्रवेशफलम्—पञ्चमीतिथिः कष्टदा, सोमधनिष्ठाविष्कुंभाःशुभदाः ॥
होलिका फलम्—भौमेचेद् होलिकादाहः शोभनं न फलन्तदा ॥
शकादिफलम्—शकाद्दुर्भिक्षम्, संवत्तो मध्यमंसुखम्
जलाढ़कम्—जलाढ़क ५० तत्र समुद्रे २५ पर्वते १५ भूमौ १० इति ॥

॥ अथ १९०३ शकाब्दे विश्वाः ॥

वर्षा १३ धान्यम् ९ शीतं १३ तृणं १७ उष्णं ५ वायुः १३ प्रजावृद्धिः १५ प्रजाक्षयः १५ विग्रहः ११ क्षुधा ७ तृष्णा ३ निद्रा १३ आलस्यं ५ उद्यमं ७ शान्तिः ११ क्रोधः ३ दण्डम् ३ मैत्री १ उत्सव १३ पापं ७ पुण्यं ११ रसादि ९ उग्रत्व १३ रसोत्पत्तिः ५ फलोत्पत्तिः ३ रोगवृद्धिः १३ रोगक्षयः ५ आचारः १७ दुराचारः १९ मरणं १३ जननं १९ चौरभयं ५ चौरशान्तिः ७ अग्निभयं ११ अग्निशमनं १९ ॥

॥ अथ मेषादिद्वादशराशीनां सफलमायव्ययचक्रम् ॥

राशयः	मेषः	वृषः	मिथुनः	कर्कः	सिंहः	कन्या	तुला	वृश्चिकः	धनुः	मकरः	कुंभः	मीनः
आयः	११	५	८	२	५	८	५	११	१४	२	२	१४
व्ययः	५	१४	११	११	५	११	१४	५	११	८	८	११
फलम्	विजयः	सौख्यं	सौख्यं	रोगः	लाभः	सौख्यं	सौख्यं	विजयः	हानिः	लाभः	लाभः	हानिः

॥ अथ १९०३ शकाब्दस्य शुद्धयशुद्धी लिख्येते ॥

तत्र चैत्रशुक्लप्रतिपत्तो वैशाखशुक्ल पूर्णिमायां ५५।३० यावत् शुक्रास्तवाल्यदोषाभ्यामशुद्धस्तन्मानं मासादि १।१३।५५।३० ततो भाद्रकृष्णद्वितीयायां ६।८ यावच्छुद्धस्तन्मानं मासादि ३।०।१०।३८ ततः सिंहादित्य-गुरुक्षैण्यान्त-वाल्यगुर्वादित्यदोषेभ्यो मार्गकृष्णपञ्चम्यां २३।३५ यावदशुद्धस्तन्मानं मासादि ३।१।१७।२७। ततः पौषकृष्णचतुर्थ्यां ५३।४७ यावच्छुद्धस्तन्मानं मासादि ०।२९।३०।१२ ततो धनुरादित्य शुक्रक्षैण्यास्तवाल्यदोषेभ्यो माघकृष्ण त्रयोदश्यां १०।२३ यावदशुद्धस्तन्मानं मासादि १।८।१६।३६ ततश्चैत्रामान्तयावच्छुद्धस्तन्मानं मासादि २।१।४९।३७ अतोवर्षशुद्ध समयमानं मासादि ६।१।३०।२७ अशुद्धसमयमानं मासादि ५।२३।२९।३३ उभयोर्योगो वर्षपूर्त्तिदिनानि ३५५।

॥ अथ १९०३ शकाब्दे शुभकार्यदिनानि ॥

वैशाखे शुक्रवाल्यत्वात् प्रथमाब्दीयद्विरागमन दिनान्येव। ज्येष्टाषाढ़योः वहवो विवाहोपनयनदेवादिप्रतिष्ठा मुहूर्त्ताः। अशुद्धत्वात् कार्त्तिकव्रतोद्यापनैकादशीव्रतोद्यापनाकाशदीपदानव्रतोद्यापनानि कार्तिके नैव। अग्रहणे वहवो विवाह द्विरागमन मुहुर्त्ताः तदानीं शुक्रोदयः पश्चिमायान्तेन दक्षिणपश्चिमदिशोर्द्विरागमनं तृतीयादिविषम-वर्षस्य केवलं शुक्रान्ध (रे. अ. रो. मृ.) नक्षत्रेष्वेव। पूर्वोत्तरदिशोर्द्विरागमनदिनानि तु वहूनि। माघफाल्गुनयो वंहवो विवाहोपनयनदेवादि प्रतिष्ठामुहूर्त्ता.। फाल्गुने शुक्रोदयः पूर्वस्यान्तेन पूर्वोत्तरदिशोः द्विरागमनमुहूर्त्ताः केवलं शुक्रान्धनक्षत्रेष्वेव ज्ञेयाः। पश्चिमदक्षिणदिशोर्द्विरागमनमुहूर्त्तास्तु वंहवस्तदानीम्। ज्येष्ठमाघयोरेकादशीव्रतो-द्यापने ज्ञेय।

॥ अथाग्रिम १९०४ शकवर्षे संक्षिप्त शुद्धादि ॥

चैत्रशुक्लद्वितीयाशनिवासराद् भाद्रकृष्णद्वादशीचन्द्रं यावच्छुद्धसमयः। तत्र वहवो विवाहोपनयनद्विरागमनैका-दशीव्रतोद्यापन मुहूर्त्ताः। ततः सिंहादित्यगुरुशुक्रक्षैण्यास्तवाल्य-धनुरादित्य-क्षयाधिमासदोषेभ्यः फाल्गुनकृष्णामा वास्यां यावदशुद्धस्ततश्चैत्रकृष्णद्वितीयाबुधवासरं यावच्छुद्धस्ततोऽशुद्धः। वैशाखे शुक्रोदयः पूर्वस्याम्। गुरुस्तुला-याम्। फाल्गुनशुक्लपक्षे मीनार्के उपनयन मुहूर्त्ता वहवः परन्च विवाह मुहूर्त्ताभावः।

॥ अथ वर्षफलम् ॥

इस वर्ष के राजा बृहस्पति, मन्त्री सूर्य, पालकेश चन्द्र, मेघाधिप बुध, तोयाधिप गुरु, शस्याधिपमङ्गल, एवं लोकाधिप सूर्य हैं। वर्ष के प्रारंभ में भावनामक संवत्सर तथा कार्तिककृष्णामावास्या को ५५।४७ दण्डादि से युवा नामक संवत्सर प्रारंभ होगा। संवर्त्तक नामक मेघ तथा रोहिणी का वास तट में है। राजा एवं मन्त्री में मित्र भाव है। वर्षलग्नेश गुरु युक्त तथा जगल्लग्नेश बुध युक्त हैं। उपर्युक्त ग्रहस्थिति के अनुसार व्यापार, राजनीति, मैत्री एवं प्रतिष्ठा की दृष्टिकोण से देश के लिये शुभकारक है। विदेशों में देश की प्रतिष्ठा बढ़ेगी अस्त्र-शस्त्र निर्माण के वावजूद भी सभी देशों में आन्तरिक अशान्ति के साथ-साथ पारस्परिक सद्भावना भी बनी रहेगी वर्षा की स्थिति अच्छी रहेगी किन्तु बाढ़ एवं अन्य प्राकृतिक (ईति) प्रकोप से कृषि की क्षति होगी। भूकम्प, कहीं कहीं खण्डवृष्टि, झंझावात आदि उत्पातों की संभावना रहेगी। राज्यों में उत्थल-पुथल की स्थिति रहने की भी संभावना दिखलाई पड़ती है। शासक वर्ग प्रजापालन में तत्पर रहेंगे। संक्रामक रोगों का प्रकोप एवं वायुविकार का प्रकोप अधिक होगा। क्रमेंश उच्चस्थ होकर शुभपाप से युक्त है अतः राष्ट्र के हित के लिये नवीन प्रक्रिया व्यापार तथा कई तरह के सुरक्षात्मक प्रबन्ध किये जा सकते हैं साथ ही पाप ग्रह के योग के कारण विग्रह, दुर्घटना या किसी महान् व्यक्ति के निधन अथवा कष्टकारक स्थिति की भी संभावना रहेगी। श्री दुर्गाऽऽगमन-गमन-यान विचारानुसारप्रधान (महान्) व्यक्ति के लिये कष्टकारक तथा रोगोपादक स्थिति सिद्ध होती है। अगहनी तथा चैती फसल की उपज क्रमशः ६० एवं ५५ प्रतिशत होगी। भादी अन्न की उपज ७० प्रतिशत होगी।

॥ अथ मासफल ॥

चैत्र एवं वैशाख—ग्रहयोगानुसार इस मास का फल मध्यम प्रतीत होता है। खाद्यपदार्थ, वस्त्र, रसपदार्थ एवं धातुपदार्थ प्रायः सस्ते रहेंगे, फलादि पदार्थ में तेजी का क्रम रहेगा। खण्डवृष्टि, आन्धी, चेचक एवं पशु-रोग की संभावना रहेगी। अराजकता की स्थिति रहेगी। विषैले जीवों का उपद्रव तथा वाहन दुर्घटना का भी योग लक्षित होता है। पक्षान्त में वर्षा का योग है।

ज्येष्ठः—इस मास का साधारण फल प्रतीत होता है। धातुपदार्थ एवं खनिज पदार्थ महँगे होंगे, रस पदार्थ का भाव सम रहेगा किन्तु अन्न एवं वस्त्र के मूल्य तेज की ओर रहेंगे। आन्तरिक उत्थल पुथल, दुर्घटना अग्निभय, युद्ध आदि की भी संभावना है। वर्षा की स्थिति उत्तरार्द्ध में अच्छी है।

आषाढ़ः—धातु पदार्थ, अन्न-वस्त्र, रसादि पदार्थ महँगे होंगे। शासकवर्ग में आन्तरिक मतभेद बढ़ेगा। अशान्ति की स्थिति उत्पन्न होगी। साम्प्रदायिक उपद्रव की संभावना भी दिखलाई पड़ती है। आन्धी, दुर्घटना, प्राकृतिक प्रकोप तथा अग्नि भय का योग भी प्रतीत होता है किन्तु वर्षा की स्थिति मास के आदि एवं अन्त में अच्छी रहेगी।

श्रावणः—इस महीने में मतभेद, हलचली, रोग प्रकोप, शस्त्राघात, बाढ़ से क्षति, आतंक, खाद्यपदार्थ, खनिज पदार्थ, धातुपदार्थ तथा वस्त्र के भाव में तेजी, दुर्घटना आदि होगा। मास के पूर्वार्द्ध में खण्डवृष्टि तथा उत्तरार्द्ध में सुवृष्टि योग है। मास फल नेष्ट है।

भाद्रपदः—परिवर्त्तनशील स्थिति, शान्ति सुव्यवस्थाहेतु शासकवर्ग प्रयत्नशील, खाद्यपदार्थ, खनिज पदार्थ, वस्त्र आदि के मूल्य में तेजी तथा पूर्वी राज्यों में उपद्रव की आशंका रहेगी। खण्डवृष्टि का अच्छा योग है। मास के अन्त में व्यापकवृष्टि भी होगी। दुर्घटना एवं उपद्रव की संभावना है। मास फल मध्यम है।

आश्विनः—इस महीने में वस्त्र का भाव सस्ता तथा धातु पदार्थ, खनिज पदार्थ, खाद्य पदार्थ का भाव घटता बढ़ता रहेगा। महामारी का प्रकोप होगा। दक्षिण पश्चिम राज्यों में अशान्ति की संभावना रहेगी। साम्प्रदायिक उपद्रव तथा दुर्घटना भी हो सकती है। मास के पूर्वार्द्ध में साधारण वृष्टि योग भी है।

कार्तिकः—खाद्य पदार्थ एवं कपड़ा का भाव प्राय, सस्ता रहेगा किन्तु धातु पदार्थ, खनिज पदार्थ तथा मास के उत्तरार्द्ध में वस्त्र के भाव में तेजी आयेगी। आन्तरिक उपद्रव, चोरी, महामारी तथा हिंसा में वृद्धि होगा। सज्जन व्यक्ति दुःखी रहेंगे किन्तु शासक वर्ग शान्त्यर्थ प्रयत्नशील रहेंगे। पूर्वी या पश्चिमी सीमाओं पर उपद्रव की भी संभावना है। वृष्टि योग साधारण है।

अग्रहायणः—इस मास का फल शुभ है। राजा प्रजा में सौमनस्य, शान्तिमय वातावरण तथा खाद्यपदार्थ सस्ते होंगे किन्तु कपड़ा, खनिजपदार्थ, धातुपदार्थ, रसपदार्थ के भाव में तेजी मन्दी का क्रम रहेगा। आन्तरिक

उपद्रव कम होंगे किन्तु दक्षिण या पूर्वभागों में कुछ उपद्रव की संभावना रहेगी। अल्पवृष्टि योग भी है।

पौष:—इस महीने का फल साधारण है। धातु पदार्थ, खनिज पदार्थ, एवं रसादि पदार्थ के भाव में तेजी आएगीं। वस्त्र एवं श्वेतपदार्थ में तेजी-मन्दी का क्रम रहेगा। आन्तरिक उपद्रव, दुर्घटना एवं ठंढ़क का प्रकोप होगा। शस्त्रनिर्माण. युद्ध, कलह और उपलवृष्टि से क्षति की भी संभावना है।

माघ:—इस महीने में खाद्यपदार्थ सस्ता किन्तु धातुपदार्थ, खनिजपदार्थ, रसपदार्थ एवं वस्त्रादि का भाव महंगा रहेगा। शीत प्रकोप, वाहन दुर्घटना, आन्तरिक कलह, रोग भय एवं चोरभय की भी आशंका रहेगी। स्वल्प वृष्टि तथा उपल का योग भी है।

फाल्गुन:—इस महीने में ग्रहस्थिति मध्यम फलद है। धातुपदार्थ, खनिज पदार्थ तथा रसादि के भाव में तेजी रहेगी किन्तु वस्त्र, अन्न तथा तैलादि पदार्थ के भाव तेजी-मन्दी के क्रम में रहेंगे। उल्कापात, शासकवर्ग में मतभेद, आन्तरिक कलह, रोगभय तथा चोर का उपद्रव होगा। मास के अन्त मे साधारण वृष्टि योग भी है।

॥ अथ राशिफलन् ॥

मेष:—स्वास्थ्य सुख अनुकूल, पारिवारिक सुख, विरोध एवं इष्टसिद्धि में वाधा के वावजूद भी सफलता, श्रम, आर्थिक कठिनाई, मित्रों से विरोध आदिफल होगा किन्तु व्यापार एवं शिक्षा सम्बन्धी कार्यों में सफलता मिलेगी। राहु एवं वर्ष के पूर्वार्द्ध में बृहस्पति की उपासना लाभप्रद होगी। वर्षफल मध्यमोत्तम है।

वृष:—स्वास्थ्य की स्थिति अच्छी, पारिवारिक सुख मध्यम, आर्थिक कठिनाई, सन्तान को शारीरिक कष्ट, प्रतिष्ठा आदि फल होगा। शिक्षा तथा अन्य व्यावसायिक कार्यों में सफलता मिलेगी। मित्र सुख होगा। वर्ष के उत्तरार्द्ध में वृहस्पति की शान्ति करें। वर्षफल मध्यमोत्तम है

मिथुन:—स्वास्थ्य सुख में थोड़ी कमी रहेगी। पारिवारिक सुख में कमी, अकारण झंझट, इष्टसिद्धि में वाधा, व्यय तथा निरर्थक भ्रमण आदि फल होगा। पूर्वार्द्ध की अपेक्षा वर्ष के उत्तरार्द्ध मे इष्टसिद्धि, धर्मकार्य में रुचि, अर्थलाभ तथा झंझट से निवृत्ति आदि फल होगा। राहु, केतु एवं शनि की उपासना लाभप्रद होगी। वर्षफल सामान्य है।

कर्क:—वायुविकार, उदरपीड़ा तथा पाँव में व्रण या वायुविकार से कष्ट होगा किन्तु पारिवारिक सुख, स्त्री को वायु-व्रण पीड़ा, लाभ, इष्टसिद्धि, सन्तान सुख, व्यावसायिक कार्यों में बाधा के बाद सफलता, अकारण (साधारण) विरोध आदि फल होगा। राहु एवं केतु की शान्ति करें। वर्षफल सामान्य है।

सिंह:—झंझट, इष्टसिद्धि में बाधा, व्यय, मानसिक अशान्ति, अकारण विरोध, निरर्थक भ्रमण आदि नेष्ट. फल होगा। शनि की साढ़ेसाती चल रहा है। अत: शनिस्तोत्र पाठ, पूजा, कृष्णगोदर्शन, शनिवार को पीपल में जलदान तथा दीप दान दें। राहु की शान्ति भी आवश्यक है। वर्षफल शुभ नहीं है।

कन्या:—वायु विकार, उदर या छाती में दर्द, मानसिक अशान्ति, व्यय, झंझट, शत्रुकोप, स्थान परिवर्तन, इश्टसिद्धि में बाधा तथा पारिवारिक सुख में कमी आदि फल होगा। शनि की साढ़ेसाती चल रही है। अत: सिंह राशि वालों की तरह शनि की शान्ति करें। विलम्ब से कार्य होगा। वर्षफल शुभ नहीं है।

तुला:—विलम्ब से इष्टसिद्धि, अकारण विरोध, व्यय तथा निरर्थक भ्रमण, पारिवारिक सुख स्वल्प; भ्रातृ विरोध, मानसिक चिन्ता, शत्रुकोप, व्यवसाय में सामान्य लाभ आदि फल होगा। शनि की साढ़ेसाती चल रही है। अत: शनि तथा वर्ष के पूर्वार्द्ध में बृहस्पति की शान्ति करें। पूर्वार्द्ध की अपेक्षा उत्तरार्द्ध अनुकूल रहेगा। वर्षफल शुभ नहीं है।

वृश्चिक:—पारिवारिक सुख अनुकूल, स्वास्थ्य सुख, प्रसन्नता, व्यापार में लाभ, पदोन्नति, नव कार्यों में सफलता तथा प्रतिष्ठा आदि शुभफल होगा। विद्या व्यवसाय में सफलता मिलेगी। शत्रु पर विजय तथा इष्टसिद्धि होगा। वर्ष के उत्तरार्द्ध में गुरु की शान्ति करें। वर्षफल शुभ है।

धनु:—स्वास्थ्य सुख अनुकूल, पारिवारिक सुख मध्यम, आर्थिक स्थिति मध्यम, नवीन कार्यारंभ में सफलता, व्यापार में लाभ, पदोन्नति, विद्या व्यवसाय की स्थिति अच्छी, मित्र सुख, तीर्थाटन आदि फल होगा किन्तु वायु व्रण विकार तथा अकारण झंझट की संभावना रहेगी। राहु एवं केतु की शान्ति करें। वर्षफल शुभ है।

मकर:—पारिवारिक सुख में कुछ कमी, अभीष्टसिद्धि में वाधा के वाद सफलता, मित्र सहायता, भ्रमण, सतकार्य में व्यय, वाहन सुख तथा विद्या व्यवसाय में सफलता मिलेगी। वायु एवं व्रण विकार तथा मानसिक अशान्ति रहेगी। केतु एवं राहु की शान्ति करें। वर्षफल शुभ है।

कुंभ:—स्वास्थ्य सुख में कुछ कमी, मानसिक अशान्ति, भूतादिबाधा से उलझन, पारिवारिक सुख मध्यम तथा निरर्थक भ्रमण होगा। किन्तु नवीन कार्यों या इष्टसिद्धि में सफलता मिलेगी। सन्तान सुख होगा। शत्रु पर विजय होगा। वर्षफल मध्यमोत्तम है।

मीन:—स्वास्थ्य सुख में कुछ कमी, वायु विकार, पारिवारिक सुख मध्यम, आर्थिकलाभ के वाद भी अशान्ति एवं व्यय तथा निरर्थक भ्रमण आदि फल होगा किन्तु नवीन कार्यों में सफलता, इष्टसिद्धि, पदोन्नति तथा विद्या व्यवसाय में सफलता मिलेगी। सन्तान सुख तथा भ्रातृ सुख अनुकूल रहेगा। वर्षफल मध्यमोत्तम है।

॥ अथ दुर्वाक्षतदानमन्त्र: ॥

ॐ आब्रह्मन्ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामाराष्ट्रे राजन्य: शूर इषव्योऽतिव्याधी महारथो जायताम् दोग्ध्री धेनुर्वोढ़ाऽनड्वानाशु: सप्ति: पुरन्धिर्योषा जिष्णू रथेष्ठा: सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायताम्। निकामे निकामे न: पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ओषधय: पच्यन्ताम् योगक्षेमो न: कल्पताम्। ॐ मन्त्रार्था: सिद्धय: सन्तु पूर्णा: सन्तु मनोरथा:। शत्रूणां बुद्धिनाशोऽस्तु मित्राणामुदयस्तव ॥

॥ अथ यज्ञोपवीत धारणमन्त्र: ॥

वाजस०—ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापते र्यत्सहजं पुरस्तात्। आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेज:। छन्दोगानान्तु ॐ यज्ञोपवीतमसि यज्ञस्यत्वोपवीतेनोपनह्यामि ॥

यज्ञोपवीतत्यागमन्त्र:—एतावद्दिन पर्यन्तं ब्रह्मत्वं धारितं मया। जीर्णत्वात्त्वत्परित्यागो गच्छ सूत्र यथासुखम् ॥

॥ ग्रहाणां यजुर्वेदीया: शान्तिमन्त्रा: ॥

अथ सूर्यस्य—ॐ आकृष्णेन रजसा वर्त्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यञ्च हिरण्ययेन सविता रथेनादेवो याति भुवनानि पश्यन् ॥ चन्द्रस्य:—ॐ इमं देवा असपत्नग्वंसुवध्वं महते क्षत्राय महते ज्येष्ठ्याय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय। इमममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विश एष वोऽमी राजासोमोऽस्माकं ब्राह्मणानाऽञ्वंराजा ॥ कुजस्य ॐ अग्निमूर्द्धा दिव: ककुत्पति: पृथिव्या अयमपाग्वं रेताग्वंसि जिन्वति ॥ बुधस्य—ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वमिष्टा पूर्ते सग्वं सृजेथामयञ्च। अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत ॥ गुरो:—ॐ बृहस्पते अति यदर्यो अर्हाद्द्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु। यद्दीदयच्छवस ऋत प्रजात तदस्मासु द्रविणंधेहि चित्रम् ॥ भृगो:—ॐ अन्नात्परिश्रु तोरसं ब्रह्मणा व्यपिवत्क्षत्रं पय: सोमं प्रजापति: ऋतेनसत्यमिन्द्रियं विपानग्वंशुक्रमन्धस इन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतं मधु ॥ शने:—ॐ शन्नो देवीरभीष्टय आपो भवन्तु पीतये शंयोरभिस्रवन्तु न: ॥ राहो:—ॐ कयानिश्चत्र आभुव दूती सदावृध: सखा कया शचिष्ठया वृता ॥ केतो:—ॐ केतुं कृण्वन्न केतवे पेशोमर्या अपेशसे समुषद्भिरजायथा: ॥ इति ॥

॥ ग्रहाणां सामवेदीयशान्तिमन्त्रा: ॥

अथ सूर्यस्य:—ॐ उदुत्यञ्जातवेदसं देवं वहन्ति केतव: दृशे विश्वाय सूर्यम् ॥ चन्द्रस्य—ॐ सन्ते पयांसि समुयन्तुवाजा: संवृष्ण्याण्यभिमातिषाह: आप्यायमानो अमृताय सोम दिवि श्रवांस्युत्तमानिधिष्व ॥ कुजस्य: ॐ अग्निमूर्द्धादिव: ककुत्पति: पृथिव्या अयमपां रेतांसि जिन्वति ॥ बुधस्य:—ॐ आग्नेवित्रस्वदुषसश्चित्तं राध्यो अमर्त्य आदाशुषे जातवेदो वहात्वमद्या देवां उषर्बुध: ॥ गुरो:—बृहस्पते परिदीयारथेन रक्षोहामित्रां अपवाधमान: प्रभञ्जन्त्सेना: प्रमृणो युधाजयन्नस्माकमेध्यविता रथानाम् ॥ शुक्रस्य:—ॐ शुक्रन्ते अन्यद्यजतन्ते अन्यद्विषुरूपे अहनी द्यौरिवासि विश्वाहि माया अवसि स्वधावन् भद्रा ते पूषन्निह रातिरस्तु ॥ शने:—ॐ शन्नो देवीरभीष्टये शन्नो भवन्तु पीतये शंय्योरभिस्रवन्तु न: ॥ राहो:—ॐ कयानश्चित्र आभुवदूती सदा वृध: सखा कया शचिष्ठया वृता ॥ केतो:—ॐ केतुं कृण्वन्न केतवे पेशोमर्य्या अपेशसे समुषद्भिरजायथा: ॥ इति ॥

॥ अथ ग्रहाणां तान्त्रिकमन्त्राः ॥

अथ सूर्यस्य–ॐ घृणिःसूर्यं आदित्य ॥ चन्द्रस्य–ॐ सों सोमाय नमः ॥ कुजस्य–ॐ अं अंगारकाय नमः ॥ बुधस्य–ॐ बुं बुधाय नमः ॥ गुरोः–ॐ बृं बृहस्पतये नमः ॥ शुक्रस्य–ॐ शुं शुक्राय नमः ॥ शनेः–ॐ शं शनैश्चराय नमः राहोः–ॐ रां राहवे नमः ॥ केतोः–ॐ कें केतवे नमः ॥

ग्रहाणां समधिः–अर्कः पलाशः खदिरस्त्वपामार्गोऽथ पिप्पलः ॥ औदुम्बरः शमी दूर्वा कुशाश्च समिधः क्रमात् ॥

शाकल्य निर्माणम्ः–तिलार्द्धं तण्डुलाः प्रोक्तास्तण्डुलार्द्धं यवाः स्मृता. ॥ यवार्द्धं शर्करा प्रोक्ता सर्वार्द्धन्तु घृतंस्मृतम् ॥

छन्दोगानां देवता-प्राणप्रतिष्ठा मन्त्रः–ॐ वाङ्मनः प्राणापानौ व्यानश्चक्षुः श्रोत्रं शर्म्मवर्मभूतिः प्रतिष्ठा ॥

वाजसनेयिनां देवता-प्राणप्रतिष्ठामन्त्रः–ॐ मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञव समिमं दधातु । विश्वेदेवा स इह मादयन्ताम् ॐ प्रतिष्ठ ॥

अथ शुभदिनानि–चन्द्र बुध गुरु शुक्रदिनानि । शुभतिथयः–२,३,५,७,१०,११,१२,१३,१५ ।

शुभनक्षत्राणि–अश्वि., रो, मृ., पुन., पु., ह., चि., स्वा., श्र., रे. । शुभलग्नानि राशयश्च–वृष, मिथुन, कर्क, कन्या, तुला, धनु, मीन ।

ग्रहकृतारिष्टशमनाय सौषधजलस्नानम्–

लज्जावती, कुष्ठः (कुढ),वला (वरियार), प्रियंगुः (काउनी), घनः (मोथा), सर्षपः, हरिद्रा, देवदारुः, पुंखा (सहरफोका), लोध्रं--एतैरौषधैर्युतजले पुष्पाक्षतदूर्वाश्रीखंड रक्तचन्दन-धान्य-शतावरी-तीर्थोदक-सप्तमृत्तिका-तिल-यव-पञ्चगव्य-ताम्बूल-पञ्चपल्लव-पञ्चरत्नादीनि प्रक्षिप्यतैर्जलैः स्नायात् । एवंकृते दुष्ट-ग्रहसूचितारिष्टनाश इष्टसिद्धिश्च ।

अथार्द्धप्रहरावोधक चक्रम्

दिन.	सू.	च.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.
दिने	४।५	७।२	२।६	३।५	७।८	३।४	१।६।८
रात्रौ	४।६	४।७	०।२	५।७	५।८	०।३	१।६।८

ग्रहाणाभरिष्टहरत्वम्

राहुदोषं बुधो हन्यादुभयोस्तु शनैश्चरः ।
त्रयाणां भूमिजो हन्ति चतुर्णां दानवार्चितः ।
पञ्चानां देवमन्त्री च षण्णां दोषन्तु चन्द्रमा ।
सप्तदोषं रविर्हन्ति विशेषादुत्तरायणे ।
शुक्रो दशसहस्राणि बुधो दशशतानि च ।
लक्षमेकं तु दोषाणां गुरुर्लग्ने व्यपोहति ।

॥ अथ योगिनीवासो युद्धयात्रायाम् ॥

तत्र वामपृष्ठगता योगिनी शुभा, दक्षिण सम्मुखगा चाशुभा ।

तिथयः	१।९	३।११	५।१३	४।१२	६।१४	७।१५	२।१०	८।३०
दिशाः	पू.	अ.	द	नै.	प.	वा.	उ.	ई.

अथ गर्भाधान मुहूर्त्तः

रो. मृ. उतरा ३, ह. स्वा. अनु. श्र. ध. श. चि. पुन. पु. अश्वि. नक्षत्रेषु, १,२,३,५,७,१०,११,१२,१३ तिथुषु च. बु. बृ. शु. वारेषु, रात्रौ रजोदर्शनानन्तरं चतुर्थरात्रितः १२ रात्रिं यावत् । शुभैः केन्द्रत्रिकोणैः पापैस्त्र्यायारिगैः पुंग्रहदृष्ट लग्ने, चन्द्रे विषमांशगे युग्मराशौ शुभम् ।

अथ सीमन्तपुंसवनयोर्मुहूर्त्तः

पुंसवनं गर्भतस्तृतीये मासि कार्यम् । सीमन्तोन्नयनं च षष्ठेऽष्टमे वा मासि मासाधिपतौ सवले कार्यम्. मृ. पुष्य. मूल. श्रव. पु. ह. रो. रे. उत्तरा ३, (जन्मर्भंविना) नक्षत्रेषु १,२,३,५,७,१०,११,१३ तिथषु, शुक्लपक्षे कृष्णे १० यावत् । सू. मं. बृ. वारषु मतान्तरेण शु. चं. अपि. पूर्वाह्णे । पुंभस्यांगे तदंशे शुभम् । तत्र पापैः ३।६।११ स्थितैः, शुभैः १।४।५।७।९।१० स्थितैः, चन्द्रे २।३।४।५।७।९।१०।११ स्थिते, ४।८।१० पापरहितैः शुभम् ।

अथ जातकर्मणि शुभमुहूर्त्तः

जातकस्य ग्रहदोषनाशाय आयुःश्रीवृद्धये च जन्मकाल एवं जातकर्म पिता कुर्यात् । तदतिक्रमणे एकादशे वा द्वादशेऽह्नि मृ, चि, अनु, रे, उत्तरा ३, रो, अश्वि, पुन, पु, स्वा, श्र, ध, श, भेषु, पूर्णिमा विहाय शुभतिथिदिनलग्नेषु शुभम् ।

अथ शिशोर्दुग्धपाने शुभमुहूर्त्तः

अश्वि. रो, मृ, पुन, पु, उत्तरा ३, ह, चि, अनु, श्र, ध, श, रे, नक्षत्रेषु, शुभतिथिषु, शुभदिनेषु, वृष सिंह वृश्चिक कुम्भलग्नेषु स्तनपानं शुभं शिशोः । अथान्नप्राशनोक्त दिनतिथिनक्षत्रेषु सूतिका पथ्यं शुभम् । भैषज्योदित तिथिदिन नक्षत्रेषु क्वाथग्रहणमौषधिभक्षणञ्च शुभं वेद्यम् ।

अथ सूतिकास्नाने शुभमुहूर्त्तः

अश्वि, रो, मृ, ह, स्वा, अनु, उत्तरा ३ रे, नक्षत्रेषु, रवि, मङ्गल, वृहस्पति वारेषु, शुभलग्ने शुभदृग् युते । १।२।३।५।७।१०।११।१३।१५ तिथिषु सुतिकास्नानं शुभम् । आश्ले, पूर्वा ३ ज्ये, ध, श, नक्षत्रेषु मध्यमम् ।

प्रसूति-नखच्छेदन-मुहूर्त्तः–अश्वि, रो, मृ, पुन, पु, उत्तरा ३ ह, चि, स्वा, वि, अ, ज्ये, श्र, ध, श, रे, भेषु, ३।५।७।१०।११।१३ तिथिषु ३।५।६।७।८।११ लग्नेषु, शुभदिनेषु पूर्वाह्णे शुभम् ।

स्त्रीणां लाक्षाभरणधारण-मुहूर्त्त–भ, आ, श्ले, म, वि, श, रहितनक्षत्रे शनिमङ्गल रहित दिने शुभ तिथौ स्त्रीणां लाक्षाभरण (लहठी) धारणं शुभम् ।

शिशुनिष्क्रमण-मुहूर्त्तः–जन्मतश्चतुर्थे मासि यत्रोक्तदिवसेऽर्कमितेऽह्निवा शुभम् ।

अथ शिशोर्भूम्युपवेशन-मुहूर्त्तः

आदौ पृथ्वीं वराहञ्च सम्पूज्य कुजवले पञ्चमे मासि उत्तरा ३ रो, मृ, ज्ये, अनु, अश्वि, ह, पुष्य, अभि, नक्षत्रेषु, रिक्ताम रहि तिथिषु, शुभदिने, वृष, सिंह, वृश्चिक, कुम्भलग्नेषु शिशोः कटिप्रदेशे कटिसूत्रं बद्ध्वा पृथिव्यामुपवेशयेत् । तन्मन्त्रः–रक्षैनं वसुधे देवि सदासर्वगतं शुभम् । आयुः प्रमाणं सकलं निक्षिपस्व हरिप्रिये । अत्रैव शिशोरग्रे वस्त्रं शस्त्रं लेखनीं पुस्तकं सुवर्णं रौप्यञ्च स्थाप्यम् । तेषु बालो यं गृह्णाति तैस्तस्य वृत्तिः ज्ञातव्येति ।

शिशु विलोकन-मुहूर्त्तः–तृतीयेमासि शुभतिथिदिननक्षत्रेषु पुष्पफल वस्त्रादिभ्यादिना शिशुदर्शनं शुभम् ।

अथ नामकरणे शुभमुहूर्त्तः

विप्राणां ११, क्षत्रियाणां १३, वैश्यानां १६, शूद्राणां ३१ तम दिने नामकरणं शुभम् । अथवा स्वा. पुन, श्र, ध, श, ह, अश्वि, पु, अभि, उत्तरा ३ रो, मृ, रे, चि, अनु. नक्षत्रेषु, १।२।३।५।७।१०।११।१२।१३ तिथिषु, चं, बु, बृ, शु, दिनेषु, पूर्वाह्णे शुभम् । मध्याह्ने मध्यमम् । शुभलग्ने, शुभैः १।४।५।७।९।१० स्थैः, पापैः ३।६।११ स्थैः ६।८ गृहे शुद्धे, चन्द्रे २।३।५।९।१० स्थिते, लग्ने शुभांशे पितृपुत्रयोश्चन्द्रतारानुकूले, उत्तरायणे, शुद्ध समये शुभं नामकरणम् ।

अथान्नप्राशने शुभमुहूर्त्तः

कन्यकानां पञ्चममासतो विषममासेषु, लालकानां षष्ठात्सममासेषु रो, उत्तरा ३ मृ, रे, चि, अ, स्वा, पुन, श्र, ध, श, ह, अश्वि, पुष्य, अभि, नक्षत्रेषु २।३।५।७।१०।१३।१५ तिथिषु, चं, बु, बृ, शु, दिनेषु, शुक्ले पक्षे, पूर्वाह्णे २।३।४।५।६।७।९।१०।११ लग्नेषु, एषु जन्मलग्नराश्योरष्टमलग्नमंशं च त्यजेत् । शुभैः १।४।५।७।९।१० स्थितैः पापैः ३।६।११ गतैः दशमस्थाने ग्रहरहिते शुभदृग्युतलग्ने, ४।८।६।१२ रहिते चन्द्रे अन्नप्राशनं शुभम् ।

अथ कर्णवेधे शुभमुहूर्त्तः

१।२।३।५।६ ७।८।१०।११।१२।१३।१५ तिथिषु, शुक्लपक्षे, कृष्णे ५ यावत्, चं, बु, बृ, शु, दिनेषु, जन्मतारां विहाय मध्याह्ने, श्र, ध, पुन, ह, अश्वि, पुष्य, अभि, मृ, रे, चि, अनु, नक्षत्रेषु, १२।१६ दिने, ३।७।८ मासे वा विषम वर्षे, चैत्रपौषहरिशयनरिक्तासमवर्षाणि त्यक्त्वा २।३।४।६।७।९।१२ लग्नेषु, शुभैः १।४।५।७।९।१० गतैः, पापैः ३।६।११ गतैः, लग्नस्थे गुरौः, चोत्तमः । चन्द्रबले सति शुभः ।

अथ चूड़ाकरणे (मुण्डने-आद्यकचकर्त्तने) शुभमुहूर्त्तः

चैत्ररहित माघादि ६ मासे, ज्येष्ठाग्रहणयोः (ज्येष्ठ संतानं विना), विषमवर्षे अश्वि, मृ, पुन, पुष्य, ह, चि, स्वा, ज्ये, अभि, श्र, ध, श, रे, नक्षत्रेषु, चं, बु, बृ, शु, वारेषु, २।३।५।७।१०।११।१३ तिथिषु, शुक्लपक्षे कृष्णे ५ यावत् २।३।४।६।७।९।१२ एतद्राशेर्लग्नांशे, शुक्रविवर्जिताष्टमशुद्धे, पापैः ३।६।११ गतैः शुभैः १।४।५।७।९।१० गतैः, जन्मराशिलग्नयोरष्टमान्यतम लग्ने, ४।६।८।१२ रहितचन्द्रे शुभम् ।

अथाक्षरारम्भे शुभमुहूर्त्तः

उत्तरायणे पञ्चमेवर्षे (बालो यदि-क्षमस्तदा तत्पूर्वमपि) गणेश, विष्णु, सरस्वती, लक्ष्मी कुलदेव ग्रामदेवान् विधिवत्सम्पूज्य प्रथमाक्षरारम्भो विधेयः । अश्वि, आर्द्रा, पुन, पुष्य, ह, चि, स्वा, अनु, अभि, श्र, रे, नक्षत्रेषु २।३।५।६।१०।११।१२ तिथिषु, शुक्लेपक्षे, कृष्णे ५ यावत् । चं, बु, बृ, शु, दिनेषु वृष, मिथुन, कन्या, धनु, मीनलग्नेषु, तन्नवांशे चोत्तमः । कुम्भांशकं विनाऽष्टम शुद्धे खेऽस्ते गुरुबुधे, शुक्रे लग्ने ग्रहवलाढ्ये शुभः ।

अथ विद्यारम्भ मुहूर्त्तः

अथोत्तरायणे गणेशं विष्णुं लक्ष्मीं सरस्वतीञ्च सम्पूज्य अक्षरग्रहणे दृढे सञ्जाते विद्यारंभः कार्यः। सूर्यबुधगुरु-शुक्रवारेषु, २।३।५।६।१०।११।१२ तिथिषु, अश्वि, मृ, आर्द्रा, पुन, पुष्य, आश्ले, ह, चि, स्वा, मूल, पूर्वा ३ श्र, ध, श, नक्षत्रेषु, शुक्लपक्षे, कृष्णे ५ यावत्, लग्नाष्टम शुद्धे, शुभैः १।४।५।७।९।१० गृहगतैः, पापैः ३।६।११ गतैः वृषमिथुनकन्याधनुमीनान्यतम लग्ने तदंशे वा विद्यारंभः शुभावहः।

अथोपनयने (व्रतवन्धे) शुभमुहूर्त्तः

शुद्धसमये, उत्तरायणे, माघादि षण्मासेषु, सू, चं, बु, वृ,शु, वारेषु, (सामवेदिनां मंगलवारेऽपि), जन्ममासनक्षत्रादौ व्रतं शुभम्। २।३।५।१०।११।१२ तिथिषु, शुक्लपक्षे, पुर्वाह्णे मध्याह्ने च शुभम्। मकरार्के पौषे ११।१२ मकरार्के माघे १२, चैत्रे वैशाखे च तृतीया, वैशाखभिन्नमासानां द्वितीया, आषाढे १०'११ चोपनयने निषिद्धाः। अश्वि, रो, मृ, आर्द्रा, पुष्य, आश्ले, पूर्वा' ३ उत्तरा ३' ह, चि, स्वा, अनु, मू, श्र, ध, श, रे, नक्षत्रेषु (क्षत्रियवैश्ययोः पुनर्वसावपिशुभम्)। ब्राह्मणानां पुनर्वसुनक्षत्रे उपनयनं निषिद्धम्। मन्वादि युगादिषु, अपराह्णे, सायं, प्रदोषे, कृष्णपक्षे चोपनयनं निषिद्धम् त्रिषडस्थाः खलाः सर्वे, चन्द्रोद्विद्यू-नदिकविगः। सौम्याः केन्द्र त्रिकोणस्थाः, लाभे सर्वे व्रते शुभाः। लग्नेशचन्द्रशुक्रगुरवश्च षडष्टगा न शुभाः। चन्द्रशुक्रौ लग्नात् १२ गतौ न शुभौ ॥१।५।८ स्थाः पापा न शुभा ॥६'८।१२ गताः शुभा न शुभप्रदा, ३,६'११ गताः पापाः शुभदाः। पूर्णचन्द्रो वृषकर्कलग्नगतो शुभो नान्यथा। लग्नऽर्कः शुभः। जन्मेराशित उपनयनकाले २।५।७।९।११ स्थानगतो गुरुः शुभः ॥४।१०।१२ स्थानगतः शान्त्या शुभः ॥१।३।६।८ स्थानगतो निषिद्धः॥ रामाचार्यमतेन १।३।६।१० स्थानगतः शान्त्या शुभः ४।८।१२ स्थानगतः निषिद्ध। ब्राह्मणानां पञ्चमवर्षतः षोडशवर्षपर्यन्तं, क्षत्रियाणां षट्वर्षादारभ्यद्वाविंशति वर्षपर्यन्तं वैश्यानामष्टवर्षादारभ्य चतुर्विंश-तिवर्षं पर्यन्तमुपनयनकालः। तत्रोपनयनारम्भकालात्सर्वेषां यथोत्तरगौण कालोऽतः समये प्राप्ते सति यथापूर्व-मुपनयनं कार्यम्।

अथ प्रदोष निर्णय.—यदा तृतीयाया प्रहरराव्यभ्यन्तरे चतुर्थी, द्वादश्यां यदा मध्यराव्यभ्यन्तरे त्रयोदशी एवञ्च षष्ठ्यां यदा सार्द्धप्रहर राव्यभ्यन्तरे सप्तमी तिथिर्भवेत्तदा प्रदोषोऽवगन्त्यः तत्रोपनयनं निषिद्धम्।

अथ विवाह विहित मुहूर्त्तः

अग्र, माघ,फा, वै, ज्ये,आषाढ मासेषु (सौरक्रमेण), (आषाढे हरिशयनात्प्रागेव) १।२।३।५'६।७।८।१० ११।१२।१३।१५ तिथिषु, सु, चं, बु, वृ, शु, वारेषु, अश्वि, रो, मृ, म, उत्तरा ३, ह, चि, स्वा, अनु, मू, श्र, ध, रे, नक्षत्रेषु पञ्चशलाका वेधरहितेषु, वृष, मिथुन, कन्या, तुला, धनु, मीन, लग्नेषु, शुभग्रहेषु १।४।५।७।९।१० स्थितेषु, पापेषु ३।६।११ गतेषु शुभः। विवाहकाले १।४।५।७।९।१० स्थानेषु यदि गुरुर्वा शुक्रो भवेत् तदा सकलदोषं नाशयति। ज्येष्ठा कन्या, ज्येष्ठोवरः ज्येष्ठमासञ्च त्रिज्येष्ठसंज्ञकस्तत्र विवाहो न कार्यः। ज्येष्ठकन्यावरयोः ज्येष्ठमासे विवाहो निषिद्धः। ज्येष्ठद्वयं मध्यमं स्यात्। आवश्यके कृत्तिकास्थं सूर्यं त्यक्त्वा ज्येष्ठवरकन्ययोः ज्येष्ठेऽपि विवाहः शुभः।

अथ वरवरण मुहूर्त्तः

शुभदिनतिथिलग्नेषु, कृत्तिकारोहिण्युत्तरात्रयपूर्वात्रयनक्षत्रेषु विवाहोक्तभेषुच फलपुष्पवस्त्रादिना वरवरणं शुभम्।

अथ कन्यावरण मुहूर्त्तः

शुभतिथिदिनलग्नेषु, कृत्तिका-पूर्वात्रयनक्षत्रेषुविवाहोक्तभेषुचफलपुष्पवस्त्रादिभिः कन्यावरणं शुभम्।

अथ विवाहोपनयनादौ मण्डपादिनिर्माण मुहूर्त्तः

तत्र चन्द्रतारानुकुले दिने विवाहमुहूर्त्ते वैवाहिकं कार्यं उपनयनादि मूहूर्त्ते चोपनयनादि संवद्ध कार्यं विधेयम्। परञ्च विवाहदिनादुपनयनादि दिनाद्वा त्रिषण्नवमिते पूर्वदिने तत्कार्यं न कर्त्तव्यमिति।

महामृत्युञ्जयमन्त्रस्य जपविधिः—गणेशस्मरणपूर्वकं शान्तिपाठं कृत्वा कुशतिलजलान्यादाय संकल्पः—ॐ अद्य अमुकेमासि अमुकेपक्षे अमुकतिथौ अमुकगोत्रस्यास्य श्री अमुकशर्म्मणः उपस्थितशरीराविरोधेनाखिलारिष्ट झटितिप्रशमन पूर्वक दीर्घायुष्टबलपुष्टिनैरुज्य प्राप्तिकाम अद्यारम्भ यथाकालं यजुर्वेदान्तर्गत माध्यन्दिन शाखीय "ॐ हौं ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः, त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् भूर्भुवः स्वरों जूंसः हौं ॐ" इति महामृत्युञ्जयमन्त्रस्य एतत्सहस्त्रसंख्यक जपमहंकरिष्यामि। ऋष्यादिन्यासः—वामदेवकहोल वशिष्ठा ऋषयः शिरसि। पंक्तिगायत्री अनुष्टुप्छन्दांसि मुखे। सदाशिवमहामृत्युञ्जयरुद्रदेवतायै नमः हृदि। ह्रीं शक्तये नमः लिङ्गे। श्रीं बीजाय नमः पादयोः। ॐ हौं ॐ जूंसः (समस्तमन्त्रः) अस्य श्री महामृत्युञ्जय मन्त्रस्य वामदेव कहोल वशिष्ठा ऋषयः पंक्तिगायत्र्युष्णिगनुष्टुप् छन्दांसि सदाशिवमहामृत्युञ्जयरुद्रो-देवता ह्रीं शक्तिः श्रीं बीजं महामृत्युञ्जय प्रीतये ममाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः। ॐ हौं ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकम् ॐ नमो भगवते रुद्राय शूलपाणये स्वाहा हृदयाय नमः। ॐ हौं ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः यजामहे ॐ नमो भगवते रुद्राय अष्टमूर्तये मां जीवय शिरसि स्वाहा। ॐ हौं ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः सुगन्धि पुष्टिवर्धनम्, ॐ नमो भगवते रुद्राय चन्द्रशिरसि जटिने स्वाहा शिखायै वषट्। ॐ हौं ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः उर्व्वारुकमिवबन्धनात् ॐ नमो भगवते रुद्राय त्रिपुरान्तकाय ह्रां ह्रीं ह्रौं कवचाय हुम्। ॐ हौं ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः मृत्योर्मुक्षीय ॐ नमो भगवतेरुद्राय त्रिलोचनाय ऋग्यजुः साममन्त्रत्रयाय नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ हौं ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः मामृतात् ॐ नमो भगवतेरुद्राय अग्नित्रयाय उज्ज्वलज्वालाय मां रक्ष रक्ष अघोराय अस्त्राय फट्। इति षडङ्गन्यासः। ततः "चन्द्रोद्भासितमूर्द्धजं सुरपतिं पीयूषपात्रं वहद्धस्ताब्जेन दधत्सुदीप्तममलं हास्यास्यपङ्केरुहम्। सूर्येन्द्वग्नि-त्रिलोचनं करतले पशाक्षसूत्रां कुशाम्भोजं विभ्रतमक्षयं सुरपतिं मृत्युञ्जयं संस्मरेत्" इत्यनेनध्यात्वा यथोपचारैः सम्पूज्य मन्त्रं जपेत्। जपसमाप्तौ च शाकल्यादिभिर्दशांशक्रमेण होमतर्पणसेकमार्जनब्राह्मणभोजनं च कारयेत्। लघुमृत्युञ्जयमन्त्रः—ॐ जूंसः॥

अत वधूप्रवेशे शुभमुहूर्त्तः

विवाहदिवसात्षोडशदिनमध्ये समदिने पञ्चम सप्तम नवमदिने च ततो मासमध्ये विषमदिने ततो वर्षाभ्यन्तरे विषममासे चैत्र पौष-भाद्र मलमास-क्षयमासभिन्न समये वधू प्रवेशः प्रशस्तः। नात्र शुक्रविचारः कालविचारो वा। १।२।३।५।६।७।८।१०।११।१२।१३।१५ तिथिषु च, वृ, शु, श, वारेषु मतान्तरेण बुधेऽप्यावश्यके। अश्वि, रो, मृ, पुष्य, म, उत्तरा ३, ह, चि, स्वां, अनु,मू, श्र, ध, रे, नक्षत्रेषु २।३।५।६।७।८।९।११।१२ लग्नेषु। शुभैः १।२।५।७।१०।११ स्थितैः। पापैः ३।६।११ स्थितैः। चतुर्थाष्टम शुद्धे शुभः।

अथ नववध्वाः पाकारम्भे शुभमुहूर्त्तः

मृ, उत्तरा ३, पुष्य, कृ, री, वि, ज्ये, श्र, ध, श, रे, नक्षत्रेषु, बु, वृ, श, वारेषु, शुभतिथौ, शुक्लपक्षे। कृष्णे ५ यावत्। २।५।८।११ लग्नेषु। लग्नात् चतुर्थाष्टमगृहे शुद्धे। शुभे वलान्विते सप्तमस्थे शुभः।

अथ द्विरागमने शुभमुहूर्त्तः

अश्वि, रो, मृ, पुन, पुष्य, उत्तरा ३, ह, चि, स्वा, अनु, मू, श्र, ध, श, रे, नक्षत्रेषु, १।२।३।५।६।७।८।१०।११।१२।१३।१५ तिथिषु, शुक्लपक्षे, कृष्णे ५ यावत्। सू, चं, बु, वृ, शु, वारेषु मृत्यु-योगादिरहितेषु। २।३।६।७।१२ लग्नेषु शुभयुक्ते क्षितेषु। शुक्रे १।४।७।१० गते। जीवे ३।६।१०।११ गते। पापैः ३।६।११ स्थितैः शुभम्। विषमवर्षे सौरक्रमेणाग्रहणफाल्गुनवैशाखमासेषु शुक्रबाल्यास्तवृद्ध-त्वभिन्नकाले, वामपृष्ठगते शुक्रे, शुक्रोदिते, द्विरागमः शुभः'। प्रथमवर्षे न शुक्रविचारः कार्यः। तृतीयादि विषमवर्षे शुक्रविचारो विधेयः। शुक्रान्ध्य विहित नक्षत्रेषु (रे, अश्वि, रो, मृ,) सम्मुखदक्षिणशुक्रेऽपि द्विरागमनं शुभम्। व्यतीते पञ्चमे वर्षे न शुक्रविचारो न वा मूहूर्त्तविचारः। तदानी यस्मिन् कस्मिन्नपि शुभतिथिदिननक्षत्रयुक्तेकाले द्विरागमनं शुभम्।

अथ वापीकूपतडागादिखनन मुहूर्त्तः

रो, मृ, पुष्य, म, उत्तरा ३, ह, अनु, पूषा, ध, श, रे, नक्षत्रेषु शुभतिथिदिनेषु, ४।१०।११।१२ लग्नेषु राशौ च॥ शुक्रे दशमस्थे। गुरुबुधयोरन्यतरस्यलग्ने, पापैः निर्वलैः शुभैः सुवलिभिः शुभम्।

अथ जलाशयवाटिकादेवादिप्रतिष्ठा मुहूर्त्तः

उत्तरायणे, शुद्धसमये, शुक्ले पक्षे सू, चं, बु, वृ, शु, वारेषु १।२।३।५।६।७।८।१०।११।१२।१३।१५ तिथिषु। मृ, रे, चि, अनु, ह, अश्वि, पृष्य, स्वा, पुन, श्र, ध, शं, रो, उत्तरा ३ नक्षत्रेषु। अथवा प्रतिष्ठाप्यदेवताकथितदिननक्षत्रेषु देवादिप्रतिष्ठा शुभा॥ सिंहे सूर्य, कुम्भे ब्रह्माणं, मिथुने शङ्करं स्थापयेत्। द्विस्वभावे देव्यः, चरलग्ने च योगिन्यः स्थापनीयाः। सर्वे स्थिरलग्नेषु स्थाप्याः। चन्द्र पापैः ३।६।११ स्थितैः, शुभैः १२।८ भिन्नस्थानगतैः, देवादि प्रतिष्ठा शुभा। ग्रहाः पुष्ये, बुद्धः श्रवणायां, गणेशादयो रेवत्यां स्थाप्याः। भगवतः देवोत्थानैकादश्यां, रामनवम्यां, देव्या नवरात्रौ दीपमालिकायां शङ्करस्य शिवरात्रौ वा शुभं प्रतिष्ठापनम्।

कूपचक्रं रोहणीभात्

स्थान	न.	फलानि
मध्य	३	शीघ्रस्वादु.
पूर्व	३	निर्जलम्
अग्नि	३	शीघ्रजल
दक्षिण	३	निर्जल
नैर्ऋ	३	निर्मलजलम्
पश्चिम	३	शीतलजलम
वायु.	३	जलहानिः
उत्तर.	३	मधुरजलम्
ईशान.	३	क्षारजलम्

अथवा सूर्यर्क्षादप्येवमेव गणनीयम्

सूर्यभात्तडागचक्रम

स्थान	न.	फलानि
पूर्व	२	जलशोषः
अग्नि	३	वहजलम
दक्षिण	२	जलहानिः
नैर्ऋ	२	अमृतजलम
पश्चिम	३	स्वादुजलम
वायु.	२	निर्जलम
उत्तर	३	स्थिरजलम
ईशान	३	नष्टजलम
मध्य	५	पूर्णजलम
वाह्य	३	अमृतजलम

अथ रोहिणी नक्षत्राद्वापी चक्रम्

स्थानम्	न.	फलानि
पृष्ठे	४	शुभजलम
नाभौ	४	बुद्धिनाशः
हृदि	८	स्थिरता
मध्ये	४	कलहः
नेत्रयोः	४	धनागमम्
पादयोः	८	दुःखम्

हवनचक्र सूर्यभात

न.	ग्रह	फलानि
३	सू.	अशुभ
३	बु.	शुभ
३	शु.	शुभ
३	श.	अशुभ
३	च.	शुभ
३	म.	अशुभ
३	वृ.	शुभ
३	रा.	अशुभ
३	के.	अशुभ

अथ बीजवपने फणिचक्रं राहुनक्षत्रात्

नक्षत्र	८	३	१	३	१	३	१	३	४
फल	अशुभ	शु.	अशुभ	शु.	अशुभ	शु.	अशुभ	शु.	अशुभ

अथ हलचक्रमर्कमुक्त भात्

नक्षत्र	३	८	९	८
फल	अशुभ	शुभम	अशुभ	शुभम

अथ (वास्तु) गृहारम्भे शुभ मुहूर्त्ताः

वैशाख, आषाढ़ (पशुगृह त्यक्त्वा) कार्तिक, अग्रहण, फाल्गुन, श्रावण (सौरक्रमेण) मासेषु। सम्मुखकालवर्जितसमये। २।३।५।७।१०।११।१२।१३।१५ तिथिषु। शुक्लेपक्षे। कृष्णे ५ यावत्। अश्वि. रो. मृ. पुन. पुष्य. उत्तरा ३. ह. चि. स्वा. अनु. मू. श्र. ध. श. रे. नक्षत्रेषु। चं. बु. वृ. शु. श. वारेषु॥ शुद्ध समये॥ शुद्धे वृषवास्तु चक्रे, पृथ्वीशयननक्षत्ररहित नक्षत्रेषु। २।३।५।६।८।९।११।१२ लग्नेषु। लग्ने शुभदृग्युते। शुभैः १।४।५।७।९।१० स्थितैः। पापैः ३।६।११ स्थितैः। ८।१२ ग्रहरहिते शुभः। तृणकाष्ठादि गृहनिर्माणमशुद्धेऽपि परञ्च इष्टिकादि गृहनिर्माणं शुद्ध समय एवं। देवालय मठादि निर्माणमप्येष्वेव मुहूर्त्तेषु शुद्धसमये।

देवालयगृहारंभजलाशयारंभे खातदिग्ज्ञानम्।

खातदिक	नैर्ऋत्यां	आग्नेय्याम	ऐशान्यां	वायव्यां
देवालयारम्भे	ध.म.कु.सूर्ये	मी.मे.वृ. सूर्ये	मि.क.सि. सूर्ये	क.तु.वृ. सूर्ये
जलाशयारम्भे	तु.वृ.ध.सूर्ये	म.कु.मी. सूर्ये	मे.वृ.मि. सूर्ये	क.सि.क. सूर्ये
गृहारम्भे	वृ.मि.क.सूर्ये	सि.क.तु. सूर्ये	वृ.ध.म. सूर्ये	कु.मी.मे. सूर्ये

गृहप्रवेशे कुम्भ चक्रमर्कभात

स्थान	न.	फलानि
मु.	१	अग्निदाह
पू.	४	उद्वसनम
द.	४	लाभः
प.	४	धनम्
उ.	४	कलह
म.	४	विनाश
अ.	३	स्थिरता
क.	३	स्थिरता

गृहारम्भे वृषचक्रमर्कभात्

स्थान	न.	फलानि
शीर्षे	३	अग्निभयम
अ. पा.	४	शून्यम
पृ. पा.	४	स्थैर्यम
पृष्ठे	३	धनम
द. कु.	४	लाभ
पृ.	३	नाशः
वा. कु.	३	धननाशः
मुखे.	३	दुःखम

अथ तिथीनां नन्दादिसंज्ञा

संज्ञाः	नन्दा	भद्रा	जया	रिक्ता	पूर्णा	सिनीवाली	कुहू.
तिथयः	१।६।११	२।७।१२	३।८।१३	४।९।१४	५।१०।१५	दृष्टेन्दुमा	नष्टेन्दुमा

अथ गृहप्रवेशे शुभ मुहूर्त्ताः

वैशा. आषा. कार्ति. अग्र. फाल्गुन. श्रावणमासेषु २।३।५।७।१०।११।१२।१३।१५ तिथिषु। शुक्लपक्षे। कृष्णे ५ यावत्। अश्वि. रो. मृ. पुन. पुष्य. उत्तरा ३. ह. चि. स्वा. अ. मू. श्र. ध. श. रे. नक्षत्रेषु। चं. बु. वृ. शु. श. वारेषु। शुद्ध समये। शुद्धे कुम्भ चक्रे। २।५।८।११ लग्नेपूत्तमः॥ ३।६।९।१२ मध्यमः॥ जन्मराशिलग्नाभ्यामुपचय (३।६।१०।११) राश्यंशयोः स्थिरराशौ, लग्नात् १।२।३।५।७।९।१०।११ स्थानेषु शुभाः॥ ३।६।११ स्थानेषु पापाः॥ ४।८ भवने ग्रहरहिते, संमुखकालरहित समये शुभः इष्टकादि गृहप्रवेशः शुद्धसमये। तृणकाष्ठादिनिर्मित गृहप्रवेश अशुद्धसमयेऽपि शुभः। अग्नि भये राजकोपे दैविके प्रकोपे सति यस्मिन् कस्मिन् शुभमुहूर्त्ते गृहारंभो गृहप्रवेशश्च कार्यः।

अथ चरणि विचारः—स्वामिहस्तप्रमाणेन दीर्घविस्तार संयुतम्। अष्टभिश्च हरेद् भागं शेषं चरणिरुच्यते। पशुहानिः पशोरोगः पशुलाभः पशुक्षयः। पशुनाशः पशोर्वृद्धिः पशुभेदो वहुपशुः।

अथ पृथ्वी शयननक्षत्राणि

सूर्यस्थनक्षत्रात् ५।७।९।१२।१९।२६ मित चन्द्रनक्षत्रेषु पृथ्वी शेते तेन पृथ्वीशयननक्षत्रेषु तड़ागवापीकूपवास्तुप्रभृतिकार्यं ट्यूबवेल बोरिंग प्रभृति स्थापनञ्च न कर्त्तव्यम॥

अथ ट्यूबवेल बोरिंग टंकी प्रभृति स्थापने शुभमुहूर्त्ताः

कृतिका आश्ले. मघा. पूर्वा भरणी विशा. मूल नक्षत्रेषु। २।५।६।७।१३।४।९।१५ तिथिषु॥ शुक्लपक्षे। कृष्णपक्षे १० यावत् बु. शु. चं. बृ. वारेषु॥ पूर्वाह्णेऽपराह्णे वा।२।३।४।६।७।९।१०।११ १२ लग्नेषु। लग्ने शुभयुक दृष्टे। शुभैः—१।४।५।७।९।१० स्थितैः॥ पापैः ३।६।११ गतैः शुभम्:

अथ चुल्हिकाचक्रम्। सूर्य भाद्दिनमावधि

स्थान	न.	फलम्
पृष्ठे	६	धनम्
शीर्षे	४	मृत्युभयम्
व.हो	८	सुखम
गर्भे	५	नाशः
हस्ते	५	भोगः
चरणे	९	स्त्रीमृतिः

अथ चुल्हिका स्थापन मुहूर्त्ताः

अश्वि. भ. वि. रो. मृ. उत्तरा ३. कृ. मू. पूषा. ध. आर्द्रा नक्षत्रेषु। सू. म. श. दिनेषु। शुभ तिथि लग्नेषु शुभम्।

अथ मन्त्रग्रहणे शुभ मुहूर्त्ताः

अश्विः रो, पुन. पुष्य. उत्तरा ३. ह. चि. स्वा. अनु, मू, अभि, श्र, ध, श, रे, नक्षत्रेषु। २।३।५।७।१०।११।१२।१३।१५ तिथिषु शुक्लेपक्षे अत्यावश्यके कृष्णपक्षे ५ यावत। सू, चं. बु. बृ. शु. वारेषु। शुद्ध समये प्रातर्मध्याह्ने वा। २।३।४।५।६।७।९।१२ लग्नेषु। शुभैः १।४।५।७।९।१० स्थितैः॥ पापग्रहैः ३।६।११। स्थितैः॥ चैं. वैं. अश्वि. का. अग्र. मा. फा. मासेषु (सौरक्रमेण)॥ संक्रान्ती पूर्णिमायां, नवरात्रमध्ये ग्रहणे, सिद्धिक्षेत्रे मन्वादि युगादिषु च मुहूर्त्तं विनाऽपि मन्त्रग्रहणं शुभम्॥

अथ व्रतोद्यापने शुभमुहूर्त्ताः

शुद्धसमये क्रियमाणव्रततिथिषु दिवसे वा। का. माघ फा. चैं. वैं. ज्ये. आषा. मासेषु शुभलग्नेषु। कार्तिक व्रतोद्यापन आकाशदीपदान व्रतोद्यापनं वा शुद्धसमये वृश्चिक संक्रान्ति-पूर्वरात्रौ। एवमेव यस्य व्रतस्य मासविशेषेण सह सवन्धः तत्तस्मिन्नेव मासे शुद्धसमये कार्यम् शुभैः १।४।५।७।९।१० स्थितैः॥ पापैः ३।६।११ स्थितैः॥ पञ्चमेशे नवमेशे गुरौ च व्रलाढये सति शुभमन्यथा ग्रहशुद्धयभावेऽपि परमावश्यकस्थितौ शुभम्।

अथ यात्रायां शुभ मुहूर्त्ताः

वामपृष्ठराहौ॥ मलमासक्षयमास सौरक्रमेण चैत्रभाद्रपौषरहित मासेषु। अश्वि. मृ. पुन. पुष्य ह. ज्ये. अनु. मू. श्र. र. नक्षत्रेषूत्तमः। रो. पूर्वा ३. चित्रा स्वा, ध. नक्षत्रेषुमध्यमः। मृत्युयोग दग्धतिथि मासान्तसंक्रान्तिमासादि प्रभृत्ति दोषरहिते॥ अमृतसिद्ध सर्वार्थसिद्धादि शुभयोगेषु॥ केवलमम.व.स्यां विहायान्यतिथिषु योगवशेनान्यथा शुभतिथिषु॥ दिक्शूलरहिते दिने॥ २।४।६।८।९ तारसु। पञ्चमतारायाः प्रथमद्वितीयावृत्तेषु च॥ १।२।३।५।६।७।९।१०।११ चन्द्रेषु॥ आवश्यके ४।१२ चन्द्रेऽपि॥ सम्मुख दक्षिण लग्ने च॥ सर्वदिग्मननक्षत्रेषु वामपृष्ठचन्द्रेऽपि॥ द्विरागमनानन्तरं पितृगृहागतायाः पुनः पतिगृहगमने दक्षिणसम्मुखकालौत्याज्यौ तदनन्तरमावश्यके केवलं सम्मुख कालस्त्याज्यः दक्षिणकाले च सम्मुख चन्द्र वशेन यात्रा कार्या।

अथ राहु (काल) वासः

सौरक्रमेणाग्रहणपौषमाघमासेषु पूर्वे, फाल्गुनचैत्रवैशाखेषु दक्षिणे, ज्येष्ठाषाढ़श्रावणेषुपश्चिमे; भाद्रपदाश्विनकार्तिकेषूत्तरे कालवासः॥

अथ सर्वदिग्गमननक्षत्राणि

अश्विनीमृगशिरापुष्य श्रवणारेवती नक्षत्रणि सर्वदिग्गमने शुभानि।

अथ दिक्शूलविचारस्तत्परिहारश्च

सोमवासरे शनिवासरे च पूर्वस्यां, बृहस्पतिवारे दक्षिणस्यां, रविवासरे शुक्रवासरे च पश्चिमायां, मङ्गलवासरे बुधवासरे चोत्तरस्यां दिशि दिक्शूलत्वाद् गमनं निषिद्धम्॥ परिहारः—रव्यादिवासरे क्रमेण घृतपयगुड़तिलदधियवमाषान् भुक्त्वा शूलदोषशान्तये गच्छेत।

अथ विदिक्शूल विचारः

शनौ पूर्वे, चन्द्रेऽग्निकोणे, गुरौ याम्यां, बुधे नैर्ऋत्यां, सूर्ये प्रतीच्यां, शुक्रे वायुकोणे, उत्तरस्यां मङ्गले बुधे, ऐशान्याञ्च बुधमन्दयोर्न गन्तव्यम्।

अथ लग्नचन्द्रयोर्वासः

मेषसिंहधनुराशिषु पूर्वस्यां, वृषकन्यामकरराशिषु दक्षिणस्यां मिथुनतुलकुम्भराशिषु पश्चिमायां, कर्कवृश्चिकमीनराशिषु चोत्तरस्यां लग्नचन्द्रयोर्वासः। सम्मुखदक्षिणस्थलग्नेचन्द्रे च यात्रा शुभा। परं सर्वदिग्गमननक्षत्रेषु तु वामपृष्ठ चन्द्रेऽपियात्रा शुभेति।

अथ चन्द्रविचारः

जन्मनामग्रामादिराशितोऽभीष्टदिनस्य चन्द्रं यावद् गणनीयम्। तत्र १।२।३।५।६।७।९।१०।११ संख्याकश्चन्द्रः शुभप्रदः॥ ८ चन्द्रः। मृत्युप्रदः। ४ कलहप्रदः। १२ हानिकारकः॥ तत्र दुष्टे चन्द्रे तद्दोषशान्त्यर्थं मामतण्डुलशंखदधिश्वेतवस्त्रादि दानं कायम।

अथ द्वादशतम चन्द्रस्यविशेष

आधाने सम्प्रदाने च विवादे राजविग्रहे। पाणिग्रहे प्रयाणे च चन्द्रो द्वादशगः शुभः॥ अभिषेके निषेके च गृहे पुंसवनादिषु। यात्रा युद्धे विवादे च चन्द्रो द्वादशगः शुभः।

अथ जन्मनक्षत्रे त्याज्यविषयाः

जन्मनक्षत्रगश्चन्द्रः प्रशस्तः सर्वकर्मसु॥ क्षीरभैषज्य वादाध्वकर्त्तनेषु विवर्जयेत्॥ अथजन्ममासेत्याज्यः—क्षौरकर्म दीर्घयात्रा कर्णवेधश्च॥

अथ सिद्धादियोगचक्रं तिथिदिनवशेन नक्षत्रदिनवशेन च

दिनानि	रविः	सोमः	कुजः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः
सिद्धियोगाः	३।८।१३	१।६।११	३।८।१३	२।७।१२	५।१०।१५	१।६।११	४।९।१४
अमृतयोगाः	५।१०।१५	५।१०।१५	२।७।१२	१।६।११	३।८।१३	४।९।१४	१।६।११
सर्वार्थसिद्धियोगाः	अश्वि: पुष्य ह. मू.	रो.मृ.पुष्य अनु. श्र.	अश्वि.	रो. मृ. ह: अनु.	अश्वि. पुन. पुष्य अनु. रे.	अश्वि. पुन. अनु. श्र. रे.	रो. स्वा श्र.
मृत्युयोगाः	१।६।११	२।७।१२	१।६।११	३।८।१३	४।९।१४	२।७।१२	५।१०।१५
राज्यप्रदयोगः	××	××	४।९।१४	××	××	××	४।९।१४
अधमयोगः	१२	११	१०	३	६	२	७

अथ तारा चक्रम्

ताराः	जन्म	सम्पत्	विपत्	क्षेमः	प्रत्यरिः	साधकः	वधः	मित्रम्	अतिमित्रम्
नक्षत्राणि	१।१०।१९	२।११।२०	३।१२।२१	४।१३।२२	५।१४।२३	६।१५।२४	७।१६।२५	८।१७।२६	९।१८।२७
फलानि	मध्यमम्	शुभम्	अशुभम्	शुभम्	अशुभम्	शुभम्	अशुभम्	शुभम्	शुभम्
दानानि	शाकम्	×	गुडम्	×	लवणम्	×	तिलाः	×	×

जन्मनामग्रामनक्षत्राद्वाऽभीष्टदिनावधि गणयित्वा नवभिर्हरेत् । शेषं तारा स्यात् । तत्र २।४।६।८।९ ताराः शुभदाः । १।३।५।७ अशुभदाः । विशेषः पञ्चमतारा आवृत्तिवशेन धनदा १ सुखदा २ मृत्युदा ३ च भवेत्तेन प्रत्यरितारायां, तृतीयाकेवलंवृत्तेस्तारा अशुभा तत्र दानं कार्यम् ।

अथ कालशूलम्—उषःकाले पूर्वस्यां, मध्याह्ने दक्षिणस्यां, सायं-काले (गोधूल्यां) पश्चिमायां, निशीथे चोत्तरस्यां न गच्छेत् ॥ कालशूलदोषत्वात् ॥

अथ पञ्चक (भदवा) विचारः

धनिष्ठाशतभिषापूर्वभाद्रोत्तरभाद्ररेवतीनक्षत्राणि पञ्चकसंज्ञकाणि ॥ तत्र दक्षिणदिग्गमनगेहाच्छादनप्रेतदाहतृणकाष्ठादिसंग्रहशय्यावितान-निर्माणादिकं च त्यजेत् ॥ तत्रापवादः—वस्वादौ शतभिग्मध्ये पूर्वादौ चोत्तरान्तके । पञ्च पञ्च घटीत्याज्या रेवतीं सकलां त्यजेत् ।

अथ दग्धतिथिविचारोमासान्तादिविचारश्च

मीने धनुषि स्थिते सूर्ये द्वितीया तिथिः, वृषे कुम्भे स्थिते सूर्ये चतुर्थी मेषे कर्के स्थिते सूर्ये षष्ठी, मिथुने कन्यायां स्थिते सूर्येऽष्टमी, सिंहे वृश्चिके स्थिते सूर्ये दशमी, तुले मकरे च स्थिते द्वादशी तिथिर्दग्धा भवति । तत्र शुभकार्यं निषिद्धम् ॥ एवमेव संक्रान्ति दिन तत्पूर्वापर दिनञ्च (मासान्त मासादि संज्ञकम्) यात्रादि शुभकार्येषु त्याज्यम् ।

अथ पुराणादिश्रवणे शुभमुहूर्त्तः

अश्वि, रो, मृ, पुन, पु, ह, चि, स्वा, अनु, मू, श्र. नक्षत्रेषु । २।३।५।५।७।८।१०।११।१२।१३।१५, तिथिषु ॥ सू, चं, बु, वृ, शु, दिनेषु । शुक्लपक्षे । कृष्णे ५ यावत् ॥ शुभलग्ने । लग्ने शुभयुक् दृष्ट वलाढ्ये । शुभैः १।४।५।७।९।१० स्थितैः ॥ पापैः ३।६।११ स्थितैः । उत्तरायणे, श्रा, आश्वि, कार्ति, अग्र, मासेषु । तीर्थक्षेत्रे, देवालये, सिद्धिक्षेत्रे, पर्व विशेषे नवरात्रादौ च मुहूर्त्तं विनाऽपिशुभम् ।

अथेन्धनस्थापनम्

सुर्याक्रान्तनक्षत्रात् ६ नक्षत्रेषु शुभं ततः ६ अशुभं ततः ४ शुभं ततः ८ अशुभं ततः ४ शुभम् ।

अथ नवान्न पार्वणे शुभमुहूर्त्तः

अ. रो. मृ. पुन. पूष्य. उत्तरा ३. ह. चि,-स्वा. अ. श्र. ध. रे, नक्षत्रेषु शुभं । मूले नवान्नपार्वणं मध्यमम् । सू. चं. बु. वृ. वारेषु । शुक्लेलक्षे । २।३।५।७।८।१०।१२।१५ तिथिषु । वृश्चिकस्य ३।२० अंशानन्तरं १३ अंशं यावदावश्यके २३ अंशं यावदपि । ततः मकरे ७ अंशानन्तरं कुम्भस्थे सूर्ये वा कार्यम् । २।३।४।६।७।९।१२ लग्नेषु लग्नेशुभयुक्दृष्टे स्वस्वामियुते वा शुभम् । नवान्नपार्वणे जन्मर्क्षं जन्म तारा-विशाखास्थसूर्यं - कृष्णपक्षाष्टमचन्द्र-पूर्वात्रय-मघाभरण्याश्लेषा-अर्द्रानक्षत्र-सौरक्रमेण कार्तिकपौषचैत्रहरिशयननन्दात्रयोदशीरिक्तामं-गलशनिशुक्रदिनानि निषिद्धानीति । अभावे कृष्णपक्षे ५ यावत् ग्राह्यः।

अथ कल्याणार्थं शान्ति मुहूर्त्तः

अश्वि. रो. मृ. पुन. पुष्य. उत्तरा ३. ह. स्वा. अनु. मू. श्र. ध. श. रे. नक्षत्रेषु । शुक्लपक्षे, कृष्णे ५ यावत्, २।३।५।६।७।८। १०।११।१२।१३।१५ तिथिषु । सू. चं. कु. वृ. शु वारेषु । शुद्ध समये ॥ आवश्यकेऽशुद्धेऽपि ॥ चैत्रपौषभाद्र मालमासक्षयमासरहिते-शुभम् । शुभलग्ने ॥ लग्नस्थो गुरौ, चतुर्थस्थो चन्द्रे, दशमस्थो सूर्ये, अष्टमे लग्ने च पापरहिते शुभा ।

अथ खलस्थापन मुहूर्त्तः

ग्रामसमीपे शुभस्थाने शुभतिथिदिननक्षत्रेषु शुभलग्ने शुभम् ।

अथ धान्यच्छेदन मुहूर्त्तः

मू. ज्ये. आश्ले. आर्द्रा. पू. भा. ह. कृ. ध. श्र. मृ. स्वा. म. उत्तरा ३. पू. षा. भ. चि. पुष्य नक्षत्रेषु सू. चं. बु. वृ. शु. दिनेषु १।२।३।५।६।७।१०।११।१२।१३।१५ तिथिषु, २।५।८।११ लग्नेषु । शुभम् । अन्यान्यपियवादीनि एष्वेव छेद्यानि ।

अथ मेधिरोपण मुहूर्त्तः

अश्वि. रो. मृ. पुन. पुष्य. उत्तरा ३. ह. चि. स्वा. अनु. श्र. ध. श. रे. नक्षत्रेषु शुभतिथिदिनलग्नेषु मेधिरोपणम् शुभम् ।

अथ वर्षेशवशेन मेधिरोपण मुहूर्त्तः

वर्षेशे सूर्ये वंशः, चन्द्रे शिम्बरः, मङ्गले कदम्बम्, बुधे उदुम्बरम् गुरौ आम्रम्, भृगुजे पालाशः, शनौ निम्बम् शुभम् ॥

अथ कणमर्दन मुहूर्त्तः

मघा. पूफ. उफ. रो. ज्ये. मू. अनु. श्र. रे. नक्षत्रेषु । शुभतिथि-दिनलग्नेषु शुभम् ।

अथ धान्यस्थापन मुहूर्त्तः

अ. रो. मृ. पुन, पुष्य. उत्तरा ३. ह. चि. स्वा. अनु. मू. श्र. ध. श. रे. नक्षत्रेषु शुभतिथिदिनेषु ॥ २।३।५।६।८।९।१०।११।१२ लग्नेषु शुभम् ।

अथ धान्यवृद्धि मुहूर्त्तः

अ. रो पुन. पुष्य. उत्तरा ३. स्वा. वि. ज्ये. श्र. ध श. नक्षत्रेषु शुभतिथिदिनलग्नेषु धान्यवृद्धिः शुभा ।

अथ वीजवन्धन (स्थापन) मुहूर्त्तः

रो मृ. श. ह. स्वा मू. उपा. पूभा. रे. नक्षत्रेषु चं. बु. वृ. शु. वारेषु ॥ शुक्लपक्षे । कृष्णे ५ यावत् । २।३।५।७।१०।११।१३।१५ तिथिषु २।५।८।११ लग्नेषु शुभम् ।

अथ वीजवपन मुहूर्त्तः

अश्वि० रो० मृ० म० उत्तरा ३. चि० स्वा० अनु० मू० ध० पुष्य० ह० रे० नक्षत्रेषु १।२।३।५।७।८।१०।११।१२।१३।१५ तिथिषु ॥ चं० बु० वृ० शु० दिनेषु । शुभलग्ने ॥ लग्ने शुभयुग्दृष्टे । शुभैः केन्द्रकोणगैः पापैः त्रिषडायगैः शुभम्

अथ हलप्रवहण मुहूर्त्तः

अ० रो० मृ० पुन० पुष्य० म० उत्तरा ३. ह० चि० स्वा० वि० अनु० मू० श्र० ध० श० रे० नक्षत्रेषु । चं० मं० बु० वृ० शु० वारेषु ॥ शुभतिथिषु । शुभलग्नेषु ॥ पापैः निर्वलैः । शुभैः वलिभिः । चन्द्रे जल-चरराशौस्थिते तन्नवांशे वा । गुरौ लग्नस्थो । शुक्रे विधौ च पुष्टे शुभम् ।

अथ धान्यस्थापन मुहूर्त्तः

रोहिणीं उफ० वि० मू० श० पूभा० नक्षत्रेषु । सू० चं० बु० वृ० शु० दिनेषु । शुभतिथौ शुभलग्ने च शुभम् ।

अथ स्वामिसेवा (नौकरी) मुहूर्त्तः

अश्वि मृ०पुष्य०ह०चि० अनु० अभि० रे० नक्षत्रेषु । सू. बु. वृ. शु० दिनेषु । शुभतिथिलग्नेषु । लग्ने शुभयुते ॥ सूर्ये वा कुजे १०।११ स्थे ॥ सेव्यसेवकयो यौनिमैत्र्यां राशिपोश्चापि मैत्र्यां सत्यां सेवारम्भः शुभः।

कोषगारादौ द्रव्यस्थापन मुहूर्त्तः

अश्वि० मृ० पुन० पुष्य० ह० चि० स्वा० अनु० श्र० ध० श० रे० नक्षत्रेषु । सू० मं० बु० वृ० शु० वारेषु ॥ शुद्धसमये ॥ ३।५।८।१०। १३।१५ तिथिषु, शुभग्रहयुक्तलग्नेषु शुभम् ।

ऋणप्रदान मुहुर्त्तः (द्रव्यप्रयोग मुहुर्त्तः)

स्वा० पुन० मृ० रे० चि० अनु० वि० पुष्य० श्र० ध० श० नक्षत्रेषु, शुभतिथिषु ॥ १।४।७।१० लग्नेषु, लग्ने शुभयुग्दृष्टे ॥ ५।८।९ ग्रहरहिते । चं० वृ० शु० श० वारेषु शुभम् ।

ऋणदाने निषिद्ध समय :—बुधवासरः ॥ भरणी० कृ० आर्द्रा० अश्ले० मघा० पूर्वा ३. वि० ज्ये० नक्षत्राणि ॥ भद्रा पातयोगश्च ॥

ऋणग्रहणे निषिद्धसमय :—रविभौमदिने ॥ संक्रान्तौ ॥ वृद्धियोगे ॥ हस्तनक्षत्रे च ॥ एषु ऋणार्पणं शुभम् ॥

अथ युद्धे विचारणीयं कुल-अकुल-कुलाकुल चक्रम्

संज्ञा	नक्षत्राणि	तिथयः	दिना	फलानि
कुलः	पू. ३अश्वि.पुष्य.म.मृ. श्र.कृ.वि.ज्ये.चि	४।८।१२।१४	मं. श.	स्थायिजयदः
अकुलः	भर.स्वा.आश्ले.ध.रे.ह. रो.अनु.पु.उत्तरा ३	१।३।५।७।९।११ ५	सू. चं. वृ. श.	यायिजयदः
कुलाकुलः	आर्द्रा मू. अभि. श.	२।८।१०	बुधः	उभयोः सन्धिः

अथ नष्टवस्तु ज्ञानाय चक्रम्

संज्ञा	नक्षत्राणि	लाभालाभः	नष्टवस्तुदिक्
अन्धाक्षः	रो.पुष्य.उफा.वि.पूषा.ध.रे.	शीघ्रलाभः	पूर्वस्याम्
मन्दाक्षः	मृ.आश्ले.ह.अनु.उषा.श.अश्वि.	प्रयत्नाल्लाभः	दक्षिणस्याम्
मध्याक्षः	आर्द्रा.म.चि.ज्ये.अभि.पूभा.भ.	दूरे श्रवण-मलाभश्च	पश्चिमायाम्
सुलोचनः	पुन.पूफ.स्वा.मू.श्र.उभा.कृ.	अलाभः	उत्तरस्याम्

अथ लग्नसारणी ।। इष्टार्कराश्यंशतलस्थटीपल स्वाभीष्ट नाडीपल संयुतञ्च ।
यद्राशि भागस्यतले स्थितंभवेत्तदेव लग्नं च कलानुपातात् ।।

उदाहरण—चैत्री पूर्णिमा रविवार को इष्टदण्डादि ३।५ है। इस दिन के सूर्य के मेष राशि के ६ अंश के नीचे के दण्डादि ३।२३।२८ में इष्टदण्डादि ३।५ जोड़ने से ६।२८।२८ हुआ। यह दण्डादि मेष राशि के २८ अंश के आगे २९ वें अंश में पड़ा। अतः उक्त समय २९ अंश से मेष लग्न हुआ। एवमेव सर्वत्र समझना चाहिए।

।। दशमलग्नसारणी ।। यत्सूर्यराश्यंशसमानकोष्ठं घट्यादिकं पूर्वनतेनहीनम् ।
प्रत्यग्नतेनाढ्यमियान् विशेषो मध्यस्य (दशमलग्नस्य) सिद्ध्यै गणकैः प्रदिष्टः ।।

नतकालसाधनम्—रात्रेः शेषमितं युतं दिनदलेनाह्नोः गतं शेषकं विश्लेष्य खलु पूर्वपश्चिमनतं त्रिंशच्च्युतं चोन्नतम् ।।
यथा—चैत्रीपूर्णिमा रविवार को इष्टदण्डादि ३।५ के समय दिनार्ध-इष्टकाल = (१५।५६)-(३।५) = १२।५१ = पूर्वनतघटी।
दशमलग्नोदाहरण—चैत्री पूर्णिमा रविवार को इष्टदण्डादि ३।५ है। नतकालानयन विधि से इस काल का पूर्वनत १२।५१ हुआ। इसे सूर्य के मीन राशि के ६ वें अंश के नीचे दण्डादि ४।११।२८ में घटाया तो (४।११।२८)-(१२।५१।००) = ५१।२०।२८ दण्डादि हुआ। यह फल दशमलग्नसारिणी में मकर राशि के १४ अंश के आगे १५ वें अंश में पड़ा। अतः उक्त समय १५ अंश से मकर दशमलग्न हुआ।

इष्टिकारम्भमुहूर्त—अश्वि रो. मृ. पुष्य. उत्तरा३. स्वा. ध. श. रे. नक्षत्रेषु। सूर्यातिरिक्तवारेषु। रिक्तामावास्यारहितासु तिथिषु शुभम्।
समाधिविशेषपरिमुहूर्त—अश्वि रो. मृ. पुष्य. उत्तरा३. ह. चि. स्वा. अनु. श्र. ध. श. रे. नक्षत्रेषु शुभम्।
कदलीरोपणम्—रोहिण्यां उ.३ अनु. स्वा. नक्षत्रेषु। वृष. मि. क. कन्या. तु. ध. मी. लग्नेषु शुभम्।

अग्निवासचक्रम्

शुक्लपक्षे	कृष्णपक्षे	र.	च.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.
१।५। ९।१३	२।६।१०।१४	भु.	भु.	दि.	भू.	भु.	भू.	दि.
२।६।१०।१४	३, ७।११।३०	भु.	दि.	भू.	भु.	भु.	दि.	भू.
३।७।११।०५	४।८।१२	दि.	भू.	भु.	भु.	दि.	भू.	भु.
४।८।१२	१।५। ९।१३	भु.	भु.	भु.	दि.	भू.	भु.	भु.

फलं-भुविसौख्यं, दिविप्राणनाशः भूतले च धननाश इति ज्ञेयम्।
विधिः-(शुक्लादिति सं + सूर्यादिदिनसं + १) ÷ ४ = ३।० शेषे शुभः। १,२ अशुभ

अथ पार्थिव शिवपूजायां विहिततिथयः

शुक्लपक्षे—२।५।६।९।१२।१३। कृष्णपक्षे—१।४।५।८।११।१२।३०।
विधिः—(शुक्ल ति.तिथिसं. × २ + ५) ÷ ७ = १।२।३ शेषे शुभः। अन्यदशुभम्।
१ शेषे कैलाशे, २ शेषे गौरीसन्निधौ, ३ शेषे वृषारूढः
शिवः अभीष्टदः स्यात्।

अथ त्रिविध प्रवेशः— दिवा नृपप्रवेशः निशि वधूप्रवेशः दिवा च रात्रौ च गृह प्रवेशः शुभदः प्रोक्तः ॥

विपणि मुहूर्त्तः—अश्वि. रो. पुष्य. हस्त. उत्तरा ३. अनु. अभि. नक्षत्रेषु । १।२।३।५।६।७।१०।११।१२।१३।१५ तिथिषु । सू. चं बु. बृ. शु. श. वारेषु ॥ शुक्लपक्षे ॥ कृष्णे १० यावत् ॥ १।२।३।४।५।६।७।८।९।१०।१२ लग्नेषु । लग्ने चन्द्रशुक्रे ॥ पापैः ८।१२ रहितैः ॥ शुभैः २।१०।११ स्थितैः शुभा ।

अथ मीलचालन मुहूर्त्तः—शुभतिथिदिननक्षत्रेषु ॥ १।४।७।१० लग्नेषु ॥ शुभैः १।४।५।७।९।१० स्थितैः ॥ पापैः ३।६।११ स्थितैः ॥ लग्नेशधनेशसप्तमेशैकादशेशेषु बलयुक्तेषु शुभम् ।

अथ वस्तूनां विक्रयः मुहूर्त्तः—भर. कृत्ति. आश्ले. वि. पूर्वा ३. नक्षत्रेषु, २।३।५।७।१०।११।१३।१५ तिथिषु, चं. बु. बृ. शु. दिनेषु, शुभैः १।२।४।५।७।९।१० स्थितः ॥ पापैः ३।६।११ स्थितैः, कुम्भं विना लग्नेषु शुभः ।

अथ वस्तूनां क्रय मुहूर्त्तः—शुभतिथि दिन लग्नेषु ॥ अश्वि. चि. स्वा. श्र. श. रे. नक्षत्रेषु शुभः ।

अथ भैषज्य भक्षण मुहूर्त्तः—अश्वि. मृ. पुन. पुष्य. ह. चि. स्वा. अनु. मू. अभि. श्र. ध. श. रे. नक्षत्रेषु । शुभतिथिषु ॥ सू. चं. बु. बृ. शु. दिनेषु ॥ ३।६।९।१२ लग्नेषु ॥ शुभैः ३।६।९।१२ राशिगतैः ॥ लग्नात् ७।८।१२ ग्रहरहितेषु ॥ औषध भक्षणं शुभम् ॥ जन्म नक्षत्रे भैषज्य भक्षणमशुभम् ॥

अथ रक्तमोक्षण (आपरेशन) मुहूर्त्तः—अश्वि. रो. मृ. पुष्य. ह. चि. स्वा. अनु. ज्ये. अभि. श्र. शत. नक्षत्रेषु, सू. मं. बृ. वारेषु ॥ शुभतिथिलग्नेषु, चन्द्रतारानुकूले सति शुभम्

अथ चिकित्सा मुहूर्त्तः—अश्वि. रो. मृ. पुष्य. ह. चि. स्वा. अनु ज्ये अभि. श्र. श. नक्षत्रेषु, सू. चं. मं. बृ. शु. दिनेषु ॥ शुभतिथिलग्नेषु, चन्द्रतारानुकूले शुभः ।

अथोग्रकर्म मुहूर्त्तः—पूर्वा ३. भ. मघा. मू. ज्ये. आश्ले. आर्द्रा. नक्षत्रेषु, मं. श. दिनेषु, ॥ १।८।१०।११ लग्नेषु ॥ १।३।४।५।९।१०।१४ तिथिषु शुभम् ।

अथ मोटर-बस-साइकिल-यानादि-चालन मुहूर्त्तः—अश्वि. मृ. पुन. ह. चि. स्वा. अनु. ज्ये. रे. नक्षत्रेषु चं. मं. बृ. शु. श. दिनेषु १।२।३।५।६।७।८।१०।११।१३।१५ तिथिषु, चतुर्थंशे बलयुक्ते १।४।५।७।९।१० स्थिते । लग्नेशदशमेशसप्तमेशपञ्चमेशनवमेशैरपि १।४।५।७।९।१० गतैर्बलयुक्तैः ॥ पापैः ३।६।११ स्थानस्थितैः यानादि चालनं शुभम् ॥

अथ जन्म-नामराशिवशेन विचारणीय विषया—विवाहे सर्वमांगल्ये यात्रायां ग्रहगोचरे । जन्मराशि प्रधानत्वं नामराशि न चिन्तयेत् ॥ देशेग्रामे गृहे युद्धे सेवायां व्यवहारके । नामराशि प्रधानत्वं जन्मराशि न चिन्तयेत् ॥ काकिण्यां वर्गशुद्धौ च वादेद्यूते स्वरोदये । मन्त्रेपुनर्भूवरणे नामराशेः प्रधानता ॥

वाणपञ्चकम्—सूर्यगतांशाः क्रमेण ८।१७।२६ रोगवाणोव्रते, २।११।२०।२९ अनलवाणोगृहाच्छादने, ४।१३।२२ नृपवाणोराजसेवायां, ६।१५।२४ चौरवाणो यात्रायां, १।१०।१९।२८ मृत्युवाणो विवाहे त्यजेदिति केचित् ।

॥ अथ रशीनां स्वामि चरादिसंज्ञा चक्रम् ॥

राशि	मे	वृ	मि	क	सि	क	तु	वृ	ध	म	कु	मी
पति	मं	शु	बु	चं	सू	बु	शु	मं	बृ	श	श	बृ
संज्ञा	चर	स्थि	द्विस्व	चर	स्थि	द्वि	चर	स्थि	द्वि	चर	स्थि	द्वि
प्रकृ	पित्त	वात	सम	कफ	पित्त	वा	स	क	पि	वा	सम	क
आकृ	ह्रस्व	ह्र	सम	सम	दीर्घ	दी	दी	दी	स	स	ह्र	स
जाति	क्ष	वै	शू	वि	क्ष	वै	शू	वि	क्ष	वै	शू	वि

॥ अथ ग्रहाणामुच्चादिबोधक चक्रम् ॥

ग्रह	सू	चं	मं	बु	बृ	शु	श	रा	के
उच्च	मे १०	वृ ३	म२८	कं१५	क५	मी२७	तु२०	मि	ध
नीच	तु१०	वृश्चि,३	क२८	मी१५	म५	कं२७	मे२०	ध	मि
मूत्रि	सि	वृष	मे	कं	ध	तु	कु	क	मि
जाति	क्ष	वै	क्ष	शू	ब्रा	ब्रा	ना	चा	चा
दिक्	पू	वा	द	उ	ई	अ	प	नै	नै
भाग्य	२२वर्ष	२४व	२८व	३२व	१६व	२५व	३६व	४२व	४८व
प्रकृतिः	पित्त	कफ	पित्त	मम	मम	वात	वात	वात	वात
पुंसंज्ञा	पु	स्त्री	पु	नपु	पु	स्त्री	नपु	पु	पु
आकृ	ह्र	ह्र	ह्र	ह्र	दीर्घ	ह्र	दी	दी	दी

॥ होराचक्रम् ॥

राशि:	मे	वृ	मि	क	सि	क	तु	वृ	ध	म	कु	मी
१५ अं	सू	च	सू	च	सू	च	सू	च	सू	च	सू	च
३० अं	च	सू	च	सू	च	सू	च	सू	च	सू	च	सू

॥ द्रेष्काणचक्रम् ॥

राशि:	मे	वृ	मि	क	सि	क	तु	वृ	ध	म	कु	मी
१० अं	मं	शु	बु	चं	सू	बु	शु	मं	बृ	श	श	बृ
२० अं	सू	बु	श	मं	बृ	श	श	बृ	मं	शु	बु	चं
३० अं	बृ	श	श	बृ	मं	शु	बृ	चं	स	बृ	श	मं

॥ अथ वर्षाज्ञानाय सप्तनाडी चक्रम् ॥

शनिः	रविः	भौमः	गुरुः	शुक्रः	बुधः	चन्द्रः	स्वामी
कृ.	रो.	मृ.	आ.	पुन	पु	आश्ले	नक्षत्र
वि.	स्वा	चि.	ह	उफ.	पूफ	म.	नक्षत्र
अनु.	ज्ये.	मू.	पूषा	उषा	अभि	श्र.	नक्षत्र
भ.	अ.	रे.	उभा.	पूभा.	श.	ध.	नक्षत्र
चंडा	वाता	वह्नि	सौम्या	नीरा	जला	अमृ.	संज्ञा

अथ होरालग्नानयनम्—द्विघ्नेष्ट नाड्यः पञ्चाप्ता यच्छेषञ्च पलीकृतम् । दशाप्तमंशास्ते योज्या रवौ होरोदयो भवेत् ॥

॥ अथ त्रिविधायुबोधक चक्रम ॥

दीर्घायुः	मध्यमायुः	अल्पायुः
चरभे लग्नेशः	चरभे लग्नेशः	चरभे लग्नेशः
चरभेऽष्टमेशः	स्थिरभेऽष्टमेशः	द्विस्वभेऽष्टमेशः
स्थिरभेलग्नेशः	स्थिरभेलग्नेशः	स्थिरभे लग्नेशः
द्विस्वभावेऽष्टमेशः	चरभेऽष्टमेशः	स्थिरभेऽष्टमेशः
द्विस्वभावेलग्नेशः	द्विस्वभे लग्नेशः	द्विस्वभेलग्नेशः
स्थिरभेऽष्टमेशः	द्विस्वभेऽष्टमेशः	चरभेऽष्टमेशः

लग्नेशाष्टमेशयोरिव लग्नचन्द्राभ्यां (शनिचन्द्राभ्याम्) लग्नहोरालग्नाभ्याञ्चायुर्निर्णयम् ।

॥ ग्रहणां धारणाय मणयः ॥

ग्रहाः	मणयः		
सूर्यः	माणिक्य	गारनेट	विद्रुम
चन्द्रः	मुक्ता	मूनस्टोन	चान्दी
कुजः	विद्रुम	मूंगा	मूंगा
बुधः	पन्ना	लीली	सोना
गुरुः	पोखराज	सुनहला	मोती
शुक्रः	हीरा	स्फटिक	चान्दी
शनिः	नीलमणि	यमनिया	लोह
राहु.	गोमेद	लाजावर्त्त	लाजावर्त्त
केतु.	लहसुनिया	लाजावर्त्त	लाजावर्त्त

॥ अथ नवमांशचक्रम् ॥

राशि:	मे. सि. ध.	वृष. कं. म.	मि. तु. कु.	क. वृ. मी.
३।२०	मं.	श.	शु.	चं
६।४०	शु.	श.	म.	सू
१०।०	बु.	बृ.	बृ.	बु.
१३।२०	चं	मं.	श.	शु.
१६।४०	सू.	शु.	श.	मं.
२०।०	बृ.	बृ.	बृ.	बृ.
२३।२०	शु.	चं.	मं.	श.
२६।४०	मं.	सू.	शु.	श.
३०।०	बृ.	बृ.	बृ.	ब.

विषमराशौ त्रिंशांशचक्रम्		समराशौ त्रिंशांशचक्रम्	
राशि:	मे. तु. मि. ध. सि. कु.	राशि:	वृ. वृ. क. म. कं. मि.
५ अं.	मं.	शु.	५अं
१० अ.	श.	बु.	१२अं
१८ अं	बृ	बृ.	२०अं.
२५ अं.	बु.	श.	२५अं.
३० अं.	शु.	मं.	३०अं.

॥ अथायुर्विचारः ॥

लग्नसप्तमयोरन्यतरस्थितेचन्द्रे लग्नचन्द्राभ्यामन्यथा शनिचन्द्राभ्यां, लग्नेशाष्टमेशाभ्यां, लग्नहोरालग्नाभ्याञ्चेति प्रकारणत्रयेणायुर्निर्णयम् । प्रकारत्रयेऽप्येकरूपायुष्यागते तदेव ग्राह्यम् । विभेदे प्रकारद्वयागतायुर्ग्राह्यम् । त्रयाणां विसंवादे लग्नहोरालग्नायुर्ग्राह्यम् । विषमे जन्मलग्ने द्वितीयेशाष्टमेशयोर्यो बली. समे जन्मलग्ने द्वादशेशषष्ठेशयोर्योबली तस्य केन्द्रे स्थित्या दीर्घायुः, पणफरे मध्यायुः, आपोक्लिमे चाल्पायुरेव । इत्थमेवात्मकारकवशेनापि बोध्यम् । अष्टमेशयोः कारकेण सहैक्ये योगे वा मध्यायुरेव । विषमे जन्म लग्ने कारकस्तृतीये, समे जन्मलग्ने कारको यदि चैकादशे भवेतर्हि कारकायुपि केन्द्रे हीनायुः पणफरे मध्यमायुरापोक्लिमेचाल्पायुर्ज्ञेयः । यदि लग्नेशष्टामेशदशमेशाः केन्द्रत्रिकोण लाभगास्तदा दीर्घायुर्योगः ॥ यदि लग्नेशः सूर्यस्य मित्रन्तदा दीर्घायुर्योगः, समस्तदा मध्यायुर्योगः, शत्रुस्तदाऽल्पायुर्योगः ॥ इति ॥ पूर्वोक्त चक्रद्वारा प्रकारत्रयेण दीर्घायुर्योगे प्राप्ते १२० वर्षाणि, प्रकार द्वयेन १०८ वर्षाणि, प्रकारैणैकेन ९६ वर्षाणि आयुः । एवमेव मध्यायुष्यपि प्रकारत्रयादिवशेन क्रमेण ८०, ७२, ६४ वर्षाण्यायुः । अल्पायुष्वपि ४०, ३६, ३२ वर्षाण्यायुरिति ॥ **आयुस्थानं मारकादि स्थानञ्च**—अष्टमञ्च तृतीयञ्च लग्नादायुरुदाहृतम् । द्वितीयं सप्तमञ्चैव मारकस्थानमुच्यते । क्वचित्षष्ठाष्टमव्ययेशदशास्वपि मारकसम्भवः । मारके मारकान्तरमशुभम् । परस्परंषष्ठाष्टमेशयोर्दशाऽन्तर्दशा चाशुभा, लग्नेश पञ्चमेश नवमेशानां दशा शुभा, त्रिषडायेशानां च पापाख्या । व्ययद्वितीयेशयोर्दशा स्थानान्तरानुगुण्येन साहचर्याद्वा फलदा । चतुर्थेशसप्तमेशदशमेशानांदशा मध्यमफलप्रदा स्थानान्तर शुभाशुभवशेन शुभाशुभफलप्रदाच । अष्टमेशदशा पापफलदा परं स्थानान्तरशुभाशुभवशेन शुभपरमाशुभफलदेति ॥

अथद्वादशांशज्ञानम्—प्रत्येकस्मिन् राशौ १२ द्वादशांशास्तत्र प्रतिद्वादशांशमानं २।३० अंशात्मकं भवति । द्वादशांशेशाःस्वराशित एव भवन्ति ।

अथकारकग्रहाः—ग्रहेषु सर्वाधिकांशवानात्मकारकस्तन्यूनांशक्रमेणामात्यभ्रातृमातृपितृपुत्रज्ञाति कारकाः ज्ञेया । अंश साम्ये कलाधिक्यं कलादिसाम्ये बलाधिक्यं ग्राह्यम् । स्थिरकारकाः—तन्वादिभावानां क्रमेण सूर्य-गुरु-कुज-चन्द्रगुरु-गुरु भौम-शुक्र-शनि-गुरु-बुध-शुक्र-शनयः स्थिरकारका भवन्ति ।

स्वर्णादिचरणक जन्मज्ञानम्—जन्मकाले जन्मलग्नाच्चन्द्रे १।६।११ स्थिते स्वर्णपादे, २।५।९ स्थिते रजतपादे ३।७।१० स्थिते ताम्रपादे, ४।८।१२ स्थिते च लोहपादे जन्म ज्ञेयम् । अश्विन्यादिद्वादशनक्षत्रेषु रजतपादे, ज्येष्ठादिसप्तसुस्वर्णपादे, पूर्वभाद्रादि पञ्चसु ताम्रपादे, कृत्तिकादिनवसु लोहपादे जन्मबोधम् । अथ रेखाफलम्—स्वर्णपादे [illegible], रजतपादे शोभनं, ताम्रपादे मध्यमं लोहपादे हीनफलमिति ।

दि.ति.	तिथयः घ. प.	घं. मि.	नक्षत्राणि	द. प.	घं. मि.	योगाः द. प.	करणानि द.प.	चन्द्रस्थितिः रा.द.प.	घं. मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादि	दिनमानं द. प.	सू.उ. घं.मि.	सू.अ. घं. मि.	दिनांक रा.	सौ.	अं.
र. १	४४।३९	रा. ११।४०	रे.	२६।४०	दि. ४।२८	ऐ. ५।३८	कि. १७।३२	मी. २६।४०	दि. ४।२८	११।२२।१७।२४	३०।५८	५।४८	६।१२	१५	२३	५
चं. २	३८।३९	" ९।१६	अ.	२२।३७	" २।५१	वि. ५०।२५	वा ११।३९	मेष	अहोरात्र	११।२३।१६।१८	३१। २	५।४८	६।१२	१६	२४	६
मं. ३	३२।३५	" ६।४९	भ.	१८।२७	" १।१०	प्री. ४२।४१	तै. ५।३७	मे. ३२।२६	रा. ६।४५	११।२४।१५।१२	३१। ६	५।४७	६।१३	१७	२५	७
बु. ४	२६।४२	दि. ४।२७	कृ.	१४।२४	" १५।३२	आ. ३५। ७	वि. २६।४२	वृष	अहोरात्र	११।२५।१४। ६	३१।१०	५।४६	६।१४	१८	२६	८
बृ. ५	२१। ६	" २।११	रो.	१०।३८	" १०।००	सौ. २७।४९	वा. २१। ६	वृ. ३८।५९	रा. ९।२१	११।२६।१३।००	३१।१४	५।४५	६।१५	१९	२७	९
शु. ६	१६। ५	" १२। ९	मृ.	७।२०	" ८।४०	शो. २०।००	तै. १६। ५	मिथुन	अहोरात्र	११।२७।११।५४	३१।१८	५।४४	६।१६	२०	२८	१०
श. ७	११।४४	" १०।२६	आ.	४।४४	" ७।३८	अ. १४।४७	व. ११।४४	मि. ४८।२६	रा. ११। ६	११।२८।१०।४८	३१।२२	५।४४	६।१६	२१	२९	११
र. ८	८।२५	" ९। ५	पुन.	३।००	" ६।५५	सु. ९।१७	व ८।२५	कर्क	अहोरात्र	११।२९। ९।४१	३१।२६	५।४३	६।१७	२२	३०	१२
[illegible]			पु	२।१५	" ६।३६	धृ. ४।३६	कौ. ५।५६	कर्क	अहोरात्र	०।०। ८।२०	३१।३०	५।४२	६।१८	२३	१	१३
मं. १०	४।४४	" ७।३५	श्ले.	२।४३	" ६।४६	शू. ०।५४	ग. ४।४४	क. २।४३	दि. ६।४६	०।१। ६।५९	३१।३४	५।४१	६।१९	२४	२	१४
बु.११	४।४४	" ७।३४	म.	४।२३	" ७।२५	बृ. ५६।२९	वि. ४।४४	सिंह	अहोरात्र	०।२। ५।३८	३१।३८	५।४०	६।२०	२५	३	१५
बृ.१२	६। ५	" ८। ६	पू.	७।२०	" ८।३६	ध्रु. ५५।४२	वा. ६। ५	सि. २३।२१	दि. ३।००	०।३। ४।१६	३१।४२	५।४०	६।२०	२६	४	१६
शु.१३	८।३५	" ९। ५	उ.	११।२३	" १०।१२	व्या.५५।५२	तै. ८।३५	कन्या	अहोरात्र	०।४। २।१४	३१।४६	५।३९	६।२१	२७	५	१७
[illegible]	[illegible]	" १०।२२	ह.	१६।३६	" १२।१६	ह. ५६।४७	व. १२।१६	क. ४९।३५	रा. १।२८	०।५। १।३२	३१।४९	५।३८	६।२२	२८	६	१८
र. १५	१६।४८	" १२।२०	चि	२२।३५	" २।३९	व. ५८। ९	व. १६।४८	तुला	अहोरात्र	०।६। ०।१०	३१।५२	५।३८	६।२२	२९	७	१९

चैत्रशुक्लपक्षः

शक. १९०३, संवत् २०३८, सन्, १३८८ साल, दि० ५।४।१९८१ ई० त: १९।४।८१ ई० यावत्, दक्षिणकाल:।
वक्री पूर्वोदितोगुरु:, मार्गी पूर्वास्त: शुक्र:, अशुद्ध:, वसन्तर्तु: याम्यगोल: ९ त: सौम्यगोल:, उत्तरायणम्।

सृष्टयादि:,वासन्तनवरात्रारंभ:,श्रीदुर्गोत्सव:,२०३८संवत्सरारंभ:,वैधृतियोगमानं५२।२९ग.१४।४०उ.२९।४०या,पञ्चकान्त: घ ४मि.२८उ.दिने,द.ति.४४।३९उ.,यायिजयदयोगोरेवत्याम्।
चन्द्रदर्शनं मु १५ फलं महार्घम्, द.ति. ३८।३९ या० चैत्रे लक्ष्मणास्नानं महापुण्यप्रदम्।
भ० ५९।३८ उ०, श्रीगौरीव्रतम्, मन्वादि:, श्रीगणेश ४ व्रतम्, उमामहेश्वरदोलोत्सव:।
भ. २६।४२या, पूर्वदक्षिणयोर्यात्रा पञ्चम्याम्। ♦ रेवत्यां बुध: ३।४४ अश्विन्यांमेषे शुक्र: १२।४५।
मीनावतार:, श्रीरामराज्याभिषेकमहोत्सव:, यायिजयदयोग: पूर्वदिशियात्रा च रोहिण्याम्, ततो दक्षिणां विनायात्रोत्तमा पञ्चम्याम्।
वासन्तीसूर्यषष्ठी, सायं प्रथमार्घदानं प्रभाते द्वितीयार्घदानं, पश्चिमां विना यात्रोत्तमा मृगशिरसि (६–७) एकोदिष्टम्।
सूर्यषष्ठीव्रतपारणं, भ. ११।४४ उ. ४०।४ या, पश्चिमदक्षिणयोर्यात्रा घं. ७ मि. ३८ उ. दिने घं १ मि.६ यावद्रात्रौ ततः पश्चिमोत्तरयोर्यात्रा, ♦
मासान्त:, अशोकाष्टमी, अशोककलिकापानं, ब्रह्मपुत्रस्नानं, ब्रह्मपुत्रस्नानमन्त्र:–ब्रह्मपुत्र महाभाग शन्तनो: कुलसंभव। अमोघागर्भसंभूत ☐
श्रीरामावतार:, श्रीरामनवमीव्रतम्, गं. ५१।४३उ., अश्विन्यां मेष रवि: ३७।७ मु० १५ फलं महार्घम्, यवविषुवसंक्रान्तिपुण्यकालोदिने T
गं. ६।४३ या, गण्डयोगमानं ५७।१८, भ० ३४।४४ उ०, मासादि:।
सर्वेषां कामदा ११ व्रतम्, भ४।४४या.,पूर्वदिग्यात्रा घं.७.मि.२५ उपरि दिवारात्रौ। ☐ पापं लौहित्य मे हर, चैत्रेब्रह्मपुत्रस्नानं महापुण्यदम्।
श्रीविष्णु १२ गोघृतेनपारणं, प्रदोष १३ व्रतं, पूर्वोत्तरयोर्यात्रापूर्वफल्गुन्याम्, प्रथमाब्दीयद्विरागमनमन्नप्राशन गृहप्रवेशश्चोत्तरफल्गुन्याम्।
प्रदोष १४ व्रतं, चैत्रावली, मदनत्रयोदशी, गोष्ठालये सत्संगारंभ:, श्रीमहावीर जयन्ती, प्रथमाब्दीयद्विरागमनं गृहप्रवेशोऽन्नप्राशनञ्चत्रयोदश्याम्।
भ १२।१६उ ४४।३२ या, अश्विन्यां मेषभौम: ३४।८, गृहारंभ:गृहप्रवेशौ च पूर्णिमायाम्। अश्विन्यां मेषे बुध: १०।२४।
चैत्री १५, स्नानदानादि, मन्वादि:, प्रथमाब्दीय द्विरागमनं पूर्णिमायाम्,(१)एकोदिष्टम्। T घं. १२मि०उपरि, १९०३ शकारंभ: सौम्यगोलारंभश्च ३७।७उ०।

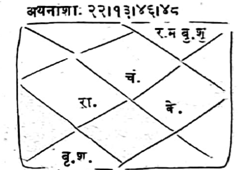
१५ रवौवल्लो ८।३५।३७।२९
अयनांशा: २२।१३।४८।५४



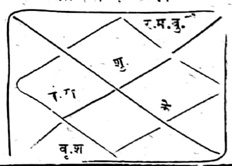
मिश्रमानकालिक दैनिक मङ्गलादिस्पष्टग्रहा:, दिनद्वयग्रहान्तरं गति: | दैनिकलग्नसारिणी चक्रम्

दि.ति.	मंगलः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमानं	मे.अ.	वृ.अ.	मि.अ.	क.अ.	सिं.अ.	क.अ.	तु.अ.	वृ.अ.	ध.अ.	म.अ.	कु.अ.	मी.अ.
र. १	११।२०।११।२२	११। ६।५७। २	५।१२।१३।२१	११।२३।१३।३५	५।१३। ०।१३	९।१६। २।३९	४५।२९	७।५३	९।४९	१२। २	१४।२०	१६।३४	१८।४७	२१। ३	२३।२०	१।२६	३।१२	४।४४	६।१५
चं. २	११।२०।५७।२६	११। ८।४८।४०	५।१२। ५।५०	११।२४।२८।१२	५।१२।५५।२०	९।१५।५९।२८	४५।३१	७।४९	९।४५	११।५८	१४।१६	१६।३०	१८।४३	२०।५९	२३।१६	१।२२	३। ८	४।४०	६।११
मं. ३	११।२१।४३।३०	११।१०।४०।१८	५।११।५८।१९	११।२५।४२।४९	५।१२।५०।३१	९।१५।५६।१७	४५।३३	७।४५	९।४१	११।५४	१४।१२	१६।२६	१८।३९	२०।५५	२३।१२	१।१८	३। ४	४।३६	६। ७
बु. ४	११।२२।२९।३४	११।१२।३१।५६	५।११।५०।४९	११।२६।५७।२५	५।१२।४५।४०	९।१५।५३। ६	४५।३५	७।४१	९।३७	११।५०	१४। ८	१६।२२	१८।३५	२०।५१	२३। ८	१।१४	३।००	४।३२	६। ३
बृ. ५	११।२३।१५।३८	११।१४।२३।३४	५।११।४३।१९	११।२८।१२। १	५।१२।४०।४९	९।१५।४९।५५	४५।३७	७।३८	९।३४	११।४७	१४। ५	१६।१९	१८।३२	२०।४८	२३। ५	१।११	२।५७	४।२९	६।००
शु. ६	११।२४। १।४२	११।१६।१५।१२	५।११।३५।४९	११।२९।२६।३७	५।१२।३५।५८	९।१५।४६।४४	४५।३९	७।३४	९।३०	११।४३	१४। १	१६।१५	१८।२८	२०।४४	२३। १	१। ७	२।५३	४।२५	५।५६
श. ७	११।२४।४७।४६	११।१८। ६।५०	५।११।२८।१९	००।००।४१।१३	५।१२।३१। ८	९।१५।४३।३३	४५।४१	७।३०	९।२६	११।३९	१३।५७	१६।११	१८।२४	२०।४०	२२।५७	१। ३	२।४९	४।२१	५।५२
र. ८	११।२५।३३।५०	११।१९।५८।२८	५।११।२०।४९	००। १।५५।४९	५।१२।२६।१८	९।१५।४०।२२	४५।४३	७।२६	९।२२	११।३५	१३।५३	१६। ७	१८।२०	२०।३६	२२।५३	०।५९	२।४५	४।१७	५।४८
चं. ९	११।२६।१९।३४	११।२१।४९।५०	५।११।१३।१७	००। ३।१०।११	५।१२।२१।४१	९।१५।३७।१२	४५।४५	७।२२	९।१८	११।३१	१३।४९	१६। ३	१८।१६	२०।३२	२२।४९	०।५५	२।४१	४।१३	५।४४
मं.१०	११।२७। ५।१८	११।२३।४१।११	५।११। ५।४५	००। ४।२४।३३	५।१२।१७। ४	९।१५।३४। १	४५।४७	७।१९	९।१५	११।२८	१३।४६	१६।००	१८।१३	२०।२९	२२।४६	०।५२	२।३८	४।१०	५।४१
बु.११	११।२७।५१। १	११।२५।३२।३२	५।१०।५८।१३	००। ५।३८।५५	५।१२।१२।२७	९।१५।३०।५०	४५।४९	७।१५	९।११	११।२४	१३।४२	१५।५६	१८। ९	२०।२५	२२।४२	०।४८	२।३४	४। ६	५।३७
बृ.१२	११।२८।३६।४४	११।२७।२३।५३	५।१०।५०।४२	००। ६।५७।१७	५।१२। ७।५०	९।१५।२७।३९	४५।५१	७।११	९। ७	११।२०	१३।३८	१५।५२	१८। ५	२०।२१	२२।३८	०।४४	२।३०	४। २	५।३३
शु.१३	११।२९।२२।२७	११।२९।१५।१४	५।१०।४३।११	००। ८। ७।३९	५।१२। ३।१३	९।१५।२४।२८	४५।५३	७। ७	९। ३	११।१६	१३।३४	१५।४८	१८। १	२०।१७	२२।३४	०।४०	२।२६	३।५८	५।२९
श.१४	००।००। ८।१०	०। १। ६।३५	५।१०।३५।४०	००। ९।२२। १	५।११।५८।३६	९।१५।२१।१७	४५।५५	७। ३	८।५९	११।१२	१३।३०	१५।४४	१७।५७	२०।१३	२२।३०	०।३६	२।२२	३।५४	५।२५
र.१५	००।००।५३।५३	०। २।५७।५६	५।१०।२८। ९	००।१०।३६।२३	५।११।५३।५९	९।१५।१८। ७	४५।५६	७।००	८।५६	११। ९	१३।२७	१५।४१	१७।५४	२०।१०	२२।२७	०।३३	२।१९	३।५१	५।२२

१ रवौवल्ली ८।३५।३७।१५
अयनांशा: २२।१३।४६।४८



८ रवौवल्ली ८।३५।३७।२२
अयनांशा: २२।१३।४७।५१



अथ विविध विषया:—चैत्र शुक्लप्रतिपत्त: नवमीं यावद्दुर्गापूजनोत्सवस्तत्र देवीप्रतिमां निर्माय पूजयेत्सप्तशती पाठादिकं च कुर्यात्॥ **चैत्रशुक्लाष्टम्यामशोक** कलिकापानमंत्र:–त्वमशोककराभीष्ट मधुमाससमुद्भव। पिबामि शोकसन्तप्तो मामशोकं सदा कुरु। एतत्पानफलं लिंगपुराणे–अशोक कलिका ह्यष्टौ ये पिबन्ति पुनर्वसौ। चैत्रेमासि सिताष्टम्यां न ते शोकमवाप्नुयु:॥ चैत्र शुक्ल नवम्यामुदयव्यापिन्यां रामनवमी व्रतन्तवाङ्गदेवतापूजनपूर्वक श्रीरामं सम्पूज्यार्घ्यं दद्यात्तन्मन्त्र:–दशानन वधार्थाय धर्मसंस्थापनाय च। राक्षसानां विनाशाय दैत्यानां निधानाय च। परित्राणाय साधूनां जातो राम: स्वयं हरि:। गृहाणार्घ्यं मया दत्तं भ्रातृभि: सहितोऽनघ। तत: परदिने इदं विष्णुरिति मंत्रेण जुहुयाद्ब्राह्मणांश्च भोजयत्। मिथिला माहात्म्यं–महापुण्यातिरेकैश्च जन्म लब्ध्वा च भारते। मिथिलायां निवासस्य नरा: संयान्ति योग्यताम्।

वातावरणम्—पक्षादित: षष्ठीं यावद्वह्नितापादयस्तत: पक्षान्तं यावत्खण्डवृष्टि-वायुतापदय:।

ग्रहस्थिति:—मार्गी पश्चिमास्त: कुज:, मार्गिणौ पूर्वास्तौ बुधशुक्रौ, वक्रिणौ पूर्वोदितौ गुरुशनी।

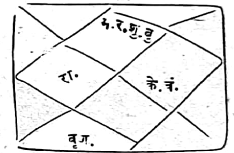
वैशाखकृष्णपक्षः — शकः १९०३, संवत् २०३८, सन् १३८८ साल, दि. २०।४।८१ ई० तः दि. ४।५।८१ ई० या., दक्षिणेकालः । वक्रीपूर्वोदितो गुरुः, मार्गीपूर्वास्तः शुक्रः, अशुद्धः, वसन्तर्तुः, सौम्यगोलः, उत्तरायणम् ।

तिथिः	तिथयः द.प.	घं.मि.	नक्षत्राणि	द.प.	घं.मि.	योगाः द.प.	करणानि द.प.	चन्द्रस्थितिः द.प.	घं.मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादि	दिनमानं द.प.	सू.उ. घं.मि.	सू.अ. घं.मि.	दिनांक रा.	सौ	अं.	वैशाखकृष्णपक्षः
चं. १	२१।४९	दि. २।२१	स्वा.	२९। ६	दि. ५।१५	सि. ५९।४४	कौ. २१।४९	तुल	अहोरात्र	०। ६।५७।३३	३१।५६	५।३७	६।३२	३०	८	२०	मेषादित्येनिम्बपत्रद्वययुतमसूरबीजपानम् , प्र.व. द्विरागमनम् दि. घ.२ मि. २१ या०, पश्चिम दक्षिणयात्रा च ।
मं. २	२७। ६	,, ४।२६	वि.	३५।४०	रा. ७।५१	व्य. ६०।००	व. २७। ६	तु. १९। २	दि. १।१२	०। ७।५४।५६	३२।००	५।३६	६।२४	१	९	२१	भ० ५९।३४ उ. भरण्यांशुक्रः ५८।३५ ।
बु. ३	३२। २	सं. ६।२४	अनु	४१।५२	,, १०।२०	व्य. १।१४	वि. ३२। २	वृश्चिक	अहोरात्र	०। ८।५२।१९	३२। ४	५।३५	६।२५	२	१०	२२	भ. ३२।२ या०, गृहारम्भस्तृतीयायाम् ।
बृ. ४	३६।१७	रा. ८।५३	ज्ये.	४७।२६	,, १२।३२	व. २।१९	वव. ५।१०	वृ. ४७।२६	रा. १२।३३	०। ९।४९।४२	३२। ७	५।३५	६।२५	३	११	२३	गण्ड ४१।२६ उ० ५६।२६ या०, गणेशचौठव्रतम् , वक्रगत्योत्तरफल्गुन्यां गुरुः ५२।५५, प्र.व. द्विरागमनं मूले, पश्चिमोत्तरयात्रा रा. घ. ८ मि. ५३ उ० ।
शु. ५	३९।३३	,, ९।२३	मू.	५१।५९	,, २।२२	प. २।५१	कौ. ८।५५	धनु	अहोरात्र	०।१०।४७। ५	३२।१०	५।३४	६।२६	४	१२	२४	दग्धतिथिः रा. घ. ९ मि. २३ उ०, पूर्वोत्तरयात्रा, प्र.व. द्विरागमनञ्च रा. घ. ९ मि. २३ या० ।
श. ६	४१।४३	,, १०।१४	पू.	५५।२६	,, ३।४३	शि. २।२६	ग. १०।३८	धनु	अहोरात्र	०।११।४४।२८	३२।१३	५।३३	६।२७	५	१३	२५	भ. ४१।४३ उ०, कोकिला ६, दग्धतिथिः रा. घ. १० मि. १४ या०, भरण्यां बुधः १५।३५ ।
र. ७	४२।३६	,, १०।३५	उ.	५७।३४	,, ४।३५	सि. १।१३	वि. ०२।१०	घ. १०।५८	दि. ९।५६	०।१२।४१।५१	३२।१६	५।३३	६।२७	६	१४	२६	सा० यो० द० ५७।४२ भ, १२।१० या०, शर्करा ७ सूतीस्नानम् ।
चं. ८	४२। ४	,, ११।२२	श्र.	५८।२७	,, ४।५५	शु. ५५।३८	बा. १२।२०	मकर	अहोरात्र	०।१३।४०।१५	३२।२०	५।३२	६।२८	७	१५	२७	पञ्चकारम्भः रा० घ० ४ मि० ५५ उ०, भरण्यां रविः १८।१४ ।
मं. ९	४०।१८	,, ९।३८	ध.	५८।१०	,, ४।४७	शु. ५९।२२	तै. ११।११	म. २८।१९	दि. ४।५१	०।१४।४०। ७	३२।२३	५।३१	६।२९	८	१६	२८	०।
बु.१०	३७।२७	,, ८।३०	श.	५६।४५	,, ४।१३	ब्र. ४६।१४	व. ८।५३	कुम्भ	अहोरात्र	०।१५।३९।१५	३२।२६	५।३१	६।२९	९	१७	२९	भ. ८।५३ उ० ३७।७ या०, पश्चिमयात्रा दिवारात्रौ ।
बृ.११	३३।३३	,, ६।५५	पू.	५४।३२	,, ३।१९	ऐ. ४०।२०	वव. ५।३१	कु. ४०। ५	रा. ९।३२	०।१६।३८।२३	३२।२९	५।३०	६।३०	१०	१८	३०	वरूथिनी ११ व्रतं सर्वेषाम् , पश्चिमयात्रा रा. घ० ३ मि. १९ या० ।
शु.१२	२८।५३	दि. ५। ३	उ.	५१।३०	,, २। ६	वै. ३३।४७	कौ. १।१३	मीन	अहोरात्र	०।१७।३७।३१	३२।३२	५।३०	६।३०	११	१९	१	मई ५ मासारंभः, प्रदोष १३ व्रतम् ।
श.१३	२३।३४	,, २।५५	रे.	४७।५५	,, १२।३९	वि. २६।४३	व. २३।३४	मी. ४७।५५	रा. १२।३९	०।१८।३६।३९	३२।३५	५।२९	६।३१	१२	२०	२	भ. २३।३४ उ० ५०।४० या०, गण्ड ३५।५५ उ० ५०।५५ या०, चतुर्दशीव्रतम् पञ्चकान्तः रा.घ. १२ मि. ३९ उ०, कृत्तिकायां बुधः ३०।४२, कृत्तिकायां शुक्रः ४५।३३ ।
र.१४	१७।४७	,, १२।३५	अ.	४३।५६	,, ११। २	प्री. १९।१७	श. १७।४७	मेष	अहोरात्र	०।१९।३५।४७	३२।३८	५।२८	६।३२	१३	२१	३	(१४।३०) एकोदिष्टम् ।
चं.३०	११।४३	,, १०। ९	भ.	३९।४४	,, ९।११	आ. ११।३९	ना. ११।४३	मे. ५३।४३	रा. २।५७	०।२०।३३।४२	३२।४२	५।२८	६।३२	१४	२२	४	बैशाखी ३०, सोमवारीव्रतम् , बृषेबुधः २३।२८ पश्चिमोदितो बुधः ७।५० ।

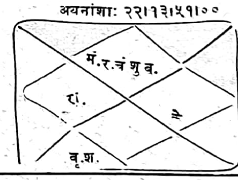
मिश्रमानकालिक दैनिकमङ्गलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिः — **दैनिकलग्नसारिणीचकम्**

दि.थि.	मङ्गल	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमानं	मे.अ.	वृ.अ.	मि.अ.	क.अ.	सिं.अ.	क.अ.	तु.अ.	वृ.अ.	ध.अ.	म.अ.	कु.अ.	मी.अ.
चं. १	०। १।३९।२३	०। ४।५०।२४	५।१०।२५।४९	०।११।५०।३३	५।११।४९।४४	९।१५।१४।५६	४५।५८	६।५६	८।५२	११। ५	१३।२३	१५।३७	१७।५०	२०। ६	२२।२३	०।२९	२।१५	३।४७	५।१८
मं. २	०। २।२४।५३	०। ६।४२।५२	५।१०।२३।३०	०।१३। ४।४३	५।११।४५।२९	९।१५।११।५४	४६।००	६।५२	८।४८	११। १	१३।१९	१५।३३	१७।४६	२०। २	२२।१९	०।२५	२।११	३।४३	५।१४
बु. ३	०। ३।१०।२२	०। ८।३५।२०	५।१०।२१।११	०।१४।१८।५३	५।११।४१।१४	९।१५। ८।३४	४६। २	६।४९	८।४५	१०।५८	१३।१६	१५।३०	१७।४३	१९।५९	२२।१६	०।२२	२। ७	३।४०	५।११
बृ. ४	०। ३।५५।५१	०।१०।२७।४८	५।१०।१८।५२	०।१५।३३। २	५।११।३६।५३	९।१५। ५।२३	४६। ४	६।४५	८।४१	१०।५४	१३।१२	१५।२६	१७।३९	१९।५५	२२।१२	०।१८	२। ४	३।३६	५। ७
शु. ५	०। ४।४१।२०	०।१२।२०।१६	५।१०।१६।३३	०।१६।४७।१५	५।११।३२।४४	९।१५। २।१२	४६। ६	६।४१	८।३७	१०।५०	१३। ८	१५।२२	१७।३५	१९।५०	२२। ८	०।१४	२। ०	३।३२	५। ३
श. ६	०। ५।२६।४९	०।१४।१२।४४	५।१०।१४।१४	०।१८। १।२०	५।११।२८।२९	९।१४।५९। १	४६। ७	६।३७	८।३३	१०।४६	१३। ४	१५।१८	१७।३१	१९।४७	२२। ४	०।१०	१।५६	३।२८	४।५९
र. ७	०। ६।१२।१८	०।१६। ५।११	५।१०।११।५५	०।१९।१५।२९	५।११।२४।१४	९।१४।५५।५२	४६। ८	६।३४	८।३०	१०।४३	१३। १	१५।१५	१७।२८	१९।४४	२२। १	०। ७	१।५३	३।२५	४।५६
चं. ८	०। ६।५७।२४	०।१७।५५। ५	५।१०। २। ६	०।२०।२९।४२	५।११।२०।२२	९।१४।५२।४१	४६।१०	६।३०	८।२६	१०।३९	१२।५७	१५।११	१७।२४	१९।४०	२१।५७	०। ३	१।४९	३।२१	४।५२
मं. ९	०। ७।४२।३२	०।१९।४४।५९	५। ९।५२।१७	०।२१।४३।५५	५।११।१६।३५	९।१४।४९।३०	४६।१२	६।२६	८।२२	१०।३५	१२।५३	१५। ७	१७।२०	१९।३६	२१।५३	२३।५९	१।४५	३।१७	४।४८
बु.१०	०। ८।२७।३९	०।२१।३४।५३	५। ९।४२।२८	०।२२।५८। ८	५।११।१२।३८	९।१४।४६।१९	४६।१४	६।२२	८।१८	१०।३१	१२।४९	१५। ३	१७।१६	१९।३२	२१।४९	२३।५५	१।४१	३।१३	४।४४
बृ.११	०। ९।१२।४३	०।२३।२४।४७	५। ९।३२।३९	०।२४।१२।२१	५।११। ८।४६	९।१४।४३। ८	४६।१६	६।१८	८।१४	१०।२७	१२।४५	१४।५९	१७।१२	१९।२८	२१।४५	२३।५१	१।३७	३। ९	४।४०
शु.१२	०। ९।५७।५१	०।२५।१४।४१	५। ९।२२।५१	०।२५।२६।३३	५।११। ४।५४	९।१४।३९।५७	४६।१७	६।१५	८।११	१०।२४	१२।४२	१४।५६	१७। ९	१९।२५	२१।४२	२३।४७	१।३४	३। ६	४।३७
श.१३	०।१०।४२।५७	०।२७। ४।३४	५। ९।१३। ३	०।२६।४०।४५	५।११। १। २	९।१४।३६।४६	४६।१८	६।११	८। ७	१०।२०	१२।३८	१४।५२	१७। ५	१९।२१	२१।३८	२३।४४	१।३०	३। २	४।३३
र.१४	०।११।२८। ३	०।२८।५४।२७	५। ९। ३।१५	०।२७।५४।५८	५।१०।५७।१०	९।१४।३३।३६	४६।१९	६। ७	८। ३	१०।१६	१२।३४	१४।४८	१७। १	१९।१७	२१।३४	२३।४०	१।२६	२।५८	४।२९
चं.३०	०।१२।१२।५०	१।००।३७।५५	५। ८।५८।३६	०।२९। ८।१२	५।१०।५०।५९	९।१४।३०।२६	४६।२१	६। ३	७।५९	१०।१२	१२।३०	१४।४४	१६।५७	१९।१३	२१।३०	२३।३६	१।२२	२।५४	४।२५

७ रवौल्ली ८।३५।३७।३६
अयनांशाः २३।१३।४९।५७



१४ रवौवल्ली ८।३५।३७।४३
अयनांशाः २३।१३।५१।००



अथ विविध विषयाः—वैशाखे प्रातः स्नानमन्त्रः—वैशाखे सकले मासे मेषसंक्रमणेरवेः। प्रातः सनियमं स्नास्ये प्रीयतां मधुसूदन। मधुहन्तुः प्रसादेन ब्राह्मणानामनुग्रहात् निर्विघ्नमस्तु मे पुण्यंवैशाखस्नानमन्वहम् । माधवेमेषगे भानौ मुरारे मधुसूदन । प्रातः स्नानेन मे देव फलदो भव पापहन् । **प्रातः स्नानस्य समयः—**उत्तमं तु सनक्षत्रं मध्यमं लुप्ततारकम् । सवितर्युदिते भूप ततो हीनं प्रकीर्त्तितम् ॥ **वैशाखे त्याज्य वस्तूनि—**कांस्यं मांसं मसूरान्नं चणकं कोद्रवन्तथा । शाकं मधु परान्नं च पुनर्भोजनमैथुने । वैशाखे दानवस्तुनि स्कान्दे-प्रपा कार्या च वैशाखे देवे देया गलन्तिका । उपानद्व्यजनं छत्रं सूक्ष्मवासांसि चन्दनम् । जलपात्राणि देयानि तथापूपगृहाणि च । तिथितत्त्वे—ददाति यो हिमेषादौ सक्तुनम्बुघटान्वितान् । पितृनुद्दिश्य विप्रेभ्यः सर्वपापैः प्रमुच्यते ।

वातावरणम्—पक्षादितः पञ्चमींयावत् प्रचण्ड वायुतापादयः । ततोद्वादशींयावन्मेघसंचार वायुवृष्टियोगः । ततः प्रक्षान्तं यावत् वायुतापाधिवः ।

ग्रहस्थितिः—मार्गी पश्चिमास्तः कुजः, मार्गिणौ पूर्वास्तौबुधशुक्रौ, वक्रिणौपूर्वोदितौ गुरुशनी ।

वैशाखशुक्लपक्षः	शकः १९०३, संवत् २०३८, सन्, १३८८ साल, दि० ५।५।८१ ई० तः १८।५।८१ ई० यावत्, दक्षिणेकालः, ११ तः पश्चिमेकालः । वक्रीपूर्वोदितोगुरुः, मार्गीपूर्वास्तशुक्रः, ५ तः पश्चिमोदितः शुक्रः, अशुद्धः, १५ तः शुद्धः, वसन्तर्तुः, ११ तः ग्रीष्मः, सौम्यगोलः, उत्तरायणम् ।

दि ति.	तिथयः द. प.	घं. मि.	नक्षत्राणि	द. प.	घं. मि.	योगाः द. प.	करणानि द.प.	चन्द्रस्थितिः रा.द.प.	घं. मि.	स्पष्टसूर्यः राश्य दि	दिनमान द. प.	सू.उ. घं.मि.	सू.अ. घं. मि.	दिनाङ्क रा.	सौ.	चं.	वैशाखशुक्लपक्षः
मं. १	५।३७	दि. ७।४२	कृ.	३५।४०	रा. ७।४३	प्री. ३।५६	बव ५।३७	वृष	अहोरात्र	०।२१।३१।३७	३२।४५	५।२७	६।३३	१५	२३	५	२ ति. दं. ५४।१ अवमम्, शिवाजीजयन्ती, शो. यो. दं. ५२।२६ वृषेशुक्रः २७।१७, चन्द्रदर्शनम्, मु० ३० फलं साम्यम् ।
बु. ३	५४।००	रा. ३। २	रो.	३१।४९	सं. ६।५१	आ. ४९। ३	तै. २४।१९	वृष	अहोरात्र	०।२२।२९।३२	३२।४८	५।२६	६।३४	१६	२४	६	अक्षयतृतीया, सत्ययुगादिः, भरण्यां कुजः १७।५४, अन्नप्राशनम्, परशुरामावतारः ।
वृ. ४	४८।५३	" १२।५९	मृ.	२८।२३	दि. ४।४७	सु. ४२। ९	व. २०।५७	वृ. ००। ६	प्रा. ५।२८	०।२३।२७।२७	३२।५१	५।२६	६।३४	१७	२५	७	भ. २०।५७ उ. ४८।५३ या. ।
शु. ५	४४।३०	" ११।१३	आ.	२५।३४	" ३।३९	धृ. ३५।५०	बव १६।४२	मिथुन	अहोरात्र	०।२४।२५।२१	३२।५४	५।२५	६।३५	१८	२६	८	पश्चिमोदितः शुक्रः ५५।३०, दग्धतिथिः रा. घं. ११ मि. १३ उ., प्र. व. द्विरागमनं पञ्चम्यां पुनर्वसौ, दक्षिण यात्रा दि. घ. ३।३९ उ. रा. घं. ११ मि. १३ या.*
श. ६	४०।५९	" ९।४९	पुन.	२३।४२	" २।५४	शू. ३०।१३	कौ. १२।४५	मि. ९।१३	दि. ९। ६	०।२५।२३।१५	३२।५७	५।२५	६।३५	१९	२७	९	दग्धतिथिः रा. घ. ९ मि. ४९ या., रामानुजाचार्य जयन्ती । *शंकराचार्यजयन्ती । काष्ठादि संस्थापनम्
र. ७	३८।२८	" ८।४७	पु.	२२।३९	" २।२८	गं. २५।२७	ग. ९।४९	कर्क	अहोरात्र	०।२६।२१। ९	३३।००	५।२४	६।३६	२०	२८	१०	भ. ३८।३८ उ., जाह्नवी ७, षाण्मासिक सूर्यव्रतविसर्जनम्, अन्नप्राशनम्, उत्तरयात्रा दि. घं. २।२८ या. । प्र. व. द्विरागमनं पुष्ये । रोहिण्यां बुधः १०।२१ ।
चं. ८	३७।१२	" ८।१७	श्ले.	२२।५०	" २।३२	वृ. २१।३३	वि. ७।५५	क. २२।५०	दि. २।३१	०।२७।१८।५१	३३। ३	५।२३	६।३७	२१	२९	११	भ. ७।५५ या., गण्ड ११।५० उ. २६।५० या., कृत्तिकायां रविः ५।३१ ।
मं. ९	३७। ६	" ८।१२	म.	२४।१४	" ३। ५	ध्रु. १८।४०	बा. ७। ९	सिंह	अहोरात्र	०।२८।१६।३२	३३। ६	५।२३	६।३७	२२	३०	१२	श्री जानकीनवमी । जगज्जनन्याः श्री जानक्याः प्रादुर्भावदिनम्, सीतामढ्यांप्रादुर्भावस्थले श्री जानकीदर्शनम् ।
बु. १०	३८।२०	" ८।४२	पू.	२६।५३	" ४। ७	व्या. १६।४७	तै. ७।४३	सिं. ४२।५१	रा. १०।३०	०।२९।१४।१३	३३। ९	५।२२	६।३८	२३	३१	१३	मासान्तः, रोहिण्यां शुक्रः ३५।२८ ।
वृ. ११	४०।४३	" ९।३९	उ.	३०।४५	" ५।४०	ह. ९५।५७	व. ९।३२	कन्या	अहोरात्र	१।००।११।५४	३३।१२	५।२२	६।३८	२४	१	१४	भ. ९।३२ उ. ४०।४३या., वृषेरविः ३३।५८ मु. ३० फलं साम्यम्, विष्णुपदी संक्रान्ति पुण्यकालः दि. घ. १२।०० उ. । मोहिनी ११ व्रतं सर्वेषाम् ।
शु. १२	४४।१८	" ११। ४	ह.	३५।४५	रा. ७।३९	वै. १६।००	बव १२।३०	कन्या	अहोरात्र	१। १। ९।३५	३३।१५	५।२१	६।३९	२५	२	१५	मासादिः, मधुसूदन १२, कुशोदकेन पारणा ।
श. १३	४८।४२	" १२।४९	चि.	४१।३४	" ९।५८	सि. १६।४८	तै. १६।२०,	क. ८।४०	दि. ८।४८	१। २। ७।१६	३३।१८	५।२०	६।४०	२६	३	१६	प्रदोष १३ व्रतम्, वृषादित्ये शिरीष बीजपानम्, गृहप्रवेशस्त्रयोदश्याम् ।
र. १४	५३।४२	" २।४९	स्वा.	४७।५८	" १२।३१	व्य. १८। ७	ग. २१।१२	तुल	अहोरात्र	१। ३। ४।५७	३३।२०	५।२०	६।४०	२७	४	१७	चतुर्दशीव्रतम्, नरसिंहावतारः ।
चं. १५	५८।४८	" ४।५०	वि.	५४।३४	" ३। ९	व. १९।४९	वि. २६।१५	तु. ३७।५५	रा. ८।२९	१। ४। २।२८	३३।२३	५।१९	६।४	२८	५	१८	वैशाखी पूर्णिमा । पुष्टः शुक्रः ५५।३० उ., शुद्धारम्भः ५५।३० उ., नैऋत्यामगस्त्यास्तः, बुद्धजयन्ती, मृगशिरायां बुधः ५१।३० कच्छपावतारः ।

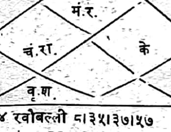
मिश्रमानकालिक दैनिक मङ्गलादिस्पष्टग्रहाः, दिनद्वयग्रहान्तरं गतिः । ।

दि. ति.	मंगलः	बुधः	गुरुः	शनिः	केतुः	मिश्रमान
मं.	०।१२।५७।३७	११ २।२८।२३	५। ८।५३।५७	५।१०।८।४८	९।५४।२७।१५	४६।२३
बु. ३	०।१३।४२।२४	११ ४। ४।५१	५। ८।४९।१८	५।१०।३८।३७	९।१४।२४। ४	४६।२५
वृ. ४	०।१४।२७।११	११ ५।४८।१९	५। ८।४४।३९	५।१०।३२।२७	९।१४।२०।५३	४६।२७
शु. ५	०।१५।११।५८	११ ७।३१।४७	५। ८।४०।००	५।१०।२६।१७	९।१४।१७।४२	४६।२८
श. ६	०।१५।५६।४५	११ ९।१५।१४	५। ८।३५।२१	५।१०।२०। ७	९।१४।१४।३१	४६।२९
र. ७	०।१६।४१।३१	११।१०।५८।४१	५। ८।३०। २	५।१०।१३।५७	९।१४।११।२२	४६।३०
चं. ८	०।१७।२५।५५	११।१२।३१।२६	५। ८।२७।१९	५।१०।१४।१२	९।१४। ८।११	४६।३२
मं. ९	०।१८।१०।१९	११।१४। ११।१	५। ८।२३।५६	५।१०।१४।२७	९।१४। ५।००	४६।३४
बु. १०	०।१८।५४।४३	११।१५।३६।५६	५। ८।२०।३३	५।१०।१४।४२	९।१४। १।४९	४६।३६
वृ. ११	०।१९।३९। ६	११।१७। ९।४१	५। ८।१७।१०	५।१०।१४।५७	९।१३।५८।३८	४६।३७
शु. १२	।२०।२३।२९	११।१८।४२।२६	५। ८।१३।४७	५।१०।१५। २	९।१३।५५।२७	४६।३८
श. १३	०।२१। ७।५२	११।२०।१५।११	५। ८।१०।२४	५।१०।१५।२६	९।१३।५२।१६	४६।३९
र. १४	०।२१।५२।१५	११।२१।४७।५५	५। ८। ७। २	५।१०।१५।४८	९।१३।४९। ७	४६।४०
चं. १५	०।२२।३६।१४	११।२३। ३।५८	५। ४। ४।५९	५।१०।१३।३६	९।१३।४६।५६	४६।४२

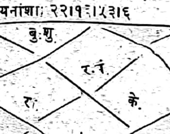
दैनिकलग्नसारिणी चक्रम्

मे.अ.	वृ.अ.	मि.अ.	क.अ.	सि.अ.	क.अ.	तु.अ.	वृ.अ.	ध.अ.	म.अ.	कु.अ.	मी.अ.
५।५९	७।५५	१०। ८	१२।२६	१४।४०	१६।५३	१९। ९	२१।२६	२३।३२	१।१८	२।५०	४।२१
५।५५	७।५१	१०। ४	१२।२२	१४।३६	१६।४९	१९। ५	२१।२२	२३।२८	१।१४	२।४६	४।१७
५।५१	७।४७	१०। ०	१२।१८	१४।३२	१६।४५	१९। १	२१।१८	२३।२४	१।१०	२।४२	४।१३
५।४७	७।४३	९।५६	१२।१४	१४।२८	१६।४१	१८।५७	२१।१४	२३।२०	१। ६	२।३८	४। ९
५।४३	७।३९	९।५२	१२।१०	१४।२४	१६।३७	१८।५३	२१।१०	२३।१६	१। २	२।३४	४। ५
५।३९	७।३५	९।४८	१२। ६	१४।२०	१६।३३	१८।४९	२१। ६	२३।१२	०।५८	२।३०	४। १
५।३६	७।३२	९।४५	१२। २	१४।१७	१६।३०	१८।४६	२१। ३	२३। ९	०।५५	२।२७	३।५८
५।३२	७।२८	९।४१	११।५९	१४।१३	१६।२६	१८।४२	२०।५९	२३। ५	०।५१	२।२३	३।५४
५।२८	७।२४	९।३७	११।५५	१४। ९	१६।२२	१८।३८	२०।५५	२३। १	०।४७	२।१९	३।५०
५।२४	७।२०	९।३३	११।५१	१४। ५	१६।१८	१८।३४	२०।५१	२२।५७	०।४३	२।१५	३।४६
५।२०	७।१६	९।२९	११।४७	१४। १	१६।१४	१८।३०	२०।४७	२२।५३	०।३९	२।११	३।४२
५।१६	७।१२	९।२५	११।४३	१३।५७	१६।१०	१८।२६	२०।४३	२२।४९	०।३५	२। ७	३।३८
५।१२	७। ८	९।२१	११।३९	१३।५३	१६। ६	१८।२२	२०।३९	२२।४५	०।३१	२। ३	३।३४
५। ८	७। ४	९।१७	११।३५	१३।४९	१६। २	१८।१८	२०।३५	२२।४१	०।२७	१।५९	३।३०

७ रवौबल्ली ८।३५। ७।५०
अयनांशः २२।१३।५२।१३



१४ रवौबल्ली ८।३५।३७।५७
अयनांशः २२।१३।५३।६



अथ विविध विषयाः–वैशाखशुक्ल तृतीयायां परशुरामायार्घ्यदानमन्त्रः–जामदग्न्य महावीर क्षत्रियान्तकर प्रभो । गृहाणार्घ्यं मया दत्तं कृपया परमेश्वर ॥ मूलवासः–स्वर्गे शुचिप्रोष्ठपदेषमाघे भूमौ नभःकार्तिकचैत्रपौषे । मूलं ह्यधस्तात्तु तपस्यमार्गवैशाखशुक्रेष्वशुभं च तत्र ॥ अभुक्तमूल विचारः–अश्विनीमघमूलादौ त्रिवेदनवनाडिकाः । रेवतीसार्पशक्रान्ते-मासख्दरसाः क्रमात् । तस्मादेतूत्पन्नानां शान्तिर्विधेया । तत्र मूलोत्पन्नानां विशेषेण यतो हि–मूलाद्यपादजो हन्ति पितरञ्च द्वितीयाजः । मातरञ्च तृतीयेऽर्थं शुभदस्तु तुरीयजः ॥ सा शान्तिः जन्मानन्तरमग्रिम-मूलादिनक्षत्रेषु कार्या । मूलवृक्ष विचारः–मूलं स्तम्भस्त्वचा शाखा पत्रं पुष्पं फलं शिखा । मुनयोऽष्टौ दिशा रुद्राः सूर्याः पंचाब्धयोग्नयः । मूले मूल विनाशः स्यात् तम्भे वंशविनाशनम् । त्वचि मातुर्भवेत्क्लेशः शाखायां मातुलस्य च । पत्रे राज्यं विजानीयात्पुष्पेमन्त्रिपदंस्भृतम् । फले च विपुला लक्ष्मीः शिखायामल्पजीवितम् ॥ त्रीतर-शान्तिरपि विधेया–तत्र सजातीयापत्यत्रयानन्तरं विजातीयापत्यप्रसवस्त्रीतरः ।

वातावरणम्–पञ्चमीतो द्वादशीं यावद् वायुवृष्टियोगः ।

ततःपक्षान्तंयावद् वायुवह्नितापादयः ।

ग्रहस्थितिः–मार्गी पश्चिमास्तः कुजः, पश्चिमोदितोबुधः, ५ तः पश्चिमोदितःशुक्रः, वक्रिणौ पूर्वोदितौ गुरुशनी ।

दि.ति	तिथयः द.प.	घं.मि.	नक्षत्राणि	द.प.	घं.मि.	योगाः द.प.	करणानि द.प.	चन्द्रस्थितिः रा.द.प.	घं.मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादि	दिनमानं द.प.	सू.उ. घं.मि.	सू.अ. घं.मि.	दिनांक रा.	सौ.	अं.
मं. १	६०।००	अहोरात्र	अनु.	६०।००	अहोरात्र	प. २१।२४	वा. ३१।१५	वृश्चिक	अहोरात्र	११ ४।५९।५८	३३।२६	५।१९	६।४१	२९	६	१९
बु. २	३।४१	दि. ६।४६	अनु.	००।५७	प्रा. ५।४१	शि. २२।४०	कौ. ३।४१	वृश्चिक	अहोरात्र	११ ५।५७।२८	३३।२९	५।१८	६।४२	३०	७	२०
बृ. ३	७।५३	,, ८।२७	ज्ये.	६।३८	दि. ७।५७	सि. २३।२४	ग. ७।५३	वृ. ६।३८	दि. ७।५७	११ ६।५४।५८	३३।३२	५।१८	६।४२	३१	८	२१
शु. ३	११। ६	,, ९।४३	मू.	११।२४	,, ९।५९	सा. २३।१७	वि. ११। ६	धनु	अहोरात्र	११ ७।५२।२८	३३।३४	५।१७	६।४३	१	९	२२
श. ४	१३।१३	,, १०।३४	पू.	१५। ७	,, ११।२०	शु. २२।१९	वा. १३।१३	ध. ३०।४४	दि. ५।३५	११ ८।४९।५८	३३।३६	५।१७	६।४३	२	१०	२३
र. ५	१४। १	,, १०।५२	उ.	१७।३४	,, १२।१६	शु. २०।१९	तै. १४। १	मकर	अहोरात्र	११ ९।४७।२८	३३।३८	५।१६	६।४४	३	११	२४
चं. ६	१३।२९	,, १०।४०	श्र.	१८।४०	,, १२।४४	ब्र. १७।१७	व. १३।२९	म. ४८।३९	रा. ११४४	११ १०।४४।४७	३३।४०	५।१६	६।४४	४	१२	२५
मं. ७	११।४५	,, ९।५८	ध.	१९।३८	,, १२।४३	ऐ. १३।१६	बव. ११।४५	कुम्भ	अहोरात्र	११ ११।४२। ५	३३।४२	५।१६	६।४४	५	१३	२६
बु. ८	८।५३	,, ८।३२	श.	१७।२६	,, १२।१३	वै. ८।२४	कौ. ८।१३	कुम्भ	अहोरात्र	११ १२।३९।२३	३३।४४	५।१५	६।४५	६	१४	२७
बृ. ९	४।५९	,, ७।१५	पू.	१५।२६	,, ११।२५	वि. २।४२	ग. ४।५९	कु. ०।५६	दि. ५।३७	११ १३।३६।४१	३३।४५	५।१५	६।४५	७	१५	२८
शु.१०	००।१५	,, ५।२१	उ.	१२।३३	,, १०।१६	आ. ४९।२[illegible]	वि. ०।१५	मीन	अहोरात्र	११ १४।३३।५९	३३।४६	५।१५	६।४५	८	१६	२९
श १२	४९। ३	रा. १२।५२	रे.	९। ३	,, ८।५२	सौ. ४२। ५	कौ. २१।५९	मी. ९। ३	दि. ८।४२	११ १५।३१।१७	३३।४७	५।१५	६।४५	९	१७	३०
र.१३	४२।५३	,, १०।२४	अ.	५।१०	,, ७।१९	शो. ३४।३३	ग. १५।५८	मेष	अहोरात्र	११ १६।२८।३५	३३।४८	५।१४	६।४६	१०	१८	३१
चं.१४	३६।४३	,, ७।५५	भ.	००।५९	प्रा. ५।३८	अ. २६।५३	वि. ९।४८	मे. १४।५६	दि. ११।१३	११ १७।२५।४५	३३।५०	५।१४	६।४६	११	१९	१
मं.३०	३०।४०	सं. ५।३०	रो.	५२।२५	रा. २।२३	सु. १९।२१	च. ३।४२	वृष	अहोरात्र	११ १८।२२।५५	३३।५१	५।१४	६।४६	१२	२०	२

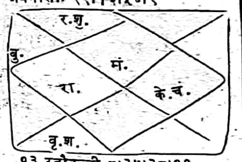
ज्येष्ठकृष्णपक्षः शकः १९०३, संवत् २०३८, सन् १३८८ साल, दि० १९।५।८१ ई० तः २।६।८१ ई० या०, पश्चिमेकालः । वक्रीपूर्वोदितोगुरुः, १० तो मार्गीगुरुः, पश्चिमोदितः शुक्रः शुद्धः, ग्रीष्मर्तुः, सौम्यगोलः, उत्तरायणम् ।

व्यहोजन्मदिनकृत्यम्, ।
पश्चिमयात्रादिवारात्रौ, मुण्डनंद्वितीयायाम् ।
भ. ३८।४९ उ, गण्ड ००।३८उ. १५।३८या०, सूतीस्नानं, निर्वंधविवाहः दि. घं० ७।५७ उ., मुण्डनं ज्येष्ठायाम्, गृहारम्भोमूले, पश्चिमोत्तरयात्रा दि. ७।५७ या० ततः पूर्वोत्तरयात्रा ।
भ.११।६या., गणेश४व्रतम्, दग्धतिथि. दि.घं.९।४३ उ., निर्वंधविवाहः पूर्वयात्रा च दि.घं.९मि.४३या० गृहारम्भस्तृतीयायाम् ।
दग्धतिथिः दि.घं १० मि. ३४ या० ।
सूतीस्नानम् निर्वंधविवाहोदिवारात्रौ, रोहिण्यांरविः ५९।५० मिथुनेंबुधः १९।५० कृत्तिकायांकुजः १९।७ मृगशिरसिशुक्रः २८।१३ ।
भ.१३।२९ उ. ४२।३७ या० पञ्चकारम्भः दि.घं १२ मि. ४४ उ, निर्वंधविवाहोदिवारात्रौ, वक्रगत्योत्तरफल्गुन्यां शनिः २६।३८ ।
सूतीस्नानम् पश्चिमयात्रा दि.घं. ९ मि. ५८ या०, पुष्य ३ च० कर्के राहुः श्रवणा १ च० मकरे केतुः ५६।५० ।
०।
प्रीतियोग दं. ५३।३७ भ. ३२।३७ उ, वृषेभौमः ५९।५४ निर्वंधविवाहः दि. घं. ११ मि. २५ उ, पश्चिमोत्तरयात्रा दि. घं. ७ मि. १५ उ, दि. घं. ११।२५ या० ।
११ ति दं. ५४।४० अवमम्, भ. ०।१५ या, गण्ड ५७।३ उ, अपरा ११ व्रतं स्मार्तानाम्, मिथुनेंशुक्रः १८।२ मार्गीगुरुः ४८।२५ ।
गण्ड १२।३ या., पञ्चकसमाप्तिः दि घ. ८।५२ उ., वैष्णवानां ११ व्रतम् तिलेनपारणा ।
भ. ४२।५३ उ., प्रदोष १३ व्रतम्, सूतीस्नानम्, पूर्वोत्तरयात्रा दि. घ. ७ मि. १९ या. ।
जून ६ मासारंभः, कृ. नं. दं. ५५।५०, भ. ९।४८ या., चतुर्दशी व्रतम्, आर्द्रायां बुधः ५०।५१ ।
ज्येष्ठी ३० पार्वणम्, वटसावित्री व्रतम् ।

मिश्रमानकालिक दैनिक मङ्गलादिस्पष्टग्रहाः, दिनद्वयग्रहा तरं गतिश्च । दैनिकलग्नसारिणी चक्रम

दि.दि.	मङ्गल	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमानं	मे.अ.	वृ.अ.	मि.अ.	क.अ.	सिं.अ.	कं.अ.	तु.अ.	वृ.अ.	ध.अ.	म.अ.	कु.अ.	मी.अ.
मं. १	०।२३।२०।१२	१।२४।२०। १	५। ८। २।५६	१।१७।३४।५१	५।१०।११।३२	९।१३।४२।४५	४६।४४	५। ४	७।००	९।१३	११।३१	१३।४५	१५।५८	१८।१४	२०।३१	२२।३७	०।२३	१।५५	३।२६
बु. २	०।२४। ४।१५	१।२५।३६। ३	५। ८। ०।५३	१।१८।४८।२७	५।१०। ९।२९	९।१३।३९।३४	४६।४५	५।००	६।५६	९। ९	११।२७	१३।४१	१५।५४	१८।१०	२०।२७	२२।३३	०।१९	१।५१	३।२२
बृ. ३	०।२४।४८। ८	१।२६।५२। ५	५। ७।५८।५०	१।२०। २। २	५।१०। ७।२६	९।१३।३६।२६	४६।४६	४।५६	६।५२	९। ५	११।२३	१३।३७	१५।५०	१८। ६	२०।२३	२२।२९	०।१५	१।४७	३।१८
शु. ३	०।२५।३२। ६	१।२८। ८। ९	५। ७।५६।४७	१।२१।१५।३७	५।१०। ५।२३	९।१३।३३।१२	४६।४७	४।५२	६।४८	९। १	११।१९	१३।३३	१५।४६	१८। २	२०।१९	२२।२५	०।११	१।४३	३।१४
श. ४	०।२६।१६। ४	१।२९।२४। ९	५। ७।५४।४४	१।२२।२९।१२	५।१०। ३।२०	९।१३।३०। १	४६।४८	४।४८	६।४४	८।५७	११।१५	१३।२९	१५।४२	१७।५८	२०।१५	२२।२१	०। ७	१।३९	३।१०
र. ५	०।२७। ०। २	२। ०।४०।११	५। ७।५२।४२	१।२३।४२।४७	५।१०। १।१७	९।१३।२६।५२	४६।४९	४।४४	६।४०	८।५३	११।११	१३।२५	१५।३८	१७।५४	२०।११	२२।१७	०। ३	१।३५	३। ६
चं. ६	०।२७।४३।४०	२। १।२७।३८	५। ७।५२।००	१।२४।५६।१८	५। ९।५९।५८	९।१३।२३।४१	४६।५०	४।४०	६।३६	८।४९	११। ७	१३।२१	१५।३४	१७।५०	२०। ७	२२।१३	२३।५९	१।३१	३। २
मं. ७	०।२८।२७।२०	२। २।१५। ५	५। ७।५१।१८	१।२६। ९।४९	५। ९।५८।३९	९।१३।२०।३०	४६।५१	४।३६	६।३२	८।४५	११। ३	१३।१७	१५।३०	१७।४६	२०। ३	२२। ९	२३।५५	१।२७	२।५८
बु. ८	०।२९।१०।५९	२। ३। २।३२	५। ७।५०।३६	१।२७।२३।१९	५। ९।५७।२०	९।१३।१७।१९	४६।५२	४।३२	६।२८	८।४१	१०।५९	१३।१३	१५।२६	१७।४२	१९।५९	२२। ५	२३।५१	१।२३	२।५४
बृ. ९	०।२९।५४।३७	२। ३।४९।५९	५। ७।४९।५४	१।२८।३६।४९	५। ९।५६। ९	९।१३।१४। ९	४६।५३	४।२८	६।२४	८।३७	१०।५५	१३। ९	१५।२२	१७।३८	१९।५५	२२। १	२३।४७	१।१९	२।५०
शु.१०	१। ०।३८।१५	२। ४।३७।२६	५। ७।४९।१३	१।२९।५०।१९	५। ९।५४।४[illegible]	९।१३।१०।५[illegible]	४६।५४	४।२४	६।२०	८।३३	१०।५१	१३। ५	१५।१८	१७।३४	१९।५१	२१।५७	२३।४३	१।१५	२।४६
श.१२	१। १।२१।५३	२। ५।२४।५३	५। ७।४८।३२	२। १। ३।४९	५। ९।५३।२[illegible]	९।१३। ७।४६	४६।५४	४।२०	६।१६	८।२९	१०।४७	१३।०१	१५।१४	१७।३०	१९।४७	२१।५३	२३।३९	१।११	२।४२
र.१३	१। २। ५।३[illegible]	२। ६।१२।१९	५। ७।४७।५१	२। २।१७।१९	५। ९।५२। ५	९।१३। ४।३९	४६।५४	४।१६	६।१२	८।२५	१०।४३	१२।५७	१५।१०	१७।२६	१९।४३	२१।४९	२३।३५	१। ७	२।३८
चं.१४	१। २।४८।५	२। ६।१८।५०	५। ७।४८।३९	२। ३।३०।१[illegible]	५। ९।५१।४०	९।१३। १।२६	४६।५४	४।१२	६। ८	८।२१	१०।३९	१२।५३	१५। ६	१७।२२	१९।३९	२१।४[illegible]	२३।३१	१। ३	२।३४
मं.३०	१। ३।३२।११	२। ६।२४।२१	५। ७।४९।२७	२। ४।४३। [illegible]	५। ९।५१।१५	९।१२।५८।१५	४६।५४	४। ८	६। ४	८।१७	१०।३५	१२।४९	१५। २	१७।१८	१९।३५	२१।४१	२३।२७	०।५९	२।३०

५ रवौबल्ली ८।३५।३८।४
अयनांशा: २२।१३।५४।९



१३ रवौबल्ली ८।३५।३८।११
अयनांशा: २२।१३।५५।१२



अथविविध विषया :—अमायां वटसावित्री व्रतम्—अमायाञ्च तथा ज्येष्ठे वटमूले महासती । त्रिरात्रोपोषिता नारी विधानेन प्रपूजयेत् । सावित्रीप्रतिमां कुर्यात्सौवर्णी वापि मृण्मयीम् । सप्तधान्येन संयुक्तां सावित्रीप्रतिमां शुभाम् । सार्द्धं सत्यवता साध्वीं फलनैवेद्यदीपकैः । सावित्र्याख्यानकंचापि वाचयित्वा द्विजोत्तमैरिति विधिपूर्वकं संपूज्य ब्राह्मणाय-दद्यात्तन्मन्त्रः—सावित्रीयं मया दत्ता सहिरण्या महासती । ब्रह्मणः प्रीणनार्थाय ब्राह्मण प्रतिगृह्यताम् । अथ कर्तिचिन्नियमाः—समित्पुष्प कुशादीनि वहतो नाभिवादयेत् । समित्पुष्पकुशादीनि ब्राह्मणः स्वयमाहरेत् । शूद्रानीतैः क्रयक्रीतैः । कर्मकुर्वन् पतत्यधः । अथ सन्तानप्रद सन्तानगोपाल मंत्र :— देवकीसुत ! गोविन्द ! वासुदेव ! जगत्पते ! देहि मेतनयं कृष्ण ! त्वामहं शरणङ्गतः ॥ इति मंत्रस्य सपादलक्षसंख्यक जपस्तिलपायसघृतैस्तद्दशांश हवनं, तद्दशांश तर्पणं, तद्दशांश मार्जनं, तद्दशांश ब्राह्मणभोजनञ्च कार्यम् ॥

वातावरणम्—पक्षादितस्तृतीयांयावद् वायुतापादयस्ततोदशमीं यावत्सौम्यसमयस्ततः पक्षान्तं यावद् वायुतापवृद्धिक्रयम् ।

ग्रहस्थितिः—मार्गीपश्चिमास्तः कुजः, मार्गिणौबुधशुक्रौ पश्चिमोदितौ. वक्रिणौ पूर्वोदितौ गुरुशनी, १० तो मार्गी गुरुः ।

ज्येष्ठशुक्लपक्षः

शकः १९०३, संवत् २०३८, सन् १३८८ साल, दि० ३।६।८१ ई० तः १७।६।८१ ई० या०, पश्चिमेकालः । मार्गीपूर्वोदितोगुरुः, मा० पश्चिमोदितः शुक्रः, शुद्धः, ग्रीष्मर्त्तुः, सौम्यगोलः, सौम्यायनम् ।

दि.ति.	तिथयः द.प	घं.मि.	नक्षत्राणि	द.प.	घं.मि.	योगाः द.प.	करणानि द.प.	चन्द्रस्थितिः रा.द.प.	घं.मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादि	दिनमानं द.प.	सू.उ. घं.मि.	सू.अ. घं.मि.	दिनांक रा.	सौ.	अं.	
बु. १	२४।५६	दि. ३।१२	मृ.	४९।२१	रा. १२।५८	घृ. ११।५९	वव. २४।५६	वृ. २१। ७	दि. १।४१	१।१९।२०। ५	३३।५२	५।१४	६।४६	१३	२१	३	चन्द्रदर्शनं मु. ३० फलं साम्यम्, निर्बंधविवाहः रा. घं. १२ मि. ५८ या० ।
बृ. २	१९।४१	,, ११ ५	आ.	४६।२४	,, ११।४७	शू. ५। २	कौ. १९।४१	मिथुन	अहोरात्र	१।२०।२७।१५	३३।५३	५।१३	६।४७	१४	२२	४	गं. यो. दं. ५३।३६, वक्री बुधः १६।५४, आर्द्रायां शुक्रः २४।४२ ।
शु. ३	१५।१२	,, ११।१८	पुनं.	४४।२२	,, १०।५८	वृ. ५२।५३	ग. १५।१२	नि. २९।३८	दि. ५। ४	१।२१।१४।२५	३३।५४	५।१३	६।४७	१५	२३	५	भ. ४३।२३ उ., पञ्चाग्निव्रतम् रम्भा ३, दग्धतिथिः दि. घ. ११ मि. १८ उ., मुण्डनं, अन्नप्राशनं, दक्षिणयात्रा च तृतीयायाम् ।
श. ४	११।३४	,, ९।५१	पु.	४३। ६	,, १०।२७	ध्रु. ४८। १	वि. ११।३४	कर्क	अहोरात्र	१।२२।११।३५	३३।५५	५।१३	६।४७	१६	२४	६	भ. ११।३४ या०, उमा ४ तत्नूजाच, मार्गीशनिः २३।५९, दग्धतिथिः दि. घ. ९ मि. ५१ या. ।
र. ५	८।५५	,, ८।४७	श्ले.	४२।५९	,, १०।२१	व्या. ४३।५८	वा. ८।१५	क. ४२।५९	रा. १०।२५	१।२३। ८।४४	३३।५६	५।१३	६।४७	१७	२५	६	गण्ड ३१।५९ उ. ४६।५९ या., मृगशिरायां रविः ५८।१५,
चं. ६	७।३०	,, ८।१२	म.	४४। ३	,, १०।४९	ह. ४०।५६	तै. ७।३०	सिंह	अहोरात्र	१।२४। ५।४७	३३।५८	५।१२	६।४८	१८	२६	८	पश्चिमास्तो बुधः २३।५९, केतुवेधान्मघायां विवाहो मध्यमः ।
मं. ७	७।१९	;, ८। ८	पू.	४६।२५	,, ११।४६	व. ३८।५३	व. ७।१९	सिंह	अहोरात्र	१।२५। २।४९	३४।००	५।१२	६।४८	१९	२७	९	भ. ७।१९ उ. ३७।१३ या०, वक्रगत्यामृगशिरायां बुधः १९।५४ ।
बु. ८	८।२७	,, ८।३५	उ.	५०। ३	,, १।१५	सि. ३७।५५	वव. ८।२७	सिं. २।१९	दि. ६। ८	१।२५।५९।५१	३४। २	५।१२	६।४८	२०	२८	१०	निर्बंधविवाहः दि. घ. ८ मि. ३१ या. ।
बृ. ९	१०।४६	,, ९।३०	ह.	५४।४७	,, ३। ६	व्य. ३७।४४	कौ. १०।४६	कन्या	अहोरात्र	१।२६।५६।५३	३४। ३	५।११	६।४९	२१	२९	११	अन्नप्राशनं, सूतीस्नानं, निर्बंधविवाहः, मुण्डनं, उपनयनं, पूर्वयात्रा गृहप्रवेशश्च दि. घ. ९ मि. ३० उ. ।
शु. १०	१४।४२	,, १०।५३	चि.	६०। ०	अहोरात्र	व. ३८।२६	ग. १४।१२	क. २९।३६	दि. ५। १	१।२७।५३।५५	३४। ४	५।११	६।४९	२२	३०	१२	भ. ४६।२१ उ., गङ्गादशहारा, मुण्डनं, उपनयनं, निर्बंधविवाहः, गृहारम्भ गृहप्रवेशौ, वापीकूपतडागादिखननं अन्नप्राशनञ्च ।
श. ११	१८।३१	,, १२।३६	चि.	०।२५	प्रा. ५।१२	प. ३९।४१	वि. १८।३१	तुल	अहोरात्र	१।२८।५०।५७	३४। ५	५।११	६।४९	२३	३१	१३	भ. १८।३१ या., निर्जला ११ व्रतं सर्वेषाम्, रात्रावेकादशीव्रतोद्यापनम्, ।
र. १२	२३।२८	,, २।३६	स्वा.	६।४२	दि. ७।५३	शि. ४१।२०	वा. २३।२४	तु. ५६।३९	रा. ३।२७	१।२९।४७।५९	३४। ६	५।११	६।४९	२४	३२	१४	मिथुनेरविः ५९।४२ मु. ४५ फलं समर्घ, त्रिविक्रम १२, तिलेनपारणा, प्रदोष १३ व्रतम् मासान्तः ।
चं. १३	२८।३६	,, ४।३६	वि.	१३।१७	,, १०।३१	सि. ४३। २	तै. २८।३६	बृश्चिक	अहोरात्र	२। ०।४४।५६	३४। ८	५।१०	६।५०	२५	१	१५	षडशीतिसंक्राणितपुण्यकालः दि. घ. १२।०० या०, चतुर्दशीव्रतम्, पूर्वोदितः कुजः ३।४३, पुनर्वसौ शुक्रः २२।८, अन्नप्राशनमनुराधायां त्रयोदश्याम्, ।
मं. १४	३३।२०	सं. ६।३१	अनु.	१९।४४	,, १। ५	सा. ४४।२४	ग. ०।५८	बृश्चिक	अहोरात्र	२। १।४१।५३	३४। ९	५।१०	६।५०	२६	२	१६	भ. ३३।२० उ., चम्पक १४, रुद्रपूजा मासादिः ।
बु १५	३७।२९	रा. ८।११	ज्ये.	८।११	,, ३।२५	शु. ४५।१५	वि. ५।२५	वृ. २५।३५	दि. ३।२४	२। ७।३८।५०	३४।१०	५।१०	६।५०	२७	३	१७	ज्येष्ठी १५, भ. ५।२५ या०, गण्ड १९।३५ उ. ३४।३५ या०, तिलदानं मन्वादिः, निर्बंधविवाहः, गृहारम्भोमूले ।

मिश्रमानकालिक दैनिक मङ्गलादि स्पष्टग्रहाः, दिनद्वयग्रहान्तरंगतिः

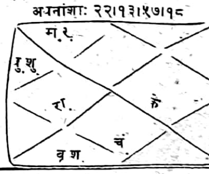
दैनिकलग्नसारणीक्रम

द.ति.	मङ्गलः	बुधः	गुरुः	शुक्र	शनिः	केतुः	मिश्रमानं	मे.अ.	वृ.अ.	मि.अ.	क.अ.	सिं.अ.	क.अ.	तु.अ.	वृ.अ.	ध.अ.	म.अ.	कु.अ.	मी.अ.
बु. १	१। ४।१५।३१	२। ६।३१।५८	५। ७।५०।१५	२।५ ।५५।५८	५। ९।५०।५०	९।१२।५५। ४	४६।५४	४। ४	६।००	८।१३	१०।३१	१२।४५	१४।५८	१७।१४	१९।३१	२१।३७	२३।२३	०।५५	२।२६
बृ. २	१। ४।५८।५०	२। ६।३८।३८	५। ७।५१। २	२। ७। ८।५१	५। ९।५०।२५	९।१२।५१।५३	६।५५	४।००	५।५६	८। ९	१०।२७	१२।४१	१४।५४	१७।१०	१९।२७	२१।३३	२३।१९	०।५१	२।२२
शु. ३	१। ५।४२। ९	२। ६।४४।५४	५। ७।५१।४९	२। ८।२१।४३	५। ९।५०।००	९।१२।४८।४२	४६।५६	४।५६	५।५२	८। ५	१०।२३	१२।३७	१४।५०	१७। ६	१९।२३	२१।२९	२३।१५	०।४७	२।१८
श. ४	१। ६।२५।२८	२। ६।५१।२५	५। ७।५२।३६	२। ९।३४।३५	५। ९।४९।३५	९।१२।४५।३२	४६।५७	३।५२	५।४८	८। १	१०।१९	१२।३३	१४।४६	१७। २	१९।१९	२१ २५	२३।११	०।४३	२।१४
र. ५	१। ७। ८।४७	२। ६।५७।५५	५। ७।५३।२३	२।१०।४७।२७	५। ९।४९।१०	९।१२।४२।२२	४६।५८	३।४८	५।४४	७।५७	१०।१५	१२।२९	१४।४२	१६।५८	१९।१५	२१।२१	२३। ७	०।३९	२।१०
चं. ६	१। ७।४१। ८	२। ६।२२।१४	५। ७।५५।१४	२।१३। १।२३	५। ९।४९।२१	९।१२।३९।११	४६।५८	३।४४	५।४०	७।५३	१०।११	१२।२५	१४।३८	१६।५४	१९।११	२१।१७	२३। ३	०।३५	२। ६
मं. ७	१। ८।१६।२९	२। ५।४६।३३	५। ७।५७। ५	२।१४।१५।३९	५। ९।४९।३२	९।१२।३६।००	४६।५८	३।३९	५।३५	७।४८	१०। ६	१२।२०	१४।३३	१६।४९	१९। ६	२१।१२	२२।५८	०।३०	२। १
बु. ८	१। ८।४९।५०	२। ५।१०।५२	५। ७।५८।५६	२।१५।२९।४५	५। ९।४९।४३	९।१२।३३।४९	४६।५९	३।३५	५।३१	७।४४	१०। २	१२।१६	१४।२९	१६।४५	१९। २	२१। ८	२२।५४	०।२६	१।५७
बृ. ९	१। ९।१८।११	२। ४।३५।१३	५। ८। ०।४७	२।१६।४३।५१	५। ९।४९।५४	९।१२।२९।३८	४७।००	३।३१	५।२७	७।४०	९।५८	१२।१२	१४।२५	१६।४१	१८।५८	२१। ४	२२।५०	०।२२	१।५३
शु. १०	१। ९।५०।३२	२। ३।५९।३३	५। ८। २।३७	२।१७।५७।५६	५। ९।५०।५०	९।१२।२५।२७	४७। १	३।२७	५।२३	७।३६	९।५४	१२। ८	१४।२१	१६।३७	१८।५४	२१।००	२२।४६	०।१८	१।४९
श. ११	१।१० २२।५३	२। ३।२३।५३	५। ८। ४।२७	२।१९।१२। १	५। ९।५०।१६	९।१२।२३।१७	४७। २	३।२३	५।१९	७।३२	९।५०	१२। ४	१४।१७	१६।३३	१८।५०	२०।५६	२२।४२	०।१४	१।४५
र. १२	१।१०।५५।१४	२। २।४८।१३	५। ८। ६।१७	२।१९।२६। ६	५। ९।५०।२७	९।१२।२०। ७	४७। ३	३.१९	५।१५	७।२८	९।४६	१२।००	१४।१३	१६।२९	१८।४६	२०।५२	२२।३८	०।१०	१।४१
चं. १३	१।११।४८।१५	२। २। ४।१५	५। ८। ९।५४	२।२०।३७।३८	५। ९।५१।४२	९।१२।१६।५६	४७। ३	३।१५	५।११	७।२४	९ ४२	११।५६	१४। ९	१६।२५	१८।४२	२०।४८	२२।३४	०। ६	१।३७
मं. १४	१।१२।४१।१६	२। १।२०।१७	५। ८।१३।३१	२।२१।४९।१०	५। ९।५२।५७	९।१२।१३।४५	४७। ३	३।११	५। ७	७।२०	९।३८	११।५२	१४। ५	१६।२१	१८।३८	२०।४४	२२।३०	०। २	१।३३
बु. १५	१।१३।३४।१७	२। ०।३६।१९	५। ८।१७। ८	२।२३।० ।४१	५। ९।५४।११	९।१२।१०।३४	४७। ३	३। ७	५। ३	७।१६	९।३४	११।४८	१४। १	१६।१७	१८।३४	२०।४०	२२।२६	२३।५८	१।२९

५ रवौवल्जी ८।३५।३८।१८
अयनांशाः २२।१३।५६।१५



१२ रवौवल्ली ८।३५।३८।२५
अयनांशाः २२।१३।५७।१८



अथ विविध विषयाः—ज्येष्ठमासे दानवस्तूनि, वामनपुराणे-उदककुम्भो जलधेनु स्तालवृन्तं सचन्दनम्। त्रिविक्रमस्य प्रीत्यर्थं प्रदद्यात् ज्येष्ठमासि च ॥ गङ्गादशहरा, वाराहे-दशमी शुक्लपक्षे तु ज्येष्ठेमासि कुजेऽहनि। अवतीर्णा ह्यतः स्वर्गाद्धस्तर्क्षे च सर्द्वरा। हरते दशपापानि तस्माद्दशहरा स्मृता ॥ दशहरायां दशयोगाः, स्कान्दे—ज्येष्ठेमासि सिते पक्षे दशमी बुधहस्तयोः। व्यतीपातेगरानन्दे कन्याचन्द्रे वृषे रवौ। दशयोगे नरः स्नात्वा सर्वपापैः प्रमुच्यते। कुजबुधयोरत्रकल्पभेदेन व्यवस्था ज्ञेया। योगाधिक्ये फलाधिक्यात्य-त्रैव योग बाहुल्यं तत्रैवेयं ग्राह्या॥ दशपापानि-अदत्तानामुपादानंहिसा चैवा-विधानतः। परदारोपसेवा च कायिकं त्रिविधं तथा। पारुष्य मनृतं चैव पैशुन्यं चापि सर्वतः। असम्बद्धप्रलापश्च वाङ्मयं स्याच्चतुर्विधम्। परद्रव्येष्वभिध्यानं मनसानिष्टचिन्तनम्। वितथाभिनिवेशश्च मानसं त्रिविधं स्मृतम्। एतानि दशपापानि हरत्वं मम जाह्नवि। दशपापहरायस्मात्तस्माद्दशहरा स्मृता।

वातावरण्—पक्षादितो नवमींयावद् वायुवृष्टियोंगस्ततोपक्षान्तं यावदग्नितापादयः

ग्रहस्थितिः—मार्गी पश्चिमास्तः कुजः, १३तः पूर्वोदितः कुजः, वक्री पश्चिमोदितो बुधः, षष्ठीतः पश्चिमास्तः,मार्गी पश्चिमोदितः शुक्रः,मार्गी पूर्वोदितो गुरुः, वक्र पूर्वोदितः शनिः। ४तः मार्गी शनिः।

दि.ति.	तिथयः द.प.	घं.मि.	नक्षत्राणि	द.प.	घं.मि.	योगाः द.प.	करणानि द.प.	चन्द्रस्थितिः रा.द.प.	घं.मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादि	दिनमानं द.प.	सू.उ. घं.मि.	सू.अ. घं.मि.	दिनांक रा.	सौ.	अं.
बृ. १	४०।४३	रा. ९।२७	मू.	३०।३४	दि. ५।२४	शु. ४५।२२	वा. ९। ६	धनु	अहोरात्र	२। ३।३५।४६	३४।११	५।१०	६।५०	२८	४	१८
शु. २	४२।४९	" १०।१८	पू.	३४।२६	स. ६।५६	ब्र. ४४।३४	तै. १३।४६	ध. ४९।३७	रा. ११। १	२। ४।३२।४२	३४।१२	५।१०	६।५०	२९	५	१९
श. ३	४३।३७	" १०।३७	उ.	३७। ९	रा. ८। १	ऐ. ४२।४६	व. १३।११	मकर	अहोरात्र	२। ५।२९।३८	३४।१३	५। ९	६।५१	३०	६	२०
र. ४	४३। ६	" १०।२३	श्र.	३८।३३	" ८।३४	वै. ३९।५७	वव. १३।१९	मकर	अहोरात्र	२। ६।२६।३४	३३।१४	५। ९	६।५१	३१	७	२१
चं. ५	४१।२२	" ९।४२	ध.	३८।४३	" ८।२८	वि. ३६। ८	कौ. १२।१४	म. ७।२८	दि. ८।१२	२। ७।२३।२७	३४।१२	५। ९	६।५१	१	८	२२
मं. ६	३८।३१	" ८।३३	श.	३७।४५	" ८।१५	प्री. ३१।२५	ग. ९।५७	कुम्भ	अहोरात्र	२। ८।२०।२०	३४।१२	५।१०	६।५०	२	९	२३
बु. ७	३४।३९	" ७। १	पू.	३५।५२	" ७।३०	आ. २५।५४	वि. ६।३५	कु. २१।२०	दि. १।४२	२। ९।१७।१३	३४।११	५।१०	६।५०	३	१०	२४
बृ. ८	२९।५९	दि. ५।१०	उ.	३३। ६	सं. ६।२४	सौ. १९।४९	वा. २।१९	मीन	अहोरात्र	२।१०।१४। ६	३४।१०	५।१०	६।५०	४	११	२५
शु. ९	२४।३७	" ३। १	रे.	२९।४२	दि. ५। ३	शो. १२।५१	ग. २४।३७	मी. २९।४२	दि. ५। ३	२।११।१०।५८	३४। ९	५।१०	६।५०	५	१२	२६
श. १०	१८।४२	" १२।३९	अ.	२५।५०	" ३।३०	अ. ५।३६	वि. १८।४२	मेष	अहोरात्र	२।१२। ७।५०	३४। ८	५।१०	६।५०	६	१३	२७
र. ११	१२।३४	" १०।१२	भ.	२१।४५	" १।५२	धृ. ५०।२७	वा. १२।३४	मे. ३५।४१	रा. ७।२६	२।१३। ४।४२	३४। ८	५।१०	६।५०	७	१४	२८
चं. १२	६।२०	" ७।४२	कृ.	१७।३०	" १२।१०	शू. ४२।५२	तै. ६।२०	वृष	अहोरात्र	२।१४। १।३२	३४। ६	५।११	६।४९	८	१५	२९
मं. १३	०।१२	प्रा. ५।१६	रो.	१३।२९	" १०।३५	गं. ३५।२९	व. ०।१२	वृ. ४१।४०	रा. ९।५१	२।१४।५८।२२	३४। ५	५।११	६।४९	९	१६	३०
बु. ३०	४९। ७	रा. १२।५०	मृ.	९।५१	" ९। ७	वृ. २८।२६	च. २१।४६	मिथुन	अहोरात्र	२।१५।५५।१२	३४। ४	५।११	६।४९	१०	१७	१

आषाढकृष्णपक्षः

शकः १९०३, संवत् २०३८, मन १३८८ साल, दि० १८।६।८१ ई० तः दि० १।७।८१ ई० यावत्, पश्चिमेकालः ।
मार्गी पूर्वोदितोगुरुः, मार्गी पश्चिमोदितः शुक्रः शुद्धः, ग्रीष्मर्तुः, सौम्यगोलः, उत्तरायणम् ।

वक्रगत्या वृषे बुधः १।५ रोहिण्यां कुजः ४८।५, निर्वधविवाहो मूले, पूर्वोत्तर यात्रा दिवारात्री ।
गृहारम्भस्तृतीयायाम्, कूपवापीतडागखननम् ।
भ. १३।११ उ. ४३।३७ या०, गणेश ४ व्रतम्, गृहारम्भस्तृतीयायाम् ।
अङ्गारक ४, पञ्चकारम्भः रा. घं. ८ मि. ४३ उ., निर्वधविवाहः रा. घं. १० मि. २३ उ., पूर्वयात्रा रा. घं. १० मि. २३ उ. ।
निर्वधविवाहः रा. घ. ८।३८ या०, आर्द्रायां रविः ११।८ स्त्री पु. योगः, चं. वा. हस्तिवाहममृतानाडी तदधिपतिश्चन्द्रस्तेन सुवृष्टियोगः हस्त १ चरणे शनि. ३७।८, *
* गार्गकूपखननमुहूर्तः, मुण्डनं, गृहारम्भः १।१८ उ. पञ्चम्याम् ।
भ. ३८।३१ उ. कर्के शुक्रः ३७।८ ।
भ. ६।३५ या०, क्षयतिथिः रा. घ. ७ मि. १ उ., पूर्वोदितो बुधः ३।८, पश्चिमयात्रा दि. घ. ११४२ या० ।
दग्धतिथिः दि. घं. ५ मि १० या. ।
गण्ड १७।४२ उ. ३२।४२ या०, भ. ५१।३९ उ., पञ्चकसमाप्तिः दि. घ. ५ मि. ३ उ., निर्वधविवाहो दि. घ. ३ मि. १ उ., पुष्ये शुक्रः २२।२९ ।
सुकर्मा यो. द. ५२।२९, भ. १८।४२ या०, मार्गी बुधः ३३।४ ।
योगिनी ११ व्रतं सर्वेषाम् ।
प्रदोष १३ व्रतम्, निर्वधविवाहो दक्षिणयात्रा च दि. घं. १२ मि. १० उ. ।
भ. ०।१२ उ. २७।१८ या०, १४ ति. द. ५४।१२ अवमम्, चतुर्दशी व्रतम् ।
जुलाई ७ मासारम्भः, आषाढी ३० पार्वणम् ।

मिश्रमानकालिक दैनिकमङ्गलादिस्पष्टग्रहाः, दिनद्वयग्रहान्तरं गतिः

दि.ति.	मङ्गलः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमानं
बृ. १	१।१४।२७।१७	१।२९।५२।२१	५। ८।२०।४१	२।२४।१२।१४	५। ९।५५।२५	९।१२। ७।२३	४७। ४
शु. २	१।१५।२०।१७	१।२९। ८।२३	५। ८।२४।२२	२।२५।२३।४६	५। ९।५६।३९	९।१२। ४।१२	४७। ५
श. ३	१।१६।१३।१७	१।२८।२४।२५	५। ८।२७।५८	२।२६।३५।१८	५। ९।५७।५३	९।१२। १। १	४७। ६
र. ४	१।१७। ६।१७	१।२७।४०।२८	५। ८।३१।३४	२।२७।४६।५०	५। ९।५९। ७	९।११।५७।५१	४७। ७
चं. ५	१।१७।४८।२३	१।२७।५३।४६	५। ८।३६।४०	२।२८।५९।२७	५।१०। ०।५७	९।११।५४।४०	४७। ७
मं. ६	१।१८।३०।२९	१।२८। ७। ४	५। ८।४०।४६	३। ०।१२। ४	५।१०। २।४७	९।११।५१।२९	४७। ७
बु. ७	१।१९।१२।३५	१।२८।२०।२२	५। ८।४५।२२	३। १।२४।४०	५।१०। ४।३७	९।११।४८।१८	४७। ७
बृ. ८	१।१९।१४।४०	१।२८।३३।४०	५। ८।४९।५८	३। २।३७।१६	५।१०। ६।२६	९।११।४५। ७	४७। ७
शु. ९	१।२०।१६।४५	१।२८।४६।५७	५। ८।५४।३४	३। ३।४९।५२	५।१०। ८।१५	९।११।४१।५६	४७। ६
श. १०	१।२१।१८।५०	१।२९। ०।१४	५। ८।५९। ५	३। ५। २।२८	५।१०।१०। ४	९।११।३८।४५	४७। ५
र. ११	१।२२। ०।५५	१।२९।१३। १	५। ९। ३।४४	३। ६।१५। ४	५।१०।११।५३	९।११।३५।३५	४७। ४
चं. १२	१।२२।४२।३६	१।२९।२६।१३	५। ९। ९।२२	३। ७।२७।३५	५।१०।१६।३१	९।११।३२।२४	४७। ४
मं. १३	१।२३।२४।१७	१।२९।४०।२५	५। ९।१५। ०	३। ८।४०। २	५।१०।२१। ९	९।११।२९।१३	४७। ४
बु. ३०	१।२४। ५।५८	१।२९।५३।३७	५। ९।२०।३८	३। ९।५२।३१	५।१०।२५।४६	९।११।२६। २	४७। ४

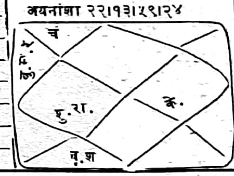
दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्

दि.ति.	मे. अ.	वृ. अ.	मि. अ.	क. अ.	सिं. अ.	क. अ.	तु. अ.	वृ. अ.	ध. अ.	म. अ.	कुं. अ.	मी. अ.
बृ. १	३। ३	४।५९	७।१२	९।३०	११।५४	१३।५७	१६।१३	१८।३०	२०।३६	२२।२२	२३।५४	१।२५
शु. २	२।५९	४।५५	७। ८	९।२६	११।५०	१३।५३	१६। ९	१८।२६	२०।३२	२२।१८	२३।५०	१।२१
श. ३	२।५५	४।५१	७। ४	९।२२	११।३६	१३।४९	१६। ५	१८।२२	२०।२८	२२।१४	२३।४६	१।१७
र. ४	२।५१	४।४७	७।००	९।१८	११।३२	१३।४५	१६। १	१८।१८	२०।२४	२२।१०	२३।४२	१।१३
चं. ५	२।४७	४।४३	६।५६	९।१४	११।२८	१३।४१	१५।५७	१८।१४	२०।२०	२२। ६	२३।३८	१। ९
मं. ६	२।४३	४।३९	६।५२	९।१०	११।२४	१३।३७	१५।५३	१८।१०	२०।१६	२२। २	२३।३४	१। ५
बु. ७	२।३८	४।३४	६।४७	९। ५	११।१९	१३।३२	१५।४८	१८। ५	२०।११	२१।५७	२३।२९	१। ०
बृ. ८	२।३४	४।३०	६।४३	९। १	११।१५	१३।२८	१५।४४	१८। १	२०। ७	२१।५३	२३।२५	०।५६
शु. ९	२।३०	४।२६	६।३९	८।५७	११।११	१३।२४	१५।४०	१७।५७	२०। ३	२१।४९	२३।२१	०।५२
श. १०	२।२६	४।२२	६।३५	८।५३	११। ७	१३।२०	१५।३६	१७।५३	१९।५९	२१।४५	२३।१७	०।४८
र. ११	२।२२	४।१८	६।३१	८।४९	११। ३	१३।१६	१५।३२	१७।४९	१९।५५	२१।४१	२३।१३	०।४४
चं. १२	२।१८	४।१४	६।२७	८।४५	१०।५९	१३।१२	१५।२८	१७।४५	१९।५१	२१।३७	२३। ९	०।४०
मं. १३	२।१४	४।१०	६।२३	८।४१	१०।५५	१३। ८	१५।२४	१७।४१	१९।४७	२१।३३	२३। ५	०।३६
बु. ३०	२।१०	४। ६	६।१९	८।३७	१०।५१	१३। ४	१५।२०	१७।३७	१९।४३	२१।२९	२३। १	०।३२

४ रवौवल्ली ८।३४।३८।३२
अयनांशाः २२।१३।५८।२१



११ रवौवल्ली ८।३५।३८।३९
अयनांशा २२।१३।५९।२४



अथ विविध विषयाः—ग्रहावस्थितिवशेन वृष्टिविचारः—बुधः शुक्रः समीपस्थः करोत्येकार्णवां महीम् । तयोरन्तर्गतो भानुः समुद्रमपि शोषयेत् । पुरतः पृष्ठतो भानुः शुभायदि समीपगाः । तदा वृष्टिं प्रकुर्वन्ति न चेत्ते प्रतिलोमगाः । ग्रहाणामुदये चास्ते राश्यन्तरगतेऽयने । संयोगो वापि पक्षान्ते प्रायो वृष्टिः प्रजायते । उदयास्तगतः शुक्रो बुधश्च वृष्टिकारकः । चलत्यंगारके वृष्टिः ध्रुवा वृष्टिः शनैश्चरे । वारि पूर्णां महीं कृत्वा पश्चात्संचरते गुरुः । शुक्रे वास्तमितेमन्दे निर्विघोऽपि प्रजायते । सूर्यनक्षत्राणि:—रोहिणीमृगशिरापूर्वोत्तरफल्गुनीहस्तचित्रास्वातीविशाखाऽनुराधाज्येष्ठामूलशतभिषोत्तरभाद्रपदानीति त्रयोदशर्क्षाणि सूर्यनक्षत्राणि शेषाणिचतुर्दशनक्षत्राणि चन्द्रर्क्षाणिज्ञेयानि । अथतत्फलम्—चन्द्रे सूर्यर्क्षगे वृष्टिः सूर्येचन्द्रर्क्षगे सति । उभौ चन्द्रर्क्षगौ स्यातां स्यातां स्वल्पवृष्टिस्तदाभवेत् । तावेवयदि सूर्यर्क्षे तदावृष्टिर्न जायते । नक्षत्राणां पुरुषादि संज्ञाः—मूलादीनि चतुर्दशनक्षत्राणि पुरुषसंज्ञकानि, आर्द्रादीनि दशस्त्रीसंज्ञकानि, विशाखादि त्रीणि नपुंसकसंज्ञकानि । तत्र पुंस्त्रीयोगेसुवृष्टिः, स्त्रीस्त्रीयोगे स्वल्पावृष्टिरन्यथा वृष्टेरभावः ।

वातावरणम्—पक्षादितोऽष्टमीयावद्यत्तत्र वृष्टियागस्ततः पक्षान्तंयावत्प्रचण्डवायुतापादयः ।

ग्रहस्थितिः—मार्गीपूर्वोदितःकुजः, वक्रीपश्चिमास्तोबुधः, ७तः पूर्वोदितः, १०तः मार्गी । मार्गिणोपूर्वोदितोगुरुर्ज्ञानी, मार्गी पश्चिमोदितः शुक्रः ।

श्रावणशुक्लपक्षः

शकः १९०३, संवत् २०३८, सन् १३८८ साल, दि० २।७।८१ ई० से दि० १७।७।८१ ई० यावत्, पश्चिमेकालः। मार्गीपूर्वोदितोगुरुः, मार्गीपश्चिमोदितः शुक्रः शुद्धः, ग्रीष्मर्तुः १४ तो वर्षा, सौम्यगोलः, उत्तरायणम्।

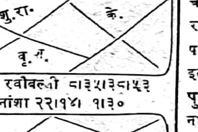
दि.ति.	तिथयः द.प.	घं.मि.	नक्षत्राणि	द.प.	घं.मि.	योगाः द.प.	करणानि द.प.	चन्द्रस्थितिः रा.द.प.	घं.मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादि	दिनमानं द.प.	सू.उ. घं.मि.	सू.अ. घं.मि.	दिनांक रा	सौ	अं
बृ. १	४४।३३	रा. ११। १	आ.	६।३३	दि. ७।३३	घ्रु. २१।५५	कि. १६।५०	मि. ५०। १	रा. ११।११	२।१६।५२। २	३४। ३	५।११	६।४२	११	१८	२
शु. २	४०।४८	" ९।३१	पुन.	४।२८	" ६।५९	का. १६। ५	वा. १२।४१	कर्क	अहोरात्र	२।१७।४८।५२	३४। २	५।१२	६।४८	१२	१९	३
श. ३	३८। ३	" ८।२५	पु.	२।५७	" ६।२३	ह. ११।००	नै. १०।५१	कर्क	अहोरात्र	२।१८।४५।४२	३४। १	५।१२	६।४८	१३	२०	४
र. ४	३६।२९	" ७।४८	श्ले.	२।३३	" ६।१३	व. ६।४५	व. ८। ६	क. २।२७	दि. ६।११	२।१९।४२।३१	३४।००	५।१२	६।४८	१४	२१	५
चं. ५	३६।१०	" ७।४०	म.	३।२२	" ६।३३	सि. ३।३२	बव. ६।२५	सिंह	अहोरात्र	२।२०।३९।२४	३३।५८	५।१२	६।४८	१५	२२	६
मं. ६	३७।११	" ८। ५	पू.	५।२५	" ७।२३	व्य. १।१६	कौ ६।४१	सिं. २१।१५	दि. १।४३	२।२१।३६।१७	३३।५७	५।१३	६।४७	१६	२३	७
बु. ७	३९।२२	" ८।५८	उ.	८।४४	" ८।४३	व. ०। ६	ग. ८।१७	कन्या	अहोरात्र	२।२२।३३। ९	३३।५६	५।१३	६।४७	१७	२४	८
बृ. ८	४२।४३	" १०।१८	ह.	१३।१२	" १०।३०	शि. ६०।००	वि. ११। ३	क. ४५।५६	रा. ११।३५	२।२३।३०। १	३३।५५	५।१३	६।४७	१८	२५	९
शु. ९	४६।५८	" ११।५६	चि.	१८।४०	" १२।४१	शि. ०।१६	बा. १४।५१	तुल	अहोरात्र	२।२४।२६।५३	३३।५४	५।१३	६।४७	१९	२६	१०
श. १०	५१।५०	" १।५८	स्वा.	२४।४८	" ३। ९	सि. १।१८	तै. १७।२४	तुल	अहोरात्र	२।२५।२३।४३	३३।५३	५।१३	६।४७	२०	२७	११
र. ११	५६।५०	" ३।५८	वि.	३१।२०	" ५।४६	सा. ३। २	व. २४।२०	तु. १४।२७	दि. ११। १	२।२६।२०।३७	३३।५२	५।१४	६।४६	२१	२८	१२
चं. १२	६०।००	अहोरात्र	अनु.	३७।४०	रा. ८।२१	शु. ४।४१	बव. २९।१५	वृश्चिक	अहोरात्र	२।२७।१७।३३	३३।५०	५।१४	६।४६	२२	२९	१३
मं. १२	१।४०	प्रा. ५।५४	ज्ये.	४३।५०	" १०।४६	शु. ६। ८	वा. १।४०	वृ. ४३।५०	रा. १९।४६	२।२८।१४।२८	३३।४८	५।१४	६।४६	२३	३०	१४
बु. १३	५।५३	दि. ७।३६	मू.	४९। २	" १२।५२	ब्र. ७। ५	तै. ५।५३	धनु	अहोरात्र	२।२९।११।२३	३३।४६	५।१५	६।४५	२४	३१	१५
बृ. १४	९। ९	" ८।५५	पू.	५३। ९	" २।३१	ऐ. ७।१९	व. ९। ९	धनु	अहोरात्र	३।००। ८।१८	३३।४५	५।१५	६।४५	२५	१	१६
शु. १५	११।१८	" ९।४६	उ.	५६। ९	" ३।४३	वै. ६।४१	बव ११।१८	ध. ८।४९	दि. ८।३३	३। १। ५।१३	३३।४४	५।१५	६।४५	२६	२	१७

वह्न्यादिदेवशयनम्।
चन्द्रदर्शनं मु. ३० फलं साम्यम्, श्री जगन्नाथरथयात्रोत्सव, मुण्डनं, तड़ागकूपवापी-खननमुहूर्तः पुष्ये, उत्तरयात्रा रा. घ. ९, मि. ३१ उ., अन्नप्राशनम्।
गण्ड ५१।२७ उ.।
गण्ड ६।२७ या०, भ.८।६ उ.३६।३९ या., करमूले पुलिकमूलबन्धनम्, मिथुने बुधः ३।५९, मृगशिरायां कुजः २८।२७, केतुवेधान्मघायां पञ्चम्यां विवाहो मध्यमः, मैथिल *
पुनर्वसौ रविः ५।२४ स्त्री. स्त्रीयो., उपनयनं दि. घं ६ मि. ३३ उ.। * नव.हिकयमारंभः (सौराठसभौलयोः)।
सूतीस्नानम् दि. घ. ७ मि. २३ उ. श्लेषायांशुक्रः ५४।५८।
परिघयो. द. ५९।३८, भ. ३९।२२ उ., दग्धतिथिः रा. घ. ८ मि. ५८ उ., हस्ते गुरुः ७।५९, अन्नप्राशनं, मुण्डनं, विवाहो गृहप्रवेशश्च रा. घ. ८ मि. ५८ या०।
भ. ११।३ या०, दग्धतिथिः रा. घ. १० मि. १८ या.।
मिथुने भौमः १८।५६, निर्वेधविवाहः रा. घ. ११ मि. ५६ उ., दक्षिणयात्रा च दशम्याम्। मैथिल वैवाहिक सभासमाप्तिः।
मन्वादिः, अर्द्रायां बुधः १९।३०, गृहप्रवेशः स्वात्याम्।
भ. २४।२० उ. ५६।१० या०, हरिशयन ११ व्रतं स्मार्तानाम्, करमूलेपुलिकमूलबन्धनम्, चातुर्मास्यव्रतारम्भः।
वैष्णवानां ११ व्रतं, वामन १२, यवचूर्णनपारणा, गृहप्रवेशोऽनुराधायाम्।
गण्ड ३७।५० उ. ५२।५० या०, प्रदोष १३ व्रतं, सूतीस्नानम्।
चतुर्दशीव्रतम्, मासान्त,
भ. ९।९ उ. ४९।१३ या., कर्करविः ३८।१४ मु. ३० फलं साम्यम्, याम्यायन संक्रान्तिपुण्यकालः दि. घ. १२ उ.।
आषाढ़ीं १५, गुरु १५, गुरुव्यासयोः पूजनं, सन् १३८९ साल...वर्षारंभः पूर्णिमात्, मासादि।

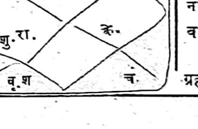
मिश्रमानकालिक दैनिकमङ्गलादिस्पष्टग्रहाः, दिनद्वयग्रहान्तरं गतिः । दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्

दि.ति.	मङ्गलः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमानं	मे.अ.	वृ.अ.	मि.अ.	क.अ.	सिं.अ.	क.अ.	तु.अ.	वृ.अ.	ध.अ.	म.अ.	कु.अ.	मी.अ.
बृ. १	१।२४।१७।३९	२। ०। ६।५९	५। ९।२६।१६	३।११। ५।००	५।१०।३०।२३	९।११।२२।५१	४७। ३	२। ६	४। २	६।१५	७।३३	१०।४७	१३।००	१५।१६	१७।३३	१९।३९	२१।२५	२२।५७	०।२८
शु. २	१।२५।२९।२०	२। ०।२०।२१	५। ९।३१।५४	३।१२।१७।२९	५।१०।३५।००	९।११।१९।४०	४७। २	२। १	३।५७	६।१०	८।२८	१०।४२	१२।५५	१५।११	१७।२८	१९।३४	२१।२०	२२।५२	०।२३
श. ३	१।२६।११। १	२। ०।३३।४३	५। ९।३७।३२	३।१३।२९।५७	५।१०।३९।३७	९।११।१६।३०	४७। १	१।५७	३।५३	६। ६	८।२४	१०।३८	१२।५१	१५। ७	१७।२४	१९।३०	२१।१६	२२।४८	०।१९
र. ४	१।२६।५२।४१	२। ०।४७। ४	५। ९।४३।१०	३।१४।४२।२५	५।१०।४४।१४	९।११।१३।२०	४७।००	१।५३	३।४९	६। २	८।२०	१०।३४	१२।४७	१५। ३	१७।२०	१९।२६	२१।१२	२२।४४	०।१५
चं. ५	१।२७।३४। १	२। १।५४।५५	५। ९।५०। ८	३।१५।५४।३६	५।१०।४५।३५	९।११।१०। ९	४७।००	१।४९	३।४५	५।५८	८।१६	१०।३०	१२।४३	१४।५९	१७।१६	१९।२२	२१। ८	२२।४०	०।११
मं. ६	१।२८।१५।२१	२। २। २।४६	५। ९।५७। ६	३।१७। ६।४७	५।१०।४६।५६	९।११। ६।५८	४७।००	१।४५	३।४१	५।५४	८।१२	१०।२६	१२।३९	१४।५५	१७।१२	१९।१८	२१। ४	२२।३६	०। ७
बु. ७	१।२८।५६।४१	२। ३।१०।३६	५।१०। ४। ४	३।१८।१८।५८	५।१०।४८।१७	९।११। ३।४७	४७।००	१।४१	३।३७	५।५०	८। ८	१०।२२	१२।३५	१४।५१	१७। ८	१९।१४	२१।००	२२।३२	०। ३
बृ. ८	१।२९।३८। १	२। ४।१८।२६	५।१०।११। २	३।१९।३१। ९	५।१०।४९।३८	९।११। ०।३६	४६।५९	१।३७	३।३३	५।४६	८। ४	१०।१८	१२।३१	१४।४७	१७। ४	१९।१०	२०।५६	२२।२८	२३।५९
शु. ९	२। ०।१९।३१	२। ५।२६।१६	५।१०।१८।००	३।२०।४३।२०	५।१०।५०।५९	९।१०।५७।२५	४६।५८	१।३३	३।२९	५।४२	८।००	१०।१४	१२।२७	१४।४३	१७।००	१९। ६	२०।५२	२२।२४	२३।५५
श. १०	२। १। ०।४०	२। ६।३४। ६	५।१०।२४।५८	३।२१।५५।३१	५।१०।५२।१९	९।१०।५४।१५	४६।५७	१।२९	३।२५	५।३८	७।५६	१०।१०	१२।२३	१४।३९	१६।५६	१९। २	२०।४८	२२।२०	२३।५१
र. ११	२। १।४१।५९	२। ८।४१।५६	५।१०।३१।५५	३।२३। ७।४२	५।१०।५३।३९	९।१०।५१। ५	४६।५६	१।२५	३।२१	५।३४	७।५२	१०। ६	१२।१९	१४।३५	१६।५२	१८।५८	२०।४४	२२।१६	२३।४७
चं. १२	२। २।२२।५२	२।१०। ७।३६	५।१०।३९।४८	३।२४।१९।५६	५।१०।५७।३९	९।१०।४७।५४	४६।५६	१।२०	३।१६	५।२९	७।४७	१०। १	१२।१४	१४।३०	१६।४७	१८।५३	२०।३९	२२।११	२३।४३
मं. १२	२। ३। ३।४४	२।११।३३।१६	५।१०।४७।४०	३।२५।३२।१०	५।११। १।३९	९।१०।४४।४३	४६।५६	१।१६	३।१२	५।२५	७।४३	९।५७	१२।१०	१४।२६	१६।४३	१८।४९	२०।३५	२२। ७	२३।३८
बु. १३	२। ३।४४।३६	२।१२।५८।५६	५।१०।५५।३२	३।२६।४४।२४	५।११। ५।३९	९।१०।४१।३२	४६।५५	१।१२	३। ८	५।२१	७।३९	९।५३	१२। ६	१४।२२	१६।३९	१८।४५	२०।३१	२२। ३	२३।३४
बृ. १४	२। ४।२५।२८	२।१४।२४।३६	५।११। ३।२४	३।२७।५६।३८	५।११। ९।३९	९।१०।३८।२१	४६।५४	१। ८	३। ४	५।१७	७।३५	९।४९	१२। २	१४।१८	१६।३५	१८।४१	२०।२७	२१।५९	२३।३०
शु. १५	२। ५। ६।२०	२।१५।५०।१६	५।११।११।१६	३।२९। ८।५१	५।११।१३।३९	९।१०।३५।१०	४६।५३	१। ४	३।००	५।१३	७।३१	९।४५	११।५८	१४।१४	१६।३१	१८।३७	२०।२३	२१।५५	२३।२६

४ रवौवल्ली ८।३५।३८।४६
अयनांशाः २२।१४।००।२७



११ रवौवल्ली ८।३५।३८।५३
अयनांशा २२।१४। १।३०



अथ विविध विषयाः अथाषाढ़े शकुन विचारः—आषाढ़ कृष्णाष्टम्यां चन्द्रोदये मेघे वृष्टिरुत्तमा सुभिक्षञ्चान्यथा दुर्भिक्षम्। तथैव कृष्णनवम्यां मेघेविद्युति सत्यां सुवृष्टिः। आषाढ़ शुक्ल द्वितीयायां नवम्याञ्च शुभग्रहवारो वृष्टिकारकः समर्घकारकश्च। पूर्णिमायामाषाढ़े पूर्वाषाढ़े सति सुभिक्षं, प्रजापीड़ा चोत्तराषाढ़ इति। आषाढ़ शुक्लपक्षे द्वितीयायां जगन्नाथ–रथयात्रा-तद्दिने रथस्य रामावलोकिनो विपन्न जायते। पूर्णिमायां वायुपरीक्षणम्—तत्र पूर्वपश्चिमवायुकोणोत्तरैशान वायौ धान्योत्पत्तिः, सुवृष्टिः प्रजासुखञ्च जायते॥ इतरवायौ भीतिः दुर्भिक्षादिकञ्चेति। आषाढ़शुक्लपक्षे रविवासरे, करमूले पुलिकमूल बन्धनमन्त्रः—शुचिसित दिनकरवारे करमूले बद्ध पुलिकमूलस्य। नागारेरिव नागाः प्रयान्ति किल दूरतस्तस्य। एवं कृते सर्पभय न जायते। अथार्द्रास्थे सूर्ये पायसभोजनमहत्वम्—अर्द्रायाः प्रथमे पादे क्षीरमश्नाति यो नरः। अपि रोषयुतस्तस्य तक्षकः किं करिष्यति। क्षीरमत्र पायसम्।

वातावरणम्—पक्षादितोऽष्टमींयावदनुकूल समयः खण्डवृष्टियोगस्ततः पक्षान्तं—यावत्प्रतिकूल समयः।

ग्रहस्थितिः—मार्गिणः पूर्वोदिताः कुजबुधगुरुशनयः मार्गीपश्चिमोदितः शुक्रः।

श्रावणकृष्णपक्षः — शकः १९०३, संवत् २०३८, सन् १३८९ साल, दि० १८।७।८१ ई० तः ३१।७।८१ ई० या०, पश्चिमेकालः ।
मार्गीपूर्वोदितोगुरुः, मा० पश्चिमोदितः शुक्रः, शुद्धः, वर्षर्तुः, सौम्यगोलः, दक्षिणायनम ।

दि.ति.	तिथयः द.प.	घं.मि.	नक्षत्राणि	द.प.	घं.मि.	योगाः द.प.	करणानि द.प.	चन्द्रस्थितिः रा.द.प.	घं.मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादि	दिनमानं द.प.	सू.उ. घं.मि.	सू.अ. घं.मि.	दिनांक रा.	सौ.	अं.
श. १	१२।१२	दि. १०। २	श्र.	५७।५१	रा. ४।२३	वि. ५। ३	कौ. १२।१२	मकर	अहोरात्र	३। २। २। ८	३३।४३	५।१५	६।४५	२७	३	१८
र. २	११।४८	,, ९।५९	ध.	५८।१८	,, ४।३५	प्री. २।२६	ग. ११।४८	म. २८। ५	दि. ४।३०	३। २।५९। ३	३३।४२	५।१६	६।४४	२८	४	१९
चं. ३	१०। ९	,, ९।२०	श.	५७।३६	,, ४।१८	सौ. ५४।१२	वि. १०। ९	कुम्भ	अहोरात्र	३। ३।५६। ४	३३।४०	५।१६	६।४४	२९	५	२०
मं. ४	७।२०	,, ८।१२	पू.	५५।५२	,, ३।२१	शो. ४८।४९	बा. ७।२०	कु ४१।१८	रा. ९।४७	३। ४।५३। ५	३३।३८	५।१६	६।४४	३०	६	२१
बु. ५	३।३३	,, ६।४२	उ.	५३।१८	,, २।३६	अ. ४२।४३	तै. ३।३३	मीन	अहोरात्र	३। ५।५०। ५	३३।३६	५।१७	६।४३	३१	७	२२
बृ. ७	५३।३५	रा. २।४३	रे.	५०। २	,, १।१८	सु. ३६। १	वि. २६।१५	मी. ५०। २	रा. ९।१८	३। ६।४७। ५	३३।३४	५।१७	६।४३	१	८	२३
शु. ८	४७।४४	,, १२।२३	अ.	४६।१३	,, ११।४६	धृ. २८।५१	बा. २०।४०	मेष	अहोरात्र	३। ७।४४। ५	३३।३२	५।१८	६।४२	२	९	२४
श. ९	४१।३७	,, ९।५६	भ.	४२। ७	,, १०। ८	शू. २१।२०	तै. १४।४१	मे. ५६। ३	रा. ३।४२	३। ८।४१। ५	३३।३१	५।१८	६।४२	३	१०	२५
र. १०	३५।२३	,, ७।२७	कृ.	३७।५३	,, ८।११	गं. १३।३७	व. ८।२३	वृष	अहोरात्र	३। ९।३८। ५	३३।३०	५।१८	६।४२	४	११	२६
चं. ११	२९।१७	दि. ५। २	रो.	३३।४९	,, ६।५१	वृ. ५।५९	वव. २।२०	वृष	अहोरात्र	३।१०।३५।१३	३३।२६	५।१९	६।४१	५	१२	२७
मं. १२	२३।२९	,, २।४३	मृ.	३०। ४	सं. ५।२१	व्या. ५१।२०	तै. २३।२९	वृ. १।५७	दि. ६। ६	३।११।३२।२१	३३।२३	५।१९	६।४१	६	१३	२८
बु. १३	१८। ६	,, १२।३४	आ.	२६।४६	दि. ४। २	ह. ४४।३९	व. ९।८। ८	मिथुन	अहोरात्र	३।१२।२९।२९	३३।२०	५।२०	६।४०	७	१४	२९
बृ. १४	१३।२७	,, १०।४३	पुन.	२४।१५	,, ३। २	व. ३८।४०	श. १३।२७	मि. ९।५३	दि. ९।२७	३।१३।२६।३७	३३।१७	५।२१	६।३९	८	१५	३०
शु. ३०	९।३९	,, ९।१३	पु.	२२।३३	,, २।२२	सि. ३३।२३	ना. ९।३९	कर्क	अहोरात्र	३।१४।२३।४५	३३।१४	५।२१	६।३९	९	१६	३१

मघायांसिंहे शुक्रः २८।५१, अशून्यशयनव्रतम्, गृहारम्भो द्वितीयायाम्, पञ्चकारम्भः रा. ४।२३ उ. ।
आ. यो. द. ५६।२०, पूर्वयात्रा दि. घ. ४ मि. ३० या० ।
भ. १०१९ या., गणेश ४ व्रतम्, सोमवार व्रतम्, पुष्येरविः ८।५२ स्त्री पुं. योगः मू. चं. योगः, गर्दभ वाहनं जलानाडी तदधिपति बुधस्तेन मध्यम वृष्टि योगो वायुश्च,*
*आर्द्रायांकुजः ४।२०, पुनर्वसो बधः ३७।५८ गृहारम्भस्तृतीयायाम्
०।
षष्ठी ति. द. ५५।२१ अवमम्, भ. ५८।५४ उ., मौना ५ मनसादेव्युत्थानम्, दग्धतिथिः दि. घ. ६ मि. ४२ उ. ।
भ. १५।२६ या., गण्ड ३७।५८ उ. ५२।५८ या., मूलीस्नानम्, पञ्चक समाप्तिः रा ११।१८ उ. ।
०।
०।
भ. ८।३० उ. ३५।२३ या., कर्केबुधः ३७।५८ ।
ध्रु. यो. द. ५२।३१, कामदा ११ व्रतं सर्वेषाम्, सोमवार व्रतम् ।
प्रदोष १३ व्रतम्, पूर्वास्तो बुधः २८।४७, सूतीस्नानम्, पुष्येबुधः ३६।४२ पूर्वं दक्षिणयात्रा प्रातः घ. ६ मि. ६ या., श्रवणा ४ चरणे केतुः, पुष्य २ चरणे राहुः ५१।.६ ।
भ. १८।६ उ. ४५।३७ या., चतुर्दशीव्रतम्, पूर्वफल्गुन्यां शुक्रः ३६।३५ ।
०।
श्रावणी ३०,

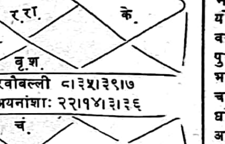
मिश्रमानकालिक दैनिक मङ्गलादि स्पष्टग्रहाः, दिनद्वयग्रहान्तरंगतिः

दि.ति.	मङ्गलः	बुधः	गुरुः	शुक्र	शनिः	केतुः	मिश्रमानं
श. १	२। ५।४७।१२	३।१७।१५।५३	५।११।१९। ८	४।०।०।२९। ४	५।११।१७।३९	९।१०।३२। ०	४६।५२
र. २	२। ६।२८। ४	३।१८।४१।३६	५।११।२७।००	४। १।३३।१७	५।११।२१।३९	९।१०।२८।५०	४६।५१
चं. ३	२। ७। ८।३८	३।२०।२०।२४	५।११।३५।४१	४। २।४५। ८	५।११।२६। ७	९।१०।२५।३९	४६।५१
मं. ४	२। ७।४९।१२	३।२१।५९।१२	५।११।४४।२१	४। ३।५६।५९	५।११।३०।३५	९।१०।२२।२८	४६।५०
बु. ५	२। ८।२९।४६	३।२३।३८।००	५।११।५३। १	४। ५। ८।४९	५।११।३५। ३	९।१०।१९।१७	४६।४९
बृ. ७	२। ९।१०।२०	३।२५।१६।४८	५।१२। १।४१	४। ६।२०।३९	५।११।३९।३१	९।१०।१६। ६	४६।४८
शु. ८	२। ९।५०।५४	३।२६।५५।३६	५।१२।१०।२१	४। ७।३२।२९	५।११।४३।५९	९।१०।१२।५५	४६।४७
श. ९	२।१०।३१।२७	३।२८।३४।२३	५।१२।१९। १	४। ८।४४। ९	५।११।४८।२७	९।१०। ९।४५	४६।४६
र. १०	२।११।१२। ०	३। ०।१३।१०	५।१२।२७।४१	४। ९।५६। ९	५।११।५२।५५	९।१०। ६।३५	४६।४५
चं. ११	२।११।५६। ५	३। १।५८।५८	५।१२।३७। ९	४।११। ७।३७	५।११।५७।५७	९।१०। ३।२४	४६।४४
मं. १२	२।१२।३६।१०	३। ३।४४।४६	५।१२।४६।३७	४।१२।१९। ५	५।१२। २।५९	९।१०। ०।१३	४६।४३
बु. १३	२।१३।१६।१५	३। ५।३०।३४	५।१२।५६। ५	४।१३।३०।३३	५।१२। ८। १	९। ९।५७। २	४६।४२
बृ. १४	२।१३।५६।२०	३। ७।१६।२२	५।१३। ५।३३	४।१४।४२। १	५।१२।१३। २	९। ९।५३।५१	४६।४०
शु. ३०	११।४।३६।२४	३। ९। २।१०	५।१३।१५। १	४।१५।५३।२८	५।१२।१८। ३	९। ९।५०।४०	४६।३८

दैनिकलग्नसारिणीचक्रम

दि.ति.	मे.अ.	वृ.अ.	मि.अ.	क.अ.	सि.अ.	क.अ.	तु.अ.	वृ.अ.	ध.अ.	म.अ.	कु.अ.	मी.अ.
श. १	१।००	२।५६	५। ३	७।२७	९।४१	११।५४	१४।१०	१६।२७	१८।३३	२०।१९	२१।५१	२३।२२
र. २	०।५६	२।५२	५। ५	७।२३	९।३७	११।५०	१४। ६	१६।२३	१८।२९	२०।१५	२१।४७	२३।१८
चं. ३	०।५३	२।४९	५। २	७।२०	९।३४	११।४७	१४। ३	१६।२०	१८।२६	२०।१२	२१।४४	२३।१५
मं. ४	०।४९	२।४५	४।५८	७।१६	९।३०	११।४३	१३।५९	१६।१६	१८।२२	२०। ८	२१।४०	२३।११
बु. ५	०।४५	२।४१	४।५४	७।१२	९।२६	११।३९	१३।५५	१६।१२	१८।१८	२०। ४	२१।३६	२३। ७
बृ. ७	०।४२	२।३८	४।५१	७। ९	९।२३	११।३६	१३।५२	१६। ९	१८।१५	२०। १	२१।३३	२३। ४
शु. ८	०।३८	२।३४	४।४७	७। ५	९।१९	११।३२	१३।४८	१६। ५	१८।११	१९।५७	२१।२९	२३। ०
श. ९	०।३४	२।३०	४।४३	७। १	९।१५	११।२८	१३।४४	१६। १	१८। ७	१९।५३	२१।२५	२२।५६
र. १०	०।३०	२।२६	४।३९	६।५७	९।११	११।२४	१३।४०	१५।५७	१८। ३	१९।४९	२१।२१	२२।५२
चं. ११	०।२७	२।२३	४।३६	६।५४	९। ८	११।२१	१३।३७	१५।५४	१८। ०	१९।४६	२१।१८	२२।४९
मं. १२	०।२३	२।१९	४।३२	६।५०	९। ४	११।१७	१३।३३	१५।५०	१७।५६	१९।४२	२१।१४	२२।४५
बु. १३	०।१९	२।१५	४।२८	६।४६	९।००	११।१३	१३।२९	१५।४६	१७।५२	१९।३८	२१।१०	२२।४१
बृ. १४	०।१५	२।११	४।२४	६।४२	८।५६	११। ९	१३।२५	१५।४२	१७।४८	१९।३४	२१। ६	२२।३७
शु. ३०	०।११	२। ७	४।२०	६।३८	८।५२	११। ५	१३।२१	१५।३८	१७।४४	१९।३०	२१। २	२२।३३

२ रवौवल्ली ८।३५।३९।००
अयनांशा: २२।१४।२।३३



१० रवौवल्ली ८।३५।३९।७
अयनांशा: २२।१४।३।३६



अथ विविध विषया—श्रावणकृष्णपञ्चम्यां मनसादेव्या—उत्थापनं पूजनञ्च कार्यम् । अथ सोमवासरव्रतम्—सोमवारे कर्तं कार्यं श्रावणे वै यथाविधिः । शक्ताबुपोषणं कार्यमथवा निशिभोजनम् । प्रदक्षिणविधिः—एका चण्ड्यां रवौ सप्त त्रिदंद्याच्च विनायके । चत्वारि केशवे दद्यात् शिवस्यार्द्ध—प्रदक्षिणा । आसन्नप्रसवा नारी जलपूर्णघटं यथा । उद्वहन्ती शनैर्याति तथा कुर्यात्प्रदक्षिणम् । अथ मांसाभक्षणफलम्महाभारते—मासि मास्यश्वमेधेन यो यजेत्तु शतं समा । न खादति च यो मांसं सममेतद्युधिष्ठिर । यस्तु वर्षशतं पूर्णं तपस्तप्येत्सुदारुणम् । यश्च वं वर्जयेन्मांसं समौ तौ न च संशयः । कस्यापिकृतव्रतस्योद्यापनावश्यकता, नन्दि पुराणे—कुर्यादुद्यापनं तस्य समाप्तौ यदुदीरितम् । उद्यापनं विना यत्तुतद्व्रतं निष्फलं भवेत् । अथ श्रेष्ठव्रतानि—ब्रह्मचर्यं तथा शौचं सत्यमामिषवर्जनम् । व्रतेष्वेतानि चत्वारि वरिष्ठानीति निश्चयः । अथ वृक्षरोपणमन्त्रः—वसुधेति च शीतेति पुण्यदेति धरेति च । नमस्ते सुभगे देवि द्रुमोऽयं वर्धतामिति । अथ दन्तधावन मन्त्रः—आयुर्बलं यशोवर्च्चः प्रजापशुवसूनि च । ब्रह्मप्रज्ञां च मेधाञ्च त्वन्नो वेहि वनस्पते ।

वातावरणम्—पक्षादितः पञ्चमींयावद् यत्रतत्र वृष्टियोगस्ततो द्वादशीं यवद् वायुतापाधिक्यम्, ततः पक्षान्तंयावत्सौम्यसमयः ।

ग्रहस्थितिः—मार्गिणः पूर्वोदिताः कुजबुधगुरुशनयः, १२तः पूर्वास्तोबुधः, मार्गी पश्चिमोदितः शुक्रः ।

श्रावणशुक्लपक्षः शकः १९०३, संवत्-२०३८, सन् १३८९ साल, दि० १।८।८१ ई० तः १५।८।८१ ई० या०, पश्चिमेकालः । मा०पूर्वोदितोगुरुः, मा० पश्चिमोदितः शुक्रः, शुद्धः वर्षर्तुः, सौम्यगोलः, दक्षिणायनम् ।

दि.ति	तिथयः द.प.	घं.मि.	नक्षत्राणि	द.प.	घं.मि.	योगाः द.प.	करणानि द.प.	चन्द्रस्थितिः रा.द.प.	घं.मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादि	दिनमानं द.प.	सू.उ. घं.मि.	सू.अ. घं.मि.	दिनांक रा.	सौ.	अं.
श. १	६।४७	दि. ८।५	श्ले.	२१।५२	दि. २। ७	व्य. २८।५६	बव ६।४७	क. २१।५२	दि. २। ७	३।१५।२०।५३	३३।११	५।२२	६।३८	१०	१७	१
र. २	५।१०	,, ७।२७	म.	२२।२४	,, २।२१	व. २५।२८	कौ. ५।१०	सिंह	अहोरात्र	३।१६।१८। ८	३३। ८	५।२२	६।३८	११	१८	२
चं. ३	४।४७	,, ७।१९	पू.	२४। ९	,, ३। ४	प. २३।००	ग. ४।४७	सिं. ३९।५४	रा. ९।२१	३।१७।१५।१६	३३। ५	५।२३	६।३७	१२	१९	३
मं. ४	५।३९	,, ७।४१	उ.	२७।११	,, ४।१७	शि. २३।३५	वि. ५।३९	कन्या	अहोरात्र	३।१८।१२।३२	३३। २	५।२४	६।३६	१३	२०	४
बु. ५	७।४८	,, ८।३३	ह.	३१।२०	,, ५।५८	सि. २०।५९	वा. ७।४६	कन्या	अहोरात्र	३।१९। ९।४८	३२।५९	५।२४	६।३६	१४	२१	५
बृ. ६	११। ८	,, ९।५५	चि.	३६।२४	रा. ८। ६	सा. २१।२२	तै. ११। ८	क. ३।५७	दि. ७। ३	३।२०। ७। ३	३२।५६	५।२५	६।३५	१५	२२	६
शु. ७	१५।१८	,, ११।३६	स्वा.	४२।३३	,, १०।३०	शु. २२।२३	व. १५।१८	तुल	अहोरात्र	३।२१। ४।१८	३२।५३	५।२६	६।३४	१६	२३	७
श. ८	२०। ९	,, ११।३४	वि.	४९। १	,, १२।४२	शु. २३।५२	बव. २०। ९	तु. ३२।२४	रा. ६।२८	३।२२। १।३३	३२।५०	५।२६	६।३४	१७	२४	८
र. ९	२५।१३	,, ३।३०	अनु.	५५।३१	,, ३।४२	ब्र. २५।२८	कौ. २५।२३	वृश्चिक	अहोरात्र	३।२२।५८।५८	३२।४८	५।२६	६।३४	१८	२५	९
चं. १०	३०। ८	,, ५।३३	ज्ये.	६०।००	अहोरात्र	ऐ. २६।५९	ग. ३०। ८	वृश्चिक	अहोरात्र	३।२३।५६।१५	३२।४४	५।२७	६।३३	१९	२६	१०
मं. ११	३४।२४	रा. ७।१६	ज्ये.	१।३७	दि. ६।८	वै. २८।००	व. २। १	वृ. १।३७	दि. ६। ९	३।२४।५३।४२	३२।४१	५।२८	६।३२	२०	२७	११
बु. १२	३७।४८	,, ८।३७	मू.	७। ३	,, ८।१९	वि. २८।२३	बव ६। ६	धनु	अहोरात्र	३।२५।५१। ९	३२।३८	५।२८	६।३२	२१	२८	१२
बृ. १३	४०। ३	,, ९।३१	पू.	११।२६	,, १०। ४	प्री. २७।५०	कौ. ८।५६	ध. २७।१५	दि. ४।२४	३।२६।४८।३६	३२।३५	५।२९	६।३१	२२	२९	१३
शु. १४	४१। ७	,, ९।५७	उ.	१४।४२	,, ११।२३	आ. २६।२६	ग. १०।३५	मकर	अहोरात्र	३।२७।४६। ३	३२।३२	५।३०	६।३०	२३	३०	१४
श. १५	४०।४९	,, ९।५०	श्र.	१६।४१	,, १२।१०	सौ. २३।[illegible]	वि. १०।५८	म. ४७। [illegible]	रा. १२। ९	३।२८।४३।२९	३२।२९	५।३०	६।३०	२४	३१	१५

अगस्त ८ मासारंभः गण्ड १०।५२ उ. २५।५२ या० चन्द्रदर्शनम् मु० ३० फलं साम्यम् ।

पूर्वोत्तरयात्रा दि. घं. २ मि. २१ उ० ।

मधुश्रावणीव्रतम्, भ. ३५।१३ उ. श्लेषायांरविः ९।३६ स्त्री-स्त्री-योग, सूर्यचन्द्रयो० मण्डूकवाहनं जलानाड़ी, तदधिपतिर्बुधस्तेन सुवृष्टियोगः ।

भ ५।३९ या० पूर्वदक्षिणयात्रा दि. घं. ४ मि. १७ उ० ।

नागपञ्चमी, कुलिकनामानागराजः सितवर्णः, अन्नप्राशनं पूर्वयात्रा दि. घं. ८ मि. ३३ या० दग्धतिथि. दि. घं. ८।३३ उ. श्लेषायांबुधः ४।२३ ।

गवा ६, गृहप्रवेशः सप्तम्याम्, पश्चिमयात्रा दि. घं. ९ मि. ५५ उ, दग्धतिथिः दि. घं. ९ मि. ५५ या० ।

भ १५।१८ उ. ४७।४३ या० गृहप्रवेशान्नप्राशने सप्तम्यां, तुलसिदासजयन्ती ।

०।

पुनर्वसोभौमः ९।५ उत्तरयात्रा दि. घं. ३ मि. ३० उ० ।

गण्ड ५५।३७ उ. पश्चिमोत्तरयात्रा दि. घ. ५ मि. ३३ या० ।

पुत्रदा ११ व्रतं सर्वेषाम्, भ. २।१ उ. ३४।२४ या० गण्ड १०।३७ या० ।

श्रीधर १२ दूर्वादलेनपारणा, कन्यायांशुक्रः ३२।२४ मघायांसिंहेबुधः २१।१ गृहारम्भप्रवेशौ मूले ।

प्रदोष १३ व्रतम्, गृहारम्भप्रवेशौ त्रयोदश्यामुत्तराषाढ़े ।

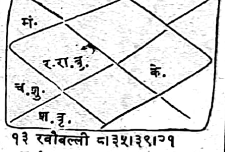
चतुर्दशीव्रतम् । * स्वतन्त्रतादिवसः पञ्चकारम्भः दि. १२।१० उ० ।

श्रावणीपूर्णिमा, भ. १०।५८ या० रक्षिकाबन्धनम् दि. घं. ९ मि. ५३ उ., गृहारम्भः पूर्णिमायाम्, संस्कृतदिवसमहोत्सवः, वाजसनेयीनामृषितर्पणम् उपाकर्म हयग्रीवोत्पत्तिः, *

निश्रमानकालिक दैनिक मङ्गलादिस्पष्टग्रहाः, दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च । दैनिकलग्नसारिणी चक्रम

दि.ति.	मङ्गल	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमानं	मे.अ.	वृ.अ.	मि.अ.	क.अ.	सिं.अ.	कं.अ.	तु.अ.	वृ.अ.	ध.अ.	म.अ.	कु.अ.	मी.अ.
श. १	२।१५।१६।२८	३।१०।४७।५८	५।१३।२४।२९	४।१७। ४।५५	५।१२।२३। ४	९। ९।४७।३०	४६।३६	०। ८	२। ४	४।१७	६।३५	८।४९	११। २	१३।१९	१५।३५	१७।४१	१९।२७	२०।५९	२२।३०
र. २	२।१५।५२।३२	३।१२।३३।४६	५।१३।३३।५६	४।१८।१६।२२	५।१२।२८। ५	९। ९।४४।२०	४६।३४	०। ४	२। ०	४।१३	६।३१	८।४५	१०।५८	१३।१४	१५।३१	१७।३७	१९।२३	२०।५५	२२।२६
चं. ३	२।१६।३५।४४	३।१४।२२।५४	५।१३।४४।१४	४।१९।२८।२५	५।१२।३३।३९	९। ९।४१।५९	४६।३३	०। ०	१।५६	४। ९	६।२७	८।४१	१०।५४	१३।१०	१५।२७	१७।३३	१९।१९	२०।५१	२२।२२
मं. ४	२।१७।१४।५६	३।१६।१२। २	५।१३।५४।३२	४।२०।४०।२८	५।१२।३९।१३	९। ९।३७।५८	४६।३२	२३।५६	१।५२	४। ५	६।२३	८।३७	१०।५०	१३। ६	१५।२३	१७।२९	१९।१५	२०।४७	२२।१८
बु. ५	२।१७।५४। ८	३।१८। ५।१०	५।१४। ४।५०	४।२१।५२।३१	५।१२।४४।४६	९। ९।३४।२७	४६।३१	२३।५२	१।४८	४। १	६।१९	८।३३	१०।४६	१३। २	१५।१९	१७।२५	१९।११	२०।४३	२२।१४
बृ. ६	२।१८।३३।२०	३।१९।५०।१८	५।१४।१५। ७	४।२३। ४।३४	५।१२।५०।१९	९। ९।३१।३६	४६।३०	२३।४९	१।४५	३।५८	६।१६	८।३०	१०।४३	१२।५९	१५।१६	१७।२२	१९। ८	२०।४०	२२।११
शु. ७	२।१९।१२।३२	३।२१।३९।२५	५।१४।२५।२४	४।२४।१६।३७	५।१२।५५।१२	९। ९।२८।२५	४६।२८	२३।४५	१।४१	३।५४	६।१२	८।२६	१०।३९	१२।५५	१५।१२	१७।१८	१९। ४	२०।३६	२२। ७
श. ८	२।१९।५१।४४	३।२३।२८।३२	५।१४।३५।४१	४।२५।२८।३९	५।१३। १।२५	९। ९।२५।१५	४६।२६	२३।४१	१।३७	३।५०	६। ८	८।२२	१०।३५	१२।५१	१५। ८	१७।१४	१९।००	२०।३२	२२। ३
र. ९	२।२०।३०।५५	३।२५।५७।३९	५।१४।४५।५८	४।२६।४०।४१	५।१३। ६।५८	९। ९।२२। ५	४६।२४	२३।३७	१।३३	३।४६	६। ४	८।१८	१०।३१	१२।४७	१५। ४	१७।१०	१८।५६	२०।२८	२१।५९
चं. १०	२।२१।१०।१३	३।२७। ७।५३	५।१४।५७।७०	४।२७।५२।३५	५।१३।१३।२०	९। ९।१८।५४	४६।२३	२३।३३	१।२९	३।४२	६। ०	८।१४	१०।२७	१२।४३	१५।००	१७। ६	१८।५२	२०।२४	२१।५५
म. ११	२।२१।४९।३१	३।२८।५८। ७	५।१५। ८। २	४।२९। ३।४९	५।१२।१९।४१	९। ९।१५।४३	४६।२२	२३।२९	१।२५	३।३८	५।५६	८।१०	१०।२३	१२।३९	१४।५६	१७। २	१८।४८	२०।२०	२१।५१
बु. १२	२।२२।२८।४९	४। ०।४८।२१	५।१५।१९। ४	५। ०।१५।२३	५।१३।२६। २	९। ९।१२।३२	४६।२१	२३।२५	१।२१	३।३४	५।५२	८। ६	१०।१९	१२।३५	१४।५२	१६।५८	१८।४४	२०।१६	२१।४७
बृ. १३	२।२३। ८। ७	४। २।३८। ५	५।१५।३०। ६	५। १।२६।५६	५।१३।३२।२३	९। ९। ९।२१	४६।१९	२३।२२	१।१८	३।३१	५।४९	८। ३	१०।१६	१२।३२	१४।४९	१६।५५	१८।४१	२०।१३	२१।४४
शु. १४	२।२३।४७।२४	४। ४।२८।४९	५।१५।४१। ८	५। २।३८।२९	५।१३।२८।४४	९। ९। ६।१०	४६।१७	२३।१८	१।१४	३।२७	५।४५	७।५९	१०।१२	१२।२८	१४।४५	१६।५१	१८।३७	२०। ९	२१।४०
श. १५	२।२४।२६।४१	४। ६।१९। ३	५।१५।५२।१०	५। ३।५०। २	५।१३।४५। ५	९। ९। ३।४०	४६।१५	२३।१४	१।१०	३।२३	५।४१	७।५५	१०। ८	१२।२४	१४।४१	१६।४७	१८।३३	२०। ५	२१।३६

२ रवौवल्ली ८।३५।३९।१४
अयनांशा: २३।१४। ४।३९



१३ रवौवल्ली ८।३५।३९।७१
अयनांशा: २३।१४। ५।४२



अथ विविध विषयाः—पञ्चम्यांनागपूजनं—श्रावणेमासिपञ्चम्यां कृष्णपक्षेऽथवा सिते। द्वारस्योभयतोलिख्या गोमयेन विषोल्वणाः। पूजयेद्विधिवद्वीर दधिदूर्वाङ्कुरैः कुशैः। गन्धपुष्पैर्ग्रहारैश्च ब्राह्मणानाञ्च तर्पणैः। ये त्वस्यां पूजयन्तीह नागान्भक्तिपुरस्सराः। न तेषां सर्पतो वीर भयं भवति कुत्रचित्। अत्र पञ्चम्यां तिक्ताम्लरससेवनं पुष्टिकरम्। अथात्र शकुनावलोकनम्—श्रावणशुक्लपञ्चम्यां दक्षिण-पश्चिमवायो दुर्भिक्षमन्यथा सुभिक्षम्। श्रावणशुक्लसप्तम्यां शकुनम्—नभसि शुक्लदलेऽचल संज्ञके रवितिथावुदयो रविचन्द्रयोः। भवति चेज्जलदैरिह संवृत्ता वसुमती जलदा वहुतोयदाः। पूर्णिमायां रक्षासूत्रबन्धनमन्त्रः—येन बद्धो बलो राजा दानवेन्द्रो महाबलः! तेनत्वां प्रतिवध्नामि रक्षे माचल-माचल। अथग्रहयोगेनवृष्टिविचारः—बुधशुक्रमहीसूनुगुरवश्चैकराशिगाः। निःसंशयं तदाकाले जायते वृष्टिरुत्तमाः समागमे ज्ञसितयोस्तथा च गुरुशुक्रयोः। तथैव जीवबुधयोर्वृष्टिः स्यान्नात्र संशयः। यदा भवन्ति सूर्यस्य ग्रहाः पृष्ठावलम्बिनः। पुरतो वा यदा यान्ति तदा त्वेकार्णवा मही।

वातावरणम्—पक्षादितः पञ्चमीं यावद्यत्र मेघसंचारस्ततोद्वादशीं यावत्तापवातादयस्ततः पक्षान्तंयावदनुकूलत्वम् ।

ग्रहस्थितिः—मार्गिणः पूर्वोदिताः कुजगुरुशनयः, बुधः पूर्वास्तः, मार्गीपश्चिमोदितः शुक्रः ।

दि. ति.	तिथय: द. प.	घं. मि.	नक्षत्राणि	द. प.	घं. मि.	योगा: द. प.	करणानि द.प.	चन्द्रस्थिति: रा.द.प.	घं. मि.	स्पष्टसूर्य: राश्य दि	दिनमानं द. प.	सू.उ. घं.मि.	सू.अ. घं. मि.	दिनांक रा.	सौ.	अं.
र. १	३९।१७	रा. ९।१४	ध.	१७।२५	दि. १२।२९	शो. २०।३०	वा १०।५३	कुम्भ	अहोरात्र	३।२९।४०।५५	३२।२६	५।३१	६।२९	२५	३२	१६
चं. २	३६।३५	" ८।१०	श.	१६।५६	" १२।१८	अ. १६। ४	तै. ७।५६	कुम्भ	अहोरात्र	४। ०।३८।३३	३२।२२	५।३२	६।२८	२६	१	१७
म ३	३२।५३	" ६।४१	पू.	१५।२३	" ११।४१	सु. १०।४८	व. ४।४४	कु. ०।४६	प्रा. ५।५०	४। १।३६।११	३२।१९	५।३२	६।२८	२७	२	१८
बु. ४	२८ २२	दि. ४।५४	उ.	१३। ३	" ११। ६	धृ. ४।४७	वव ०।३८	मीन	अहोरात्र	४। २।३३।४९	३२।१६	५।३३	६।२७	२८	३	१९
वृ. ५	२३। ६	" २।४७	रे	९।५३	" ९।३०	गं. ५०।५४	तै २३। ६	मी. ९।५३	दि. ९।३०	४। ३।३१।२७	३२।१३	५।३३	६।२७	२९	४	२०
शु. ६	१७।१८	" १२।२९	अ.	६।११	" ८। २	वृ. ४३।२३	व १७।१८	मेष	अहोरात्र	४। ४।२९। ५	३२।१०	५।३४	६।२६	३०	५	२१
श. ७	११।१५	" १०। ४	भ.	२। ८	" ६। ५	ध्रु. ३५।४१	वव. ११।१५	मे. १५।३६	दि. ११।५०	४। ५।२६।४३	३२। ७	५।३५	६।२५	३१	६	२२
र. ८	५। ४	" ७।३७	रो	५३।४४	र. ३। ६	व्या. २७।५७	कौ. ५। ४	वृष	अहोरात्र	४। ६।२४।२०	३२। ४	५।३५	६।२५	१	७	२३
च. १०	५३। ९	रा. २।५२	मृ.	४९।५२	" १।३३	ह. २०।२८	व. २६। ४	वृ २।४८	दि. २।१९	४ ७।२२।१३	३२।००	५।३६	६।२४	२	८	२४
मं. ११	४९।२१	" १२।४५	आ.	४६।२८	" १२।१२	व. १३। ३	वव २०।३०	मिथुन	अहोरात्र	४। ८।२०। ५	३१।५६	५।३७	६।२३	३	९	२५
बु. १२	४३। ८	" १०।५२	पुन.	४३।४०	" ११। ६	सि. ६।१२	कौ १५।३०	मि. २९।२२	दि. ५।२३	४। ९।१७।५७	३१।५२	५।३८	६।२२	४	१०	२६
वृ. १३	३९।२०	" ९।२२	पु.	४१।४७	" १०।२१	व. ५४।२९	ग. ११।१४	कर्क	अहोरात्र	४।१०।१५।४९	३१।४८	५।३८	६।२२	५	११	२७
शु. १४	३६।२९	" ८।१५	श्ले.	४०।४९	" ९।५९	प. ४९।४५	वि. ७।५५	क. ४०।४९	रा. ९।५९	४।११।१३।४१	३१।४४	५।३९	६।२१	६	१२	२८
श. ३०	३४।४८	" ७।३५	म.	४१। १	" १०। ४	शि. ४५।५९	च. ५।३९	सिंह	अहोरात्र	४।१२।११।३३	३१।४१	५।४०	६।२०	७	१३	२९

भाद्रकृष्णपक्ष: शक: १९०३, संवत् २०३८, सन्, १३८८ साल, दि० १६।८।८१ ई० त: २९।८।८१ ई० यावत्, पश्चिमेकाल:, २ त: उत्तरेकाल: । मा० पूर्वोदितोगुरु:, मा० पश्चिमोदित: शुक्र:, अशुद्ध:, त: २ वर्यंत, सौम्यगोल:, दक्षिणायनम् ।

मासान्त: श्रीदुर्गारथ यात्रा ।

अशुद्धारम्भ: ६।८ उ, मघायांसिंहेरवि: ६।८ मु० १५, फलं महर्घम् स्त्री-पु० योग: सू० चं० योग: मूषक वाहनं जलानाडी तदविपतिर्वृधस्तेन मध्यम वायुवृष्टियोग:, विष्णुपदी *

कज्जल ३ मासादि: भ. ४।४४ उ० ३२।५३ या० । * संक्रान्ति पुण्यकाल: दि० घं० ११ मि० ११ या० ।

शू० यो. द. ५३।२० वहुला ४, गण्ड ५७।५३ उ. पूर्वफल्गुन्यांवुध: ३६।१७ ।

वेला ५, गण्ड १२।५३ या०, हस्तेशुक्र: ५६।५० पञ्चकान्त: दि. घं. ९ मि. ३० उ० ।

वरुथ ६ भ० १७।१८ उ० ४४।१६ या० ।

कृ. न. दं. ५५।४४ श्रीकृष्ण जयन्तीव्रतम् मोहरात्रि:, त्रिलोयेशभितपूजनम् ।

न० ति. दं. ५३।५४ अवनम्, श्रीकृष्णाष्टमीव्रतम्, तत्पूजानोत्सवश्च ।

भ. २६।४ उ. ५३।९ या० कर्केभे.म: १९।२ दग्धतिथि रा. घं. २ मि. ५२ या० ।

अजा ११ व्रतं सर्वेषाम् ।

व्य० यो० दं. ५३।४७ ।

प्रदोष १३ व्रतम्, भ० ३९।२० उ. उत्तरफल्गुन्यांवुध: ८।४४ द्वापरयुगादि: ।

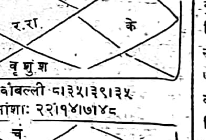
चतुर्दशीव्रतम्, भ० ७।५५ या० गण्ड २९।४९ उ० ४४।४९ या, दुर्मर १४ श्रीभैरवपूजा ।

भाद्री ३०, पार्वणम्, कुशोत्पाटनम्, पश्चिमोदितोवुध: ५०।५१ पुष्येकुज: ३०।४३ कन्याय वुध: ५।५१ ।

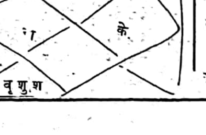
मिश्रमानकालक दैनिक मङ्गलादिस्पष्टग्रहा:, दिनद्वयग्रहान्तरं गति: । । दैनिकलग्नसारणी चक्रम्

दि. ति.	मंगल:	बुध:	गुरु:	शुक्र:	शनि:	केतु:	मिश्रमान	मे.अ.	वृ.अ.	मि.अ.	क.अ.	सि.अ.	क.अ.	तु.अ.	वृ.अ.	ध.अ.	म.अ.	कु.अ.	मी.अ.
र. १	२।२५। ५।५८	४। ८। ९।१७	५।१६। ३।१२	५। ५। १।३५	५।१३।५१।२६	९। ८।५९।५०	४६।१३	२३।१०	१। ६	३।१९	५।३७	७।५१	१०। ४	१२।२०	१४।३७	१६।४३	१८।२९	२०। १	२१।३२
च २	२।२५।४४।५१	४। ९।५७।१२	५।१६।१४।४४	५। ६।१३। ०	५।१३।५७।४७	९। ८।५६।३९	४६।१२	२३। ६	१। २	३।१५	५।३३	७।४७	१०। ०	१२।१६	१४।३३	१६।३९	१८।२५	१९।५७	२१।२८
म. ३	२।२६।२३।४४	४।११।४५।१७	५।१६।२६।१५	५। ७।२४।२५	५।१४। ४। ८	९। ८।५३।२८	४६।११	२३। ३	०।५९	३।१२	५।३०	७।४४	९।५७	१२।१३	१४।३०	१६।३६	१८।२२	१९।५४	२१।२५
व. ४	२।२७। २।३७	४।१३।३७।१७	५।१६।३७।४६	५। ८।३५।५०	५।१४।१०।२९	९। ८।५०।१७	४६।१०	२२।५९	०।५५	३। ८	५।२६	७।४०	९।५३	१२। ९	१४।२६	१६।३२	१८।१८	१९।५०	२१।२१
वृ. ५	२।२७।४१।३८	४।१५।२१।१७	५।१६।४९।१७	५। ९।४७।१५	५।१४।१६।५०	९। ८।४७। ६	४६। ८	२२।५५	०।५१	३। ४	५।२२	७।३६	९।४९	१२। ५	१४।२२	१६।२८	१८।१४	१९।४६	२१।१७
शु. ६	२।२८।२०।२३	४।१७। ९।१७	५।१७। ०। ८	५।१०।५८।४०	५।१४।२३।११	९। ८।४३।५५	४६। ६	२२।५२	०।४८	३। १	५।१९	७।३३	९।४६	१२। २	१४।१९	१६।२५	१८।११	१९।४३	२१।१४
श. ७	२।२९। ८।१६	४।१८।५७।१७	५।१७।१२।१९	५।१२।१०। ५	५।१४।२९।३१	९। ८।४०।४५	४६। ४	२२।४८	०।४४	२।५७	५।१५	७।२९	९।४२	११।५८	१४।१५	१६।२१	१८। ७	१९।३९	२१।१०
र. ८	२।२९।३८। ८	४।२०।४५।१६	५।१७।२३।५०	५।१३।२१।३०	५।१४।३५।५१	९। ८।३७।३५	४६। २	२२।४४	०।४०	२।५३	५।११	७।२५	९।३८	११।५४	१४।११	१६।१७	१८। ३	१९।३५	२१। ६
च. १०	३। ०।१६।४६	४।२२।२८।४६	५।१७।३५।५०	५।१४।३२। ३	५।१४।४२।२७	९। ८।३४।२४	४६। १	२२।४१	०।३७	२।५०	५। ८	७।२२	९।३५	११।५१	१४। ८	१६।१४	१८। ०	१९।३२	२१। ३
मं. ११	३। ०।५४।२४	४।२४।१२।१६	५।१७।४७।५०	५।१५।४३।३८	५।१४।४९। ३	९। ८।३१।१३	४५।५९	२२।३७	०।३३	२।४६	५। ४	७।१८	९।३१	११।४७	१४। ४	१६।१०	१७।५६	१९।२८	२०।५९
वृ. १२	३। १।३४। २	४।२५।५५।४६	५।१७।५९।५०	५।१६।५३।१३	५।१४।५५।३९	९। ८।२८। २	४५।५७	२२।३३	०।२९	२।४२	५। ०	७।१४	९।२७	११।४३	१४। ०	१६। ६	१७।५२	१९।२४	२०।५५
वृ. १३	३। २।१२।४०	४।२७।३९।१६	५।१८।११।५०	५।१८। ३।४५	५।१५। २।१४	९। ८।२४।५१	४५।५५	२२।३०	०।२६	२।३९	४।५७	७।११	९।२४	११।४०	१३।५७	१६। ३	१७।४९	१९।२१	२०।५२
शु. १४	३। २।५१।१८	४।२९।२२।४५	५।१८।२३।५०	५।१९।१४।२०	५।१५। ८।४९	९। ८।२१।४०	४५।५३	२२।२६	०।२२	२।३५	४।५३	७। ७	९।२०	११।३६	१३।५३	१५।५९	१७।४५	१९।१७	२०।४८
श. ३०	३। ३।२९।५६	५। १। ६।१४	५।१८।३५।५०	५।२०।२४।५४	५।१५।१५।२४	९। ८।१८।२९	४५।५१	२२।२२	०।१८	२।३१	४।४९	७। ३	९।१६	११।३२	१३।४९	१५।५५	१७।४१	१९।१३	२०।४४

१ रवौकल्ली ८।३५।३९।२८
अयनांश: २२।१४।६।४५



८ रवौकल्ली ८।३५।३९।३५
अयनांशा: २२।१४।७।४८



अथ विविध विषया:—भाद्रकृष्णाष्टम्यां श्रीकृष्णाष्टमीव्रतम् । निशीथ व्या जयन्ते व्रतं प्रातश्च कृष्णाष्टमीव्रतम् । व्रतमिदं त्रिजन्मपापनाशकम् । तस्मा सर्वे वश्यमेव कार्यमिति । भाद्रमायां कुशोत्पाटनमन्त्र:—विरञ्चिना सहोत्पन्न पर निसर्गज नुद सर्वाणि पापानि दर्भ स्वस्तिकरो भव । कुशाग्रे वसते रुद्र: कुश मध्ये तु के कुशमूले वसेद्ब्रह्मा कुशान्मे देहि मेदिनि । कुशोसि कुशपुत्रोसि ब्रह्मणा निर्मित: पुरा । पितृहितार्थाय कुशानुत्पाटयाम्यहम् । अथवर्ज्यकुशा:—चितिदर्भा: पथिदर्भा ये दर्भा यज्ञभू स्तरणासनपिण्डेषु षट्कुशान् परिवर्जयेत् । श्राद्धे निषिद्धवस्तूनि, मात्स्ये—कुष्माण्ड पीतीरं बिल्वपत्रमगद्विजा: । श्राद्धकाले समुत्पन्ने पितरो यान्त्यन निराशा: । श्राद्धे प्र वस्तूनि—उच्छिष्टं शिवनिर्माल्यं वान्तं च मृतकर्पटम् । श्राद्धेसप्तपवित्राणि दौहित्र तिला: । महिष्यादि प्रसवदोष:—माघे वुधे च महिषी श्रावणे वडवा दिवा । सिंहे प्रसूयन्ते स्वामिनो मृत्युदायिका: ।

वातावरणम्:—पक्षादितश्चतुर्थी यावद् यत्रतत्रमेघसंचारस्ततो दशमी यावत्तापवाताधि ततः पक्षान्तंयावत्साधारण वृष्टियोग: ।

ग्रहस्थिति:—मार्गिण: पूर्वोदिता: कुजगुरुशनय:, मार्गीपूर्वास्तोबुध:, मार्गी पश्चिमोदित:

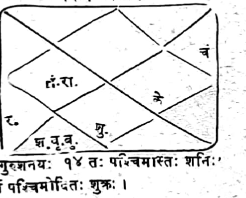
भाद्रशुक्लपक्षः

शकः १९०३, संवत् २०३८, सन १३८९ साल, दि० ३०।८।८१ ई० तः दि० १४।९।८१ ई० यावत्, उत्तरकालः । मार्गीपूर्वोदितोगुरुः १४ तः क्षीणोगुरुः, मार्गीपश्चिमोदितः शुक्रः अशुद्धः, वर्षर्तुः, सौम्यगोलः, दक्षिणायनम् ।

दि.ति.	तिथयः द.प.	घं.मि.	नक्षत्राणि	द.प.	घं.मि.	योगाः द.प.	करणानि द.प.	चन्द्रस्थितिः रा.द.प.	घं.मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादि	दिनमानं द.प.	सू.उ. घं.मि.	सू.अ. घं.मि.	दिनांक रा.	सौ.	अं.
र. १	३४।२४	रा. ७।२७	पू.	४२।२८	रा. १०।३९	सि. ४३।१३	कि. ४।३६	शि. ५८।८	रा. ४।५५	४।१३। २।२५	३१।३८	५।४०	६।२०	८	१४	३०
चं. २	३५।१३	" ७।४६	उ.	४५।१०	" ११।४५	सा. ४१।२८	वा. ४।४९	कन्या	अहोरात्र	४।१४। ७।२९	३१।३४	५।४१	६।१९	९	१५	३१
मं. ३	३७।२२	" ८।३९	ह.	४९। २	" ११।१९	शु. ४०।४२	तै. ६।१८	कन्या	अहोरात्र	४।१५। ५।३३	३१।३०	५।४२	६।१८	१०	१६	१
बु. ४	४०।३९	" ९।५९	चि.	५४। १	" ३।११	शु. ४०।४८	व. ९। १	क. २१।३२	दि. २।२०	४।१६। ३।३७	३१।२६	५।४३	६।१७	११	१७	२
बृ. ५	४४।५२	" ११।४१	स्वा.	५९।५१	" ५।४०	ब्र. ४१।३९	बव. १२।४६	तुल	अहोरात्र	४।१७। १।४१	३१।२२	५।४४	६।१६	१२	१८	३
शु. ६	४९।४३	" १।३७	वि.	६०।००	अहोरात्र	ऐ. ४२।५८	कौ. १७।१८	तु. ४९।३९	रा. १।२५	४।१७।५९।४५	३१।१८	५।४४	६।१६	१३	१९	४
श. ७	५४।५१	" ३।४१	वि.	६।१५	दि. ८।१५	वै. ४४।३३	ग. २२।१७	वृश्चिक	अहोरात्र	४।१८।१७।४९	३१।१५	५।४५	६।१५	१४	२०	५
र. ८	५९।४९	" ५।४२	अनु.	१२।४७	" १०।५३	वि. ४६। १	वि. २७।२०	वृश्चिक	अहोरात्र	४।१९।५५।५२	३१।१२	५।४६	६।१४	१५	२१	६
च. ९	६०।००	अहोरात्र	ज्ये.	१८।५९	" ११।२२	प्री. ४७। ९	वा. ३२। १	वृ. १८।१९	दि. ९। ६	४।२०।५४।११	३१। ८	५।४६	६।१४	१६	२२	७
मं. ९	४।१३	दि. ७।२८	मू.	२४।३३	" ३।३६	आ. ४७।३८	कौ. ४।१३	धनु	अहोरात्र	४।२१।५२।३०	३१। ४	५।४७	६।१३	१७	२३	८
बु. १०	७।४३	" ८।५३	पू.	२९।१२	" ५।२९	सौ. ४७।१५	ग. ७।४३	ध. ४५।१५	रा. १०।५०	४।२२।५०।४९	३१।००	५।४८	६।१२	१८	२४	९
बृ. ११	१०। ५	" ९।५१	उ.	३२।४३	रा. ६।५४	शो. ४६। १	वि. १०। ५	मकर	अहोरात्र	४।२३।४९। ८	३०।५६	५।४९	६।११	१९	२५	१०
शु. १२	११।१६	" १०।२०	श्र.	३५। १	" ७।५०	अ. ४३।४५	वा. ११।१६	मकर	अहोरात्र	४।२४।४७।२६	३०।५२	५।५०	६।१०	२०	२६	११
श. १३	११। ७	" १०।१७	ध.	३५।५९	" ८।१४	सु. ४०।२८	तै. ११। ७	म. ५।३०	दि. ८। २	४।२५।४५।४४	३०।४८	५।५०	६।१०	२१	२७	१२
.. १४	९।४३	" ९।४४	श.	३५।४६	" ८। ९	धृ. ३६।२०	व. ९।४३	कुम्भ	अहोरात्र	४।२६।४४। २	३०।४४	५।५१	६। ९	२२	२८	१३
चं. १५	७। ८	" ८।४३	पू.	३४।२८	" ७।३९	शू. ३२।००	बव ७। ८	कु. १९।४८	दि. १।५३	४।२७।४२।३६	३०।४०	५।५२	६। ८	२३	२९	१४

पूर्वफल्गुन्यां रविः ५६।५१ स्त्री-स्त्री-योगः, सू.मू.यो., शृगालवाहनम्, नीडानाड़ी, तदधिपतिः शुक्रस्तेन मेघच्छायामध्यमवृष्टियोगः ।
चन्द्रदर्शनं, मु० ४५ फलं समर्घम्, अन्नप्राशनम् ।
सितम्बर ९ मासारंभः, हरितालिकाव्रतम्, छन्दोगानामृषितर्पणम्, चित्रायां शुक्रः ५८।५७ ।
भ. ९।१ उ. ४०।३९ या०, चौठचन्द्रपूजा ।
नागमंत्र ५, सूर्यास्नानमन्नप्राशनञ्च ।
पर्पट ६, हस्ते बुधः ५।५० ।
भ. ५४।५१ उ० ।
भ, २७।२० या० गोपाष्टमी, महालक्ष्मीकथाऽरम्भः, तुलेशुक्रः ५५।५० ।
गण्ड १२।१९ उ० २७।१९ या० ।
दग्धतिथिः दि घं. ७ मि. २८ उ. ।
दग्धतिथिः दि. घ. ८ मि. ५३ या० भ. ३९।२८ उ० अच्युत १० ।
भ. १०।५ या० हरेः पार्श्वपरिवर्तनम्, कर्माधर्मा ११ व्रतं सर्वेषाम् ।
हृषीकेश १२, कुष्माण्डेनपारणा, इन्द्रोत्थानम् इन्द्रपूजनोत्सवारम्भश्च, प्रदोष १३ व्रतम् पञ्चकारम्भः रा. घ. ७ मि ५० उ० ।
चित्रायां बुधः ३७।९ स्वात्यां शुक्रः ३७।५४ ।
श्री अनन्त चतुर्दशीव्रतम् पूजनञ्च, क्षीणोगुरुः १५।४५ उत्तरफल्गुन्यां रविः ४१।१४ स्त्री-पु० योगः, सू. चं. योगः, छागवाहनम् जलानाड़ी तदधिपो विधुस्तेन वायुखण्ड- *
भाद्री १५, अगस्त्यार्घदानम् । * वृष्टियोगः, भ. ९।४३ उ० ३८।२५ या० याम्यामगस्त्योदयः पश्चिमास्तः शनिः ५४।४७ ।

१४ रवौवल्ली ८।३५।३९।५६
अयनांशा: २२।१४।१०।५७



ग्रहस्थितिः–मार्गिणः पूर्वोदिताः कुजगुरुशनयः १४ तः पश्चिमास्तः शनिः पश्चिमोदितोबुधः, मार्गी पश्चिमोदितः शुक्रः ।

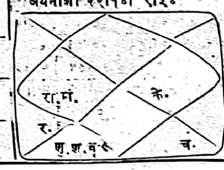
मिश्रमानकालिक दैनिकमङ्गलादिस्पष्टग्रहाः, दिनद्वयग्रहान्तरं गतिः । दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्

दि.ति.	मङ्गलः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमानं	मे.अ.	वृ.अ.	मि.अ.	क.अ.	सिं.अ.	कं.अ.	तु.अ.	वृ.अ.	ध.अ.	म.अ.	कुं.अ.	मी.अ.
र. १	३। ४। ८।३३	५। २।४९।४३	५।१८।४७।५०	५।२३।३५।२८	५।१५।२१।५९	९। ८।१५।१९	४५।४९	२२।१९	०।१९	२।२८	४।४६	७। ०	९।१३	११।२९	१३।४६	१५।५२	१७।३८	१९।१०	२१।४१
चं. २	३। ४।४६।१७	५। ४।२४।३५	५।१९। ०। ९	५।२२।४५।५१	५।१५।२८।१६	९। ८।१२। ८	४५।४८	२२।१५	०।११	२।२४	४।४२	६।५६	९। ९	११।२५	१३।४२	१५।४८	१७।३४	१९। ६	२१।३७
मं. ३	३। ५।२४।४१	५। ६। ०। ३	५।१९।१२।२८	५।२३।५६।१४	५।१५।३५।२३	९। ८। ८।५७	४५।४६	२२।११	०। ७	२।२०	४।३८	६।५२	९। ५	११।२१	१३।३८	१५।४५	१७।३१	१९। २	२१।३३
बु. ४	३। ६। २।४५	५। ७।३५।१३	५।१९।२४।४७	५।२५। ६।३७	५।१५।४२। ५	९। ८। ५।४६	४५।४४	२२। ८	०। ४	२।१७	४।३५	६।४९	९। २	११।१८	१३।३५	१५।४१	१७।२७	१८।५९	२१।३०
बृ. ५	३। ६।४०।४९	५। ९।१०।२३	५।१९।३७। ६	५।२६।१७। ०	५।१५।४८।४७	९। ८। २।३५	४५।४२	२२। ४	०। ०	२।१३	४।३१	६।४५	८।५८	११।१४	१३।३१	१५।३७	१७।२३	१८।५५	२१।२६
शु. ६	३। ७।१८।५२	५।१०।४५।३३	५।१९।४९।२५	५।२७।२७।२३	५।१५।५५।२९	९। ७।५९।२४	४५।४०	२२।००	२३।५६	२। ९	४।२७	६।४१	८।५४	११।१०	१३।२७	१५।३३	१७।१९	१८।५१	२१।२२
श. ७	३। ७।५६।५२	५।१२।२०।४२	५।२०। १।४३	५।२८।३७।४५	५।१६। २।११	९। ७।५६।१४	४५।३८	२१।५७	२३।५३	२। ६	४।२४	६।३८	८।५१	११। ७	१३।२४	१५।३०	१७।१६	१८।४८	२१।१९
र. ८	३। ८।३४।५८	५।१३।५५।५१	५।२०।१४। १	५।२९।४८। ७	५।१६। ८।५३	९। ७।५३। ४	४५।३६	२१।५३	२३।४९	२। २	४।२०	६।३४	८।४७	११। ३	१३।२०	१५।२६	१७।१२	१८।४४	२१।१५
च. ९	३। ९।१२।३६	५।१५।१७।४७	५।२०।२६।४४	६। ०।५८।१३	५।१६।१५।५४	९। ७।४९।५३	४५।३४	२१।४९	२३।४५	१।५८	४।१६	६।३०	८।४३	१०।५९	१३।१६	१५।२२	१७। ८	१८।४०	२१।११
मं. ९	३। ९।५०।१३	५।१६।३९।४२	५।२०।३९।२७	६। २। ८।१८	५।१६।२२।५५	९। ७।४६।४२	४५।३२	२१।४६	२३।४२	१।५५	४।१३	६।२७	८।४०	१०।५६	१३।१३	१५।१९	१७। ५	१८।३७	२१। ८
बु. १०	३।१०।२७।५०	५।१८। १।३७	५।२०।५२। ९	६। ३।१८।२३	५।१६।२९।५५	९। ७।४३।३१	४५।३०	२१।४२	२३।३८	१।५१	४। ९	६।२३	८।३६	१०।५२	१३। ९	१५।१५	१७। १	१८।३३	२१। ४
बृ. ११	३।११। ५।२७	५।१९।२३।३२	५।२१। ४।५१	६। ४।२८।२८	५।१६।३६।५५	९। ७।४०।२०	४५।२८	२१।३८	२३।३४	१।४७	४। ५	६।१९	८।३२	१०।४८	१३। ५	१५।११	१६।५७	१८।२९	२१। ०
शु. १२	३।११।४३। ४	५।२०।४५।२७	५।२१।१७।३३	६। ५।३८।३३	५।१६।४३।५५	९। ७।३७। ९	४५।२६	२१।३५	२३।३१	१।४४	४। २	६।१६	८।२९	१०।४५	१३। २	१५। ८	१६।५४	१८।२६	१९।५७
श. १३	३।१२।२०।४१	५।२२। ७।२२	५।२१।३०।१५	६। ६।४८।३८	५।१६।५०।५५	९। ७।३३।५९	४५।२४	२१।३१	२३।२७	१।४०	३।५८	६।१२	८।२५	१०।४१	१२।५८	१५। ४	१६।५०	१८।२२	१९।५३
र. १४	३।१२।५८।१८	५।२३।२९।१७	५।२१।४२।५७	६। ७।५८।४३	५।१६।५७।५५	९। ७।३०।४९	४५।२२	२१।२८	२३।२४	१।३७	३।५५	६। ९	८।२२	१०।३८	१२।५५	१५। १	१६।४७	१८।१९	१९।५०
च. १५	३।१३।३५।४१	५।२४।३०।१५	५।२१।५५।४०	६। ९। ८। ९	५।१७। ५।३०	९। ७।२७।३८	४५।२०	२१।२४	२३।२०	१।३३	३।५१	६। ५	८।१८	१०।३४	१२।५१	१४।५७	१६।४३	१८।१५	१९।४६

१ रवौवल्ली ८।३५।३९।४२
अयनांशा: २२।१४। ८।५१



८ रवौवल्ली ८।३५।३९।४९
अयनांशा २२।१४। ९।५४



अथ विविध विषयाः–चतुर्थ्यां सरोरुहणी व चन्द्रपजनं कुर्यात्फलादिकं गृहीत्वा चन्द्रञ्च पश्येत्तन्मन्त्रः–सिंहः प्रसेनमवधीत् सिंहो जाम्ववता हतः । सुकुमारक । मारोदीस्तव ह्येष स्यमन्तकः । प्रार्थनामन्त्रश्च–दधिशंखतुषाराभं क्षीरोदार्णवसंभवम् । नमामि शशिनं भक्त्या शम्भोर्मुकुटभूषणम् । एकादश्यां विष्णोः पार्श्वपरिवर्त्तनमन्त्राः–प्राप्ते भाद्रपदेमासि एकादश्यां सितेऽहनि । कटिदानं भवेद्विष्णोर्महापूजा प्रवर्त्तते । वासुदेव जगन्नाथ प्राप्तेयं द्वादशी तव । पार्श्वं संपरिवर्त्तस्व सुखं स्वपिहि माधव । त्वयि सुप्ते जगन्नाथ जगत्सुप्तं भवेदिदम् । विबुद्धे त्वयि बुद्धेत जगत्सुप्तं चराचरम् । देवदेवजगन्नाथ योगिगम्य निरञ्जन । कटिदानं कुरुष्वाद्य मासि-भाद्रपदे शुभे । अनन्तधारणमन्त्रः–अनन्तसंसारमहासमुद्रे मग्नं समभ्युद्धरवासुदेव । अनन्तरूपे विनियोजयस्व ह्यनन्तरूपाय नमोनमस्ते ॥ अगस्त्यार्घदानमन्त्राः–कुम्भयोनिसमुद्भव मुनीनां मुनिसत्तम । उदयन्ते लङ्काद्वारे अर्घोऽयं प्रतिगृह्यताम् । शंखं पुष्पं फलं तोयं रत्नानि विविधानि च । उदयन्ते लङ्काद्वारे अर्घोऽयं प्रतिगृह्यताम् । काशपुष्प प्रतीकाश वह्नि मारुतसंभव । उदयन्ते लंकाद्वारे अर्घोऽयं प्रतिगृह्यताम् प्रार्थनामन्त्राः–आतापी भक्षितो येन वातापीच महावलः । समुद्रः शोषितो येन समेऽगस्त्यः प्रसीदतु ।

वातावरणम्–पक्षादितो नवमीयावद् विशेषवायुतापादयः । ततः पक्षान्तंयावद् व्यापकवृष्टि योगः ।

दि.ति.	तिथयः द.प	घं.मि.	नक्षत्राणि	द.प.	घं.मि.	योगाः द.प.	करणानि द.प.	चन्द्रस्थितिः रा.द.प.	घं.मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादि	दिनमानं द.प.	सू.उ. घं.मि.	सू.अ. घं.मि.	दिनांक रा.	सौ.	अं.
मं. १	३।३२	दि. ७।१८	उ.	३२।२०	सं. ६।४९	गं. २५। १	को. ३।३२	मीन	अहोरात्र	४।२८।४१।१०	३०।३६	५।५३	६। ७	२४	३०	१५
बु. ३	५३।५८	,, ३।२९	रे.	२९।१९	दि. ५।३८	वृ. १८।२५	व. २६।५२	मी. २९।१९	दि. ५।३८	४।२९।३९।४४	३०।३२	५।५४	६। ६	२५	३१	१६
बृ. ४	४८।१४	,, १।१२	अ.	२५।४२	,, ४।११	ध्रु. ११।१४	बव. २१। ६	मेष	अहोरात्र	५। ०।३८।१८	३०।२८	५।५४	६। ६	२६	१	१७
शु. ५	४२।१५	,, १०।४९	भ.	२१।२९	,, २।३५	व्या. ३।४३	कौ. १५।११	मे. ३५।३६	रा. ८। ९	५। १।३६।५२	३०।२४	५।५५	६। ५	२७	२	१८
श. ६	३६। ५	,, ८।२२	कृ.	१७।१८	,, १२।५५	व. ४८।१०	ग. ९।१०	वृष	अहोरात्र	५। २।३५।२६	३०।२०	५।५६	६। ४	२८	३	१९
र. ७	३०। २	स. ५।५८	रो.	१३।१७	,, ११।१६	सि. ४०।२९	वि. ३। ४	वृ. ४१।१७	रा. १०।३१	५। ३।३४। ०	३०।१६	५।५७	६। ३	२९	४	२०
चं. ८	२४।१७	दि. ३।४१	मृ.	९।१८	,, ८।५१	व्य. ३३।३	कौ. २४।१७	मिथुन	अहोरात्र	५। ४।३२।५०	३०।१२	५।५८	६। २	३०	५	२१
मं. ९	१९। ०	,, १।३४	आ.	५।४४	,, ८।१६	व. २५।५९	ग. १९। ०	मि. ९।५९	दि. १।५८	५। ५।३३।४०	३०। ८	५।५८	६। २	३१	६	२२
बु. १०	१४।२३	,, ११।४४	पुन.	२।४४	,, ७। ५	प. १९।३३	वि. १४।२३	कर्क	अहोरात्र	५। ६।३०।३०	३०। ४	५।५९	६। १	१	७	२३
बृ. ११	१०।३०	,, १०।१५	पु.	०।४०	,, ६। ६	शि. १३।४६	वा. १३।३६	क. ५९।२८	रा. ५।४६	५। ७।२९।२०	३०।००	६।००	६।००	२	८	२४
शु. १२	७।४८	,, ९। ८	म.	५९।२३	रा. ५।४६	सि. ८।४८	तै. ७।४८	सिंह	अहोरात्र	५। ८।२८। ९	२९।५६	६। १	५।५९	३	९	२५
श. १३	६।१०	,, ८।२९	पू.	६०। ०	अहोरात्र	सा. ४।४४	व. ६।१०	सिंह	अहोरात्र	५। ९।२६।५८	२९।५३	६। १	५।५९	४	१०	२६
र. १४	५।४७	,, ८।२१	पू.	०।३०	प्रा. ६।१४	शु. १।३८	श. ५।४७	सि. १६। ६	दि. १२। ८	५।१०।२५।४७	२९।५०	६। २	५।५८	५	११	२७
चं. ३०	६।३९	,, ८।४३	उ.	२।५४	दि. ७।१३	ब्र. ५८।३०	ना. ६।३९	कन्या	अहोरात्र	५।११।२४।५३	२९।४६	६। ३	५।५७	६	१२	२८

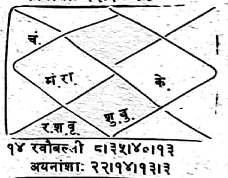
आश्विनकृष्णपक्षः शकः १९०३, संवत् २०३८, सन् १३८९ साल, दि० १५।९।८१ ई० तः २८।९।८१ ई० या०, उत्तरेकालः । मार्गीपूर्वोदितोगुरुः, ३० तः पश्चिमास्तः, मा० पश्चिमोदितः शुक्रः, अशुद्धः, वर्षर्तुः, ४ तः शरदर्तुः, सौम्यगोलः, दक्षिणायनम ।

२ ति. द. ५५।३४ अवमम् ।
मासान्तः, भ. २६।१२ उ. ५३।५८ या० गण्ड १७।१२ उ. ३२।१२ या० पञ्चकान्तः दि. घ. ५ मि. ३८ उ. ।
कन्यायां रविः ६।४० मु० ३० फलं साम्यम्, षडशीति संक्रान्तिपुण्यकालः दि. घ. २ मि. ५८ या० विशाखायां शुक्रः ९।४३ ।
ह० धो० द. ५२।१७ मासादिः, इन्द्रविसर्जनम् ।
भ. ३६।५ उ. श्लेषायांकुजः ४१।१ तुलायां बुधः ५९।८ ।
भ. ३।४ या० श्रीमहालक्ष्मीव्रतं जीमूतवाहनव्रतञ्च, दग्धतितिः घ. ५ मि. ५८ उ० ।
जीमूतवाहनव्रतपारणा दि. घ. ३ मि. ४१ उ. दग्धतिथिः दि. घ. ३ मि. ४१ या०, चित्रायां गुरुः २१।४ ।
भ. ४६।४१ उ. अन्वष्टका ९, मातृनवमीकृत्यम् ।
भ. १४।२३ या० ।
श्ले. न. द. ५८।४८ इन्दिरा ११ व्रतं सर्वेषाम्, गण्ड ४८।२८ उ० ।
गण्ड ३।२८ या० प्रदोष १३ व्रतम् ।
भ. ६।१० उ. ३५।५८ या० चतुर्दशी व्रतम् ।
शु. यो. द. ५७।५६ पार्वणान्तः, महालयः हस्तेरविः ५८।४७ स्त्री-स्त्री-योग. सू.सू. योगः हस्तिवाहनं नीडा-नाडी तदधिपतिः शुक्रस्तेन मध्यमवृष्टि वायुयोग. ।
आश्विनी ३० सोमवारीव्रतम् पश्चिमास्तो गुरुः १५।४५ बक्रीबुधः ४३।५७ ।

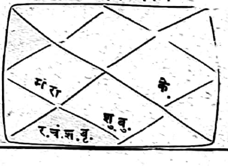
मिश्रमानकालिक दैनिक मङ्गलादि स्पष्टग्रहाः, दिनद्वयग्रहान्तरंगतिः । । दैनिकलग्नसारिणीचक्रम

दि.ति.	मङ्गलः	बुधः	गुरुः	शुक्र	शनिः	केतुः	मिश्रमान	मे.अ.	बृ.अ.	मि.अ.	क.अ.	सि.अ.	क.अ.	तु.अ.	बृ.अ.	ध.अ.	म.अ.	कु.अ.	मी.अ.
मं. १	३।१४।१३। ४	५।२५।३१।१२	५।२२। ८।२२	६।१०।१७।३५	५।१७।१३। ५	९। ७।२४।२७	४५।१८	२१।२०	२३।१६	१।२३	३।४७	६। १	८।१४	१०।३०	१२।४७	१४।५३	१६।३९	१८।११	१९।४२
बु. ३	३।१४।५०।२७	५।२६।३८। ९	५।२२।२१। ४	६।११।२७। १	५।१७।२०।४०	९। ७।२१।१६	४५।१५	२१।१६	२३।१२	१।२५	३।४३	५।५७	८।१०	१०।२६	१२।४३	१४।४९	१६।३५	१८। ७	१९।३८
बृ. ४	३।१५।२७।५०	५।२७।३३। ६	५।२२।३३।४६	६।१२।३६।२७	५।१७।२८।१४	९। ७।१८। ५	४५।१४	२१।१३	२३। ९	१।२२	३।४०	५।५४	८। ७	१०।२३	१२।४०	१४।४६	१६।३२	१८। ४	१९।३५
शु. ५	३।१६। ५।१३	५।२८।४३। ३	५।२२।४६।२८	६।१३।४५।५३	५।१७।३५।४८	९। ७।१४।५४	४५।१२	२१। ९	२३। ५	१।१८	३।३६	५।५०	८। ३	१०।१९	१२।३६	१४।४२	१६।२८	१८। ०	१९।३१
श. ६	३।१६।४२।३५	५।२९।३५। ०	५।२२।५९।१०	६।१४।५५।१९	५।१७।४३।२२	९। ७।११।४४	४५।१०	२१। ५	२३। १	१।१४	३।३२	५।४६	७।५९	१०।१५	१२।३२	१४।३८	१६।२४	१७।५६	१९।२७
र. ७	३।१७।१९।५७	६। ०।३५।५९	५।२३।११।५२	६।१६। ४।४५	५।१७।५०।५६	९। ७। ८।३४	४५। ८	२१। २	२२।५८	१।११	३।२९	५।४३	७।५६	१०।१२	१२।२९	१४।३५	१६।२१	१७।५३	१९।२४
चं. ८	३।१७। ६।४१	६। १। ४।४१	५।२३।२४।५६	६।१७।१३।४५	५।१७।५८।२७	९। ७। ५।२३	४५। ७	२०।५८	२२।५४	१। ७	३।२५	५।३९	७।५२	१०। ८	१२।२५	१४।३१	१६।१७	१७।४९	१९।२०
मं. ९	३।१८।३३।२५	६। १।३३।२५	५।२३।३८। ०	६।१८।२२।४५	५।१८। ५।५८	९। ७। २।१२	४५। ५	२०।५४	२२।५०	१। ३	३।२१	५।३५	७।४८	१०। ४	१२।२१	१४।२७	१६।१३	१७।४५	१९।१६
बु. १०	३।१९।१०। ९	६। २। २। ९	५।२३।५१। ३	६।१९।३१।४५	५।१८।१३।२८	९। ६।५९। १	४५। ३	२०।५०	२२।४६	०।५९	३।१७	५।३१	७।४४	१०। ०	१२।१७	१४।२३	१६। ९	१७।४१	१९।१२
बृ. ११	३।१९।४६।५३	६। २।३०।५३	५।२४। ४। ६	६।२०।४०।४५	५।१८।२०।५८	९। ६।५५।५०	४५। १	२०।४७	२२।४३	०।५६	३।१४	५।२८	७।४१	९।५७	१२।१४	१४।२०	१६। ६	१७।३८	१९। ९
शु. १२	३।२०।२३।३९	६। २।५९।३७	५।२४।१७। ९	६।२१।४९।४५	५।१८।२८।२८	९। ६।५२।३९	४४।५९	२०।४३	२२।३९	०।५२	३।१०	५।२४	७।३७	९।५३	१२।१०	१४।१६	१६। २	१७।३४	१९। ५
श. १३	३।२१। ।२१	६। ३।२८।२१	५।२४।३०।१२	६।२२।५८।४५	५।१८।३५।५८	९। ६।४९।२९	४४।५७	२०।३९	२२।३५	०।४८	३। ६	५।२०	७।३३	९।४९	१२। ६	१४।१२	१५।५८	१७।३०	१९। १
र. १४	३।२१।३७। ४	६। ३।५७। ४	५।२४।४३।१५	६।२४। ७।४४	५।१८।४३।२८	९। ६।४६।१९	४४।५५	२०।३६	२२।३२	०।४५	३। ३	५।१७	७।३०	९।४६	१२। ३	१४। ९	१५।५५	१७।२७	१८।५८
चं. ३०	३।२२।१३।३१	६। ३।४३। ४	५।२४।५६।२३	६।२५।१५।४४	५।१८।५०।५१	९। ६।४३। ८	४४।५३	२०।३२	२२।२८	०।४१	२।५९	५।१३	७।२६	९।४२	११।५९	१४। ५	१५।५१	१७।२३	१८।५४

७ रवौबल्ली ८।३५।४०।३
अयनांशाः २२।१४।१२।००



१४ रवौबल्ली ८।३५।४०।१३
अयनांशाः २२।१४।१३।३



अथ विविध विषयाः—आश्विनकृष्णपक्षे प्रतिदिनं श्रादधं कुर्यादिति प्रथमः-कल्पः, पञ्चमीमारभ्यामां यावदिति द्वितीयः कल्पः, अष्टमीमारभ्यामां यावदिति तृतीयः कल्पः, दशमीमारभ्यामां यावदिति चतुर्थ—कल्पस्तदभावे एकस्मिन्नपि दिने श्राद्धं कर्त्तव्यमेव। हेमाद्रौ—आषाढ्यां पञ्चमेपक्षे कन्यासंस्थेदिवाकरे। यो वै श्राद्धं नरः कुर्यादेकस्मिन्नपि वासरे। तस्य सम्वत्सरं यावत्संतृप्ताः पितरोध्रुवम्। श्राद्ध-कालः—पूर्वाह्णे मातृकं श्राद्धमपराह्णे तु पैतृकम् एकोद्दिष्टन्तुमध्याह्ने प्रातर्वृद्धिनि-मित्तकम्। जीमूतवाहनव्रतं, भविष्ये—इषे मास्यसिते पक्षे चाष्टमी या तिथिर्भवेत्। पुत्रसौभाग्यदा स्त्रीणां ख्याता सा जीवपुत्रिका। शालिवाहनराजस्य पुत्रोजीमूतवाहनः। तस्यां पूज्यः सनारीभिः पुत्रसौभाग्यलिप्सया। हस्ताके खञ्जनदर्शनमन्त्रः- नील-ग्रीवस्वरुपेण सर्वकामफलप्रद। पृथिव्यामवत्तीर्णोऽसि खञ्जरीट नमोऽस्तुते। तद्दर्शना-काशपूर्वपश्चिमोत्तरवायव्यदिक्षु शुभमन्यदिक्ष्वशुभम्। पुनश्च—अब्जेषु गोषु गजवाजि-महोरगेषु राज्यप्रदः कुशलदः शुचिशाद्वलेषु। भस्मास्थिकेशतुषलोमनखेषुदृष्टो दुःखं ददाति बहुशः खलु खञ्जरीटः।

वातावरणम्—पक्षादितोऽष्टमीं यावद् वायुतापादयस्ततः पक्षान्तं यावद्यत्रतत्र मध्यम वृष्टियोगः।

ग्रहस्थितिः—मार्गिणौ पूर्वोदितौ कुजगुरू, मा० पश्चिमोदितोबुधः, मार्गीपश्चिमोदितः शुक्रः, मार्गी पश्चिमास्तः शनिः।

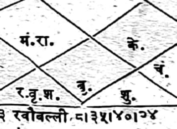
आश्विनशुक्लपक्षः — शकः १९०३, संवत् २०३८, सन् १३८९ साल, दि० २९।९।८१ ई० तः १३।१०।८१ ई० या०, उत्तरेकालः । मा० पश्चिमास्तोगुरुः, मा० पश्चिमोदितः शुक्रः, अशुद्धः, शरदृतुः, सौम्यगोलः, दक्षिणायनम् ।

दि.ति	तिथयः द.प.	घं.मि.	नक्षत्राणि	द.प.	घं.मि.	योगाः द.प.	करणानि द.प.	चन्द्रस्थितिः रा.द.प.	घं.मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादि	दिनमानं द.प.	सू.उ. घं.मि.	सू.अ. घं.मि.	दिनांक रा.	सौ.	अं.	आश्विनशुक्लपक्षः
मं. १	८।५१	दि. ९।३६	ह.	६।३४	दि. ८।४२	ऐ. ५८।१८	वव ८।५१	क. ३८।५६	रा. ९।३८	५।१२।२३।५९	२९।४२	६। ४	५।५६	७	१३	२९	चन्द्रदर्शनं, मु० ३० फलं साम्यम्, शारदीयनवरात्रारम्भः, कलशस्थापनम् अश्वारोहणम्, उ.षा. ३ च. मकरे केतुः, पुष्य १ चरणे कर्के राहुः ४४।०० ।
बु. २	१२।१०	,, १०।५६	चि.	११।१८	,, १०।३५	वै. ५८।५५	कौ. १२।१०	तुल	अहोरात्र	५।१३।२३। ४	२९।३८	६। ४	५।५६	८	१४	३०	रैमन्तपूजा, अन्नप्राशनम् ।
बृ. ३	१६।२६	,, १२।३९	स्वा.	१७। १	,, १२।५३	वि. ६०।००	ग. १६।२६	तुल	अहोरात्र	५।१४।२२। ९	२९।३४	६। ५	५।५५	९	१५	१	अक्टूबर १० मासारंभः, भ. ४८।५४ उ, सूतीस्नानमन्नप्राशनञ्च तृतीयायाम् ।
शु. ४	२१।२२	,, २।३९	वि.	२३।१६	,, ३।२४	वि. ०। ३	वि. २१।२२	तु. ६।४२	दि. ८।४७	५।१५।२१।१४	२९।३०	६। ६	५।५४	१०	१६	२	भ. २१।२२ या० पश्चिमास्तो बुधः १६।४३ वृश्चिकेशुक्रः ५३।४१ ।
श. ५	२६।३४	,, ४।४५	अनु.	२९।४८	रा. ६। २	प्री. १।३१	वा. २६।३४	वृश्चिक	अहोरात्र	५।१६।२०।१९	२९।२६	६। ७	५।५३	११	१७	३	०।
र. ६	३१।४०	रा. ६।४८	ज्ये.	३६। ८	,, ८।३५	आ. ३।००	तै. ३१।४०	वृ. ३६। ८	रा. ८।३५	५।१७।१९।२४	२९।२२	६। ८	५।५२	१२	१८	४	गजपूजा, विल्वाभिमन्त्रणम्, गण्ड ३०।८ उ. ४५।८ या० सूतीस्नानम् ।
चं. ७	३६। ७	,, ८।३५	मू.	४१।५३	,, १०।५३	सौ. ७। ८	ग. ३।५४	धनु	अहोरात्र	५।१८।१८।४१	२९।१८	६। ८	५।५२	१३	१९	५	पत्रिकाप्रवेशः, निशापूजा, महारात्रिः, भ. ३६।७ उ. दग्धतिथिः रा. घ. ८ मि. ३५ उ. अनुराधायां शुक्रः ५२।५५ ।
मं. ८	३९।४४	,, १०। ३	पू.	४५।४७	,, १२।५२	शो. ४।४५	वि. ७।२६	धनु	अहोरात्र	५।१९।१८। ६	२९।१४	६। ९	५।५१	१४	२०	६	महाष्टमीव्रतम्, भ. ७।२६ या० दग्धतिथिः रा. घ. १० मि. ३ या० ।
बु. ९	४२।११	,, ११। २	उ.	५०।३५	,, २।२४	अ. ४।३४	वा. १०।५८	ध. २।४४	दि. ७।१६	५।२०।१७।२७	२९।१०	६।१०	५।५०	१५	२१	७	महानवमीव्रतम्, त्रिशूलिनीपूजा, बलिदानादिकंच, वक्रगत्याकन्यायां बुधः ५०।७ ।
बृ.१०	४३।२९	,, ११।३५	श्र.	५३।१०	,, ३।२७	सु. ३।२८	तै. १२।५०	मकर	अहोरात्र	५।२१।१६।४८	२३। ६	६।११	५।४९	१६	२२	८	विजयादशमी, अपराजितापूजा, देवीविसर्जनम्, पूर्वयात्रा, अन्नप्रासनम्, पञ्चकारम्भः रा. घ. ३ मि. २७ उ., हलप्रवाहः ।
शु.११	४३।२७	,, ११।३५	ध.	५४।२७	,, ३।५९	धृ. १।२८	व. १३।२८	म. २३।४९	दि. ३।४४	५।२२।१६। ९	२९। २	६।१२	५।४८	१७	२३	९	शू, यो, द, ५६।४९ पाशांकुशा ११ व्रतं सर्वेषाम्, १३।२८ उ, ४३।२७ या०, हलप्रवाहः ।
श.१२	४२।१०	,, ११। ४	श.	५४।३२	,, ४। १	गं. ५४। ८	वव १२।४९	कुम्भ	अहोरात्र	५।२३।१५।३०	२८।५८	६।१२	५।४८	१८	२४	१०	पद्मनाभ १२, गुड़ेम पारणा, चित्रायां रबिः ४९।९ स्त्री-पु०-योगः, सू.सू.योगः, श्रृगालवाहनं जलाना ी तदधिपतिर्बुधस्तेन खण्डवृष्टि योगः ।
र.१३	३९।४०	,, १०। ५	पू.	५३।२८	,, ३।३६	वृ. ४९। ८	कौ. १०।५५	कु. ३८।४४	रा. ९।४३	५।२४।१४।५१	२८।५४	६।१३	५।४७	१९	२५	११	प्रदोष १३ व्रतं, मघायां सिंहे भौमः ४१।१३ ।
चं.१४	३६।१०	,, ८।४२	उ.	५१।३१	,, २।५०	धृ. ४३।१७	ग. ७।५५	मीन	अहोरात्र	५।२५।१४।२८	२८।५०	६।१४	५।४६	२०	२६	१२	चतुर्दशीव्रतम् ।
मं.१५	३१।४८	,, ६।५८	रे	४८।४३	,, १।४४	व्या. ३६।४६	वि. ३।५९	मी. ४८।४३	रा. १।४४	५।२६।१४। ५	२८।४६	६।१५	५।४५	२१	२७	१३	आश्विनी १५ कोजागरा, प्रदोषे लक्ष्मीपूजा, पञ्चकसमाप्तिः रा. घ. १ मि. ४४ उ. गण्ड ३६।१३ उ. ५१।१३ या० ।

मिश्रमानकालिक दैनिक मङ्गलादिस्पष्टग्रहाः, दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च — **दैनिकलग्नसारिणी चक्रम्**

दि.ति.	मङ्गल	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमानं	मे.अ.	वृ.अ.	मि.अ.	क.अ.	सिं.अ.	कं.अ.	तु.अ.	वृ.अ.	ध.अ.	म.अ.	कु.अ.	मी.अ.
मं. १	३।२२।४३।५७	६। ३।२९। ४	५।२५। ९।३१	६।२६।२३।४४	५।१८।५८।१४	९। ६।३९।५७	४४।५१	२०।२८	२२।२४	०।३७	२।५५	५। ९	७।२२	९।३८	११।५५	१४। १	१५।४७	१७।१९	१८।५०
बु. २	३।२३।२६।२३	६। ३।१५। ५	५।२५।२०।३८	६।२७।३१।४३	५।१९। ५।३७	९। ६।३६।४६	४४।४९	२०।२५	२२।२१	०।३४	२।५२	५। ६	७।१५	९।३५	११।५२	१३।५८	१५।४४	१७।१६	१८।४७
बृ. ३	३।२४। २।४९	६। ३। १। ६	५।२५।३५।४५	६।२८।३९।४२	५।१९।१३। ०	९। ६।३३।३५	४४।४७	२०।२१	२२।१७	०।३०	२।४८	५। २	७।१५	९।३१	११।४८	१३।५४	१५।४०	१७।१२	१८।४३
शु. ४	३।२४।३९।१५	६। २।४७। ७	५।२५।४८।५२	६।२९।४७।४१	५।१९।२०।२२	९। ६।३०।२४	४४।४५	२०।१७	२२।१३	०।२६	२।४४	४।५८	७।११	९।२७	११।४४	१३।५०	१५।३६	१७। ८	१८।३९
श. ५	३।२५।१५।४१	६। २।३३। ८	५।२६। १।५९	७। ०।५५।४०	५।१९।२७।४४	९। ६।२७।१३	४४।४३	२०।१४	२२।१०	०।२३	३।४१	४।५५	७। ८	९।२४	११।४१	१३।४७	१५।३३	१७। ५	१८।३६
र. ६	३।२५।५२। ७	६। २।१९। ९	५।२६।१५। ६	७। २। ३।३९	५।१९।३५। ६	९। ६।२४। ३	४४।४१	२०।१०	२२। ६	०।१९	२।३७	४।५१	७। ४	९।२०	११।३७	१३।४३	१५।२९	१७। १	१८।३२
चं. ७	३।२६।२८। ०	६। १।४४।४४	५।२६।२८। ६	७। ३।१०।२९	५।१९।४२।३२	९। ६।२०।५२	४४।३९	२०। ६	२२। २	०।१५	२।३३	४।४७	७। ०	९।१६	११।३३	१३।३९	१५।२५	१६।५७	१८।२८
मं. ८	३।२७। ३।५३	६। ०।१०।१९	५।२६।४१। ६	७। ४।१७।१९	५।१९।४९।५८	९। ६।१७।४१	४४।३७	२०। ३	२१।५९	०।१२	२।३०	४।४४	६।५७	९।१३	११।३०	१३।३६	१५।२२	१६।५४	१८।२५
बु. ९	३।२७।३९।४५	६। ०।३५।५४	५।२६।५४। ६	७। ५।२४। ८	५।१९।५७।२४	९। ६।१४।३०	४४।३५	१९।५९	२१।५५	०। ८	२।२६	४।४०	६।५३	९। ९	११।२६	१३।३२	१५।१८	१६।५०	१८।२१
बृ.१०	३।२८।१५।३७	६। ०। १।२९	५।२७। ७। ६	७। ६।३०।५७	५।२०। ४।५०	९। ६।११।१९	४४।३३	१९।५५	२१।५१	०। ४	२।२२	४।३६	६।४९	९। ५	११।२२	१३।२८	१५।१४	१६।४६	१८।१७
शु.११	३।२८।५१।२९	५।२९।२७। ४	५।२७।२०। ६	७। ७।३७।४६	५।२०।१२।१६	९। ६। ८। ८	४४।३१	१९।५२	२१।४८	०। १	२।१९	४।३३	६।४६	९। २	११।१९	१३।२५	१५।११	१६।४३	१८।१४
श.१२	३।२९।२७।२१	५।२८।५२।३९	५।२७।३३। ५	७। ८।४४।३५	५।२०।१९।४२	९। ६। ४।५८	४४।२९	१९।४८	२१।४४	२३।५७	२।१५	४।२९	६।४२	८।५८	११।१५	१३।२१	१५। ७	१६।३९	१८।१०
र.१३	४। ०। ३।१३	५।२८।१८।१५	५।२७।४६। ४	७। ९।५१।२४	५।२०।२७। ७	९। ६। १।४८	४४।२७	१९।४४	२१।४०	२३।५३	२।११	४।२५	६।३८	८।५४	११।११	१३।१७	१५। ३	१६।३५	१८। ६
चं.१४	४। ०।३८।४२	५।२७।३०।१७	५।२७।५९। ५	७।१०।५८। ५	५।२०।३४।४०	९। ५।५८।३७	४४।२५	१९।४१	२१।३७	२३।५०	२। ८	४।२२	६।३५	८।५१	११। ८	१३।१४	१५। ०	१६।३२	१८। ३
मं.१५	४। १।१४।११	५।२६।४२।१९	५।२८।१२। ६	७।१२। ०।४६	५।२०।४२।१३	९। ५।५५।२६	४४।२३	१९।३८	२१।३४	२३।४७	२। ५	४।१९	६।३२	८।४८	११। ५	१३।११	१४।५७	१६।२९	१८। ०

६ रवौबल्ली ८।३५।४०।१७
अयनांशाः २२।१४।१४।६



१३ रवौबल्ली ८।३५।४०।२४
अयनांशाः २२।१४।१५।९



अथ विविध विषयाः—प्रतिपदि कलशस्थापनन्ततो देवीपूजनपूर्वकं नवदिनं यावच्छप्तसतीस्तोत्रादिपाठश्च । तत्र दुर्गाऽऽगमन-यानविचारः—शशिसूर्ये गजारुढा शनिभौमे तुरंगमे । गुरौशुक्रे च दोलायां बुधे नौका प्रकीर्त्तिता । तत्फलञ्च—गजे च जलदादेवी छत्रभङ्गस्तुरंगमे । नौकायां सर्वसिद्धिः स्याद्दोलायां मरणं ध्रुवम् । अथ विजयदशम्यां देव्याः गमन-यानफलम्—शशि सूर्यदिने यदि सा विजया महिषागमने रुजशोककरा । शनिभौमदिने यदि सा विजया चरणायुधयानकरी विकला । बुधशुक्रदिने यदि सा विजया गजवाहनगा शुभवृष्टिकरा । सुरराजगुरौ यदि सा विजया नरवाहनगा शुभसौख्यकरा । अथ दुर्गापाठ महत्त्वम्—यथाश्वमेधः क्रतुराड् देवानाञ्च यथा हरिः । स्तवानामपि सर्वेषां तथा सप्तशतीस्तवः । चण्ड्याः शतावृत्ति पाठात् सर्वाः सिद्ध्यन्ति सिद्धयः । विल्वपत्रत्रोटनमन्त्रः—अमृतोद्भव श्रीवृक्षशंकरस्य सदाप्रिय । क्षमस्व शिवपूजार्थं तव पत्रं चिनोम्यहम् । तुलसीपत्रत्रोटनमन्त्रः—तुलस्यमृत जन्मा त्वं केशवस्य सदा प्रिया । क्षमस्व हरिपूजार्थं तवपत्रं चिनोम्यहम् ।

वातावरणम्—पक्षादितः सप्तमीं यावद् वायुतापरोगादयस्ततः पक्षान्तं यावन्मेघ संचारः ।

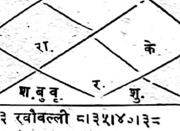
ग्रहस्थितिः—मार्गीपूर्वोदितः कुजः, वक्री पश्चिमास्तोबुधः, मार्गिणौ पश्चिमास्तौ गुरुशनी, मार्गी पश्चिमोदितः शुक्रः ।

दि.ति.	तिथय: द.प.	घं.मि.	नक्षत्राणि	द.प.	घं.मि.	योगा: द.प.	करणानि द.प.	चन्द्रस्थिति: रा.द.प.	घं.मि.	स्पष्टसूर्य: राश्य दि	दिनमानं द.प.	सू.उ. घं.मि.	सू.अ. घं.मि.	दिनांक रा.	सौ.	अं.	कार्तिककृष्णपक्ष: — शक: १९०३, संवत् २०३८, सन्, १३८९ साल, दि० १९।१०।८१ ई० त: २७।१०।८१ ई० यावत्, उत्तरेकाल: । मा० पश्चिमास्तो गुरु: मा० पश्चिमोदित: शुक्र:, अशुद्ध:, शरदर्तु:, सौम्यगोल:, ४ तो दक्षिणगोल:, दक्षिणायनम् ।
बु. १	२६।४३	दि. ४।५७	अ.	४५।१५	रा.१२।२२	ह. २९।४०	कौ. २६।४३	मेष	अहोरात्र	५।२७।१३।४२	२८।४२	६।१६	५।४४	२२	२८	१४	पूर्वयाला रा० घ० १२ मि० ४२ या०, वीज वर्पनम् ।
वृ. २	२१। ७	" २।४४	भ.	४१।२१	" १०।४९	व. २२।१९	ग. ३१। ७	मे. ५५।१८	रा. ४।२४	५।२८।१३।१९	२८।३८	६।१६	५।४४	२३	२९	१५	भ० ४८।९ उ० ।
शु. ३	१५।१२	" १२।२२	कृ.	३७।११	" ९। ९	सि. १४।२६	वि. १५।१२	वृष	अहोरात्र	५।२९।१२।५६	२८।३४	६।१७	५।४३	२४	३०	१६	मासान्त:, गणेश ४ व्रतम्, भ० १५।१२ या०, वक्रगत्या हस्ते बुध: ५१।४३ ।
श. ४	९। ५	" ९।५६	रो.	३३।५८	" ७।२९	व्य. ६।३४	वा ९। ५	वृष	अहोरात्र	६। ०।१२।३३	२८।३०	६।१८	५।४२	२५	१	१७	व० यो० दं० ५२।१३, तुलेरवि: ३१।४६ मु० ४५ फल समर्घम्, विपुवसंक्रान्ति पुण्यकाल: दि० घ० १२ उ०. ज्येष्ठायांशुक्र: ५५।२८ ।
र. ५	३। ९	" ७।३४	मृ.	२८।५६	स ५।५३	प. ५१।११	तै. ३। ९	वृ. ०।५७	दि. ६।४२	६। १।१२। ९	२८।२६	६।१९	५।४१	२६	२	१८	६ ति० द० ५४।१८ अवमम्, मासादि:, अशोकचन्दन ६, भ० ५७।२७ उ०, पूर्वोदितो बुध: १८।१५ ।
च. ७	५२।१५	रा. ३।१४	आ.	२५।१४	दि. ४।२६	शि. ४३।५५	वि. २४।५१	मिथुन	अहोरात्र	६। २।१२। १	२८।२२	६।२०	५।४०	२७	३	१९	भ० २४।५१ या० ।
मं. ८	४७।३९	" १।२४	पुन.	२२। ७	" ३।११	सि. ३७।१५	वा. १९।५७	मि. ७।५४	दि. ९।३०	६। ३।११।५३	२८।१८	६।२०	५।४०	२८	४	२०	० ।
बु. ९	४३।५७	" ११।५६	पु.	१९।५२	" २।१८	सा. ३१।१३	तै. १५।४८	कर्क	अहोरात्र	६। ४।११।४५	२८।१४	६।२१	५।३९	२९	५	२१	मार्गी बुध: ५०।१ ।
वृ.१०	४१।१४	" १०।५२	श्ले.	१८।२२	" १।४३	शु २५।५७	व १२।३६	क. १८।२२	दि. १।४३	६। ५।११।३७	२८।१०	६।२२	५।३८	३०	६	२२	तुलेगुरु: ५।२६, भ० १२।३६ उ० ४१।१४ या०, गण्ड ७।२२ उ० २२।२२ या० ।
शु.११	३९।४१	" १०।१५	म.	१७।१९	" १।३५	शु. २९।३१	बव. १०।२८	सिंह	अहोरात्र	६। ६।११।२९	२८। ६	६।२३	५।३७	१	७	२३	रम्भा ११ व्रतं सर्वेषाम्, दग्धतिथि: रा० घं० १० मि० १५ उ० ।
श.१२	३९।२४	" १०।१०	पू.	१८।४९	" १।५६	ब्र. १८। ६	कौ. ९।३३	सि. ३४।२०	रा. ८। ८	६। ७।११।२१	२८। २	६।२४	५।३६	२	८	२४	दग्धतिथि: रा० घ० १० मि० १० या०, स्वात्यां रवि: १३।४३ स्त्री: स्त्री: योगा:, मू० सू० योग:, मूपकवाहनं जलानाड़ीतदधि[illegible] वृष्टियोग: ।
र.१३	४०।२०	" १०।३२	उ.	२०।५२	" २।४५	ऐ १५।३९	ग. ९।५२	कन्या	अहोरात्र	६। ८।११।१२	२७।५८	६।२४	५।३६	३	९	२५	पूर्वोदित: शनि: ४५।१, भ० ४०।२० उ०, प्रदोष १३ व्रतं, सूतीस्नानं, धन्वन्तरि जयन्ती (धनतेरस) ।
चं.१४	४२।३९	" ११।२९	ह.	२४।१३	" ४। ६	वै. १४। ६	वि. ११।३०	क. ५६।२७	रा. ५। ०	६। ९।११।१९	२७।५४	६।२५	५।३५	४	१०	२६	भ० ११।३२ या०, १४ व्रतम्, प्रेत १४, यमदीपदानम्, श्रीहनुमज्जयन्ती हनुमद्ध्वजारोपणम्, चित्रायां बुध: १६।२ * तत एव नवमोयुवानाम मध्यमगुरु संवत्सरारम्भ: ।
मं.३०	४६। ३	" १२।५१	चि.	२८।४५	सं. ५।५४	वि. १३।४३	च. १४।२१	तुल	अहोरात्र	६।१०।११।२६	२७।५१	६।२६	५।३४	५	११	२७	कार्तिकी ३०, पार्वणम्, सुखरात्रि:, दिवाऽभोजनम्, प्रदोषे लक्ष्मीपूजा, उल्काभ्रमणम्, निशीथे श्री श्यामापूजा, कालरात्रि:, तुलायां मध्यमो गुरु: ५५।४७ *

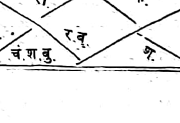
मिश्रमानकालिक दैनिक मङ्गलादिस्पष्टग्रहा:, दिनद्वयग्रहान्तर गति: । दैनिकलग्नसारणी चक्रम

दि.ति.	मंगल:	बुध:	गुरु:	शुक्र:	शनि:	केतु:	मिश्रमानं	मे.अ.	वृ.अ.	मि.अ.	क.अ.	सिं.अ.	क.अ.	तु.अ.	वृ.अ.	ध.अ.	म.अ.	कु.अ.	मी.अ.
बु. १	४। १।४९।३९	५।२५।५४।२१	५।२८।२५। ७	७।१३। ५।२७	५।२०।४९।४६	९। ५।५२।१५	४४।२१	१९।३५	२१।३१	२३।४४	२। २	४।१६	६।२९	८।४५	११। २	१३। ८	१४।५४	१६।२६	१७।५७
वृ. २	४। २।२५। ७	५।२५। ६।२३	५।२८।३८। ८	७।१४।१०। ८	५।२०।५७।१८	९। ५।४९। ४	४४।१९	१९।३१	२१।२७	२३।४०	१।५८	४।१२	६।२५	८।४१	१०।५८	१३। ४	१४।५०	१६।२२	१७।५३
शु. ३	४। ३। ०।१५	५।२४।३८।२५	५।२८।५१। ९	७।१५।१४।४९	५।२१। ४।५०	९। ५।४५।५३	४४।१७	१९।२८	२१।२४	२३।३७	१।५५	४। ९	६।२२	८।३८	१०।५५	१३। १	१४।४७	१६।१९	१७।५०
श. ४	४। ३।३६। ३	५।२३।३०।२८	५।२९। ४।१०	७।१६।१९।३०	५।२१।१२।२२	९। ५।४२।४३	४४।१५	१९।२५	२१।२१	२३।३४	१।५२	४। ६	६।१९	८।३५	१०।५२	१२।५८	१४।४४	१६।१६	१७।४७
र. ५	४। ४।११।३१	५।२२।४२।३१	५।२९।१७।११	७।१७।२४।११	५।२१।१९।५४	९। ५।३९।३३	४४।१३	१९।२१	२१।१७	२३।३०	१।४८	४। २	६।१५	८।३१	१०।४८	१२।५४	१४।४०	१६।१२	१७।४३
चं. ७	४। ४।४६।२२	५।२२।४६। ०	५।२९।३०।२२	७।१८।२९।४६	५।२१।२७।२८	९। ५।३६।२२	४४।११	१९।१७	२१।१३	२३।२६	१।४४	३।५८	६।११	८।२७	१०।४४	१२।५०	१४।३६	१६। ८	१७।३९
मं. ८	४। ५।२१।१३	५।२२।४९।२९	५।२९।४३।५४	७।१९।३५।२५	५।२१।३६। २	९। ५।३३।११	४४। ९	१९।१३	२१। ९	२३।२२	१।४०	३।५४	६। ७	८।२३	१०।४०	१२।४६	१४।३२	१६। ४	१७।३५
बु. ९	४। ५।५६। ४	५।२२।५२।५८	५।२९।५६।४५	७।२०।४०।५६	५।२१।४२।३६	९। ५।३०। ०	४४। ७	१९। ९	२१। ५	२३।१८	१।३६	३।५०	६। ३	८।१९	१०।३६	१२।४२	१४।२८	१६। ०	१७।३१
वृ.१०	४। ६।३०।५५	५।२२।५६।२७	६। ०। ९।५६	७।२१।४६।३१	५।२१।५०।१०	९। ५।२६।३९	४४। ५	१९। ५	२१। १	२३।१४	१।३२	३।४६	५।५९	८।१५	१०।३२	१२।३८	१४।२४	१५।५६	१७।२७
शु.११	४। ७। ५।४६	५।२२।५९।५६	६। ०।२३। ०	७।२२।५२। ६	५।२१।५७।४४	९। ५।२३।३८	४४। ३	१९। १	२०।५७	२३।१०	१।२८	३।४२	५।५५	८।११	१०।२८	१२।३४	१४।२०	१५।५२	१७।२३
श.१२	४। ७।४०।३६	५।२३। ३।२४	६। ०।३६।१८	७।२३।५७।४०	५।२२। ५।१७	९। ५।२०।२८	४४। १	१८।५७	२०।५३	२३। ६	१।२४	३।३८	५।५१	८। ७	१०।२४	१२।३०	१४।१६	१५।४८	१७।१९
र.१३	४। ८।१५।२६	५।२३। ६।५२	६। ०।४९।२९	७।२५। ३।१४	५।२२।१२।५०	९। ५।१७।१८	४३।५९	१८।५३	२०।४९	२३। २	१।२०	३।३४	५।४७	८। ३	१०।२०	१२।२६	१४।१२	१५।४४	१७।१५
चं.१४	४। ८।४९।४३	५।२३।४९।२४	६। १। २।३७	७।२६। ५।५६	५।२२।१९।४७	९। ५।१४। ७	४३।५७	१८।४९	२०।४५	२२।५८	१।१६	३।३०	५।४३	७।५९	१०।१६	१२।२२	१४। ८	१५।४०	१७।११
मं.३०	४। ९।२४। ०	५।२४।३१।५६	६। १।१५।४४	७।२७। ८।३७	५।२२।२६।४४	९। ५।१०।५६	४३।५५	१८।४५	२०।४१	२२।५४	१।१२	३।२६	५।३९	७।५५	१०।१२	१२।१८	१४। ४	१५।३६	१७। ७

५ रवौवल्ली ८।३५।४०।३१
अयनांश: २२।१४।१६।१२



१३ रवौवल्ली ८।३५।४०।३८
अयनांश: २२।१४।१७।१५



विविध विषया:—कार्तिके सकलं मासं प्रात: स्नायी जितेन्द्रिय: । जपन् हविष्यभुक् शान्त: सर्वपापै: प्रमुच्यते ॥ प्रात:स्नान मन्त्र:—कार्त्तिकेऽहं करिष्यामि प्रात: स्नानं जनार्दन प्रीत्यर्थं तव देवेश दामोदर रमासह ॥ धात्री माहात्म्यम्—धात्रीच्छायां समाश्रित्य भुंक्ते योऽन्नंहि मानव: । ब्राह्मणान् भोजयित्वातु वार्षिकं किल्विषं हरेत् ॥ धात्रीफल विलिप्तांगो धात्रीफल विभूषित: । धात्राफल कृताहारो नरोनारायणोभवेत् ॥ उल्काभ्रमणमन्त्र:—शस्त्राशस्त्र हातानांच भूतानांभूतदर्शनो: । उज्ज्वलज्ज्योतिषा देहं निर्दहे व्योम वह्निना ॥ अग्निदग्धाश्च येजीवा येप्यदग्धा कुलेमम । उज्ज्वलज्ज्योतिषा दग्धास्ते यान्तु परमां गतिम् ॥ यमलोकं परित्यज्य आगता ये महालये । उज्ज्वलज्ज्योतिषा वर्त्म प्रपश्यन्तो व्रजन्तु ते ॥ तुला संक्रने आकाशदीपदान फलम्—तुलायां तिलतैलेन सायंकाले समागते । आकाश दीपं योदद्यान्मासमेकं हरिंप्रति । महती श्रियमवाप्नोतिरूप सौभाग्य सम्पद: ॥ दीपदानमन्त्र:—दामोदराय नभसि तुलायां लीलया सह । प्रदीपं ते प्रयच्छामि नमोऽनन्ताय वेधसे ॥

वातावरणम्—पक्षादित: पञ्चमीयावद्रोग वायुतापादय:, तत: पक्षान्तंयावद नुकूलवातावरणम् ।
ग्रहस्थिति:—मार्गीपूर्वोदित: कुज:, वक्री पश्चिमास्तोबुध:, ५त: पूर्वोदितोबुध:, मार्गिणौ पश्चिमास्तौ गुरुशनी, १३ त: पूर्वोदित: शनि:, मार्गी पश्चिमोदित: शुक्र: ।

कार्तिकशुक्लपक्षः | शकः १९०३, सवत् २०३८, सन् १३८९ साल, दि० २८।१०।८१ ई० तः , ।११।८१ ई० यावत्, उत्तरेकालः । मा० पूर्वोदितोगुरुः मा० पश्चिमोदितः शुक्रः, अशुद्धः, शरदर्तुः, दक्षिणगोलः, दक्षिणायनम् ।

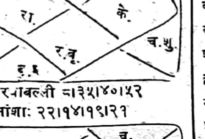
दि ति.	तिथयः द. प.	घं. मि.	नक्षत्राणि	द. प.	घं. मि.	योगाः द. प.	करणानि द.प.	चन्द्रस्थितिः रा.द.प.	घं. मि.	स्पष्टसूर्यः राश्य.दि	दिनमानं द. प.	सू.उ. घं.मि.	सू.अ. घं. मि.	दिनांक रा.	सौ.	अं.
बु. १	५०।२९	रा. २।३८	स्वा.	३४। ९	रा. ८। ६	प्री. १४। २	कि १८।१६	तुल	अहोरात्र	६।११।११।३३	२७।४८	६।२६	५।३४	६	१२	२८
बृ. २	५५।२८	" ४।२८	वि.	४०।१७	" १०।३४	आ. १७।५७	वा २२।५९	तु. २३।४५	दि. ३।३९	६।१२।११।४०	२७।४५	६।२७	५।३३	७	१३	२९
शु. ३	६०। ०	अहोरात्र	अनु.	४६।४७	" १।५८	सौ. १६।१८	तै २८। ८	वृश्चिक	अहोरात्र	६।१३।११।४७	२७।४२	६।२८	५।३२	८	१४	३०
श. ३	०।४८	दि. ६।४७	ज्ये.	५३।१२	" ३।४५	शो. १७।४४	ग. ०।४८	वृ. ५३।१२	रा. ३।४५	६।१४।११।५४	२७।३९	६।२८	५।३२	९	१५	३१
र. ४	३।५९	" ८।५३	मू.	५९।१७	" ६।१२	अ. १८।५६	वि. ५।५९	धनु	अहोरात्र	६।१५।१२। ०	२७।३६	६।२९	५।३१	१०	१६	१
चं. ५	१०।३०	" १०।४१	पू.	६०। ०	अहोरात्र	सु. १९।४०	वा १०।३०	धनु	अहोरात्र	६।१६।१२।२२	२७।३३	६।२९	५।३१	११	१७	२
मं. ६	१४।११	" १२।१०	पू.	४।१७	दि. ८।१३	धृ. १९।४२	तै. १४।११	ध. २०।१५	दि. २।३६	६।१७।१२।४३	२७।३०	६।३०	५।३०	१२	१८	३
बु. ७	१६।४२	" १।१२	उ.	८।१९	" ९।५१	शू १८।४४	व १६।४२	मकर	अहोरात्र	६।१८।१३। ४	२७।२७	६।३१	५।२९	१३	१९	४
बृ. ८	१८। १	" १।४३	श्र.	११।१५	" ११। १	गं. १६।५२	वव. १८। १	म. ४२। ३	रा. ११।२०	६।१९।१३।२५	२७।२४	६।३१	५।२९	१४	२०	५
शु. ९	१८। १	" १।४४	ध.	१२।५२	" ११।३७	वृ. १३।५८	को. १८। १	कुम्भ	अहोरात्र	६।२०।१३।४६	२७।२१	६।३२	५।२८	१५	२१	६
श. १०	१६।४१	" १।१४	श.	१३।१६	" १२।२३	ध्रु. १०। ३	ग. १६।१५	कु. ५७।४०	रा. ५।३६	६।२१।१४। ६	२७।१८	६।३२	५।२८	१६	२२	७
र. ११	१४।१९	" १२।१७	पू.	१२।३०	" ११।३३	व्या. ५।१४	वि. १४।१९	मीन	अहोरात्र	६।२२।१४।२८	२७।१५	६।३३	५।२७	१७	२३	८
चं. १२	१०।५१	" १०।५४	उ.	१०।४३	" १०।५१	व ५३।१५	चा. १०।५१	मीन	अहोरात्र	६।२३।१५। २	२७।१२	६।३४	५।२६	१८	२४	९
मं. १३	६।३३	" ९।१२	रे.	८। ६	" ९।४८	सि. ४६।१८	तै. ६।३३	मीं. ८। ६	दि. ९।४९	६।२४।१५।३६	२७। ८	६।३४	५।२६	१९	२५	१०
बु. १४	१।३३	" ७।१२	अ.	४।५८	,, ८।३०	व्य. ३८।५१	व १।३३	मेष	अहोरात्र	६।२५।१६।१०	२७। ४	६।३५	५।२५	२०	२६	११

पूर्वादितागुरुः ४९।५० गोक्रीडा, गोपूजाच, वह्नयुत्थानम् महाकविकालिदास जयन्ती ।
चन्द्रादयः, मु. ४५ फलं साम्यम्, भ्रातृद्वितीया, चित्रगुप्तपूजा, यमुनास्नानम् ।
व्यहोजन्मदिनकृत्यम्. कटुमहुली ३, मूलेधनुषिशुक्रः २१।४८ अन्नप्राशनम् ।
भ. ३३।२३ उ, गण्ड ४७।१२ उ ।
नमम्वर ११ मासारंभः. भ. ५।५९ या० गण्ड २।१२ या० ।
० ।
प्रतिहारषष्ठी (छठि) व्रतम्, सायंकालिकार्घदानम्, पूर्वफल्गुन्यां भौमः ३६।५३ तुलायांबुधः ५८।० ।
भ. १६।४२उ. ४७।२१या० अन्नप्राशनम्. प्रातः कालिकार्घदानम् पारणञ्च, सामापूजारम्भः, गृहारम्भः गृहप्रवेशश्च दि.घ. ९।५१ उ. दि.घ.१।१२या. चित्रायांशनिः ३०।३६ ।
पञ्चकारम्भः दि. घ. ११ मि. १ उ., गोपाष्टमी, गोपूजनोत्सवः ।
अक्षयनवमी, त्रेतायुगादिः, विशाखायां रवि, २९।३९ गृहप्रवेशो दशम्याम् ।
भ. ४५।३७ उ ।
ह. यो. द ५४।२१ भ. १४।१९ या० देवोत्थान ११ व्रतंसर्वेषाम्, दग्धतिथिः दि. घ. १२ मि. १७ उ. भीष्मपञ्चकव्रतारम्भः, चातुर्मास्यव्रतान्तिः ।
दामोदर १२ तुलसीदलेनपारणा,प्रदोष१३व्रतम् दग्धतिथिः दि.घ.१०मि.५४या०स्वात्यांबुधः ५।३गृहप्रवेस्त्रयोदश्याम्, गण्ड ५६।६उ. धान्यच्छेदनम्, मेधिरोपणम्, च त्रयोदश्याम् ।
चतुर्दशीव्रतम्, विद्यापतिस्मृतिदिवसः, पञ्चकान्तः दि. घ. ९ मि. ४८ उ., विश्वनाथप्रतिष्ठादिनम् गण्ड ११।६ या० । * गुरुनानक जयन्ती सामाविसर्जनम् ।
कार्तिकी १५ स्नानादि,१५ ति.द.५४।२७अवमम्, भ.११३३उ.२८।४६या. सर्वदेवोत्थानम्, अन्नप्राशनं गृहारम्भप्रवेशौ च पूर्णिमायामश्विन्याम्, भीष्मपञ्चकव्रतसमाप्तिः *

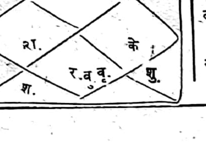
मिश्रमानकालिकं दैनिक मङ्गलादिस्पष्टग्रहाः, दिनद्वयग्रहान्तरं गतिः । । | **दैनिकलग्नसारिणी चक्रम्**

दि. ति.	मगलः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः	सिश्रमानं	मे.अ.	वृ.अ.	मि.अ.	क.अ.	सि.अ.	क.अ.	तु.अ.	वृ.अ.	ध.अ.	म.अ.	कु.अ.	मी.अ.
बु. १	४। ९।५८।१७	५।२५।१४।२७	६। १।२८।५१	७।२८।११।२८	५।२२।३३।४१	९। ५। ७।४५	४३।५३	१८।४१	२०।३७	२२।५०	१। ८	३।२२	५।३५	७।५१	१०। ८	१२।१४	१४। ०	१५।३२	१७। ३
बृ. २	४।१०।३२।३४	५।२५।५६।५८	६। १।४१।५८	७।२९।१३।५९	५।२२।४०।३८	९। ५। ४।३४	४३।५१	१८।३७	२०।३३	२२।४६	१। ४	३।१८	५।३१	७।४७	१०। ४	१२।१०	१३।५६	१५।२८	१६।५९
शु. ३	४।११। ६।५१	५।२६।३९।२९	६। १।५५। ५	८। ०।१६।४०	५।२२।४७।३५	९। ५। १।२३	४३।५०	१८।३३	२०।२९	२२।४२	०। ०	३।१४	५।२७	७।४३	१०। ०	१२। ६	१३।५२	१५।२४	१६।५५
श. ३	४।११।४१। ७	५।२७।२२। ०	६। २। ८।१२	८। १।१९।२१	५।२२।५४।३१	९। ४।५८।१२	४३।४९	१८।२९	२०।२५	२२।३८	०।५६	३।१०	५।२३	७।३९	९।५६	१२। २	१३।४८	१५।२०	१६।५१
र. ४	४।१२।१५।२३	५।२८। ४।३१	६। २।२१।१९	८। २।२२। २	५।२३। १।२७	९। ४।५५। २	४३।४८	१८।२५	२०।२१	२२।३४	०।५२	३। ६	५।१९	७।३५	९।५२	११।५८	१३।४४	१५।१६	१६।४७
चं. ५	४।१२।४८।५१	५।२९।१४। ४	६। २।३४।१३	८। ३।२१।३५	५।२३। ८।१०	९। ४।५१।२१	४३।४६	१८।२१	२०।१७	२२।३०	०।४८	३। २	५।१५	७।३१	९।४८	११।५४	१३।४०	१५।१२	१६।४३
मं. ६	४।१३।२२।१९	६। ०।२३।३६	६। २।४७। ७	८। ४।२१। ८	५।२३।१४।५३	९। ४।४८।४०	४३।४४	१८।१७	२०।१३	२२।२६	०।४४	२।५८	५।११	७।२७	९।४४	११।५०	१३।३६	१५। ८	१६।३९
बु. ७	४।१३।५५।४७	६। १।३३। ८	६। ३। ०। १	८। ५।२०।४१	५।२३।२१।३६	९। ४।४५।२९	४३।४२	१८।१३	२०। ९	२२।२२	०।४०	२।५४	५। ७	७।२३	९।४०	११।४६	१३।३२	१५। ४	१६।३५
बृ. ८	४।१४।२९।१५	६। २।४२। ०	६। ३।१२।५५	८। ६।२०।१४	५।२३।२८।१९	९। ४।४२।१८	४३।४०	१८। ९	२०। ५	२२।१८	०।३६	२।५०	५। ३	७।१९	९।३६	११।४२	१३।२८	१५। ०	१६।३१
शु. ९	४।१५। २।४३	६। ३।५२।१२	६। ३।२५।४८	८। ७।१९।४७	५।२३।३५।२२	९। ४।३९। ७	४३।३९	१८। ५	२०। १	२२।१४	०।३२	२।४६	४।५९	७।१५	९।३३	११।३८	१३।२४	१४।५६	१६।२७
श. १०	४।१५।३६।१०	६। ५। १।४४	६। ३।३८।४१	८। ८।१९।२०	५।२३।४१।४४	९। ४।३५।५७	४३।३८	१८। २	१९।५८	२२।११	०।२९	२।४३	४।५६	७।१२	९।२९	११।३५	१३।२१	१४।५३	१६।२४
र. ११	४।१६। ९।३७	६। ६।११।१६	६। ३।५१।३४	८। ९।१८।५३	५।२३।४८।२६	९। ४।३२।४७	४३।३७	१७।५८	१९।५४	२२। ७	०।२५	२।३९	४।५२	७। ८	९।२५	११।३१	१३।१७	१४।४९	१६।२०
चं. १२	४।१६।४३।२५	६। ७।३७।१०	६। ४। ४।३१	८।१०।१५।२६	५।२३।५५। १	९। ४।२९।३६	४३।३५	१७।५४	१९।५०	२२। ३	०।२१	२।३५	४।४८	७। ४	९।२१	११।२७	१३।१३	१४।४५	१६।१६
मं. १३	४।१७।१५।१३	६। ९। ३। ४	६। ४।१७।२८	८।११।११।५८	५।२४। १।३६	९। ४।२६।२५	४३।३३	१७।५०	१९।४६	२१।५९	०।१७	२।३[illegible]	४।४४	७। ०	९।१७	११।२३	१३। ९	१४।४१	१६।१२
बु. १४	४।१७।४८।१	६।१०।२८।५८	६। ४।३०।२५	८।१२। ८।३०	५।२४। ८।११	९। ४।१३।१४	४३।३१	१७।४६	१९।४२	२१।५५	०।१३	२।२७	४।४०	६।५६	९।१३	११।१९	१३। ५	१४।३७	१६। ८

४ रवौवल्ली ८।३५।४०।४५
अयनांशः २२।१४।१८।१८



११ रवावल्ली ८।३५।४०।५२
अयनांशाः २२।१४।१९।२१



अथ विविध विषयाः—कार्तिक शुक्ल प्रतिपदि प्रातगोवर्द्धनपूजा कार्या। गोमयेन गोवर्द्धनमूर्ति–निर्माय पीतपुष्पाक्षतादिभिः पूजयेत् गाश्च पूजयेत् । **तत्र गोवर्द्धनपूजन-मन्त्रः**—गोवर्द्धनधराधारगोकुलत्राणकारक । कृष्णबाहुकृतच्छाय गवां कोटिप्रदो भव । गो-पूजामन्त्रश्च—लक्ष्मीर्या लोकपालानां धेनूरूपेण संस्थिता । घृतं वहति यज्ञार्थं सा मे पापं व्यपोहतु । अग्रतः सन्तु मे गावो गावो मे सन्तु पृष्ठतः । गावो मे हृदये सन्तु गवां मध्ये वसाम्यहम् । भ्रातृद्वितीयायां भगिन्या पठनीयो मन्त्रः—भ्रातस्तवानुजाताऽहंभुङ्क्ष्व भक्तमिदं शुभम् । प्रीतये यमराजस्य यमुनाया विशेषतः । ज्येष्ठ भ्रातरि सति भ्रातस्तवाग्रे जाताऽहमिति । एकादश्यां विष्णूत्थापनमन्त्राः—ब्रह्मेन्द्ररुद्रै रभिवन्द्यमानो भवानृषिर्वन्दित वन्दनीयः। प्राप्ता तवेयं किल कौमुदाख्या जागृष्व-जागृष्व च लोकनाथ। मेघा गता निर्मल पूर्णचन्द्र शारद्यपुष्पाणि मनोहराणि। अहं ददानीति च पुण्यहेतोर्जागृष्व जागृष्व च लोकनाथ। उत्तिष्ठोतिष्ठ गोविन्द त्यज निद्रां जगत्पते । त्वया चोत्थीय मानेन प्रोत्थितं भुवनत्रयम् ।

वातावरणम्—पक्षादितश्चतुर्थी यावत्खण्डवृष्टिवातादयस्ततः पक्षान्तंयावन्मेघ संचार-हिमवातादयः ।

ग्रहस्थितिः—मार्गिणः पूर्वोदिताः कुजबुधगुरुशनयः, मार्गी पश्चिमोदितः शुक्रः ।

अग्रहायणकृष्णपक्षः | शक १९०३, संवत् २०३८, सन्, १३८९ साल, दि० १२।११।८१ ई० तः २६।११।८१ ई० यावत्, उत्तरेकालः ५तः पूर्वकालः । मा० पूर्वोदितोगुरुः मा० पश्चिमोदितः शुक्रः, अणुदः, ५ तः शुक्रः शरदर्तुः, ५ तोहेमन्तः दक्षिणगोलः, दक्षिणायनम् ।

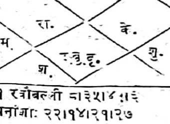
दि. ति.	तिथयः द. प.	घं. मि.	नक्षत्राणि	द. प.	घं. मि.	योगाः द. प.	करणं द.प.	चन्द्रस्थितिः रा.द.प.	घं. मि.	स्पष्टसूर्यः राश्य दि	दिनमान द. प.	सू.उ. घं.मि.	सू.अ. घं. मि.	दिनांक रा.	सौ.	अं.
बृ. १	५०। ९	रा. २।४०	भ.	०।५६	दि. ६।५८	व. ३१। ५	बा. २३। ५	म १४।२४	दि. १२।३४	६।२६।१६।४४	२७। १	६।३६	५।२४	२१	२७	१२
शु. २	४४। ९	" १२।१७	रो.	५२।३५	रा. ३।३८	प. २३।१२	तै ५७। ९	वृष	अहोरात्र	६।२७।१७।१८	२६।५८	६।३६	५।२४	२२	२८	१३
श. ३	३८।१४	" ९।५५	मृ.	४८।२३	" १२। १	शि १५।२२	व. ११।१२	वृ. २०।२७	दि. २।४८	६।२८।१७।५२	२६।५५	६।३७	५।२३	२३	२९	१४
र. ४	३२।४०	" ७।४२	आ.	४४।४३	" १२।२।	सि. ७।३९	बव. ५।३७	मिथुन	अहोरात्र	६।२९।१८।२५	२६।५२	६।३८	५।२२	२४	३०	१५
चं. ५	२७।३३	स. ५।४०	पुन.	४१।२६	" ११।१३	सा. ०।१४	को. ०। ७	मि. २७।१५	रा ६।३३	७।०।१९।११	२६।४८	६।३८	५।२२	२५	१	१६
मं. ६	२३। ३	दि. ३।५२	पु.	३८।५३	" ९।१२	शु. ४७। ३	ब. २३। ३	कर्क	अहोरात्र	७। १।१९।५६	२६।४४	६।३९	५।२१	२६	२	१७
बु. ७	१९।२७	" २।२७	श्ले.	३७।१३	" ९।३३	ब्र. ४१।२७	बव १९।२७	क. ३७।१३	रा. ९।३३	७। २।२०।४१	२६।४०	६।४०	५।२०	२७	३	१८
बृ. ८	१६।४८	" १।२३	म.	३६।३१	" ९।१६	ऐ ३६।४२	को १६।४६	सिंह	अहोरात्र	७। ३।२१।२६	२६।३७	६।४१	५।१९	२८	४	१९
शु. ९	१५।२४	" १२।५१	पू.	३७। ५	" ९।३१	वै. ३२।५४	ग. १५।२४	सि. ५२।३५	रा. ३।४१	७। ४।२२।११	२६।३४	६।४१	५।१९	२९	५	२०
श.१०	१५।१५	" १२।४८	उ.	३८।५०	" १०।१४	वि. ३०। ६	वि. १५।१५	कन्या	अहोरात्र	७। ५।२२।५६	२६।३१	६।४२	५।१८	३०	६	२१
र.११	१६।२१	" १।१४	ह.	४१।५४	" ११।२८	प्री. २८।५८	बा. १६।२१	कन्या	अहोरात्र	७। ६।२३।४१	२६।२८	६।४२	५।१८	१	७	२२
चं.१२	१८।४७	" २।१३	चि.	४६। २	" १। ७	आ. २७।२५	तै. १८।४७	क. १३।५४	दि. १।१६	७। ७।२४।२९	२६।२६	६।४३	५।१७	२	८	२३
मं.१३	२२।२०	" ३।३८	स्वा.	५१।१७	" ३।१३	सौ. २७।१४	व २२।२०	तुल	अहोरात्र	७। ८।२५।१६	२६।२४	६।४३	५।१७	३	९	२४
बु १४	२६।५१	सं. ५।२७	वि.	५७।१६	" ५।३७	शो. २८। ८	श. २६।५१	तु. ४०।४६	रा. १।१९	७। ९।२६।३७	२६।२२	६।४४	५।१६	४	१०	२५
बु.३०	३१।५९	रा. ७।३२	अनु	६०। ०	अहोरात्र	अ. २९।१८	ना. ३१।५९	वृश्चिक	अहोरात्र	७।१०।२७।३०	२६।२०	६।४४	५।१६	५	११	२६

कृ. न. द. ५५।५३, पुष्टागुरुः ४९।५० उ०, पूर्वाषाढ़शुक्रः ५५।३६, धान्यच्छेदनम् कृत्तिकायाम् ।
गृहारम्भो दिवारात्रौ, धान्यमर्दनम् ।
भ. ११।१२ उ०, ३८।१४ या०, गृहारम्भस्तृतीयायाम् ।
मासान्तः, गणेशे ४ व्रतं ।
शु. यो. द ५३।५, वृश्चिकेरविः २३।३५ मु० ४५ फर्त समर्घम्, विष्णुपदीसंक्रान्तिपुण्यकालः दि. घ. १२ मि. ५२ उ०, शुद्धारम्भः २३।३५ उ० ।
मासादिः, भ. २३।३ उ. ५१।१५ या० ।
विशाखायां बुधः ९।४८, निर्वेध विवाहो मघायाम्, गण्ड २६।१३ उ. ४१।१३ या० ।
अनुराधायां रविः ४२।१६ निर्वेधविवाहः दि. घं. १ मि. २३ या., कामेश्वरसिंह जयन्ती, कालभैरवाष्टमी ।
भ. ४५।१९ उ. दग्धतिथिः दि. घ. १२ मि. ५१ उ., पूर्वास्तो बुधः २०।३२ ।
भ. १५।१५ या०, दग्धतिथिः दि. घ. १२ मि. ४८ या० ।
उत्पन्ना ११ व्रतं, निर्वेधविवाहो दिवारात्रौ ।
प्रदोष १३ व्रतं निर्वेधविवाहो दिवारात्रौ ।
भ. २२।२० उ., ५४।३५ या०, वृश्चिके बुधः १४।४७ ।
चतुर्दशीव्रतम् ।
मार्गी ३०, पार्वणम्, अनुराधायां बुधः १५।२ निर्वेधविवाहः प्रतिपदि ।

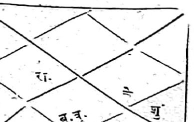
मिश्रमानकालिक दैनिक मङ्गलादिस्पष्टग्रहाः, दिनद्वयग्रहान्तरं गतिः । । दैनिकलग्नसारिणी चक्रम्

दि. ति.	मंगलः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमानं	मे.अ.	वृ.अ.	मि.अ.	क.अ.	सि.अ.	क.अ.	तु.अ.	वृ.अ.	ध.अ.	म.अ.	कु.अ.	मी.अ.
बृ. १	४।१८।२०।४९	६।११।५४।५२	६। ४।४३।२१	८।१३। ५। २	५।२४।१४।४५	९। ४।२०। ३	४३।२९	१७।४३	१९।३९	२१।५२	०।१०	२।२४	४।३७	६।५३	९।१०	११।१६	१३। २	१४।३४	१६। ५
शु. २	४।१८।५३।३६	६।१३।२०।४५	६। ४।५६।१७	८।१४। १।३४	५।२४।२१।१९	९। ४।१६।५२	४३।२८	१७।३९	१९।३५	२१।४८	०। ६	२।२०	४।३३	६।४९	९। ६	११।१२	१२।५८	१४।३०	१६। १
श. ३	४।१९।२६।२३	६।१४।४६।३८	६। ५। ९।१३	८।१४।५८। ६	५।२४।२७।५३	९। ४।१३।४२	४३।२७	१७।३६	१९।३२	२१।४५	०। ३	२।१७	४।३०	६।४६	९। ३	११। ९	१२।५५	१४।२७	१५।५८
र. ४	४।१९।५९। ०	६।१६।१२।३१	६। ५।२२। ९	८।१५।५४।३८	५।२४।३४।२७	९। ४।१०।३२	४३।२६	१७।३२	१९।२८	२१।४१	२३।५९	२।१३	४।२६	६।४२	८।५९	११। ५	१२।५१	१४।२३	१५।५४
चं. ५	४।२०।३१।१०	६।१७।४८।२९	६। ५।३४।३४	८।१६।४७।१५	५।२४।४०।४५	९। ४। ७।२१	४३।२४	१७।२९	१९।२५	२१।३८	२३।५६	२।१०	४।२३	६।३९	८।५६	११। २	१२।४८	१४।२०	१५।५१
मं. ६	४।२१। ३।१०	६।१९।२४।११	६। ५।४६।५९	८।१७।३९।५२	५।२४।४७। २	९। ४। ४।१०	४३।२२	१७।२५	१९।२१	२१।३४	२३।५२	२। ६	४।१९	६।३५	८।५२	१०।५८	१२।४४	१४।१६	१५।४७
बु. ७	४।२१।३५।१०	६।२१। ०। १	६। ५।५९।२३	८।१८।३२।२८	५।२४।५३।१९	९। ४। ०।५९	४३।२०	१७।२१	१९।१७	२१।३०	२३।४८	२। २	४।१५	६।३१	८।४८	१०।५४	१२।४०	१४।१२	१५।४३
बृ. ८	४।२२। ७।१०	६।२२।३५।५१	६। ६।११।४७	८।१९।२५। ४	५।२४।५९।३६	९। ३।५७।४८	४३।१८	१७।१७	१९।१३	२१।२६	२३।४४	१।५८	४।११	६।२७	८।४४	१०।५०	१२।३६	१४। ८	१५।३९
शु. ९	४।२२।३९। ९	६।२४।११।४१	६। ६।२४।११	८।२०।१७।४०	५।२५। ५।५३	९। ३।५४।३७	४३।१६	१७।१२	१९। ८	२१।२१	२३।३९	१।५३	४। ६	६।२२	८।३९	१०।४५	१२।३१	१४। ३	१५।३४
श.१०	४।२३।११। ८	६।२५।४७।३०	६। ६।३५।३५	८।२१।१०।१६	५।२५।१२।१०	९। ३।५१।२७	४३।१५	१७। ८	१९। ४	२१।१७	२३।३५	१।४९	४। २	६।१८	८।३५	१०।४१	१२।२७	१३।५९	१५।३०
र.११	४।२३।४३। ७	६।२७।२३।१९	६। ६।४८।५९	८।२२। २।५२	५।२५।१८।२७	९। ३।४८।१७	४३।१४	१७। ४	१९। ०	२१।१३	२३।३१	१।४५	३।५८	६।१४	८।३१	१०।३७	१२।२३	१३।५५	१५।२६
चं.१२	४।२४।१४। ७	६।२९। ४।५०	६। ७। १। ९	८।२२।५०।३८	५।२५।२४।४४	९। ३।४५। ६	४३।१३	१७। ०	१८।५६	२१। ९	२३।२७	१।४०	३।५४	६।१०	८।२७	१०।३३	१२।१९	१३।५१	१५।२२
मं.१३	४।२४।४५। ७	७। ०।१४।६।२१	६। ७।१३।१९	८।२३।३८।२४	५।२५।३१। १	९। ३।४१।५५	४३।१२	१६।५५	१८।५१	२१। ४	२३।२२	१।३६	३।४९	६। ५	८।२२	१०।२८	१२।१४	१३।४६	१५।१७
बु.१४	४।२५।१६। ७	७। ३।२७।५२	६। ७।२५।२९	८।२४।२६।१०	५।२५।३७।१८	९। ३।३८।४४	४३।११	१६।५०	१८।४६	२०।५९	२३।१७	१।३१	३।४४	६। ०	८।१७	१०।२३	१२। ९	१३।४१	१५।१२
बु.३०	४।२५।४७। ७	७। ४। ९।२३	६। ७।३७।३९	८।२५।१३।५६	५।२५।४३।३५	९। ३।३५।३३	४३।१०	१६।४६	१८।४२	२०।५५	२३।१३	१।२७	३।४०	५।५६	८।१३	१०।१९	१२। ५	१३।३७	१५। ८

४ रवौवल्ली ८।३५।४०।५२
अयनांशः २२।१४।२०।२४



११ रवौवल्ली ८।३५।४८।२६
अयनांशा: २२।१४।२१।२७



अथ विविध विषयाः—मार्गकृष्णाष्टम्यां श्रीकालभैरवोत्पत्तिदिनमतएव तद्दिनेतत्पूजनमुपवासश्च कार्यः । **पञ्चोपचारपूजा**—गन्धः पुष्पञ्च धूपञ्च दीपो नैवेद्यमेव च । पञ्चोपचाराः कथिता देवानां प्रीतिहेतवः । **षोडशोपचारपूजा**—आसन स्वागतंचार्घ्यं पाद्यमाचमनं तथा । मधुपर्काचमनस्नानवसनाभरणानि च । गन्धपुष्पधूपदीपनैवेद्यं चन्दनं तथा । **पञ्चगव्यं**—गोमूत्रं गोमयं क्षीरं दधिसर्पिः कुशोदकम् । पञ्चगव्यमिदं प्रोक्तं महापातक नाशनम् । **पञ्चामृतं**—शर्करामधुदग्धं च घृतं दधि समांशकम् । पञ्चामृतमिदं प्रोक्तं देहशुद्धौ विधौ ते । **पञ्चरत्नानि**—वज्रमौक्तिकवैदूर्यपुष्परागेन्द्रनीलकम् । पञ्चरत्नमिदं प्रोक्तं मन्त्रैः कुम्भेषु निक्षिपेत् । **सप्तमृत्तिका**-गजाश्वरथवल्मीकसंगमाह्रद गोकुलात् । राजद्वारप्रवेशाच्च मृदमानीय निक्षिपेत् । **पञ्चपल्लवाः**—अश्वत्थोदुम्बरप्लक्षचूतन्यग्रोधपल्लवाः । पञ्चपल्लव इत्युक्तः सर्वकर्मसु शोभनः । **सप्तधान्यानि**—यवगोधूमधान्यानि तिलाः कंकुस्तथैव च । श्यामक चणक चैव सप्तधान्यमुदाहृतम् । **सर्वौषधिः**—मुरामांसी वचा कुष्ठं शैलेयं रजनीद्वयम् । शुण्ठी चम्पकमुस्तञ्च सर्वौषधिगणः स्मृतः ।

वातावरणम्—पक्षादितस्तृतीयां यावत्प्रचण्ड वायुरोगादयस्तत एकादशीं यावत्सौम्यवातादयस्ततः पक्षान्तं यावत् प्रतिकूलसमयः ।

ग्रहस्थितिः—मार्गिणः पूर्वोदिताः कुजबुधगुरुशनयः, ९ तः पूर्वास्तोबुधः, मार्गी पश्चिमोदितः शुक्रः ।

अग्रहायणशुक्लपक्षः

शकः १९०३, सवत् २०३८, सन् १३८९ साल, दि० २७।११।८१ ई० नः २६।१२।८१ ई० यावत्, पूर्वकालः । मार्गी पूर्वोदितोगुरुः, मार्गी पश्चिमोदितः शुक्रः शुद्धः, हेमन्तर्तुः, दक्षिणगोलः दक्षिणायनम् ।

दि.ति	तिथयः द.प.	घं.मि.	नक्षत्राणि	द.प.	घं.मि.	योगाः द.प.	करणानि द.प.	चन्द्रस्थितिः रा द.प.	घं.मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादि	दिनमानं द.प.	सू.उ. घं.मि.	सू.अ. घं.मि.	दिनांक रा	सौ	अं
शु. १	३७।२३	रा. ९।४१	अनु.	३।४६	दि. ८।१४	सु. ३०।४३	कि. ४।४१	वृश्चिक	अहोरात्र	७।११।२८।२७	२६।१८	६।४४	५।१६	६	१२	२७
श. २	४२।३३	" ११।४५	ज्ये.	१०।१५	" १०।५०	धृ. ३१।५६	बा. ९।५८	वृ. १५।१५	दि १०।५०	७।१२।२९।२४	२६।१७	६।४५	५।१५	७	१३	२८
र. ३	४७। ९	" १।३७	मू	१६।१९	" १।१७	शू. ३२।४५	तै. १६।५१	धनु.	अहोरात्र	७।१३।३०।२१	२६।१६	६।४५	५।१५	८	१४	२९
चं. ४	५०।५१	" ३। ५	पू.	२१।४०	" ३।२५	गं ३२।५८	व. १९। ०	धृ. ३३।४५	रा. ८।५१	७।१४।३१।२७	२६।१४	६।४५	५।१५	९	१५	३०
मं. ५	५३।२४	" ४। ८	उ.	२६। १	स. ५।१०	वृ. ३२।१५	बव २२। ८	मकर	अहोरात्र	७।१५।३२।३३	२६।१२	६।४६	५।१४	१०	१६	१
बु. ६	५४।४२	" ४।३९	श्र.	२९।१४	रा. ६।२८	ध्रु. ३०।४५	कौ. २४। ३	मकर	अहोरात्र	७।१६।३३।३९	२६।१०	६।४६	५।१४	११	१७	२
बृ. ७	५४।४१	" ४।३८	ध.	३१।११	" ७।१४	व्या. ६।८। ९	ग. २४।४२	म. ०।३६	दि. ७। ०	७।१७।३४।४५	२६। ९	६।४६	५।१४	१२	१८	३
शु. ८	५३।२५	" ४। ८	श.	३१।५०	" ७।३०	ह. २४।३५	वि. २४। ३	कुम्भ	अहोरात्र	७।१८।३५।५१	२६। ८	६।४६	५।१४	१३	१९	४
श. ९	५०।५९	" ३।११	पू.	३१।१९	" ७।१८	व. २०। २	बा. २२।१८	कु. १६।२७	दि. १।२१	७।१९।३६।५६	२६। ७	६।४७	५।१३	१४	२०	५
र. १०	४७।३२	" १।४८	उ.	२९।४५	" ६।४१	सि. १४।३९	तै. १३।१६	न	अहोरात्र	७।२०।३८। १	२६। ६	६।४७	५।१३	१५	२१	६
चं. ११	४३।१४	" १२। ५	रे.	२७।२२	स. ५।४४	व्य. ८।३१	व. १५।२३	मी. २७।२२	स. ५।४४	७।२१।३९।१५	२६। ४	६।४७	५।१३	१६	२२	७
मं. १२	३८।१५	" ९।५६	अ.	२४।११	दि. ४।२९	व. १।४३	बव १०।४५	मेष	अहोरात्र	७।२२।४०।२९	२६। ३	६।४७	५।१३	१७	२३	८
बु. १३	३२।४४	" ७।५४	भ.	२०।३०	" ३।००	शि. ४६।४५	कौ ५।३०	मे. २४।२९	रा. ८।३६	७।२३।४१।४३	२६। २	६।४८	५।१२	१८	२४	९
बृ. १४	२६।५७	" ५।३५	कृ	१६।२६	" १।२२	सि ३८।५४	व. २९।५७	वृष	अहोरात्र	७।२४।४२।५७	२६। १	६।४८	५।१२	१९	२५	१०
शु. १५	२१। ५	दि. ३।१४	रो	१२।१३	" ११।४१	सा. २०।५६	बव. २१। ५	वृ. ४०। ९	रा. १०।५२	७।२५।४४। १	२६।००	६।४८	५।१२	२०	२६	११

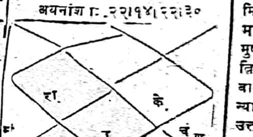
हरिबोधव्रत, द्विरागमनमनुराधायाम् ।
चन्द्रोदयः, मु. ३० फल साम्यम्, गण्ड ४।१५ उ. १९।१५ या०, उत्तरफल्गुन्यांभौमः २६।३२ उत्तराषाढेशुक्रः २५।२८ ।
उमामाहेश्वर ३ व्रतम्, नवान्नपार्वणम्, निर्वेधविवाहो द्विरागमनञ्च दि. घ. १ मि. १७ या., षाण्मासिकसूर्यव्रतारम्भः ।
भ. १९।० उ, ५०।५१ या०, निर्वेधविवाहो द्विरागमनञ्च दि. घ. ३ मि. २५ उ. ।
दिसम्बर १२ मासारम्भः, विवाहपञ्चमी, जनकपुरे श्रीरामजानकी विवाहोत्सवः उ. षा. २ च. केतुः पुवर्वसू ४ च० राहुः ३७।०० ।
स्कन्द ६ व्रतं, ज्येष्ठायां रविः ५।१४, पञ्चकारम्भः रा. घ. ६ मि. ३२ उ., मकरेशुक्रः ५७।८ निर्वेधविवाहः द्विरागमनञ्च दिवारात्रौ ।
भ. ५४।४१ उ. उ. सूतीस्नानम्, अन्नप्राशनं, नवान्नपार्वणं, निर्वेधविवाहो द्विरागमनञ्च रा. घ. ७ मि. १४ या., मुण्डन गृहप्रवेशश्च सप्तम्याम् ।
भ. २४।३ या०, ज्येष्ठायांबुधः २।२१ द्विरागमनं शतभिषायाम् ।
दग्धतिथिः रा. घं. ३ मि. ११ उ.,कन्यायां भौमः १।४७ ।
दग्धतिथि रा. घं. १।४८ या० सूतीस्नानमन्नप्राशनञ्च, द्विरागमनं रा. घं. १ मि. ४८ उ. ।
भ. १५।२३ उ० ४३।१४ या० मोक्षदा ११ व्रतंसर्वेषाम्, गण्ड १५।२२ उ० ३०।२२ या० गीताजयन्ती, निर्वेधविवाहः सं. ५।४४ उ०, द्विरागमनमेकादश्याम् पञ्चकसमाप्तिः *
श्रीकेशव १२, गोमूत्रोणपारणा, परिघयोग द० ५२।४० ।
* सं. ५।४४ उ०, गृहारम्भः गृहप्रवेशश्चदिवारात्रौ, भौमवेधाद्वै बल्या विवाहोनैव ।
प्रदोष १३ व्रतम् ।
भ. २६।५७ उ. ५४।१ या०, चतुर्दशीव्रतम्, निर्वेधविवाहो द्विरागमनञ्च दि. घ. ५ मि. ३५ उ० ।
मार्गी १५, क्षेत्रस्नानम्, मूलेऽनुषिबुधः ४१।५५, निर्वेधविवाहो द्विरागमनञ्च दिवारात्रौ, अन्नप्राशनं, गृहप्रवेशः पूर्णिमायाम् ।

मिश्रमानकालिक दैनिकमङ्गलादिस्पष्टग्रहाः, दिनद्वयग्रहान्तरं गतिः

दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्

दि.ति	मङ्गलः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमानं	मे.अ.	वृ.अ.	मि.अ.	क.अ.	सिं.अ.	कं.अ.	तु.अ.	वृ.अ.	ध.अ.	म.अ.	कु.अ.	मी.अ.
शु. १	४।२६।१८। ७	७। ५।५०।५४	६। ७।४९।४९	८।२९। १।४२	५।२५।४३।५१	९। ३।३२।२२	४३। ९	१६।४२	१८।३८	२०।५१	२३। ९	१।२३	३।३६	५।५२	८। ९	१०।१५	१२। १	१३।३३	१५। ४
श. २	४।२६।४९। ६	७। ७।३२।२४	६। ८। १।५८	८।२३।४९।२७	५।२५।५६। ७	९। ३।२९।११	४३। ९	१६।३८	१८।३४	२०।४७	२३। ५	१।१९	३।३२	५।४८	८। ५	१०।११	११।५७	१३।२९	१५। ०
र. ३	४।२७।२०। ५	७। ९।१३।५४	६। ८।१४। ७	८।२७।३७।१२	५।२६। २।२३	९। ३।२६। १	४३। ८	१६।३३	१८।२९	२०।४२	२३। ०	१।१५	३।२७	५।४३	८। ०	१०। ६	११।५२	१३।२४	१४।५५
चं. ४	४।२७।५०। ६	७।१०।५८। ६	६। ८।२५।५१	८।२८।१७।२९	५।२६। ७।५४	९। ३।२२।५०	४३। ८	१६।२९	१८।२५	२०।३८	२२।५६	१।१०	३।२३	५।३९	७।५६	१०। २	११।४८	१३।२०	१४।५१
मं. ५	४।२८।२०। ७	७।१२।४२।१७	६। ८।३७।३५	८।२८।५७।४०	५।२६।१३।२५	९। ३।१९।३९	४३। ८	१६।२५	१८।२१	२०।३४	२२।५२	१। ६	३।१९	५।३५	७।५२	९।५८	११।४४	१३।१६	१४।४७
बु. ६	४।२८।५०। ८	७।१४।२६।२८	६। ८।४९।१९	८।२९।३७।५३	५।२६।१८।५६	९। ३।१६।२८	४३। ७	१६।२०	१८।१६	२०।२९	२२।४७	१। १	३।१४	५।३०	७।४७	९।५३	११।३९	१३।११	१४।४२
बृ. ७	४।२९।२०। ८	७।१६।१०।३९	६। ९। १। ३	९। ०।१८। ६	५।२६।२४।२७	९। ३।१३।१७	४३। ६	१६।१६	१८।१२	२०।२५	२२।४३	०।५७	३।१०	५।२६	७।४३	९।४९	११।३५	१३। ७	१४।३८
शु. ८	४।२९।५०। ८	७।१७।५४।५०	६। ९।१२।४६	९। ०।५८।१९	५।२६।२९।५८	९। ३।१०। ६	४३। ५	१६।१२	१८। ८	२०।२१	२२।३९	०।५३	३। ६	५।२२	७।३९	९।४५	११।३१	१३। ३	१४।३४
श. ९	५। ०।२०। ८	७।१९।३९। १	६। ९।२४।२९	९। १।३८।३२	५।२६।३५।२९	९। ३। ६।५६	४३। ४	१६। ८	१८। ४	२०।१७	२२।३५	०।४९	३। २	५।१८	७।३५	९।४१	११।२७	१२।५९	१४।३०
र. १०	५। ०।५०। ८	७।२१।२३।१२	६। ९।३६।१२	९। २।१८।४५	५।२६।४१। ०	९। ३। ३।४६	४३। ३	१६। ३	१७।५९	२०।१२	२२।३०	०।४४	२।५७	५।१३	७।३०	९।३६	११।२२	१२।५४	१४।२५
चं. ११	५। १।१८।५८	७।२३। ७।२२	६। ९।४७।३०	९। २।५०।३९	५।२६।४५।५७	९। ३। ०।३५	४३। २	१५।५९	१७।५५	२०। ८	२२।२६	०।४०	२।५३	५। ९	७।२६	९।३२	११।१८	१२।५०	१४।२१
मं. १२	५। १।४७।४७	७।२४।५१।३२	६। ९।५८।४८	९। ३।२२।३३	५।२६।५०।५४	९। २।५७।२४	४३। १	१५।५५	१७।५१	२०। ४	२२।२२	०।३६	२।४९	५। ५	७।२२	९।२८	११।१४	१२।४६	१४।१७
बु. १३	५। २।१६।३६	७।२६।३५।४२	६।१०।१०। ६	९। ३।५४।२७	५।२६।५५।५१	९। २।५४।१३	४३। ०	१५।५१	१७।४७	२०। ०	२२।१८	०।३२	२।४५	५। १	७।१८	९।२४	११।१०	१२।४२	१४।१३
बृ. १४	५। २।४५।२५	७।२८।१९।५२	६।१०।२१।२४	९। ४।२६।२१	५।२७। ०।४७	९। २।५१। २	४२।५९	१५।४६	१७।४२	१९।५५	२२।१३	०।२७	२।४०	४।५६	७।१३	९।१९	११। ५	१२।३७	१४। ८
शु. १५	५। ३।१४।१४	८। ०। ४। १	६।१०।३२।४३	९। ४।५८।१५	५।२७। ५।४३	९। २।४७।५१	४२।५९	१५।४२	१७।३८	१९।५१	२२। ९	०।२३	२।३६	४।५२	७। ९	९।१५	११। १	१२।३३	१४। ४

३ रवौवल्ली ८।३२।४१।१३
अयनांश :- २२।१४।२२।३०



१० रवौवल्ली ८।३५।४१।२०
अयनांशा २२।१४।२३।३३



अथ विविध विषयाः–रविवासरे त्याज्यवस्तूनि–क्षौरं तैलं जलं चोष्णमामिषं निशिभोजनम् । रतिः स्नानञ्चमध्याह्ने रवौसप्तविवर्जयेत् । मार्गादि मासे रविव्रतभक्ष्याणि–पत्रत्रित्वं तुलस्यास्त्रिपलमथ घृतं मार्गशीर्षादिभक्ष्यं मुष्टीनांत्रिस्तिलानां त्रिपलदधि तथा दुग्धकं गोमयञ्च । त्रित्वं तोयाञ्जलीनं त्रिमरीचकमदोत्रिः पलाः शक्तवः स्युः । गोमूत्रं शर्करा सद्धविरिति विधिना भानुवारे क्रमेण । रात्रौलग्नज्ञानम्–ध्रुवम्परितोरक्तवर्णा शूलिनी श्वेतवर्णा चैकाऽन्यातारा मेषान्मीनं यावद् भ्रमति । तत्र ध्रुवात्पश्चिमे मेषवृषौ,वायुकोणे मिथुनं उत्तरस्यां कर्कसिंहौ, ईशाने कन्या पूर्वस्यां तुलवृश्चिकौ, अग्निकोणे धनुः, दक्षिणस्यां मकर कुम्भौ नैऋत्याञ्च मीनराशिर्वर्तते । यदा यत्र रक्तवर्णाशूलिनी तारका तदेव लग्नं तदानीमिति । चन्द्रोदयास्तसाधनम्–तिथिगुणितं रजनीपरिमाणं यमरहितं सहितं सितपक्षे । बाणशशाङ्कविभाजितलब्ध भवति विधूदयमस्तमयञ्च । यथा–अग्रहायणशुक्ल ५ रात्रिमानम् ३३।४८ तदोक्त प्रकारेण (३३।४८)५=१६९।००।१६९।००+२।००=१७१।००।।१७१।०० ÷ १५= ११।२४ दण्डात्मकं फलम् । सूर्यास्तात्परं फलतुल्यकालानन्तरं चन्द्रास्तमानमर्थात् सूर्यास्तमाने (५।१४) फलस्य घंटात्मकमान (४।३४) योजनेन ९।४८ चन्द्रास्तमानं लब्धमिति । एवमेव कृष्णपक्षे चन्द्रोदयमानं स्थूलदिशेति ।

वातावरणम्-.पक्षादितो दशमींयावदनुकूलसमयस्ततःपक्षान्तंयावत्प्रतिकूलसमयः ।
ग्रहस्थितिः–मार्गिणःपूर्वोदिताःकुजगुरुशनयः,मा.पूर्वास्तोबुधः,मा.पश्चिमोदितःशुक्रः ।

दि.ति.	तिथयः द.प.	घं.मि.	नक्षत्राणि	द.प.	घं.मि.	योगाः द.प.	करणानि द.प.	चन्द्रस्थितिः रा द.प.	घं.मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादि	दिनमानं द.प.	सू.उ. घं.मि.	सू.अ. घं.मि.	दिनांक रा.	सौ.	अं.
श. १	१५।१६	दि. १२।५४	मू.	८। ५	दि. १०। २	शु. २३। ९	कौ. १५।१६	मिथुन	अहोरात्र	७।२६।४५।२३	२५।५९	६।४८	५।१२	२१	२७	१२
र. २	९।४६	" १०।४३	आं.	४।१३	" ८।३०	शु. १५।३६	ग. ९।४६	मि ४६।३८	रा ९।२५	७।२७।४६।३६	२५।५८	६।४८	५।१२	२२	२८	१३
चं. ३	४।४५	" ८।४३	पुन.	०।४६	" ७। ७	ब्र. ८।२६	वि. ४।४५	कर्क	अहोरात्र	७।२८।४७।५६	२५।५६	६।४९	५।११	२३	२९	१४
मं. ४	०।२५	" ६।५९	श्ले.	५६।११	रा ५।१७	ऐ. ९।५४	बा. ०।२५	क ५६।११	रा. ५।१७	७।२९।४९।१६	२५।५४	६।४९	५।११	२४	३०	१५
बु. ६	५४।२८	रा. ४।३६	म.	५५।१७	" ४।५६	वि. ५०।५७	ग. २५।४३	सिंह	अहोरात्र	८। ०।५०।३६	२५।५२	६।५०	५।१०	२५	१	१६
बृ. ७	५३।१२	" ४। ७	पू.	५५।३२	" ५। ३	प्री. ४६।४६	वि. २३।५०	सिंह	अहोरात्र	८। १।५१।५६	२५।५१	६।५०	५।१०	२६	२	१७
शु. ८	५३।११	" ४। ६	उ.	५७। २	" ५।३९	आ. ४३।३५	बा. २३।१२	सिं ०।५७	दि. ११।३३	८। २।५३।१५	२५।५०	६।५०	५।१०	२७	३	१८
श. ९	५४।२८	" ४।३७	ह.	५९।४८	" ६।४५	सौ. ४१।२२	तै. २३।५०	कन्या	अहोरात्र	८। ३।५४।३४	२५।४९	६।५०	५।१०	२८	४	१९
र. १०	५७। ०	" ५।३८	चि	६०। ०	अहोरात्र	शो. ४०।१२	व. २५।४४	क. ३९।४६	रा. ७।१९	८। ४।५५।५३	२५।४८	६।५०	५।१०	२९	५	२०
चं. ११	६०। ०	अहोरात्र	चि.	३।४३	दि ८।०९	अ. ३९।५२	बव २८।५१	तुल	अहोरात्र	८। ५।५७।१७	२५।४९	६।५०	५।१०	३०	६	२१
मं. ११	०।४१	दि. ७। ६	स्वा.	८।४६	" १०।५०	सु. ४०।२१	बा. ०।४१	तु. ५८। २	रा. ६। ७	८। ६।५८।४१	२५।५०	६।५०	५।१०	१	७	२२
बु. १२	५।१५	" ८।५६	वि	१४।४१	,, १२।४७	धृ. ४१।१९	तै. ५।१५	वृश्चिक	अहोरात्र	८। ८। ०। ५	२५।५०	६।५०	५।१०	२	८	२३
बृ. १३	१०।२९	" ११। २	अनु.	२१। ५	" ३।१६	शू. ४२।३९	व. १०।२९	वृश्चिक	अहोरात्र	८। ९। १।२९	२५।५०	६।५०	५।१०	३	९	२४
शु. १४	१५।५५	,, १।१२	ज्ये.	२७।३९	स. ५।५४	गं. ४३।५८	श. १५।५५	वृ. २७।३९	सं. ५।५४	८।१०। २।५२	२५।५०	६।५०	५।१०	४	१०	२५
श. ३०	२१। ८	" ३।१७	मू.	३३।५३	रा. ८।५३	वृ. ४४।५५	ना. २१। ८	धनु	अहोरात्र	८।११। ४।१५	२५।५०	६।५०	५।१०	५	११	२६

पौ कृष्णपक्षः शकः १९०३, सवत् २०३८, सन् १३८९ साल, दि० १२।१२।८१ ई० तः दि० २६।१२।८१ ई० यावत्, पूर्वकालः। मार्गी पूर्वोदितो गुरुः, मार्गी पश्चिमोदितः शुक्रः शुद्धः, ४तः अशुद्धः, हेमन्तर्त्तुः, दक्षिणगोलः, दक्षिणायनम्।

०।
म० ३७।१५ उ०, द्विरागमनं पुनर्वसौ।
पुष्य म० द० ५७।१९ म० ४।४५ या०, गणेश ४ व्रतं।
५ ति० द० ५६।३३ अत्रमम्, मूले धनु पच र वः ५३।४७ मु: १५ फलं महर्घम्, अशुद्धारम्भः ५३।४७ उ०, वैं० द० ५४।७ गण्ड ४५।११ उ० मासान्तः।
षडशीति संक्रान्ति पुण्यकालः दि. घ. १२ या० म० ५४।२८ उ० गण्ड ०।११ या०।
म० २३।५० या०, मासादिः।
अपूपाष्टका ८।
अन्वष्टका ९ पूर्वाषाढे बुधः ३०।१३।
म० २५।४४ उ०, ५७।० या०।
महोजन्मदिन कृत्यम्, पश्चिमोदितो बुधः ३०।५७।
सफला ११ व्रतं सर्वेषाम्।
प्रदोष १३ व्रतं।
म० १०।२९ उ० ४३।१२ या०, चतुर्दशीव्रतं मूतीस्नानम्, पश्चिम यात्रा दि० घ० ११ मि० २ बा०।
गण्ड २१।३९ उ० ३६।३९ या०, दशतारकारम्भः २७।३९ ऊ०।
पौषी ३० पार्वणम्, हस्तेभौमः ४१।६७।

वातावरणम् — पक्षादितो नवमीयावद्रोगभय शीतादयस्ततः पक्षान्तं यावन्मेघ संचार हिमवातादयः।

ग्रहस्थितिः — मार्गिणः पूर्वोदिताः कुजगुरुशनयः। मा० पूर्वास्तो बुधः, ११ तः पश्चिमोदितः। मा० पश्चिमोदितः शुक्रः।

मिश्रमानकालिक दैनिकमङ्गलादिस्पष्टग्रहाः, दिमद्वयग्रहान्तरं गतिः | दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्

दि.ति.	मङ्गलः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमानं	मे.अ.	वृ.अ.	मि.अ.	क.अ.	सिं.अ.	कं.अ.	तु.अ.	वृ.अ.	ध.अ.	म.अ.	कु.अ.	मी.अ.
श. १	५। ३।४३। ३	८। १४।८।१०	६।१०।४३।५९	९। ५।३०। ९	५।२७।१७।३९	९। २।४४।४१	४३।५९	१५।३८	१७।३४	१९।४७	२३। ५	०।१९	३।३९	४।४८	७। ५	९।११	१०।५७	१२।२९	१४। ०
र. २	५। ४।११।५२	८। ३।३२।१९	६।१०।५५।१६	९। ६। ३। ३	५।२७।१७।५२	९। २।४७।३१	४३।५९	१५।३४	१७।३०	१९।४३	२२। १	०।१५	३।१८	४।४४	७। १	९। ७	१०।५३	१२।२५	१३।५६
चं. ३	५। ४।३९।२२	८। ५।१३।१२	६।११। ५।४६	९। ६।२०।४१	५।२७।१९।५९	९। २।३८।२०	४३।५८	१५।३०	१७।२६	१९।३९	२१।५७	०।११	३।२७	४।४०	६।५७	९। ३	१०।४९	१२।२१	१३।५२
मं. ४	५। ५। ६।५२	८। ६।५४। ५	६।११।१६।१६	९। ६।३९।१९	५।२७।२४।२२	९। २।३५। ९	४३।५७	१५।२६	१७।२२	१९।३५	२१।५३	०। ७	३।२०	४।३६	६।५३	८।५९	१०।४५	१२।१७	१३।४८
बु. ६	५। ५।३४।२२	८। ८।३४।५७	६।११।२६।४६	९। ६।५७।५७	५।२७।२८।४५	९। २।३१।५८	४३।५६	१५।२२	१७।१८	१९।३१	२१।४९	०। ३	३।१६	४।३२	६।४९	८।५५	१०।४१	१२।१३	१३।४४
बृ. ७	५। ६। १।५२	८।१०।१५।४९	६।११।३७।१६	९। ७।१६।३५	५।२७।३३। ८	९। २।२८।४७	४३।५५	१५।१८	१७।१४	१९।२७	२१।४५	२३।५९	३।१२	४।२८	६।४५	८।५१	१०।३७	१२। ९	१३।४०
शु. ८	५। ६।२९।२१	८।११।५६।४१	६।११।४७।४६	९। ७।३५।१३	५।२७।३७।३१	९। २।२५।३६	४३।५४	१५।१३	१७। ९	१९।२२	२१।४०	२३।५४	२। ७	४।२३	६।४०	८।४६	१०।३२	१२। ४	१३।३५
श. ९	५। ६।५६।५०	८।१३।३७।३३	६।११।५८।१६	९। ७।५३।५०	५।२७।४१।५४	९। २।२२।२६	४३।५४	१५। ९	१७। ५	१९।१८	२१।३६	२३।५०	२। ३	४।१९	६।३६	८।४२	१०।२८	१२। ०	१३।३१
र. १०	५। ७।२४।१९	८।१५।१८।२५	६।१२। ८।४६	९। ८।१२।२७	५।२७।४६।१७	९। २।१९।१६	४३।५४	१५। ४	१७। ०	१९।१३	२१।३१	२३।४५	१।५८	४।१४	६।३१	८।३७	१०।२१	११।५५	१३।२६
चं. ११	५। ७।५१।५१	८।१६।५९।१६	६।१२।१९।११	९। ८।१५।४९	५।२७।५०।४७	९। २।१६। ५	४३।५४	१५। ०	१६।५६	१९। ९	२१।२७	२३।४१	१।५४	४।१०	६।२७	८।३३	१०।१९	११।५१	१३।२२
मं. ११	५। ८।१९।१९	८।१८।२८।४७	६।१२।२७।२६	९। ८।४९।१०	५।२७।५५।१७	९। २।१२।५४	४३।५४	१४।५५	१६।५१	१९। ४	२१।२२	२३।३६	१।४९	४। ५	६।२२	८।२८	१०।१४	११।४६	१३।१७
बु. १२	५। ८।४२। ७	८।२०। ३।५८	६।१२।३७। १	९। ८।२२।११	५।२७।५९।४७	९। २। ३।४३	४३।५४	१४।५१	१६।४७	१९। ०	२१।१८	२३।३२	१।४५	४। १	६।१८	८।२४	१०।१०	११।४२	१३।१३
बृ. १३	५। ९। ८। ३	८।२१।३९। ९	६।१२।४६।२६	९। ८।२५।५२	५।२८। ४।१६	९। २। ६।३२	४३।५४	१४।४६	१६।४२	१८।५५	२१।१३	२३।२७	१।४०	३।५६	६।१३	८।१९	१०। ५	११।३७	१३। ८
शु. १४	५। ९।३३।२९	८।२३।१४।२०	६।१२।५५।५०	९। ८।०९।१३	५।२८। ८।४५	९। २। ३।२१	४३।५४	१४।४२	१६।३८	१८।५१	२१। ९	२३।२३	१।३६	३।५२	६। ९	८।१५	१०। १	११।३३	१३। ४
श. ३०	५। ९।५९।५४	८।२४।४९।३१	६।१३। ५।१४	९। ८।३२।३४	५।२८।१३।१४	९। २। ०।११	४३।५४	१४।३७	१६।३३	१८।४६	२१। ४	२३।१८	१।३१	३।४७	६। ४	८।१०	९।५६	११।२८	१२।५९

२ रवौवल्ली ८।३५।४१।२७
अयनांशाः २३।१४।२४।१६



१० रवौवल्ली ८।३५।४१।३४
अयनांशा २३।१४।२५।३९



अथ विविध विषयाः — दशतारकविचारः — पौषे मूलभरण्यन्तं चन्द्रचारेण गर्भति। आर्द्रादितो विशाखान्तं सूर्यचारेण वर्षति। एवं चैत्रे तथा ज्येष्ठे शुक्लपक्षेप्रयत्नतः आर्द्रादिदशताराणांज्ञात्वा गर्भं वदेत्फलम्। तत्र गर्भपुष्टिविचारः — वाताभ्रगर्जत्तडित्तोदकानि हिमप्रपातः करकावघातः। अकालसंध्या परिवेषनञ्च नवप्रकारैः प्रभवन्ति गर्भाः। तत्र पुष्टे गर्भे सुवृष्टिः सम्ये माध्यमावृष्टिर्हीने चाल्पा वृष्टिरिति। गोचरशनिविचारः — द्विजन्मनिपञ्चम सप्तमगाश्चतुराष्टकद्वादशधर्मयुताः धनधान्य हिरण्य विनाशकरा रविराहुशनैश्चरभूमिसुताः। तत्रः शनेर्विशेषः — यदि स्वजन्म राशितः शनिराशिसंचारकाले चन्द्रो निम्नलिखितस्थानेषु भवेत्तदातस्य निम्नलिखितानि पादानि भवेयुः — जन्माङ्गरुद्रेषु सुवर्णपादं द्विपञ्चनन्दैः रजतस्यपादम्। त्रिसप्तदिक् ताम्रपादं वदन्ति वेदाष्टचार्केष्विह लोहपादम्। तत्फलम् — लोहे वित्त विनाशः स्यात् सर्वसौख्यञ्च काञ्चने। ताम्रे च समता ज्ञेया सौभाग्यं राजते भवेत्। अनिष्टफलदायकशनेर्जपः कार्यः, लोहधारणञ्च कार्यम्, शनावश्वत्थमूले जलादिभिः पूजनं शनिस्तवञ्च पठितव्यः। शनिस्तवः — नमस्ते कोणसंस्थाय पिङ्गलाभाय ते नमः। नमस्ते यमसंज्ञाय नमस्ते सौरये विभो। नमस्ते रौद्रदेहाय नमस्ते चान्तकाय च। नमस्ते मन्दसंज्ञाय शनैश्चर नमोऽस्तुते। प्रसादं कुरु देवेश दीनस्यप्रणतस्य मे।

पौषशुक्लपक्षः — शक १९०३, संवत् २०३८, सन्, १३८९ साल, दि० २७।१२।१९८१ ई० तः ९।१।८२ ई० यावत्, पूर्वकालः । मार्गी पूर्वोदितोगुरुः, वक्री पश्चिमोदितः शुक्रः, अशुद्धः, हेमन्तर्तुः दक्षिणगोलः, दक्षिणायनम् ।

दि ति	तिथयः द. प.	घं. मि.	नक्षत्राणि	द. प.	घं. मि.	योगाः द. प.	करणानि द.प.	चन्द्रस्थिति. रा.द.प.	घं. मि.	स्पष्टसूर्यः राश्या।दि	दिनमानं द. प.	सू.उ. घं.मि.	सू.अ. घं. मि.	दिनांक रा.	सौ.	अं.
र. १	२५।४१	दि. ५। ६	पू.	३९।३०	रा. १०।३८	ध्रु. ४५।२२	व २५।४५	ध. ५५।४०	रा. ५। ६	८।१२। ५।३८	२५।५०	६।५०	५।१०	६	१२	२७
चं. २	२९।१९	रा. ६।२४	उ.	४४। ९	" १२।३०	व्या.४१। १	कौ २८।१९	मकर	अहोरात्र	८।१३। ७। ४	२५।५२	६।५०	५।१०	७	१३	२८
मं. ३	३१।४९	" ७।३३	श्र.	४७।४१	" ११५३	ह. ४३।४८	तै. ०।२४	मकर	अहोरात्र	८।१४। ८।३०	२५।५४	६।४९	५।११	८	१४	२९
बु. ४	३३। ४	" ८। ३	ध.	४९।५८	" २।४८	व. ४१।३४	व २।२७	म. १८।५०	दि. २।२	८।१५। ९।५६	२५।५६	६।४९	५।११	९	१५	३०
बृ. ५	३२।५८	" ८। ०	श.	५०।५५	" ३।११	सि. ३८।१९	व ३। १	कुम्भ	अहोरात्र	८।१६।११।२२	२५।५७	६।४९	५।११	१०	१६	३१
शु. ६	३१।३७	" ७।२८	पू.	५०।४२	" ३। ६	व्य. ३४। ९	कौ २।१८	कु. ३५।४५	रा. ९। ७	८।१७।१२।४८	२५।५८	६।४८	५।१२	११	१७	१
श. ७	२९। ७	" ६।२७	उ.	४९।२४	" २।३४	व. २९। १	ग. ०।२२	मीन	अहोरात्र	८।१८।१४।१३	२५।५९	६।४८	५।१२	१२	१८	२
र. ८	२५।३६	दि. ५। २	रे.	४७।१६	" १।४०	प. २३। ६	व. २५।३६	मी. ४७।१६	रा. १।४२	८।१९।१५।३८	२६।००	६।४८	५।१२	१३	१९	३
चं. ९	२१।१५	" ३।१८	अ	४४।१७	" १२।३१	शि १६।३३	कौ. २१।१५	मेष	अहोरात्र	८।२०।१७। ३	२६। २	६।४८	५।१२	१४	२०	४
मं.१०	१६।१४	" १।१७	भ.	४०।४४	" ११। ५	सि. ९।२२	ग. १६।१४	मे. ५४।४४	रा. ४।४१	८।२१।१८।२८	२६। ३	६।४७	५।१३	१५	२१	५
बु.११	१०।४३	" ११। ४	कृ.	३६।४२	" ९।२८	सा. १।४९	वि ०।४३	वृष	अहोरात्र	८।२२।१९।५३	२६। ४	६।४७	५।१३	१६	२२	६
बृ.१२	४।५५	" ८।४५	रो.	३२।२३	" ७।४८	शु ४६। ४	वा. ४।५५	वृष	अहोरात्र	८।२३।२१।१८	२६। ५	६।४७	५।१३	१७	२३	७
शु.१४	५३।१५	रा. ४। ९	मृ.	२८।२५	" ६। २	ब्र ३८।१३	ग. २६। ९	वृ ०।२९	दि. ६।४२	८।२४।२२।४३	२६। ६	६।४७	५।१३	१८	२४	८
श.१५	४७।५१	" १।१४	आ.	२४।३०	दि. ४।३४	ऐ. ०।३३	वि ०।३२	मिथुन	अहोरात्र	८।२५।२४। ८	२६। ७	६।४७	५।१३	१९	२५	९

दग्धतिथिः दि. घ. ५ मि. ६ उ., उत्तराषाढ़ेबुधः ५३।२ ।
दग्धतिथिः रा.६।३४ या., चन्द्रोदयः, मु. ४५ फलं समर्घं, पूर्वाषाढ़ेरविः ५४।५८ ।
पञ्चकारम्भः रा. १।५३ उ., पूर्वदक्षिणयात्रा रा. घ. ७ मि. ३३ या. ।
भ. २।२७ उ., ३३।४ या., मकरे बुधः ५।३ ।
अन्नप्राशनम्, वक्रीशुक्रः ३८।३१, पश्चिमयात्रा रा. घ. ८ या. ।
जनवरी १९८२ खृष्टाब्दारम्भः ।
भ. २९।७ उ. ५७।२१ या. ।
पञ्चकसमाप्तिः रा. १।४२ उ., गण्ड ३५।१६ उ. ५०।१६ या. ।
पूर्वा विना यात्रा दशम्यामश्विन्याम् ।
क्षीणः शुक्रः १३।१३ उ., कर्म १० विश्वकर्मापूजा, भः ४३।२८ उ. ।
शुभयो. द. ५२।११, पुत्रदा ११ व्रतं सर्वेषाम्, भ. १०।४३ या. ।
१३ ति. द. ५४।७ अवमम्, श्रीनारायण १२, गोमयेन पारणा, प्रदोष १३ व्रतम्, श्रवणायांबुधः ३८।३१ ।
चतुर्दशीव्रतम्, भ. ५३।१५ उ. ।
पौषी१५, कौशिकी स्नानम्, भ. २०।३२ या., खग्रासचन्द्रग्रहणविवरणमन्तिमपृष्ठे द्रष्टव्यम् ।

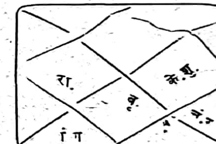
मिश्रमानकालिक दैनिक मङ्गलादिस्पष्टग्रहाः, दिन यंग्रहान्तरं गतिः

दि. ति	मंगलः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमानं
र. १	५।१०।२५।४९	८।२६।२४।४२	६।१३।१४।३८	९। ८।३५।५५	५।२८।१७।४३	३। १।५७। १	४२।५५
चं. २	५।१०।४९।५७	८।२७।४८।२८	६।१३।२४।३०	९। ८।२२।३९	५।२८।२०।२४	३। १।५३।५०	४२।५५
मं. ३	५।११।१३।५५	८।२९।१२।१४	६।१३।३४।२२	९। ८। ९।२३	५।२८।२३। ४	३। १।५०।३९	४२।५५
बु. ४	५।११।३७।५३	९। ०।३६। ०	६।१३।४४।१४	९। ७।५६। ७	५।२८।२५।४६	३। १।४७।२८	४२।५६
बृ. ५	५।१२। १।५१	९। १।५९।४६	६।१३।५४। ६	९। ७।४२।५१	५।२८।२८।२४	३। १।४४।१७	४२।५७
शु. ६	५।१२।२५।४८	९। ३।२३।३३	६।१४। ३।५८	९। ७।२९।३५	५।२८।३१। ४	३। १।४१। ६	४२।५८
श. ७	५।१२।४९।४५	९। ४।४७।१८	६।१४।१३।४९	९। ७।१६।१९	५।२८।३३।४४	३। १।३७।५५	४२।५९
र. ८	५।१३।१३।४२	९। ६।११। ३	६।१४।२३।४०	९। ७। ३। ३	५।२८।३६।२४	३। १।३४।४५	४३। ०
चं. ९	५।१३।३६।१०	९। ७।१५।५७	६।१४।३२। २	९। ६।३३। १	५।२८।३९। ३	३। १।३१।३४	४३। ०
मं.१०	५।१३।५८।३७	९। ८।२०।५१	६।१४।४०।२४	९। ६। २।५९	५।२८।४१।४२	३। १।२८।२३	४३। ०
बृ.११	५।१४।२१। ४	९। ९।२५।४५	६।१४।४८।४६	९। ५।३२।५८	५।२८।४४।२०	३। १।२५।१२	४३। ०
बृ.१२	५।१४।४३।३१	९।१०।३०।३८	६।१४।५७। ८	९। ५। २।५७	५।२८।४६।५८	३। १।२२। १	४३। १
शु.१४	५।१५। ५।५८	९।११।३५।३१	६।१५। ५।३०	९। ४।३२।५६	५।२८।४९।३६	३। १।१८।५०	४३। २
श.१५	५।१५।२८।२५	९।१२।४०।२४	६।१५।१३।५२	९। ४। २।५५	५।२८।५२।१४	३। १।१५।४०	४३। ३

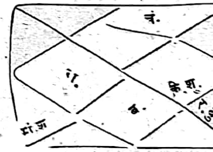
दैनिकलग्नसारिणी चक्रम्

दि. ति	मे.अ.	वृ.अ.	मि.अ.	क.अ.	सिं.अ.	कं.अ.	तु.अ.	वृ.अ.	ध.अ.	म.अ.	कु.अ.	मी.अ.
र. १	१४।३२	१६।२८	१८।४१	२०।५९	२३।१३	१।२६	३।४२	५।५९	८। ५	९।५१	११।२३	१२।५४
चं. २	१४।२७	१६।२३	१८।३६	२०।५४	२३। ८	१।२१	३।३७	५।५४	८। ०	९।४६	११।१८	१२।४९
मं. ३	१४।२२	१६।१८	१८।३१	२०।४९	२३। ३	१।१६	३।३२	५।४९	७।५५	९।४१	११।१३	१२।४४
बु. ४	१४।१८	१६।१४	१८।२७	२०।४५	२२।५९	१।१२	३।२८	५।४५	७।५१	९।३७	११। ९	१२।४०
बृ. ५	१४।१३	१६। ९	१८।२२	२०।४०	२२।५४	१। ७	३।२३	५।४०	७।४६	९।३२	११। ४	१२।३५
शु. ६	१४। ९	१६। ५	१८।१८	२०।३६	२२।५०	१। ३	३।१९	५।३६	७।४२	९।२८	११। ०	१२।३१
श. ७	१४। ४	१६। ०	१८।१३	२०।३१	२२।४५	०।५८	३।१४	५।३१	७।३७	९।२३	१०।५५	१२।२६
र. ८	१३।५९	१५।५५	१८। ८	२०।२६	२२।४०	०।५३	३। ९	५।२६	७।३२	९।१८	१०।५०	१२।२१
चं. ९	१३।५५	१५।५१	१८। ४	२०।२२	२२।३६	०।४९	३। ५	५।२२	७।२८	९।१४	१०।४६	१२।१७
मं.१०	१३।५०	१५।४७	१८। ०	२०।१८	२२।३२	०।४५	३। १	५।१८	७।२४	९।१०	१०।४२	१२।१३
बृ.११	१३।४६	१५।४२	१७।५५	२०।१३	२२।२७	०।४०	२।५६	५।१३	७।१९	९। ५	१०।३७	१२। ८
बृ.१२	१३।४२	१५।३८	१७।५१	२०। ९	२२।२३	०।३६	२।५२	५। ९	७।१५	९। १	१०।३३	१२। ४
शु.१४	१३।३८	१५।३४	१७।४७	२०। ५	२२।१९	०।३२	२।४८	५। ५	७।११	८।५७	१०।२९	१२। ०
श.१५	१३।३४	१५।३०	१७।४३	२०। १	२२।१५	०।२८	२।४४	५। १	७। ७	८।५३	१०।२५	११।५६

१ रवौबल्ली ८।३५।४१।४१
अयनांशाः २२।१४।२६।४२



८ रवौबल्ली ८।३५।४१।४८
अयनांशाः २२।१४।२७।४५



अथ विविध विषयाः—वैष्णवानामेकादशीव्रतनिर्णयः–दशमीपञ्चपञ्चाशत् घटिका चेत्रदृश्यते । तर्हि चैकादशी त्याज्या द्वादशीं समुपोषयेत् । दशमीपलमात्रेण त्याज्या चैकादशी तिथिः । मदिराविन्दुपातेन त्याज्यो गङ्गाघटो यथा । नारद पुराणे–क्षयेवाप्यथावृद्धौ सम्प्राप्ते वा दिनत्रये । उपोष्या द्वादशी तत्र त्रयोदश्यान्तु पारणम् । कौर्मे–तिथिक्षये तु सम्प्राप्ते उपोष्या द्वादशी भवेत् । दशमीशेषसंयुक्तां न कुर्वीत कदाचन । भविष्ये–दशमीशेषसंयुक्तो यदि स्यादरुणोदयः । वैष्णवेन न कर्त्तव्यं तद्दिनैकादशी व्रतम् । अरुणोदयवेधस्तु वैष्णवेषु प्रकीर्त्तितः । अरुणोदयकालो- ब्रह्मवैवर्त्ते–चतस्रो घटिकाः प्रातररुणोदय उच्यते । यतीनां स्नानकालोऽयं गङ्गाम्भः सदृशंफलम् । अथैकादश्यांत्याज्यवस्तूनि–कांस्यं मासं मसूरान्नं चणकं कोद्रवंतथा । शाकं मधुपरान्नञ्च पुनर्भोजनमैथुनम् । केषामन्नंपरान्नंनेत्यत्राह– गुर्वन्नं मातुलान्नंच श्वशुरान्नन्तथैवच । पितुः पौत्रस्य चैवान्नं न परान्नमिति स्मृतिः ।

वातावरणम्—पक्षादितः सप्तमीं यावन्मेघसचारशीतादयस्ततः पक्षान्तं यावद्धिमवाताभ्रछायादयः ।

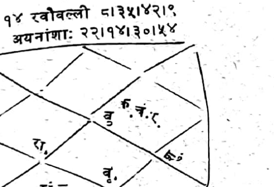
ग्रहस्थितिः—मार्गिणः पूर्वोदिताः कुजगुरुशनयः, मार्गी पश्चिमोदितोबुधः, वक्री पश्चिमोदितः,शुक्रः ।

माघकृष्णपक्षः — शकः १९०३, सवत् २०३८, सन् १३८९ साल, दि० १०। १।८२ ई० तः २५। १।८२ ई० यावत्, पूर्वकालः । हेमन्तर्तुः दक्षिणगोलायने, ५तःशिशिरर्तुरुत्तरायनञ्च । मार्गी पूर्वोदितोगुरुः, वक्री पश्चिमास्तःशुक्रः ११तःपूर्वोदितः । अशुद्धः, १३तःशुद्धः ।

दि ति	तिथयः द.प.	घं.मि.	नक्षत्राणि	द.प.	घं.मि.	योगाः द.प.	करणानि द.प.	चन्द्रस्थितिः रा द.प.	घं.मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादि	दिनमानं द.प.	सू.उ. घं.मि.	सू.अ. घं.मि.	दिनांक रा	सो	अं
र. १	४२।५२	रा. ११।५५	पुन.	२०।५८	दि. ३। ९	वं. २३।१८	बा. १२।२०	मि. ६।५१	दि. ९।३०	८।२६।२५।२३	२६। ८	६।४६	५।१४	२०	२६	१०
चं. २	३८।१०	" १०।१४	पु.	१८। २	" ७।५९	त्रि. १६।३०	तै. १०।४६	कर्क.	अहोरात्र	८।२७।२६।५५	२६।१०	६।४६	५।१४	२१	२७	११
मं. ३	३५।१७	" ८।५२	श्ले.	१६। ४	" ११।११	प्री. १०।२४	व. ६।५९	क. १६। ४	दि. ११।११	८।२८।२३।१७	२६।१२	६।४६	५।१४	२२	२८	१२
बु. ४	३२।५५	" ७।५५	म.	१४।५५	" ११।४३	आ. ५। ३	बव ४। ६	सिंह	अहोरात्र	८।२९।२९।३९	२६।१४	६।४५	५।१५	२३	२९	१३
बृ. ५	३१।४७	" ७।२८	पू.	१४।५५	" ११।४३	सौ ०।३३	कौ. २।२१	नि.३०।१४	स. ६।५१	९। ०।३१। १	२६।१५	६।४५	५।१५	२४	१	१४
शु. ६	३१।५३	" ७।३०	उ	१६। ६	" ११।११	अ ५४।३१	ग १।५०	कन्या	अहोरात्र	९। १।३२।२२	२६।१६	६।४५	५।१५	२५	२	१५
श. ७	३३।२१	" ८। ४	ह.	१८।३५	" २।१०	सु ५३। ४	वि. २।३७	कं.५४।२७	रा. ४। ३	९। २।३३।४३	२६।१७	६।४५	५।१५	२६	३	१६
र. ८	३५।५९	" ९। ८	चि.	२२।१९	" ३।४०	धृ. ५२।२५	वा. ४।४०	तुल	अहोरात्र	९। ३।३५। ४	२६।१८	६।४४	५।१६	२७	४	१७
चं. ९	३९।४७	" १०।३९	स्वा.	२७। ८	स. ५।२५	शू. ५२।४१	तै. ७।५३	तुल	अहोरात्र	९। ४।३६।२१	२६।२१	६।४४	५।१६	२८	५	१८
मं. १०	४४।२८	" १२।३९	वि.	३२।५१	रा. ७।५१	गं. ५३।३२	व. १२। ८	तु. १६।२५	दि. ११।१७	९। ५।३७।३८	२६।२४	६।४३	५।१७	२९	६	१९
बु. ११	४९।४५	" २।३७	अनु	३९।१४	" १०।२५	वृ. ५४।४९	वव.१७। ७	वृश्चिक	अहोरात्र	९। ६।३८।५५	२६।२६	६।४३	५।१७	३०	७	२०
बृ. १२	५६।१६	" ५।१२	ज्ये.	४५।४८	" १। ९	ध्रु. ५६।१३	कौ. २३। १	वृ. ४५।४६	रा. ११। १	९। ७।४०।१२	२६।२८	६।४२	५।१८	१	८	२१
शु. १३	६०। ०	" अहोरात्र	मू.	५२।११	" ३। ३	व्या. ५७।२३	ग. २८।१९	धनु	अहोरात्र	९। ८।४१।२९	२६।३०	६।४२	५।१८	२	९	२२
श. १३	०।२२	दि. ६।५९	पू.	५७।१७	" ५।३७	ह ५८। ?	व ०।२?	धनु	अहोरात्र	९। ९।४२।४५	२६।३२	६।४२	५।१८	३	१०	२३
र. १४	४।५३	" ८।३८	उ.	६०। ०	अहोरात्र	व, ५८। २	श. ४।५३	ध. १३।४१	दि. १२। ९	९।१०।४४।११	२६।३४	६।४१	५।१९	४	११	२४
चं. ३०	८।२६	" १०। २	उ.	२।५४	दि. ७।५०	सि. ५७।?८	ना. ८।२६	मकर	अहोरात्र	९।११।४५।१०	२६।३८	६।४०	५।२०	५	१२	२५

पश्चिमास्तःशुक्रः १३।१३, उत्तराषाढ़ेरविः ५७।४, दग्धतिथिः रा. घ. ११ मि ५५ उ. ।
दग्धतिथिः रा घ. १० मि. १४ या. ।
भ. ६।५९ उ. ३५।१७ या., गण्ड ५।४ उ. २०।४ या. ।
मासान्तः, गणेश ४ व्रतं ।
मकरेरविः १२।३६ मु. ३० फलं साम्यम्, सौम्यायनसंक्रान्ति पुण्यकालः दि. घ. ११।४७ उ., गो. यो. द. ५६।३१ ।
मासादिः, भ. ३१।५३ उ. ।
भ. २।३७ या., वक्रगत्या मूलेधनुषिशुक्रः ८।४२ ।
शाकाष्टका ।
अन्वष्टका ९,
भ. १२।८ उ., ४४।२८ या. ।
पूर्वोदितःशुक्रः १०।२३, षट्तिला ११ व्रतं सर्वेषाम्, दग्धतिथिः रा. घ. २ मि. ३७ उ., वक्रीबुधः १४।३४, पश्चिम यात्रा *
दग्धतिथिः रा. घ. ५ मि. १२ या., गण्ड ३९।४८ उ. ५४।४८ या., वक्रगत्या पूर्वाषाढ़ेशुक्रः ९।१८ ।
प्रदोष १३ व्रतं । * रा. घ. २ मि. ३७ या. ।
पुष्टः शुक्रः १०।२३ उ., शुद्धारम्भः १०।२३ उ., नरकनिवारण १४ व्रतम् ।
श्रवणायां रविः ०।१५, पश्चिमास्तोबुधः ४६।३५ । श्री शिवदर्शनम् ।
माघी ३०, सोमवारीव्रतम्, निर्बन्धविवाहः दि. घ. १० मि. २ उ.. कलियुगादिः ।

१४ रवौवल्ली ८।३५।४२।९
अयनांशाः २२।१४।३०।५४



मिश्रमानकालिक दैनिकमङ्गलादिस्पष्टग्रहाः, दिनद्वयग्रहान्तरं गतिः | दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्

दि ति	मङ्गलः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमानं	मे.अ	वृ.अ.	मि.अ.	क.अ.	सि.अ.	क.अ.	तु.अ.	वृ.अ.	ध.अ.	म.अ.	कुं.अ.	मी.अ.
र. १	५।१५।५०।५२	९।१३।४५। ७	६।१५।२२।१०	९। ३।३२।४८	५।२८।५४।५२	९।११। २।३०	४३। ४	१३।२०	१५।२६	१७।३९	१९।५७	२२।११	०।२४	२।४०	४।५७	७। ३	८।४९	१०।२१	११।५२
चं. २	५।१६। ७।३४	९।१४।१९। ५	६।१५।२९।?४	९। २।५५।२१	५।२८।५६।३९	९।११। ९।१९	४३। ४	१३।२५	१५।२१	१७।३४	१९।५२	२२। ६	०।१९	२।३५	४।५२	६।५८	८।४४	१०।१६	११।४७
मं. ३	५।१६।२८।१५	९।१४।५२।५३	६।१५।३८।५५	९। २।१७।४८	५।२८।५८।२६	९।११। ६। ८	४३। ४	१३।२१	१५।१७	१७।३०	१९।४८	२२। २	०।१५	२।३१	४।४८	६।५४	८।४०	१०।१२	११।४३
बु. ४	५।१६।४६।५६	९।१५।२६। ०	६।१५।४८।१६	९। २।४०।१५	५।२९। ०।१३	९।११। २।५७	४३। ५	१३।१७	१५।१३	१७।२६	१९।४४	२१।५८	०।११	२।२७	४।४४	६।५०	८।३६	१०। ८	११।३९
बृ. ५	५।१७। ५।३७	९।१६। ०।२७	६।१५।५९।२६	९। १। २।४२	५।२९। २। ०	९। ०।५९।४६	४३। ६	१३।१३	१५। ९	१७।२१	१९।४०	२१।५४	०। ७	२।२३	४।४०	६।४६	८।३२	१०। ४	११।३५
शु. ६	५।१७।२४।१८	९।१६।३४।१८	६।१५।५८।५६	९। ०।२५।१०	५।२९। ३।४७	९। ०।५६।३५	४३। ७	१३। ८	१५। ४	१७।१७	१९।३५	२१।४९	०। २	२।१८	४।३५	६।४१	८।२७	९।५२	११।३०
श. ७	५।१७।४३।५९	९।१७। ८। ५	६।१६। ६।१६	८।२९।४७।३८	५।२९। ५।३४	९। ०।५३।२५	४३। ८	१३। ४	१५। ०	१७।१३	१९।३१	२१।४५	२३।५८	२।१४	४।३१	६।३७	८।२३	९।५५	११।२६
र. ८	५।१८। १।४०	९।१७।४१।४८	६।१६।१३।३६	८।२९।१०। ६	५।२९। ७।२१	९। ०।५०।१५	४३। ९	१३। ०	१४।५६	१७। ९	१९।२७	२१।४१	२३।५४	२।१०	४।२७	६।३३	८।१९	९।५१	११।२२
चं. ९	५।१८।१८। ३	९।१७।४९।४१	६।१६।२०।१०	८।२८।३३।३१	५।२९। ८।३७	९। ०।४७। ४	४३।१०	१२।५५	१४।५१	१७। ४	१९।२२	२१।३६	२३।४९	२। ५	४।२२	६।२८	८।१४	९।४६	११।१७
मं. १०	५।१८।३४।२६	९।१७।४९।३५	६।१६।२६।४४	८।२८। २।५६	५।२९।१०।५२	९। ०।४३।५३	४३।११	१२।५१	१४।४७	१७। ०	१९।१८	२१।३२	२३।४५	२। १	४।१८	६।२४	८।१०	९।४२	११।१३
बु. ११	५।१८।५०।४९	९।१७।४१।२९	६।१६।३३।१८	८।२७।१९।१२	५।२९।११। ७	९। ०।४०।४२	४३।१२	१२।४७	१४।४३	१६।५६	१९।१४	२१।२८	२३।४१	१।५७	४।१४	६।२०	८। ६	९।३८	११। ९
बृ. १२	५।१९। ७।११	९।१७।४१।२३	६।१६।३९।५२	८।२६।५५।४६	५।२९।१२।२२	९। ०।३७।३१	४३।१३	१२।४३	१४।३९	१६।५२	१९।१०	२१।२४	२३।३७	१।५३	४।१०	६।१६	८। २	९।३४	११। ५
शु. १३	५।१९।२३।३३	९।१७।४१।१७	६।१६।४६।२६	८।२६। २।११	५।२९।१३।३७	९। ०।३४।२०	४३।१४	१२।३९	१४।३५	१६।४८	१९। ६	२१।२०	२३।३३	१।४९	४। ६	६।१२	७।५८	९।३०	११। १
श. १३	५।१९।३९।५५	९।१७।४१।११	६।१६।५३। ०	८।२५।४८।३६	५।२९।१४।५२	९। ०।३१।१०	४३।१५	१२।३५	१४।३१	१६।४४	१९। २	२१।१६	२३।२९	१।४५	४। २	६। ८	७।५४	९।२६	१०।५७
र. १४	५।१९।५६।१७	९।१७।४१। ५	६।१६।५९।३३	८।२५।१५।[illegible]	५।२९।१६। ७	९। ०।२८। ०	४३।१७	१२।३१	१४।२७	१६।४०	१८।५८	२१।१२	२३।२५	१।४१	३।५८	६। ४	७।५०	९।२२	१०।५३
चं. ३०	[illegible]	९।१६।५९।४६	६।१७। ६।३७	८।२४।५१।५६	५।२९।१६।२१	९। ०।२४।४०	४३।१८	१२।२७	१४।२३	१६।३६	१८।५४	२१। ८	२३।२१	१।३७	३।५४	६। ०	७।४६	९।१८	१०।४९

१ रवौबल्ली ८।३५।४।१५५
अयनांशाः २२।१४।२८।४८



८ रवौबल्ली ८।३५।४२। २
अयनांशा २२।१४।२९।५१



अथ विविध विषयाः—माघे प्रातःस्नानफलम्—यो माघमास्युषसि सूर्यकरान्विताभ्रे स्नानं समाचरति चारुनदी प्रवाहे। उद्धृत्य सप्तपुरुषान् पितृमातृवंश्यान् स्वर्गं प्रयात्यमरदेहधरो नरोऽसौ। **मकरार्कें प्रातःस्नानमन्त्राः**—मकरस्थे रवौ माघे गोविन्दाच्युत माधव। प्रातः स्नानेन मे देव यथोक्तफलदो भव। दुःखदारिद्र्यनाशाय श्रीविष्णोस्तोषनाय च। प्रातःस्नानं करोम्यद्य माघे पापविनाशनम्। **माघे कुत्रापि स्नानफलम्**—स्वर्गलोके चिरंवासो येषां मनसि वर्त्तते। यत्र क्वापि जले तैस्तु स्नातव्यं मृगभास्करे। **चतुर्थ्यां गणेशोत्पत्तिः**—सर्वदेवमयः साक्षात्सर्वमङ्गलकारकः। माघकृष्णचतुर्थ्यान्तु प्रादुर्भूतो गणाधिप.। तत्र गणेशमूर्तिं मयि यथोपचारैः सम्पूज्य रात्रौ व्रतेन जागरणं कृत्वा प्रातर्ब्राह्मणं भोजयेत। मोदकादिकं च दद्यात्। **चतुर्दश्यां नरकनिवारणचतुर्दशीव्रतम्**—चतुर्दशी समानास्ति व्रतं पापक्षयापहम्। यत्कृत्वा सर्वपापेभ्यो मुच्यते नात्र संशयः। अश्वमेधसहस्राणि वाजपेय शतानि च। प्राप्नोति तत्फलं सर्वं नात्र कार्या विचारणा।

वातावरणम्—पक्षादितः सप्तमीयावत्खण्डवृष्टि हिमपातवातादयः। ततः पञ्चान्त यावन्मेघवायुहिमपातादयः।

ग्रहस्थितिः—मार्गिणः पूर्वोदिताः कुजगुरुशनयः, मा० पश्चिमोदितो बुधः, १४तः पश्चिमास्तः वक्रीपश्चिमास्तः शुक्रः ११तः पूर्वोदितः ।

दि ति	तिथियः द. प.	घं. मि.	नक्षत्राणि	द. प.	घं. मि.	योगाः द. प.	करणानि द. प.	चन्द्रस्थिति रा. द. प.	घं. मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादिः	दिनमानं द. प.	सू.उ. घ.मि.	सू.अ. घ.मि.	दिनांक रा.	सौ.	अं.
मं १	१०।५१	दि. ११। ०	श्र.	६।४३	दि. ९।२९	व्य. ५५।१७	वव. १०।५१	म: ३७।५७	रा. ९।५१	९।१२।४६।१९	२६।४१	६।४०	५।२०	६	१३	२६
बु. २	११।५८	" ११।२६	ध.	९।१७	" १०।१२	व ५२।२६	कौ. ११।५८	कुम्भ	अहोरात्र	९।१३।४७।२८	२६।४४	६।३९	५।२१	७	१४	२७
बृ. ३	११।४३	" ११।२०	श.	१०।३३	" १०।५२	प. ४८।३५	ग. ११।४३	कु. ५५।३६	रा. ४।५३	९।१४।४८।३७	२६।४७	७।३९	५।२१	८	१५	२८
शु. ४	१०।१५	" १०।४४	पू.	१०।३७	" १०।५३	शि. ४३।४५	वि. १०।१५	मीन	अहोरात्र	९।१५।४९।४६	२६।५०	६।३८	५।२२	९	१६	२९
श. ५	७।४१	" ९।४१	उ.	९।३२	" १०।२६	सि. ३८। ८	वा. ७।४१	मीन	अहोरात्र	९।१६।५०।५५	२६।५३	६।३७	५।२२	१०	१७	३०
र. ६	४। ६	" ८।१४	र.	७।३४	" ९।३९	सा. ३१।४९	तै. ४। ६	मी. ७।३४	दि. ९।३९	९।१७।५२। ४	२६।५६	६।३७	५।२३	११	१८	३१
चं. ८	५४।४०	रा. ४।२८	अ.	४।४६	" ८।३०	शु. २४।५४	वि. २७।११	मेष	अहोरात्र	९।१८।५३। ६	२७। ०	६।३६	५।२४	१२	१९	१
म. ९	४९। ३	" २।१२	भ	१।१९	" ७। ७	शु. १७।३०	वा. २१।५२	मे. १५।२०	दि. १२।४३	९।१९।५४। ८	२७। ३	६।३५	५।२५	१३	२०	२
बु.१०	४३।१२	" १२।१६	रो.	५३।१५	रा. ३।१५	ब्र. [illegible]।४६	तै. १६। ८	वृष	अहोरात्र	९।२०।५५।१०	२७। ६	६।३५	५।२५	१४	२१	३
बृ.११	३७।३७	" ९।२९	मृ.	४९। ५	" २।१२	ए. १।५५	व. १०।१५	वृ. २१।१०	दि. १५। २	९।२१।५६।१२	२७। ९	६।३४	५।२६	१५	२२	४
शु.१२	३१।३२	" ७।१०	आ.	४५। ५	" १२।३५	वि. ४६।२४	वव. ४।३०	मिथुन	अहोरात्र	९।२२।५७।१३	२७।१२	६।३४	५।२६	१६	२३	५
श.१३	२६। ५	सं. ४।५९	पुन.	४१।२७	" ११। ८	प्री. ३८।५९	तै. २६।२५	मि. २७। ५	सं. ५।२३	९।२३।५८।१४	२७।१५	६।३३	५।२७	१७	२४	६
र.१४	२१। ९	दि. ३। ०	पु.	३८।२५	" ९।५४	आ. ३२। ४	व. २१। ९	कक	अहोरात्र	९।२४।५९।१५	२७।१८	६।३२	५।२	१८	२५	७
चं.१५	१६।५९	" १।१९	श्ले.	३६।१६	" ९। १	सौ. २५।४९	वव. १६।५९	क. ३६।१६	रा. ९। १	९।२६। ०। ६	२७।२२	६।३१	५।२९	१९	२६	८

माघशुक्लपक्षः

शकः १९०३, सवत् २०३८ साल, दि. २६। १।८२ ई.तः ८।२।८२ इ. या, [illegible]कालः। मा० पूर्वोदितोगुरुः। वक्रीपूर्वोदितः शुक्रः। ग्रुद्धः शिशिरर्त्तुः, दक्षिणगोलः, उत्तरायनम्।

चन्द्रदर्शनम्, मु. ३० फल साम्यम्, पञ्चकारम्भः दि. घ.९ मि.२१ उ.।
निर्वंधविवाहः दि. घ १० मि.१२ या., मुण्डनमन्नप्राशनं, कूपादिखननमुहूर्तः शतभिषायाम्।
वदर ३, भ. ४०।१९ उ., सूतीस्नानमन्नप्राशनं, मुण्डन, तडागकूपारम्भः शतभिषायाम्।
वदर ४, भ. १०।१५ या. कुन्दकुसुमैः पार्वतीपूजनम्, कुजवेधाद्विवाहोनैव।
सीर५, श्रीसरस्वतीपूजा, उत्तराभिमुखे हलप्रवाहः, गण्ड ५४।४ उ.।
७ ति. द. ५५।३६, अवमम्, माघी ७ दि. घ ८ मि. १४ उ., गण्ड ९।२४ या., म. ५९।४२ उ., पञ्चकान्तः दि. घ. ९ मि. ३९ उ.।
फरवरी २ मासारम्भः, भीष्माष्टमी, भीष्मतर्पणम्, भ. २७।११ या.।
कृ.न. द. ५६।४, वक्रीशनिः १६।२७, उ षा. १ च धनुषिकेतुः पूनर्वसू ३ च रणे मिथुनेराहुः २३।४।
अन्नप्राशनं, पूर्वयात्रा, उपनयनदीक्षाग्रहण देवादिप्रतिष्ठा, गृहारम्भप्रवेशो दिवारात्रौ, वाप्यादिकूपतडागखननम्।
भ. १०।१५ उ. ३७।१७ या., उपनयनं, देवादिप्रतिष्ठा, मुण्डनं, वाप्यादिखननं, रात्रावेकादशीव्रतोद्यापनं, वक्रगत्योत्तराषाढेबुधः ४०।१९, सूतीस्नानम्, मंगी ११ व्रतं सर्वेषाम्। *
मार्गी शुक्रः ३१।४, श्रीमाधव १२, गोदुग्धेनपारणा, दग्धतिथिः रा. घ ७ मि. ११ या., प्रदोष १३ व्रतम्।
धनिष्ठायांरविः ५।५८ चतुर्दशीव्रतम्, गृहप्रवेशस्त्रयोदश्याम्।
भ. २१।९ उ. ४९।४ या.।
माघी १५, कलियुगादिः, पूर्वोदितोबुधः ५०।१४, गण्ड २५।१६ उ. ४०।१६ या.।

* वृं.यो.द. ५२।११ दग्धतिथिः रा.घ.९ मि. २९ उ.।

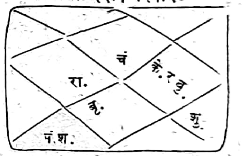
मिश्रमानकालिकदैनिकमगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिः

दि ति	मंगलः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः
मं. १	५।२०।२१।३५	९।१६।१८।२७	६।१७। ९।४१	८।२४।४०।५०	५।२९।१६।३४	९। ०।२१।३८
बु. २	५।२०।३४।१४	९।१५।३७। ९	६।१७।१४।४५	८।२४।२३।४४	५।२९।१६।४७	९। ०।१८।२७
बृ. ३	५।२०।४६।५३	९।१४।५५।५१	६।१७।१९।४९	८।२४। ६।३८	५।२९।१७। ०	९। ०।१५।१६
शु. ४	५।२०।५९।३२	९।१४।१४।[illegible]३	६।१७।२४।५३	८।२३।४९।३२	५।२९।१७।१३	९। ०।१२। ५
श. ५	५।२१।१२।१०	९।१३।३३।१५	६।१७।२९।५६	८।२३।३२।२७	५।२९।१७।२६	९। ०। ८।५४
र. ६	५।२१।२४।४८	९।१२।५१।५७	६।१७।३४।५९	८।२३।१५।२२	५।२९।१७।३९	९। ०। ५।४४
चं. ८	५।२१।३३। ६	९।१२। ९।५५	६।१७।३८।५९	८।२३।१३।४१	५।२९।१७।१६	९। ०। २।३३
मं ९	५।२१।४१।२४	९।११।२७।५३	६।१७।४२।५९	८।२३।१२। ०	५।२९।१६।५३	८।२९।५९।२२
बु.१०	५।२१।४९।४२	९।१०।४५।५१	६।१७।४६।५९	८।२३।१०।२०	५।२९।१६।३०	८।२९।५६।११
बृ.११	५।२१।५८। ०	९।१०। ३।५०	६।१७।५०।५९	८।२३। ८।४०	५।२९।१६। ७	८।२९।५३। ०
शु.१२	५।२२। ६।१८	९। ९।२१।४९	६।१७।५४।५८	८।२३। ७। ०	५।२९।१५।४५	८।२९।४९।४९
श.१३	५।२२।१४।३६	९। ८।३९।४८	६।१७।५८।५७	८।२३। ५।२०	५।२९।१५।२३	८।२८।४६।३९
र.१४	५।२२।२२।५३	९। ७।५७।४७	६।१८। २।५६	८।२३। ३।४०	५।२९।१५। १	८।२३।४३।२९
च १५	५।२२।२६।२९	९। ७।५३। ७	६।१८। ५।५३	८।२३।१९।१४	५।२९।१३।४४	८।२९।४०।१८

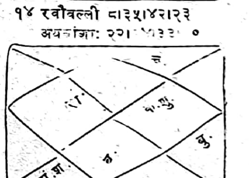
दैनिकलग्नशारिणो चक्रम्

दि ति	मिश्रमान	मे.अ.	वृ.अ.	मि.अ.	क.अ.	सि.अ.	कं.अ.	तु.अ.	वृ.अ.	ध.अ.	म.अ.	कु.अ.	मी.अ.
मं. १	४३।१९	१२।२३	१४।१९	१६।३२	१८।५०	२१। ४	२३।१७	१।३३	३।५[illegible]	५।५६	७।४[illegible]	९।१४	१०।४५
बु. २	४३।२०	१२।१८	१४।१४	१६।२७	१८।४५	२०।५९	२३।१२	१।२८	३।४५	५।५१	७।३७	९। ९	१०।४[illegible]
बृ. ३	४३।२२	१२।१४	१४।१०	१६।२३	१८।४१	२०।५५	२३। ८	१।२४	३।४१	५।४७	७।३३	९। ५	१०।३६
शु. ४	४३।२४	११।१०	१४। ६	१६।१९	१८।२७	२०।५१	२३। ४	१।२०	३।३७	५।४३	७।२९	९। १	१०।३२
श. ५	४३।२६	१२। ६	१४। २	१६।१५	१८।२३	२०।४७	२३। ०	१।१६	३।३३	५।३९	७।२५	८।५७	१०।२८
र. ६	४३।२८	१२। २	१३।५८	१६।११	१८।२९	२०।४३	२२।५६	१।१२	३।२९	५।३५	७।२१	८।५३	१०।२४
चं. ८	४३।२९	११।५८	१३।५४	१६। ७	१८।२५	२०।३९	२२।५२	१। ८	३।२५	५।३१	७।१७	८।४९	१०।२०
मं ९	४३।३०	११।५४	१३।५०	१६। ३	१८।२[illegible]	२०।३५	२२।४८	१। ४	३।२१	५।२७	७।१३	८।४५	१०।१६
बु.१०	४३।३२	११।५०	१३।४६	१५।५९	१८।१[illegible]	२०।३[illegible]	२२।४४	१। [illegible]	३।१७	५।२३	७। ९	८।४	१०।१२
बृ.११	४३।३४	११।४६	१३।४२	१५।५५	१८।१३	२०।२९	२२।४०	०।५६	३।१३	५।१९	७। ५	८।३७	१०। ८
शु.१२	४३।३६	११।४२	१३।३८	१५।५[illegible]	१८। [illegible]	२०।२[illegible]	२२।३[illegible]	०।५[illegible]	३। ९	५।१५	७। १	८।३३	१०। ४
श.१३	४३।३८	११।३८	१३।३४	१५।४९	१८। ५	२०।१९	२२।३२	०।४८	३। ५	५। १	६।५७	८।२९	१०। ०
र.१४	४३।४०	११।३४	१३।३०	१५।४३	१८। १	२०।१५	२२।२८	०।४४	३। १	५। ७	६।५३	८।२५	९।५६
च १५	४३।४१	११।२९	१३।२५	१५।३८	१७।५९	२०।१०	२२।२३	०।३९	२।५६	५। २	६।४८	८।२०	९।५१

६ रवौवल्ली ८।३५।४२।१६
अयनांशा: २२।१४।२१।५७



१४ रवौवल्ली ८।३५।४२।२३
अयनांशा: २२। [illegible] ०



अथ विविध विषया—अचलसप्तम्यां सप्तार्कपत्राणि सप्तवदरीपत्राणि च शिरसि निधाय मौनी सन् स्नायात्तत्र स्नानमंत्राः—यद्यज्जन्मकृतंपापं मयासप्तसु जन्मसु। तन्मेरोगञ्च शोकञ्च माकरी हन्तु सप्तमी। एतज्जन्मकृतं पापंयच्च जन्मान्तरार्जितम्। मनोवाक्कायजं यच्च ज्ञाताज्ञातञ्चयत्पुनः। इति सप्तविधंपापं स्नानान्मे सप्तसप्तिके। सप्तव्याहृतिके देवि! हर माकरि सप्तमी। ततः सूर्यायार्घ्यं दद्यातन्मन्त्रः—सप्तसप्तेरहः प्रीते सप्तलोकप्रदीपन। सप्तमीसहितो देव गृहाणार्घ्यं दिवाकर। ततः प्रणमेच्च, तन्मन्त्रः—जननी सर्वलोकानां सप्तमी सप्तसप्तिके। सप्तव्याहृतिके देवि नमस्ते सूर्यमूर्तये। ततो दानादिकं कुर्यात्। शुक्लाष्टम्यां भीष्मतर्पणमन्त्रः—वैयाघ्रपाद गोत्राय सांकृति प्रवराय च। अपुत्राय ददाम्येतत्सलिलं भीष्मवर्म्मणे। वसूनामवताराय शन्तनोरात्मजाय च। अर्घ्यं ददामि भीष्माय आबालब्रह्मचारिणे। भीष्मः शान्तनवोवीरः सत्यवादी जितेन्द्रियः। आभिरद्भिरवाप्नोतु पुत्रपौत्रोचितां क्रियाम्। अनेन सन्ततिलाभः संवत्सरकृत पापस्यक्षयश्च। इदं जीवत्पित्रापि कार्यम्।

वातावरणम्—पक्षादितः पञ्चमीं यावदनुकूलसमयस्तत एकादशीं यावत्खण्डवृष्टिहिमपात शीतवातादयः, ततः पक्षान्ते यावन्मेघचारशैत्याधिकः।

ग्रहस्थितिः—मार्गिणः पूर्वोदिताः कुजगुरुशनयः, ९ तः वक्रीशनिः, वक्री पश्चिमास्तो बुधः, वक्री पूर्वोदितः शुक्रः।

फाल्गुनकृष्णपक्षः — शकः १९०३, संवत् २०३८, सन् १३८९ साल, दि. ९।२।८२ ई० तः दि. २३।२।८२ ई० या., पूर्णकालः, ४ लो दक्षिणेकालः । मार्गी पूर्वोदितो गुरुः, मार्गी पूर्वोदितः शुक्रः, शुद्धः, शिशिरर्तुः, दक्षिणगोलः, उत्तरायनम् ।

तिथिः	तिथयः द.प.	घं.मि.	नक्षत्राणि	द.प.	घं.मि.	योगाः द.प.	करणानि द.प.	चन्द्रस्थितिः द.प.	घं.मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादि	दिनमानं द.प.	सू.उ. घं.मि.	सू.अ. घं.मि.	दिनाक रा.	सौ.	अं.	फाल्गुनकृष्णपक्षः
म. १	१३।३९	दि. ११।५९	म.	३४।५४	रा. ८।२९	शो. २०।१४	कौ. १३।३९	सिंह	अहोरात्र	९।२७। ०।५७	२७।२६	६।३	५।२९	२०	२७	९	०।
बु. २	११।२१	,, ११। २	पू.	३४।३८	,, ८।२१	अ. १५।२८	ग. ११।२१	सि. ४९।५२	रा. २।२७	९।२८। १।४८	२७।३०	६।३०	५।३०	२१	८	१०	भ. ४०।५० उ., निर्वंधविवाहः रा. घ. ८ मि. २१ उ. ।
बृ. ३	१०।१९	,, १०।३८	उ.	३५।३६	,, ८।४४	सु. ११।४०	वि. १०।१९	कन्या	अहोरात्र	९।२९। २।३९	२७।३३	६।२९	५।३१	२	२९	११	मासान्तः
शु. ४	१०।३०	,, १०।४१	ह.	३७।४६	,, ९।३५	धृ. ८।५२	वा. १०।३०	कन्या	अहोरात्र	१०। ०। ३।३०	२७।३६	६।२९	५।३१	२३	१	२	कुम्भेरविः ४०।१५ मु. ३० फलं साम्यम्, विष्णुपदी संक्रान्ति पुण्यकालः दि. घ.१२ उ. मार्गीबुधः २२।५४ ।
श. ५	१२। ४	,, ११।१८	चि.	४१।१६	,, १०।५८	शू. ७। ६	तै. १२। ४	क. ९।३१	दि. १०।१६	१०। १। ४।२१	२७।३९	६।२८	५।३२	२४	२	१३	मासादिः, वक्रीभौमः २७।५१ ।
र. ६	१४।४६	,, १२।२२	स्वा.	४५।५३	,, १२।४९	गं. ६।१६	व. १४।४६	तुल	अहोरात्र	१०। २। ५।१०	२७।४२	६।२८	५।३२	२५	[illegible]	१४	भ. १४।४६ उ. ४६।४३ या., सूतीस्नानं, निर्वंधविवाहः रा. घ. १२ मि. ४९ या. ।
च. ७	१८।४१	,, १।५५	वि.	५१।२८	,, ३। २	वृ. ६।१९	बव. १८।४१	तु. ३५। ४	रा. ७।३९	१०। ३। ५।५२	२७।४६	६।२७	५।३३	२६	४	१५	निर्वंधविवाहोऽनुराधायाम् ।
मं. ८	२३।२५	,, ३।४८	अनु	५७।४१	,, ५।३०	ध्रु. ७। ६	कौ. २३।२५	वृश्चिक	अहोरात्र	१०। ४। ६।३१	२७।५०	६।२६	५।३४	२७	५	१६	शाकाष्टका ८, सूतीस्नानम् ।
बु. ९	२८।३९	सं. ५।५३	ज्ये.	६०। ०	अहोरात्र	व्या. ८।१९	ग. २८।३९	वृश्चिक	अहोरात्र	१०। ५। ७।१०	२७।५४	६।२५	५।३५	२८	६	१७	भ. ५९।५५ उ., अन्वष्टका ९, गण्ड ५८।१६ उ. ।
बृ.१०	३४। ३	रा. ८। २	ज्ये.	४।१६	दि. ८। ७	ह. ९।४७	वि. ३१।११	वृ. ४।१६	दि. ८। ७	१०। ६। ७।४९	२७।५७	६।२५	५।३५	२	७	१८	भ. ३१।११ या., सूतीस्नानम्, गण्ड १३।१६ या., दक्षिणाविनायात्रा, केतुवेधान्मूले मध्यमो विवाहः ।
शु.११	३९।१०	,, ९।४०	मू.	१०।४७	,, १०।४३	व. ११। ३	बव. ५।११	धनु	अहोरात्र	१०। ७। ८।२८	२८। ०	६।२४	५।३६	३	८	[illegible]	शतभिषायांरविः १६।१, विजया ११ व्रतं सर्वेषाम्, श्रवणायांबुधः ५३।२६, उत्तराषाढेशुक्रः १५।१४, पूर्वोत्तरयात्रा रा. घ. ९ मि. ४० या., केतुवेधान्मूले मध्यमो विवाहः ।
श.१२	४३।३४	,, ११।५०	पू.	१६।४४	,, १। ६	सि. ११।५७	कौ. ११।२२	ध. ३३। १	रा. ७।३६	१०। ८। ९। ७	२८। ३	६।२३	६।३७	१	४	२	०।
र.१३	४६।५७	,, १।१०	उ.	२१।५२	,, ३। ८	व्य. १२।१६	ग. १५।१६	मकर	अहोरात्र	१०। ९। ९।४६	२८। ६	६।२३	५।३७	२	१०	२१	भ. ४६।५७ उ., प्रदोष १३ व्रतम्, निर्वंधविवाहः रा. घ. १ मि. १० या. ।
च.१४	४९।१५	,, २। ४	श्र.	२५।५५	,, ४।४४	व. ११।४०	वि. १८।२६	म. ५७।२१	रा. ५।१८	१०।१०।१०।१२	२८।१०	६।२२	५।३८	३	११	२२	श्रीशिवरात्रिव्रत, नक्तव्रतं, गौरीविवाहोत्सवः शिवदर्शनञ्च, पञ्चकारम्भः दि. घ. ४ मि. ४४ उ. श्रीरवि प्रतिष्ठादिनम्, महाकविकालिदासस्मृतिदिवसः, भ. १८।२९ या. ।
म.३०	५०।१४	,, २।२७	ध.	२८।४७	सं. ५।५२	प. १०।१६	च. १९।४५	कुम्भ	अहोरात्र	१०।११।१०।३८	२८।१४	६।२१	५।३९	४	१२	२३	फाल्गुनी ३०, पार्वणम्, गोसहस्रिका, मन्वादिः ।

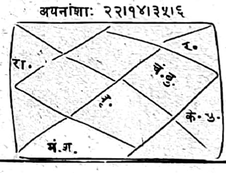
मिश्रमानकालिक दैनिकमङ्गलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिः — **दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्**

दि.थि.	मङ्गल	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमानं	मे.अ.	वृ.अ.	मि.अ.	क.अ.	सिं.अ.	क.अ.	तु.अ.	वृ.अ.	ध.अ.	म.अ.	कु.अ.	मी.अ.
म. १	५।२२।३०। ५	९। ७।४८।२७	६।१८। ८।४९	८।२३।३४।४८	५।२९।१२।२७	८।२९।३७। ७	४३।४२	११।२५	१३।२१	१५।३४	१७।५२	२०। ६	२२।१९	०।३५	२।५२	४।५८	६।४५	८।१६	९।४७
बु. २	५।२२।३३।४१	९। ७।४३।४७	६।१८।११।४५	८।२३।५०।२२	५।२९।११।१०	८।२९।३३।५६	४३।४३	११।२१	१३।१७	१५।३०	१७।४८	२०। २	२२।१५	०।३१	२।४८	४।५४	६।४०	८।१२	९।४३
बृ. ३	५।२२।३७।१७	९। ७।३९। ८	६।१८।१४।४१	८।२४। ५।५६	५।२९। ९।५३	८।२९।३०।४५	४३।४५	११।१७	१३।१३	१५।२६	१७।४४	१९।५८	२२।११	०।२७	२।४४	४।५०	६।३६	८। ८	९।३९
शु. ४	५।२२।४०।५३	९। ७।३४।२९	६।१८।१७।३७	८।२४।२१।२९	५।२९। ८।३७	८।२९।२७।३४	४३।४७	११।१३	१३। ९	१५।२२	१७।४०	१९।५४	२२। ७	०।२३	२।४०	४।४६	६।३२	८। ४	९।३५
श. ५	५।२२।४४।२९	९। ७।२९।५०	६।१८।२०।३३	८।२४।३७। २	५।२९। ७।२१	८।२९।२४।२४	४३।४९	११। ९	१३। ५	१५।१८	१७।३६	१९।५०	२२। ३	०।१९	२।३६	४।४२	६।२८	८। ०	९।३१
र. ६	५।२२।४८। ५	९। ७।२५।११	६।१८।२३।२९	८।२४।५२।३५	५।२९। ६। ५	८।२९।२१।१४	४३।५१	११। ५	१३। १	१५।१४	१७।३२	१९।४६	२१।५९	०।१५	२।३२	४।३८	६।२४	७।५६	९।२७
च. ७	५।२२।४६।२७	९। ८। २। ५	६।१८।२४।५९	८।२५। ८।१७	५।२९। ४। ५	८।२९।१८। ३	४३।५२	११। १	१२।५७	१५।१०	१७।२८	१९।४२	२१।५५	०।११	२।२८	४।३४	६।२०	७।५२	९।२३
मं. ८	५।२२।४४।४९	९। ८।३८।५८	६।१८।२६।२९	८।२५।४७।५९	५।२९। २। ५	८।२९।१४।५२	४३।५३	१०।५७	१२।५३	१५। ६	१७।२४	१९।३८	२१।५१	०। ७	२।२४	४।३०	६।१६	७।४८	९।१९
बु. ९	५।२२।४३।११	९। ९।५५।५१	६।१८।२७।५९	८।२६।१५।४१	५।२९। ०। ५	८।२९।११।४१	४३।५५	१०।५३	१२।४९	१५। २	१७।२०	१९।३४	२१।४७	०। ३	२।२०	४।२६	६।१२	७।४४	९।१५
बृ.१०	५।२२।४३।३३	९। ९।५२।४४	६।१८।२९।२८	८।२६।४३।२२	५।२८।५८। ६	८।२९। ८।३०	४३।५७	१०।५०	१२।४६	१४।५९	१७।१७	१९।३१	२१।४४	०। ०	२।१७	४।२३	६। ९	७।४१	९।१२
शु.११	५।२२।३३।५६	९।१०।२९।३७	६।१८।३०।५७	८।२७।११। ३	५।२८।५६। ७	८।२९। ५।१९	४३।५९	१०।४६	११।४२	१४।५५	१७।१३	१९।२७	२१।४०	२३।५६	२।१३	४।१९	६। ५	७।३७	९। ८
श.१२	५।२२।३८।१९	९।११। ६।३०	६।१८।३२।२६	८।२७।३८।४४	५।२८।५४। ८	८।२९। २। ९	४४। १	१०।४२	१२।३८	१४।५१	१७। ९	१९।२३	२१।३६	२३।५२	२। ९	४।१५	६। १	७।३३	९। ४
र.१३	५।२२।३६।४२	९।११।४३।२३	६।१८।३३।५५	८।२८। ६।२५	५।२८।५२। ९	८।२८।५८।५८	४४। ३	१०।३८	१२।३४	१४।४७	१७। ५	१९।१९	२१।३२	२३।४८	२। ५	४।११	५।५७	७।२९	९। ०
च.१४	५।२२।२९। १	९।१२।५०।१९	६।१८।३३।५३	८।२८।४४। ९	५।२८।४९।३४	८।२८।५५।४८	४४। ५	१०।३४	१२।३०	१४।४३	१७। १	१९।१५	२१।२८	२३।४४	२। १	४। ७	५।५३	७।२५	८।५६
म.३०	५।२२।२१।२०	९।१३।५७।१५	६।१८।३३।५१	८।२९।२१।५३	५।२८।४६।५९	८।२८।५२।३७	४४। ७	१०।३०	१२।२६	१४।३९	१६।५७	१९।११	२१।२४	२३।४०	१।५७	४। ३	५।४९	७।२१	८।५२

६ रवौवल्ली ८।३५।४२।३०
अयनांशाः २२।१४।३४।३



१३ रवौवल्ली ८।३५।४२।३७
अयनांशाः २२।१४।३५।६



अथ विविध विषयाः—फाल्गुनकृष्णचतुर्दश्यां शिवरात्रिव्रतं तन्माहात्म्यञ्च, ब्रह्माण्डखण्डे—माघफाल्गुनयोर्मध्ये कृष्णा या च चतुर्दशी । दत्ते शिवः फलं यस्मात्तेन सर्वं सुरासुरैः । शिवरात्रिरिति ख्याता मत्कलेव पृथक् स्थिता । तथा च—उपवासं करिष्यन्ति जागरणेन समन्वितम् । यथोक्तशास्त्रमार्गेण तेषां मोक्षो न संशयः । गङ्गास्नानमन्त्रः- ब्रह्मस्वरूपे हे गंगे ! स्नानमाचर्यते मया । त्वदीये निर्मले तोये यथोक्तफलदा भव । गङ्गासागरसङ्गमस्नानमन्त्रः—त्वं देव सरितां नाथ त्वं देवि सरितां वरे । उभयोः संगमे स्नात्वा मुञ्चामि दुरितानिवै । समुद्रस्नानमन्त्रः—त्वमग्निर्द्विपदां नाथ रेतोधाः कामदीपन । प्रधानः सर्वभूतानां जीवानां प्रभुरव्ययः । अमृतस्यारणिस्त्वं हि देवयोनिरपांपते । वृजिनं हर मे सर्वं तीर्थराज नमोस्तुते ।

वातावरणम्—रक्षादितश्चतुर्थीं यावत्सौम्यसमयस्तत एकादशीं यावत्प्रचंडवायुरुत्पादयः । ततः पश्चान्तं यावत्सौम्यवायुदयः ।

ग्रहस्थितिः—वक्री पूर्वोदितः कुजः, मार्गी पूर्वोदिताः बुधगुरुशुक्राः, वक्री पूर्वोदितः शनिः ।

फाल्गुनशुक्लपक्षः | शकः १९०३, सवत् २०३८, सन्१३८९साल, दि २४। २।८२ ई.तः ९।३।८२ ई. या., दक्षिणकलः। वक्री पूर्वोदितोगुरुः। मा०पूर्वोदितः शुक्रः। शुद्धः ४ न क्षत्रः, शिशिरर्तु-, दक्षिणगोलः, उत्तरायनम्।

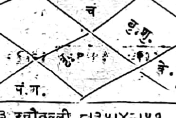
दि ति	तिथियः द. प.	घं. मि.	नक्षत्राणि	द. प.	घं. मि.	योगाः द. प.	करणानि द. प.	चन्द्रस्थिति रा. द. प.	घं. मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादिः	दिनमानं द. प.	सू.उ. घं.मि.	सू.अ. घं.मि.	दिनांक रा.	मो.	अं.
बु. १	४९।५१	रा. २।१६	श.	३०।२२	स ६।२९	शि. ७।४८	कि. २०। ३	कुम्भ	अहोरात्र	१०।१८।१५। ४	२८।१८	६।२०	५।४०	५	१३	२४
बृ. २	४८।१६	" १।३८	पू.	३०।४२	" ६।३७	सि. ४।११	वा. १९। ४	कु. १५।३७	दि. १२।३५	१०।१३।११।२९	२८।२२	६।२०	५।४०	६	१४	२५
शु. ३	४५।३४	" १२।३३	उ.	२९।५५	" ६।१७	शु. ५४।३४	तै. १६।४५	मीन	अहोरात्र	१०।१४।११।५४	२८।२६	६।१९	५।४१	७	१५	२६
श. ४	४१।५२	" ११। ३	रे.	२८। ७	" ५।३३	शु. ४८।३१	व. १३।४३	मी. २८। ७	सं. ५।३३	१०।१५।१२।१९	२८।३०	६।१८	५।४२	८	१६	२७
र. ५	३७।२१	" ९।१३	अ.	२५।२८	दि. ४।२८	ब्र. ४९।४८	वव. ९।३७	मेष	अहोरात्र	१०।१६।१२।४४	२८।३४	६।१७	५।४३	९	१७	२८
चं. ६	३२।११	स. ७। ८	भ.	२२।११	" ३। ८	ऐ. ३४।३५	कौ. ४।४६	म. ३६।१३	रा. ८।४५	१०।१७।१२।५८	२८।३८	६।१६	५।४४	१०	१८	१
मं. ७	२६।३६	दि. ४।५४	कृ.	१८।२१	" १।३६	वै. २७। ०	व. २६।३६	वृष	अहोरात्र	१०।१८।१३।१२	२८।४२	६।१६	५।४४	११	१९	२
बु. ८	२०।४५	" २।३३	रो.	१४।१७	" ११।५८	वि. १९।१७	वव. २०।४५	वृ. ४२।११	रा. ११। ७	१०।१९।१३।२६	२८।४६	६।१४	५।४५	१२	२०	३
बृ. ९	१४।४४	" १२। ८	मृ.	१०। ६	" १०।१६	प्री. ११।२५	कौ. १४।४४	मिथुन	अहोरात्र	१०।२०।१३।४०	२८।५०	६।१४	५।४६	१३	२१	४
शु.१०	८।५५	" ९।४७	आ.	६। ४	" ८।३९	आ. ३।४२	ग. ८।५५	मि. ४८।१६	रा. १।३१	१०।२१।१३।५४	२८।५४	६।१३	५।४७	१४	२२	५
श.११	३।२६	" ७।३४	पुन.	२।२१	" ७। ८	शो. ४९।१२	बि. ३।२६	कर्क	अहोरात्र	१०।२२।१४। ८	२८।५८	६।१२	५।४८	१५	२३	६
र.१३	५४।१८	रा. ३।५५	श्ले.	५६।१०	रा. ४।४०	अ. ४२।४५	कौ. ३६।१९	क. ५६।१०	रा. ४।४०	१०।२३।१४।२१	२९। २	६।१२	५।४८	१६	२४	७
चं.१४	५०।५९	" २।३५	म.	५५।१५	" ४।१७	सु. ३७। ०	ग. २२।३९	सिंह	अहोरात्र	१०।२४।१४।२१	२९। ६	६।११	५।४९	१७	२५	८
मं.१५	४८।४२	" १।४०	पू.	५४।४४	" ४। ४	ध. ३२। ३	वि. १७।५१	सिंह	अहोरात्र	१०।२५।१४।२०	२९।१०	६।१०	५।५०	१८	२६	९

मकरेशुक्रः४७।३, द्विरागमनंगजभायाया, जनकपुरस्थ परिक्रमारम्भः।
चन्द्रदर्शनम्, मु ३० फल साम्यर्, सा० यो० द० ५५।३३ द्विरागमनं रा० घ० ६ मि० ३७ उ०, मौ विवाद्विवाहोनैव।
दग्धतिथिः रा० घ० १२ मि० ३३ उ०. द्विरागमनं रा० घ० १२ मि० ३३ या०, उपनयन,अन्नप्राशन, निर्धाविवाहोरिवत्वतृतीयायाम्, डाङकू हननम्।
वक्रीगुरुः ३०।८ दग्धतिथिः रा० घ० ११ मि० ३ या०, अशुद्धारम्भः ३०।८ उ०, भ० १३।४३ उ० ४१।५२ या०, गण्ड १६।७ उ० ३१।७ या०, पञ्चकान्तः सं० ५।३३ उ०।
सूतीस्नानमन्नप्राशनं, पूर्वोत्तरयात्रा, द्विरागमनञ्च दि० घ० ४ मि० २८ या०।
मार्च ३ मासारम्भः।
वक्रीभौमः २१।१५, भ० २६।३६ उ० ५३।४० या०।
धनिष्ठायांबुधः २२।५४।
पूर्वभाद्रपदेरविः २३।२९।
सौ० यो० द० ५२।३३, भ० ३६।१० उ०, द्विरागमनंचगृहारम्भगृहप्रवेशौ पुनर्वसौ, दक्षिणयात्रा दि० घ० ८ मि० ३९ उ०, गुडाराजयात्रा गुर्वन्ते दशम्याम्।
१२ ति० द० ५५।३ अवमम्, पुष्य न० द० ५६।४९' आमलकी ११ व्रतं सर्वेषाम्, भ० ३।२६ या०,गृहारम्भप्रवेशौ दिवारात्रौ।
गोविन्द १२, गोदछनापारणम्, प्रदोष १३ व्रतं, गण्ड ४५।१० उ०।
चतुर्दशीव्रतं, भ० ५०।५९ उ०, गण्ड ०।१० या., कुम्भेबुधः ०।३४।
फाल्गुनी १५, भ. १९।५१ या०, रात्रौ होलिकादाहः घ० १मि०४० या०, सिन्दूरक्रीडा, मन्वादिः, नरकासुरसारिक्रमाजगादिः, नाकपुरेऽन्नपूर्णेश्वरीयात्रिकमा।

मिश्रमानकालिकदैनिकमगलादिस्नष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिः । । दैनिकलग्न सारणी चक्रम्

दि.ति.	मंगलः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमान	मे.अ.	वृ.अ.	मि.अ.	क.अ.	सिं.अ.	कं.अ.	तु.अ.	वृ.अ.	ध.अ.	म.अ.	कु.अ.	मी.अ.
बु. १	५।२२।१३।२९	९।१५। ४।११	६।१८।३३।४९	८।२९।५९।३७	५।२८।४४।२४	८।२८।४९।२६	४४। ९	१०।२७	१२।२३	१४।३६	१६।५४	१९। ८	२१।२१	२३।३७	१।५४	४। ९	५।४६	७।१८	८।४९
बृ. २	५।२२। ५।५९	९।१६।११। ७	६।१८।३३।४७	९। ०।३७।२१	५।२८।४१।५०	८।२८।४६।१५	४४।११	१०।२३	१२।१९	१४।३२	१६।५०	१९। ४	२१।१७	२३।३३	१।५०	३।५६	५।४२	७।१४	८।४५
शु. ३	५।२१।५८।१९	९।१७।१८। २	६।१८।३३।४५	९। १।१५। ५	५।२८।३९।१६	८।२८।४३। ४	४४।१३	१०।१९	१२।१५	१४।२८	१६।४६	१९। ०	२१।१३	२३।२९	१।४६	३।५२	५।३८	७।१०	८।४१
श. ४	५।२१।५०।३९	९।१८।२४।५७	६।१८।३३।४३	९। १।५२।४९	५।२८।३६।४२	८।२८।३९।५३	४४।१५	१०।१५	१२।११	१४।२४	१६।४२	१८।५६	२१। ९	२३।२५	१।४२	३।४८	५।३४	७। ६	८।३७
र. ५	५।२१।४२।५९	९।१९।३१।५२	६।१८।३३।४२	९। २।३०।३२	५।२८।३४। ८	८।२८।३६।४३	४४।१७	१०।११	१२। ७	१४।२०	१६।३८	१८।५२	२१। ५	२३।२१	१।३८	३।४४	५।३०	७। २	८।३३
चं. ६	५।२१।२९।२३	९।२०।५७।५७	६।१८।३२।२२	९। ३।१६।२९	५।२८।३०।५२	८।२८।३३।३२	४४।१९	१०। ७	१२। ३	१४।१६	१६।३४	१८।४८	२१। १	२३।१७	१।३४	३।४०	५।२६	६।५८	८।२९
मं. ७	५।२१।१५।४७	९।२२। ४। २	६।१८।३१। २	९। ४। २।२६	५।२८।२७।३६	८।२८।३०।२१	४४।२१	१०। ४	१२। ०	१४।१३	१६।३१	१८।४५	२०।५८	२३।१४	१।३१	३।३७	५।२३	६।५५	८।२६
बु. ८	५।२१। २।११	९।२३।५०। ७	६।१८।२९।४२	९। ४।४८।२२	५।२८।२४।२०	८।२८।२७।१०	४४।२३	१०। ०	११।५६	१४। ९	१६।२७	१८।४१	२०।५४	२३।१०	१।२७	३।३३	५।१९	६।५१	८।२२
बृ. ९	५।२०।४८।३५	९।२५।१६।१२	६।१८।२८।२२	९। ५।३४।१८	५।२८।२१। ४	८।२८।२३।५९	४४।२५	९।५६	११।५२	१४। ५	१६।२३	१८।३७	२०।५०	२३। ६	१।२३	३।२९	५।१५	६।४७	८।१८
शु.१०	५।२०।३४।५९	९।२६।४२।१७	६।१८।२७। २	९। ६।२०।१४	५।२८।१७।४८	८।२८।२०।४८	४४।२७	९।५२	११।४८	१४। १	१६।१९	१८।३३	२०।४६	२३। २	१।१९	३।२५	५।११	६।४३	८।१४
श.११	५।२०।२१।२३	९।२८। ८।२२	६।१८।२५।४२	९। ७। ६।१०	५।२८।१४।३३	८।२८।१७।३८	४४।२९	९।४८	११।४४	१३।५७	१६।१५	१८।२९	२०।४२	२२।५८	१।१५	३।२१	५। ७	६।३९	८।१०
र.१३	५।२०। ७।४८	९।२९।३४।२६	६।१८।२४।२२	९। ७।५२। ६	५।२८।११।१८	८।२८।१४।२८	४४।३१	९।४४	११।४०	१३।५३	१६।११	१८।२५	२०।३८	२२।५४	१।११	३।१७	५। ३	६। ५	८। ६
चं.१४	५।१९।५४।१२	१०।११।१३। ३	६।१८।२१।४४	९। ८।४२।५२	५।२८। ७।३०	८।२८।११।१७	४४।३३	९।४०	११।३७	१३।५०	१६। ८	१८।२२	२०।३५	२२।५१	१। ८	३।१४	५। ०	६।३२	८। २
मं.१५	५।१९।३९।४०	१०।२।५१।३९	६।१८।१९। ६	९। ९।३३।४०	५।२८। ३।४३	८।२८। ८। ६	४४।३५	९।३६	११।३३	१३।४६	१६। ४	१८।१८	२०।३१	२२।४७	१। ४	३।१०	४।५६	६।२८	७।५९

५ रवौवल्ली ८।३५।४२।४४
अयनांशाः २३।१४।३६।९



१३ रवौवल्ली ८।३५।४८।५१
अयनांशाः २३।१४।३७।१२



अथविविध विषयाः--फाल्गुन पूर्णिमायां होलिकादाहः--तत्राग्नौ विधिवद्धूत्वाकामन्त्वं विवर्जयेत्। घृतैः किलकिलाशब्दैस्तालशब्दैः मनोरमैः। तमग्नि त्रिः परिक्रम्य गायन्ति च हसन्ति च। जल्पन्ति स्वेच्छयालोके होलिकाख्यातिभागतः। अस्यांकाष्ठादिकमेकत्रीकृत्य होलिकां ध्यायेत्तन्मन्त्रः--असृमयावसन्तप्तैः कृत्वा त्वं होलिबालिशः। अतस्त्वां पूजयिष्यामि भूतेभूतिप्रदाभव। ततो होलिकायै नमः इति पञ्चोपचारैः सम्पूज्यप्रदीपयेत्। तत्प्रदीपनमन्त्रः--दीप्यमानं त्व ते घोरां चिति राक्षसि ते नमः। हिताय सर्वजगतः प्रीतयेपार्वतीपतेः। ततःपरदिने होलिकाभस्मधारणमन्त्रः--वन्दितासि सुरेन्द्रेण ब्रह्माच्युतशिवादिभिः। अतस्त्वं पाहिनो भीतेभूषिताभूतिदा भव। अथ प्रयागेकेशवपनफलम्-- किं गयापिण्डदानेन काश्यां वा मरणेन किम्। किं कुरुक्षेत्रदानेन प्रयागे मुण्डनं यदि। केशानां यावतीसंख्या छिन्नानां जाह्नवीजले। तावद्वर्षसहस्राणि स्वर्गलोके महीयते। स्थानविशेषमहत्त्वम्--प्रयागे वपन कुर्याद् गयायां पिण्डपातनम्। दान दद्यात् कुरुक्षेत्रे वाराणस्यां तनुं त्यजेत्। गङ्गातोयेऽस्थिप्रक्षेपफलम्--दशाहाभ्यन्तरेयस्य गङ्गातोयेऽस्थि मज्जति। गङ्गायां मरणे यादृक् तादृक् फलमवाप्नुयात्।

वातावरणम्--पक्षादितस्तृतीयां यावदनुकूलसमयस्ततोनवमींयावद्यत्नतत्र वृष्टिवायुशीतादयस्ततः पञ्चमीयावत्सौम्यसमयः।

ग्रहास्थितिः- वक्रिणः पूर्वोदिताः कुजगुरुशनयः, मार्गिणौ पूर्वोदितौबुधशुक्रौ।

चैत्रकृष्णपक्षः

शकः १९०३, संवत् २०३८, सन् १३८९ साल, दि० १०। ३।८२ ई० तः २५। ३।८२ ई० यावत्, दक्षिणकालः। मार्गी पूर्वोदितो गुरुः, मा० पूर्वोदितः शुक्रः। अशुद्धः, शिशिरर्तुः ५ तः वसन्तर्तुः। दक्षिणगोलः, उत्तरायणम्।

दि ति	तिथयः द प	घं मि	नक्षत्राणि	द प	घं मि	योगाः द प	करण द प	चन्द्रस्थितिः रा द प	घं मि	स्पष्टसूर्यः राश्यादि	दिनमानं द प	सू.उ. घं मि	सू.अ. घं मि	दिनांक रा	सौ	अं	चैत्रकृष्णपक्षः
बृ. १	४७।८०	रा. ११। ३	उ.	५५।२७	रा. ४।१३	शू. २८। २	वा. १८।११	सि. ९।५५	दि. १०। ७	१०।२६।१४।१९	२९।१४	६। ९	५।५१	१९	२७	१०	वसन्तोत्सवः, श्वपचस्पर्शः, सचैलस्नानम्, सप्तडोकबन्धनम्, श्रवणायां शुक्रः २०।७ द्विरागमन दिवारात्रौ।
[illegible] २	४७।५३	" ११।१७	ह.	५७।२३	" ५। ५	गं २५। १	तै. १७।४७	कन्या	अहोरात्र	१०।२७।१४।१८	२९।१८	६। ८	५।५२	२०	२८	११	मुण्डन, द्विरागमनं, पूर्वयात्रा दिवारात्रौ, गृहारम्भः वापीकूपतडागखननमुहूर्त्तः।
[illegible] ३	४२।२८	" ११।५४	चि.	६०। ०	अहोरात्र	वृ. २२।५९	व. १८।३९	क. २९। १	स. ५।४४	१०।२८।१४।१७	२९।२२	६। ८	५।५२	२१	२९	१२	दग्धातिथिः रा. घ. १ मि ५४ उ. भ. १८।३९ उ० ४९।२५ या., शतभिषायां बुधः ६।२२, द्विरागमनं मुण्डनंगृहारम्भश्चतृतीयायाम्।
श. ४	५[illegible]। ७	" २।५८	चि.	०।३८	दि. ६।२२	ध्रु. २२। ०	नव २०।४६	तुल	अहोरात्र	१०।२९।१४।१६	२९।२६	६। ७	५।५३	२२	३०	१३	मासान्तः दग्धतिथिः रा. घ.२मि.५८या. गणेश४ व्रतम्।
५	५६। ०	" ४।३०	स्वा.	४।५६	" ८। ४	व्या २१।५२	को. २४। ४	तु. ५३।५९	रा. ३।२६	११। ०।१४।१५	२९।३०	६। ६	५।५४	२३	१	१४	मीनर व ३०।२९ मु० ४५ फलं समर्घम्, षडशीतिसंक्रान्तिपुण्यकालः दि. घ. १२ उ०, पूर्वास्तो बुधः ३४।१३।
चं. ६	६०। ०	अहोरात्र	वि.	१०।२१	" १०।१३	ह. २२।३१	ग. २८।२२	वृश्चिक	अहोरात्र	११। १।१३।५९	२९।३४	६। ५	५।५५	२४	२	१५	मासादिः, व्यहोजन्मदिनकृत्यम्।
म. ६	०।४३	दि. ६।२१	अनु.	१६।२९	" १२।४०	व. २३।४१	व. ०।४३	वृश्चिक	अहोरात्र	११। २।१३।४३	२९।३८	६। ४	५।५६	२५	३	१६	भ. ०।४३ उ० ३३।२० या०, सूतीस्नानम्, पश्चिमयात्रा प्रातः ६।२१ उ०।
बु. ७	५।५८	" ८।२७	ज्ये.	२३। २	" ३।०५	सि. २५।१०	वव. ५।५८	वृ. २३। २	दि. ३।१७	११। ३।१३।२७	२९।४२	६। ४	५।५६	२६	४	१७	उत्तरभाद्रे रविः ५१।५७, गण्ड १६।५८ उ० ३१।५८ या०।
बृ. ८	११।२०	" १०।३५	मू.	२९।३३	रा. ६।	व्य. २६।३८	को. ११।२०	धनु.	अहोरात्र	११। ४।१३।११	२९।४६	६। ३	५।५७	२७	५	१८	पूर्वोत्तरयोर्वाऽष्टम्याम्।
शु. ९	१६।१७	" १२।३३	पू.	३५।३८	रा. ८।१७	व. २७।४७	ग. १६।१७	ध. ५४।५९	रा. ४। २	११। ५।१२।५५	२९।५०	६। २	५।५८	२८	६	१९	भ. ४८।१५ उ०, पूर्वभाद्रे बुधः ३६।५६।
श. १०	२०।३४	" २।१५	उ.	४१। २	" १०।२६	प. २८।१९	वि. २०।३४	मकर	अहोरात्र	११। ६।१२।३८	२९।५४	६। १	५।५९	२९	७	२०	भ. २०।३४ या०।
र. ११	२३।४९	" ३।३२	श्र.	४५।१८	" १२। ७	शि. २८। ६	[illegible] २३।४९	मकर	अहोरात्र	११। ७।१२।२१	२९।५८	६। ०	६। ०	३०	८	२१	पापमोचिनी ११ व्रतं सर्वेषाम्, पञ्चकारम्भः रा. घ. १२ मि. ७ उ०।
चं. १२	२५।५९	" ४।२४	ध.	४८।२८	" १।२३	सि. २६।५९	तै. २५।५९	म. १८।५३	दि. १।३३	११। ८।११।५०	३०। २	६। ०	६। ०	१	९	२२	प्रदोष १३ व्रतम्।
मं. १३	२६।४४	" ४।४२	श.	५०।२१	" २। ७	सा. २४।५२	व. २६।४४	कुम्भ	अहोरात्र	११। ९।११।१९	३०। ६	५।५९	६। १	२	१०	२३	चतुर्दशी व्रतम्, वारुणी योगः, भ. २६।४४ उ. ५०।२१ या०।
बु. १४	२६।१४	" ४।२८	पू.	५०।५९	" २।२२	शु. २१।४२	श. २६।१४	कु. ३५।५०	रा. ८।१८	११।१०।१०।४७	३०।१०	५।५८	६। २	३	११	२४	धवलकलशन्यस्तरक्तपताकान्वितस्नुही धारणम् (गृहोपरि), धनिष्ठायां शुक्रः ५८।०।
बृ. ३०	२४।३०	" ३।४२	उ	५०।२५	" २। ७	श. १७।३४	ना. २४।३०	मीन	अहोरात्र	११।११।१०।१५	३०।१४	५।५७	६। ३	४	१२	२५	चैत्री ३० पार्वणम्, मीनेबुधः १९।५३।

मिश्रमानकालिक दैनिकमङ्गलादिस्पष्टग्रहाः, दिनद्वयग्रहान्तरं गतिः

दि ति	मङ्गलः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमान
बु १	५।१९।१३।३६	१०। ४।३०।१५	६।१८।१६।२८	९।११।२४।२७	५।२७।५९।५६	८।२८। ४।५५	४४।३७
बु २	५।१८।५५।३२	१०। ६। ८।५१	६।१८।१३।५०	९।११।१५।१४	५।२७।५६। ९	८।२८। १।४४	४४।३९
शु. ३	५।१८।३७।२८	१०। ७।४७।२७	६।१८।११।१३	९।१२। ६। ०	५।२७।५२।२२	८।२७।५८।३३	४४।४१
श. ४	५।१८।१९।२४	१०। ९।२६। ३	६।१८। ८।३६	९।१२।५६।४६	५।२७।४८।३५	८।२७।५५।२३	४४।४३
र. ५	५।१८। १।२०	१०।११। ४।३९	६।१८। ५।५९	९।१३।४७।३२	५।२७।४४।४८	८।२७।५२।१३	४४।४५
चं ६	५।१७।४३।१९	१०।१२।५०।३९	६।१८। ३। १	९।१४।३८।१८	५।२७।४०।३४	८।२७।४९। २	४४।४७
म. ६	५।१७।१७। २	१०।१४।३६।३८	६।१७।५८। ३	९।१५।४२।५६	५।२७।३६।२०	८।२७।४५।५१	४४।४९
बु. ७	५।१६।५४।५४	१०।१६।२२।३७	६।१७।५४। ६	९।१६।४०।३७	५।२७।३२। ६	८।२७।४२।४०	४४।५१
बृ. ८	५।१६।३२।४६	१०।१८। ८।३६	६।१७।५०। ९	९।१७।३८।१८	५।२७।२७।५२	८।२७।३९।२९	४४।५३
शु ९	५।१६।१०।३८	१०।१९।५४।३५	६।१७।४६।१२	९।१८।३५।५९	५।२७।२३।३८	८।२७।३६।१९	४४।५५
श.१०	५।१५।४८।३०	१०।२१।४०।३४	६।१७।४२।१५	९।१९।३३।४०	५।२७।१९।२४	८।२७।३३। ९	४४।५७
र.११	५।१५।२६।२२	१०।२३।२६।३३	६।१७।३८।१८	९।२०।३१।२१	५।२७।१५।११	८।२७।२९।५९	४४।५९
चं.१२	५।१५। २।३०	१०।२५।१८।५६	६।१७।३३। ८	९।२१।२७।५८	५।२७।१०।३६	८।२७।२६।४८	४५। १
मं.१३	५।१४।३८।३८	१०।२७।११।१९	६।१७।२८।५०	९।२२।२४।३५	५।२७। ६। १	८।२७।२३।३७	४५। ३
बु.१४	५।१४।१४।४६	१०।२९। ३।४१	६।१७।२२।६६	९।२३।२१।११	५।२७। १।२६	८।२७।२०।२६	४५। ५
बृ.३०	५।१३।५०।५५	११। ०।५६। ३	६।१७।१८।२३	९।२४।१७।४०	५।२६।५६।५१	८।२७।१७।१५	४५। ७

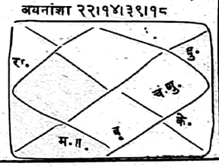
दैनिकलग्नसारणीचक्रम्

दि ति	मे.अ.	वृ.अ.	मि.अ.	क.अ.	सिं.अ.	क.अ.	तु.अ.	वृ.अ.	ध.अ.	म.अ.	कु.अ.	मी.अ.
बु १	९।३३	११।२९	१३।४२	१६। ०	१८।१४	२०।२७	२२।४३	१। ०	३। ६	४।५२	६।२४	७।५५
बु २	९।२९	११।२५	१३।३८	१५।५६	१८।१०	२०।२३	२२।३९	०।५६	३। २	४।४८	६।२०	७।५१
शु. ३	९।२५	११।२१	१३।३४	१५।५२	१८। ६	२०।१९	२२।३५	०।५२	२।५८	४।४४	६।१६	७।४७
श. ४	९।२१	११।१७	१३।३०	१५।४८	१८। २	२०।१५	२२।३१	०।४८	२।५४	४।४०	६।१२	७।४३
र. ५	९।१७	११।१३	१३।२६	१५।४४	१७।५८	२०।११	२२।२७	०।४४	२।५०	४।३६	६। ८	७।३९
चं ६	९।१३	११। ९	१३।२२	१५।४०	१७।५४	२०। ७	२२।२३	०।४०	२।४६	४।३२	६। ४	७।३५
म. ६	९। ९	११। ५	१३।१८	१५।३६	१७।५०	२०। ३	२२।१९	०।३६	२।४२	४।२८	६। ०	७।३१
बु. ७	९। ५	११। १	१३।१४	१५।३२	१७।४६	१९।५९	२२।१५	०।३२	२।३८	४।२४	५।५६	७।२७
बृ. ८	९। १	१०।५७	१३।१०	१५।२८	१७।४२	१९।५५	२२।११	०।२८	२।३४	४।२०	५।५२	७।२३
शु ९	८।५७	१०।५३	१३। ६	१५।२४	१७।३८	१९।५१	२२। ७	०।२४	२।३०	४।१६	५।४८	७।१९
श.१०	८।५३	१०।४९	१३। २	१५।२०	१७।३४	१९।४७	२२। ३	०।२०	२।२६	४।१२	५।४४	७।१५
र.११	८।४९	१०।४५	१२।५८	१५।१६	१७।३०	१९।४३	२१।५९	०।१६	२।२२	४। ८	५।४०	७।११
चं.१२	८।४६	१०।४२	१२।५५	१५।१३	१७।२७	१९।४०	२१।५६	०।१३	२।१९	४। ५	५।३७	७। ८
मं.१३	८।४२	१०।३८	१२।५१	१५। ९	१७।२३	१९।३६	२१।५२	०। ९	२।१५	४। १	५।३३	७। ४
बु.१४	८।३८	१०।३४	१२।४७	१५। ५	१७।१९	१९।३२	२१।४८	०। ५	२।११	३।५७	५।२९	७। ०
बृ.३०	८।३४	१०।३०	१२।४३	१५। १	१७।१५	१९।२८	२१।४४	०। १	२। ७	३।५३	५।२५	६।५६

५ रवौवल्ली ८।३५।४२।५८
अयनांशाः २२।१४।३८।१५



११ रवौवल्ली ८।३५।४३। ५
अयनांशा २२।१४।३९।१८



अथविविध विषयाः—चैत्रकृष्ण त्रयोदश्यां वारुणी तत्र गङ्गस्नानम्, तिथितत्त्वचिन्तामणौ—वारुणेन समायुक्ता मधौ कृष्णा त्रयोदशी। गंगायां यदि लभ्येत कोटिसूर्यग्रहैः समा। **अथ गोक्षुतस्य दोषाधिक्यमुक्तं नारदेन** सर्वदिक्षु क्षुतं नेष्टं गोक्षुतं मरणप्रदम्। अफलं तत्क्षुतं वाच्यमन्धपीनस कैतवे। कैतवः कपटः पीनसोमुहुर्नासास्रावी। **अथ रत्नावली रत्नकलापयोः**—प्राङ्न्यपुंसः पुरतोऽपरस्मात् पुनः पुनर्वातित एव जातम्। वृद्धाच्छिशोर्वा कफतो हठाद्वा जात क्षुतं केऽपि वदन्त्यसत्यम्। यात्रायां क्षुतमवश्यं वर्जनीयम्, रत्नकलापे-अग्रे क्षुतं चेच्छकुनैः किमन्यैः पश्चाच्छुतं चेच्छकुनैः किमन्यैः। जाताज्जाताच्छकुनानिहन्ति क्षुतप्रदेनात्रवदन्ति तज्ज्ञाः। **अथशुभक्षुतम्**, सर्वशाकुने-औषधे च नवारोहे विवादेशयनेऽशने। विद्यारम्भे बीजवापे क्षुतं सप्तशोभनम्।

वातावरणम्—पक्षदितः एकादशीयावद् वायुतापरोगादयः। ततः पक्षान्त यावदनुकूलसमयः।

ग्रहस्थितिः—वक्रिणः पूर्वोदिताः कुजगुरुशनयः, मार्गिणौ पूर्वोदितौ बुधशुक्रौ ५तः पूर्वास्तो बुधः।

॥ अथ ग्रहकृतारिष्टशमनाय दानादि पदार्थाः ॥

सूर्यः	चन्द्रः	मङ्गलः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	राहुः	केतुः
माणिक्य	वंशपात्र	बिद्रुम	कांस्य	पीतधान्य	श्वेततण्डुल	माषान्न तैल	गोमेद,माषान्न	माषान्न
गोधूम	श्वेततण्डुल	पृथ्वी	हरित वस्त्र	पीत वस्त्र	श्वेतचित्रवस्त्र	कृष्णतिल	तुरग, तिल	कम्बलकस्तूरी
गुड़, तामा	श्वेतबस्त्र	मसूरदाल	हरित पुष्प	पीत पुष्प	श्वेत चन्दन	कृष्ण वस्त्र	नील वस्त्र	तिल तैल
रक्त पुष्प	श्वेतपु	रक्त वृषभ	कपूर, शंख	पीत चन्दन	घी, सोना	कृष्ण पुष्प	नील पुष्प	कृष्णवस्त्रादि
रक्त चन्दन	श्वेतचन्दन	गुड़,तामा	फल मूंग	सोना,घृत	रजत,स्फटिक	कंबल,उपानह	तिल तैल	सोना, लोहा
रक्त वस्त्र	दधि, शंख	रक्त वस्त्र	गजदन्त	पीत फल	दधि, शंख	कस्तुरी सोना	सप्तधान्य	छाग,खड्ग
सुवर्ण	चीनी चान्दी	रक्त चन्दन	घृत सोना	पोखराज	गोधूमशक्कर	लोह,कुल्थी	लोह सुवर्ण	कस्तूरी
केशर	मोती कपूर	रक्त पुष्प	मोंथा	अश्व, मधु	सुगन्ध द्रव्य	महिषी,छत्र	कृष्ण पुष्पादि	तामा
मूंगा	श्वेत वृषभ	सुवर्ण केशर	मणि	पुस्तक,छत्र	श्वेताश्व	कृष्णधेनु	कम्बल	मणि वैदूर्यं
सवत्सगौ	घृत, कूढ़	कस्तूरी	षट्रसभोजन	भूमि,शक्कर	भूमि,श्वेत गौ	शमी	शस्त्र	कृष्णपुष्प
लाजा	मोती	वला	पन्ना	हरिद्रा	हीरा	नीलम	छाग	लाजावर्त्त
जप ७०००	जप ११०००	जप १०००	जप ८०००	जप ११०००	जप ११०००	जप २३०००	जप १८०००	जप ७०००

ग्रहाणां दानधारण जपादि कालः—सूर्यादीनाञ्च यद्दानं जपहोमार्चनादिकम्। तेषां वारे प्रकुर्वीत सन्तुष्टास्ते भवन्तिहि॥ कन्या मीनपत्योः राहुकेत्वोर्जपादिकं शनिवासरे कार्यम् ॥ अथ धर्म प्रशंसा—धर्मेण हन्यते व्याधि धर्मेण शुभदा ग्रहाः। धर्मेण हन्यते शत्रुर्यतो धर्मस्ततो जयः॥

॥ अथ विंशोत्तरी महादशान्तर्दशा चक्रम् ॥

सूर्यदशावर्ष ६				चन्द्रदशावर्ष १०				भौमदशावर्ष ७			
कृ. उफा उषा.				रोहि.ह.श्रवण				मृ० चि० ध०			
अन्तर्दशा १८				अन्तर्दशा ३०				अन्तर्दशा २१			
ग्र	व.	मा.	दि.	ग्र.	व.	मा	दि.	ग्र.	व.	मा.	दि.
सू	०	३	१८	चं.	०	१०	०	मं.	०	४	२७
चं.	०	६	०	मं.	०	[illegible]	०	रा.	१	०	१८
मं.	०	४	६	रा.	१	६	०	वृ.	०	११	६
रा.	०	१०	२४	वृ.	१	४	०	श.	१	१	९
बृ.	०	९	१८	श.	१	७	०	बु	०	११	२७
श.	०	११	१२	बु.	१	५	०	के.	०	४	२७
बु.	०	१०	६	के.	०	७	०	शु.	१	२	०
के.	०	४	६	शु.	१	८	०	सू.	०	४	६
शु.	१	०	०	सू.	०	६	०	चं.	०	७	०

राहुदशावर्ष १८				गुरुदशावर्ष १६				शनिदशावर्ष १९			
आर्द्रा स्वा.शत.				पुन वि.पूभा.				पुष्य अनु.उभा.			
अन्तर्दशा ५४				अन्तर्दशा ४८				अन्तर्दशा ५७			
ग्र.	व.	मा.	दि.	ग्र.	व.	मा	दि.	ग्र.	व.	मा.	दि.
रा.	२	८	१२	वृ.	२	१	१८	श	३	०	३
ब्र.	२	४	२४	श.	२	६	१२	बु	२	८	९
श.	२	१०	६	बु.	२	३	६	के.	१	१	९
बु.	२	६	१८	के.	०	११	६	शु.	३	२	०
के.	१	०	१८	शु.	२	८	०	सू.	०	११	१२
श.	३	०	०	सू.	०	९	१८	चं.	१	७	०
सू.	०	१०	२४	चं.	१	४	०	मं.	१	१	९
चं.	१	६	०	मं.	०	११	६	रा.	२	१०	६
मं.	१	०	१८	रा.	२	४	२४	बृ.	२	६	१२

बुधदशावर्ष १७				केतुदशावर्ष ७				शुक्रदशावर्ष २०			
आश्ले.ज्ये.रेव.				मघा.मू.अश्वि.				पूफा.पूषा.भर			
अन्तर्दशा ५१				अन्तर्दशा २१				अन्तर्दशा ६०			
ग्र.	व.	मा	दि.	ग्र.	व.	मा	दि.	ग्र.	व.	मा.	दि
ब.	२	४	२७	के	०	४	२७	शु.	३	४	०
क.	०	११	२७	शु.	१	२	[illegible]	सू	[illegible]	०	०
शु.	२	१०	०	सू.	०	४	६	चं.	१	८	०
सू.	०	१०	६	[illegible]	[illegible]	७	०	मं.	१	२	०
चं.	१	५	०	[illegible]	०	४	२७	रा.	३	०	०
मं.	०	११	२७	[illegible]	१	०	१८	बृ.	२	८	०
रा.	२	६	१८	बृ.	०	११	६	श.	३	२	०
वृ.	२	३	६	श,	१	१	९	बु.	२	१०	०
श.	२	८	९	बु.	०	११	२७	के.	१	२	०

॥ अथ योगिनीदशान्तर्दशाचक्रम् ॥

मंगला १	पिंगला २	धान्या ३	भ्रामरी ४	भद्रिका ५	उल्का ६	सिद्धा ७	संकटा ८
श्र आ.चि.	ध.पुन.स्वा	श.पु.वि.	अश्वि श्ले अनु.पूभा	भर.म.ज्ये उभा.	कृ. पूफा मू. रे.	रो.उफा पूषा.	मृ.ह.उषा
मा.१२ च	मा. २४सू.	मा.३६ वृ	मा ४८ मं	मा. ६०बु	मा ७२ श	मा. ८४शु.	[illegible] ९६के.
म. ०।१०	पि. १।१०	धा. ३। ०	भ्रा. ५।१०	भ. ८।१०	उ.१२। ०	सि१६।१०	स.२१।१०
पि. ०।२०	धा. २। ०	भ्रा. ४। ०	भ ६।२०	उ.१०। ०	सि. ४। ०	सं. [illegible]।२०	मं. २।२०
धा. १। ०	भ्रा २।२०	भ. ५। ०	उ. ८। ०	सि११।२०	सं.१६। ०	मं. २।१०	पि. ५।१०
भ्रा. १।१०	म. ३।१०	उ. ६। ०	सि ९।१०	स.१३।१०	मं. २। ०	पि. ४।२०	भ्रा. ८। ०
भ. १।२०	उ. ४। ०	सि. ७।१०	सं.१०।२०	मं. १।२०	पि. ४। ०	धा. ७। ०	भ्रा१०।२०
उ. २। ०	सि. ४।२०	सं. ८। ०	मं. १।१०	पि. ३।१०	धा. ६। ०	भ्रा ३।१०	भ.१३।१०
सि. २।१०	[illegible] ५।१०	म १। ०	पि. २।२०	धा ५। ०	भ्रा ८। ०	भ.११।२०	उ १६। ०
सं २।२०	प. ०।२०	पि २। ०	धा ४। ०	भ्रा. ६।२०	भ.१०। ०	उ १४। ०	[illegible]१८।२०

योगिनीदशाभुक्तभोग्यानयनम्-जन्मर्क्षंत्रियुतं भक्त-मष्टभिः शेषतः क्रमात्। मङ्गलाद्यासङ्कटान्ता वा-वृद्धयादशास्मृताः। ततो विंशोत्तरीदशावद्भुक्त-भोग्यवर्षानयनं कार्यम्। शान्तिमन्त्राः, मंगला—ॐ ह्रीं मंगलेमंगलायैस्वाहा। पिङ्गला—ॐ ग्लौं पिङ्गले वैरिकारिणी प्रसीदफट् स्वाहा। धान्या—ॐ श्रीं धनदेधान्यायै स्वाहा। भ्रामरी—ॐ भ्रामरि जगतामधीश्वरी क्लीं स्वाहा। भद्रिका—ॐ भद्रिके भद्रं देहि अभद्रं नाशय स्वाहा। उल्का—ॐ उल्के ममरोगं नाशय जृंभयस्वाहा। सिद्धा—ॐ हों सिद्धे मे सर्वमानसं साधय स्वाहा। सङ्कटा—ॐ ह्रीं सङ्कटे ममरोगं नाशय स्वाहा।

॥ अथ गरुड़ादि वर्गचक्रम् ॥

वर्गेश	गरुड	मार्जार	सिंह	श्वान	सर्प	इन्दुर	गज	मेष
शरसख्या	८	५	६	४	७	१	३	२
वर्गनाम	अ.वर्ग	कवर्ग	चवर्ग	टवर्ग	तवर्ग	पवर्ग	यवर्ग	शवर्ग
वर्गांक	प.	आ.	द	नै	प.	वा.	उ.	ई.
वर्गशत्रु	[illegible]	इन्दुर	गज	मेष	गरुड	मार्जार	सिंह	श्वान
वर्गसमः	सिंह	श्वान	सर्प	इन्दुर	गज	मेष	गरुड	मार्जार
वर्गमित्रम्	श्वान	सर्प	इन्दुर	गज	मेष	गरुड	मार्जार	सिंह

॥ गरुड़ादि वर्गवशेन शुभाशुभज्ञानप्रकारः ॥

नामग्रामदिशाऽऽद्यक्षरवशेन शरसख्यान् संयोज्याष्ट-भिर्भक्त्वा एकादिशेषवशेन क्रमशः सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि राहुणां दशाः ज्ञातव्याः। तत्र शुभ-ग्रहाणां दशाः शुभदाः पापग्रहाणाञ्च हानिकराः भवन्ति॥ अथ स्वनामाद्यक्षरवशेन यो वर्गेशस्तस्माद्दिग् वर्गेशस्य शत्रुवर्गे पतनात्तद्दिशि यद्गृहं तत्र शुभप्रदम्॥ अतएव स्व-वर्गमित्रवर्गदिग् गृहवासः शुभः, समवर्गदिग्गृहवासो मध्यमः शत्रुदिग्गृहे च हानिप्रदः।

॥ अथांगस्फुरण फलम् ॥

स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्
मस्तके	भूमिलाभः	वक्षः	विजयः	कण्ठः	ऐश्वर्यम्
ललाटे	पदलाभः	हृदयम्	इष्टसिद्धिः	ग्रीवाधः	शत्रुभयम्
स्कन्धे	भोगः	कटिः	प्रमोदः	पृष्ठम्	पराजयः
भ्रुवयोः	सुखम्	कटिपार्श्वे	प्रीतिः	कपोलौ	व्यभिचारः
भ्रूमध्ये	सौख्यम्	नाभिः	स्त्रीनाशः	मुखम्	मधुरभोजनम्
कपाले	शुभम्	आन्त्रिकम्	कोपवृद्धिः	बाहुः	प्रियलाभः
नेत्रयोः	धनाप्तिः	भगः	पतिसमागमः	बाहुमध्ये	धनागमः
नेत्रकोणयोः	धनम्	कुक्षिः	प्रीतिः	वस्तिदेशः	उन्नतिः
नेत्रसमीपे	प्रियसमागमः	उदरम्	धनम्	ऊरू	वस्त्रलाभः
नेत्रपक्ष्मणि	राज्याप्तिः	लिङ्गम्	स्त्रीसमागमः	जानु	भयम्
नेत्रपक्ष्मणोः	विजयः	गुदः	वाहनाप्तिः	जंघे	स्वामिप्राप्तिः
नेत्रापांगे	स्त्रीलाभः	वृषणौ	पुत्रलाभः	पादयोरुपरि	स्थानलाभः
नाशिकयोः	सुखम्	ओष्ठम्	इष्टसिद्धिः	पादतले	पराक्रमः
हस्ते	धनलाभः	हनुः	भयम्	पदयोः	हानिः

अथ नेत्रस्फुरणफलम्—नेत्रस्योर्ध्वं हरति सकलं मानसं दुःख-जालं नेत्रोपान्ते दिशति च धनं नासिकान्ते च मृत्युः। नेत्रस्याधः स्फुरणमसकृद् संगरेऽभद्रहेतुः वामे चैतत्फलमविकलं दक्षिणे वैपरीत्यम्। एतानिफलानि पुरुषाणां ज्ञेयानि स्त्रीणान्तु प्रोक्तवैपरीत्येन बोध्यानि॥

॥ अथ शतपदचक्रम् ॥

नक्षत्र वर्णाः	चू. चे. चो. ल.	ली लू. ले. लो.	अ इ. उ. ए.	ओ. व. वि. वु.	वे. वो. क. की.	कू. घ ङ. छ.	के. को. ह. ही.	हू. हे. हो. ड.	डी. डू. डे. डो.	म. मी. मू. मे.	मो. ट. टी. टू.	टे. टो. प. पी.	पू. ष. ण. ठ.	पे. पो. र. री.
नक्षत्रं	अश्विनी	भरणी	कृत्तिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू. फा.	उ. फा.	हस्त	चित्रा
राशिः	मेष	मेष	मेष १ वृष ३	वृष	वृष २ मिथुन २	मिथुन	मिथुन ३ कर्क १	कर्क	कर्क	सिंह	सिंह	सिंह १ कन्या ३	कन्या	कन्या २ तुला २
वर्णः	क्षत्रिय	क्षत्रिय	क्षत्रि १ वैश्य ३	वैश्य	वैश्य २ शूद्र २	शूद्र	शूद्र ३ विप्र १	विप्र	विप्र	क्षत्रिय	क्षत्रिय	क्षत्रिय १ वैश्य ३	वैश्य	वैश्य २ शूद्र २
वश्यः	चतुष्पद	चतुष्पद	चतुष्पद	चतुष्पद	चतु. २ मान २	मानव	मानव ३ जल. १	जलचर	जलचर	चतुष्पद	चतुष्पद	चतु. १ मान. ३	मानव	मानव
योनिः	अश्व	गज	मेष	सर्प	सर्प	श्वान	मार्जार	मेष	मार्जार	मूषक	मूषक	गो	महिष	व्याघ्र
योनि-वैरः	महिष	सिंह	वानर	नकुल	नकुल	मृग	मूषक	वानर	मूषक	मार्जार	मर्जार	व्याघ्र	अश्व	गो
राशीशः	भौमः	भौमः	भौमः १ शुक्रः ३	शुक्रः	शुक्रः २ बुधः २	बुधः	बुधः ३ चन्द्रः १	चन्द्रः	चन्द्रः	सूर्यः	सूर्यः	सूर्यः १ बुधः ३	बुधः	बुधः २ शुक्रः २
गणः	देव	मनुष्य	राक्षस	मनुष्य	देव	मनुष्य	देव	देव	राक्षस	राक्षस	मनुष्य	मनुष्य	देव	राक्षस
नाड़ी	आदि	मध्य	अन्त्य	अन्त्य	मध्य	आदि	आदि	मध्य	अन्त्य	अन्त्य	मध्य	आदि	आदि	मध्य

नक्षत्र वर्णाः	रू. रे. रो. त.	ती. तू. ते. तो.	न. नी. नू. ने.	नो. य. यी. यू	ये. यो भ. भी.	भू. ध. फ. ढ.	भे. भो. ज. जी.	खी. खू खे. खो.	ग. गी. गू. गे.	गो. स. सी. सू.	से. सो. द. दी.	दू. थ. झ. ञ.	दे. दो. च. ची.
नक्षत्रं	स्वाती	विशाखा	राधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़	उत्तराषाढ़	श्रवणा	धनिष्ठा	शतभिषा	पूर्वभाद्र	उत्तरभाद्र	रेवती
राशिः	तुला	तुला ३ वृश्चि. १	वृश्चिक	वृश्चिक	धनु	धनु	धनु १ मकर ३	मकर	मकर २ कुम्भ २	कुम्भ	कुम्भ ३ मीन १	मीन	मीन
वर्णः	शूद्र	शूद्र ३ विप्र १	विप्र	विप्र	क्षत्रिय	क्षत्रिय	क्षत्रिय १ वैश्य ३	वैश्य	वैश्य २ शूद्र २	शूद्र	शूद्र ३ विप्र १	विप्र	विप्र
वश्यः	मानव	मानव ३ कीट १	कीट	कीट	मानव	मानव ॥ चतु. ३॥	चतुष्पद	चतु. १॥ जल. २॥	ज. च. २ मान २	मानव	मान. ३ जल. १	जलचर	जलचर
योनिः	महिष	व्याघ्र	मृग	मृग	श्वान	वानर	नकुल	वानर	सिंह	अश्व	सिंह	गो	गज
योनि-वैरः	अश्व	गो	श्वान	श्वान	मृग	मेष	सर्प	मेष	गज	महिष	गज	व्याघ्र	सिंह
राशीशः	शुक्रः	शुक्रः ३ भौमः १	भौमः	भौमः	गुरुः	गुरुः	गुरुः १ शनिः ३	शनिः	शनिः	शनिः	शनिः ३ गुरुः १	गुरुः	गुरुः
गणः	देव	राक्षस	देव	राक्षस	राक्षस	मनुष्य	मनुष्य	देव	राक्षस	राक्षस	मनुष्य	मनुष्य	देव
नाड़ी	अन्त्य	अन्त्य	मध्य	आदि	आदि	मध्य	अन्त्य	अन्त्य	मध्य	आदि	आदि	मध्य	अन्त्य

॥ अथ माहेन्द्रादि योग चक्रम् ॥

॥ चैत्र वैशाख श्रावण भाद्र माघ फाल्गुन मासेषु ॥

र. मा २ अ ८ व १० शू ८ मा २ शू २ अ ६ शू ८ व ६ मा २ व ४ अ २ = ६० दं.

चं. मा ४ शू ६ अ ६ व ६ मा २ अ २ शू ४ व २ मा ६ व ८ अ ८ व ६ = ६० दं.

मं. व ४ शू २ मा ६ व ४ शू २ अ ४ शू ४ अ ६ व ४ शू २ व ८ अ ६ शू ४ अ ४ = ६० दं.

बु. व ४ अ ४ व ६ अ ४ शू २ व ४ मा २ व ४ शू ४ अ ६ शू ६ व ८ अ ६ = ६० दं.

बृ. अ६शू४व४अ६व६अ४व४मा४अ२व८अ४शू४अ४ = ६०दं.

शु. शू२अ१६व८अ२शू२व४शू८अ६व८अ२शू२ = ६०दं.

श. शू ४ व ४ शू ६ अ ४ शू २ अ ४ शू २ अ ४ शू ४ व ४ अ ४ व ४ अ ६ व ४ अ २ शू २ = ६० द.

ज्येष्ठाषाढ़योः

र. शू ४ अ ६ व ६ अ ६ शू २ व ४ अ २ शू ४ मा ६ शू ४ व ६ शू २ मा ४ व ४ = ६० द.

चं. व८अ४शू६अ६मा६व६अ८व४अ४शू४व४........६०द

मं. अ४ शू ४ व ४ शू २ अ ४ व २ मा ८ शू २ व ६ अ ६ व ४ अ २ शू २ व २ अ ६ व २ = ६० द.

बु. शू२व४अ८व६अ८शू२अ१०शू२व८अ६शू२अ२.....६०द

बृ. अ २ शू २ अ ४ व ८ अ ६ शू २ अ ६ शू ४ अ ४ शू २ व ६ अ ६ शू ४ व ४........६० द

शु. शू ४ अ १४ व ८ अ २ शू २ व ४ शू २ अ ६ शू ६ अ ८ मा २ शू२........६० दं.

श. शू ४ व६ अ ६ शू २ व ४ अ ४ शू ६ व ४ अ ६ व४ अ ४ शू २ अ २ व ६........६० द

॥ आश्विन कार्तिक मार्ग पौष मासेषु ॥

र. मा ६ व ८ अ ८ शू २ मा ४ शू ६ व ४ अ ४ व ४ अ ६ शू २ अ ४ शू २........६० द

चं. अ४ व४ अ६ व२२ अ८ व६ अ४ व६ = ६० द

मं. मा २ शू ६ अ १० व ६ शू २ व १२ अ २ शू२ अ६ व ४ मा ४ व ४........६० द

बु. शू४अ४मा६शू४व६शू२व८अ४व८अ६शू८ = ६० द

बृ. अ४व६अ८शू४व६शू४अ८व६अ६व६मा २ = ६० द

शु. अ२व६शू६व६अ८व६अ८शू४मा२व६मा६........६० द

श. मा४शू४अ८शू८अ४शू२व११शू४व७मा२शू६.... ६० दं.

अथाङ्गविभागेन पल्लीपतन फलबोधक चक्रम् ॥

स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्
शिरसि	राज्यलाभः	दक्षिणकर्णे	आयुर्वृद्धिः	स्तनयो.	दौर्भाग्यम्	स्कन्धयोः	विजयः	मुखे	मधुरभोजनं
ललाटे	बन्धुदर्शनं	वामकर्णे	लाभः	उदरे	भूषणाप्तिः	नाभौ	धनाप्तिः	केशान्ते	कष्टम्
भ्रूमध्ये	सम्मानम्	नेत्रयोः	धनलाभः	पृष्ठदेशे	बुद्धिनाशः	कटिभागे	पशुलाभः	गुल्फयोः	धनम्
उत्तरोष्ठे	धनहानिः	द. भुजे	पराक्रमः	जानुद्वये	शुभः	द. मणिबंधे	हानिःतापः	द. चरणे	भ्रमणम्
अधरोष्ठे	ऐश्वर्याप्तिः	वामभुजे	राजभयम्	जंघयोः	शुभः	वा. मणिबंधे	कीर्तिनाश	वा चरणे	बन्धुविग्रहः
नासाग्रे	रोगः	कण्ठे	शत्रुनाशः	हस्तद्वये	लाभः	हृदये	धनाप्तिः	पादान्ते मध्ये	स्त्रीनाशः

अथ पल्लीपतन फलम्—यदि पतति च पल्ली दक्षिणांगे नराणां स्वजनधन वियोगी लाभद. वामभागे। उदरशिरसि कण्ठे पृष्टदेशे च मृत्युः कर चरण हृदिस्था सर्वसम्पत्तिदा स्यात् ॥ एतानि फलानि पुरुषाणां, स्त्रीनान्तु वैपरीत्येन ज्ञेयानि । अनिष्ट पल्लीपतने स्नात्वा तिलमाषादि दानं कार्यम् । शिवालये दीपं दद्यादष्टोत्तरशतसंख्यक, "ॐ नमः शिवाय" इति मन्त्रस्य जपश्च कार्यः ॥

जन्मलग्नात्सायुररिष्टद्वर्षाणि

लग्न	अरिष्टद्वर्षाणि	आयुः
मेष	४.११.१६.४४.५८	१००
वृष	१.२८.३३.४४.६१	९०
मिथुन	४.१०.१४.३८.५८	८६
कर्क	५.२५.४०.४८.६२	१००
सिंह	५.१३.-८.३६.४८	६३
कन्या	४.१६.२३.३६.४५	१००
तुला	१५.३१.३५.५४.६२	५७
वृश्चि.	११.२८.३८.५२.६२	१००
धनु	२.१०.१८.३१.३६.४२.६७	८१
मकर	५.१३.२७.३६.५७.६२	९५
कुम्भ	२.२८.३३.४८.६४	९०
मीन	१.८.१३.३६.४८	८३

जन्मराशेःसायुररिष्टद्वर्षाणि

राशिः	अरिष्टद्वर्षाणि	आयुः
मेष	०.१३.५०.६२	७५
वृष	३.६.८.३३.४६.५२.६३	८५
मिथुन	६.१०.११.१८.२४.५३.६३	८५
कर्क	१.७.९.१२.२७.३५.४५.५५.६१	७०
सिंह	१.१०.१५.२५.४५.५१.६१	६५
कन्या	१.३.१३.२६.३३.४३	८४
तुला	२.४.१६.२१.३३.४१.५१.६१	८५
वृश्चिक	३.७.८.१३.३२.३५.४५.६३	७५
धनु	३.९.११.१६.२३.३६.४७.५७.६७	८५
मकर	३.१०.३२.३३.४३.५१.५६.६१	८१
कुम्भ	१८.३२	६१
मीन	१८.३३	६१

फलम्–न वार-तिथि-नक्षत्रं न योगः करणन्तथा । शिवस्याज्ञां समासाद्य देवकार्यं विचारयेत् ॥ माहेन्द्रे विजयो नित्यममृते कार्यशोभनम् । वक्रे कार्यविनाशः स्याच्छून्ये च मरणं ध्रुवम् ॥ ज्योतिषां ग्रहशास्त्राणां सारमुद्धृत्य यत्नतः । क्रियते मिहिरेणेदं नराणां हितकाम्यया ॥

५ ग्रहमैत्री गुणाः ॥ कन्यायाः

ग्र.	सू.	च.	मं.	बु.	वृ.	शु.	श.
सू.	५	५	५	४	५	०	०
चं.	५	५	४	१	४	॥	॥
मं.	५	४	५	॥	५	३	॥
बु.	४	१	॥	५	॥	५	४
वृ.	५	४	५	॥	५	॥	३
शु.	०	॥	३	५	॥	५	५
श.	०	॥	॥	४	३	५	५

३ तारागुणाः ॥ वरस्य

२ वश्यगुणाः ॥ वरस्य

१ वर्णगुणाः ॥ वरस्य

कन्यायाः

४ योनिकूटगुणाः ॥ वरस्य

कन्यायाः

७ राशिकूटगुणाः ॥ वरस्य

नैसर्गिकग्रहमैत्रीचक्रम्

६ गणगुणाः । ८ नाडीगुणाः । अष्टौ वर्गास्तदीशाश्च

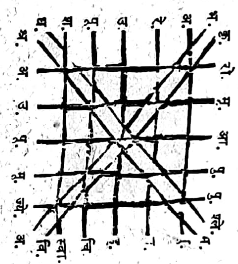
कन्यायाः	दे.	मा.	रा.
दे.	६	५	१
मा.	६	६	०
रा.	०	०	६

कन्यायाः	आ.	म.	अं.
आ.	०	८	८
म.	८	०	८
अं.	८	८	०

अवर्ग	कवर्ग	चवर्ग	टवर्ग
गरुड़	मार्जार	सिंह	श्वान
तवर्ग	पवर्ग	यवर्ग	शवर्ग
सर्प	मूषक	मृग	व्याघ्र

ग्रहाः	सूर्यः	चन्द्रः	मङ्गलः	बुधः	बृह.	शुक्रः	शनिः
मित्राणि	चं. मं. बृ.	सूर्यः बुध	सू. चं. बृ.	सूर्यः शुक्रः	सूर्यः मं. चं.	बुधः शनिः	बुधः शुक्रः
समा	बुधः	मं. बृ. शु. श.	शुक्रः शनिः	मं. बृ. शनि	शनिः	भौमः बृह.	गुरुः
शत्रवः	शुक्र शनिः	*	बुधः	चन्द्र	बुधः शुक्रः	सूर्यः चन्द्र	सूर्यः चं. मं.

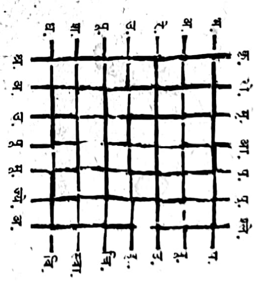
विवाहे पञ्चशलाकाचक्रम् ।



॥ विवाहे रविचन्द्रगुरुशुद्धिः ॥

॥ विवाहे रेखाशुद्धिः ॥

विवाहे सप्तशलाकाचक्रम् ।



वर्षप्रवेशसारिणी ।

विंशोत्तरीमहादशाचक्रम्

त्रिपताकिचक्रे ग्रहस्थापनम्--सैकागताब्दः संख्याया विभक्तानवभिस्ततः । शेषांके जन्मनिगताच्चन्द्रराशिरिहन्यसेत् । शेष ग्रहाश्चतुर्भक्तशेषसंख्यासुविन्यसेत् ।
त्रिपताके वर्षलग्नमादौ स्थाप्यौ विधूदयौ ।
शुभैर्विद्धौशुभफलौ पापैः पापफलप्रदौ ।

॥ अथ त्रिराशिपतः ॥

लग्न	मे	वृ	मि	क	सि	क	तु	वृ	ध	म	कु	मी
दिने	सू	शु	श	शु	वृ	च	बु	म	श	भ	बृ	च
रात्रौ	वृ	च	बु	म	सू	शु	श	शु	श	भ	बृ	च

वर्षमुन्थानयनम्--(गतवर्षसंख्या + जन्मलग्नसंख्या) ÷ १२ ॥ एकादिशेषे मेषादिमुन्थाराशिः । वर्षेशनिर्णयः--वर्षलग्नेशजन्मलग्नेश-मुन्थेश-त्रिराशिपति-दिवारविराशीश-रात्रौचन्द्रराशीश एषु लग्नद्रष्टा सर्वाधिकबलवांश्च वर्षेशः ।

॥ अथ ग[illegible]चक्रम् ॥

भावाः	सूर्यः	चन्द्र.	मंगलः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	राहुः	केतुः
तनुः	स्थानहानिः	सौख्यम्	बन्धनम्	भयम्	अभयम्	शत्रुनाशः	नाशः	कष्टम्	रोगः
धनम्	भयम्	धनम्	धननाशः	धनाप्तिः	धनाप्तिः	धनागमः	हानिः	धनम्	धननाशः
सहजः	धनम्	लाभः	धनाप्तिः	भीतिः	लाभः	शोकः	लाभः	नैरुज्यम्	सुखम्
सुहृद	मानहानिः	रोगः	भयम्	धनम्	धनहानिः	लाभः	शत्रुवृद्धि	शत्रुवृद्धिः	भीतिः
सुत	दैन्यम्	कार्यसिद्धिः	धनक्षयः	रोगः	पुत्रसुखम्	पुत्राप्तिः	धनपुत्रनाशः	शोकः	शोकः
रिपुः	विजयः	शत्रुभयम्	विजयः	अलाभः	शोकः	शत्रुभयम्	द्रव्यलाभः	धनम्	धनाप्तिः
जाया	भ्रमणम्	लाभः	व्ययः	विग्रहः	मानम्	अशोकः	स्त्रीकष्टम्	हानिः	दुर्गतिः
मृत्युः	पीडा	कष्टम्	कष्टम्	लाभः	क्लेशः	विपत्तिः	शत्रुभयम्	रोगः	राजभयम्
धर्मः	धर्महानिः	मानम्	पीडा	रोगः	धर्मरतिः	लाभः	धर्महानि.	पापरतिः	बन्धनम्
कर्म	कार्यसिद्धि	सुखम्	शोकः	सुखम्	उन्नतिः	दैन्यम्	दौर्मनस्यम्	वैरम्	शोकः
आयः	धनम्	लाभः	धनाप्तिः	सौख्यम्	लाभः	धनाप्तिः	आयवृद्धिः	सौख्यम्	सुयशः
व्ययः	कष्टम्	व्ययः	हानिः	नाशः	चिन्ता	हानिः	हानिः	शोकः	धनक्षयः

७॥ वर्षीय शनेः मासभेदेनफलम्--मस्तके ७ मासाः सर्वांशेहानिः । नेत्रे ९ मासाः सर्वांशेहानिः । मुखे ८ मासा भोजनादिलाभः । कण्ठे ६ मासा भूषणादिलाभः । हृदये १० मासा यात्रादिलाभः । उदरे ११ मासा अन्नादिलाभः । नाभौ ४ मासाः कष्टमुदरे । गुह्ये ५ मासाः सर्वांशेहानिः । जानुनि १४ मासा राजबलेन जयः । जंघयोः ११ मासाः स्त्रियादौ सौख्यम् । पादयोः ५ मासा व्यर्थभ्रमणम् ।